मध्यस्थ दर्शन परिचय एवं सहअस्तित्ववादी विज्ञान" पर संबोधन एवं संवाद

-ए.नागराज, आंग्री आश्रम छ.ग. १९९९

मैं विश्वास करता हूँ कि आप लोगों के जिज्ञासायें बहुत सारे सवालों से दंशित करके सवालों का बहुत सारा दर्द से भरकर आप लोग सवाल कर रहे हैं, ऐसा स्वीकारता हूँ। मुझे भी ऐसा लगता है, जब कभी हम तीव्र जिज्ञासु होता हूँ, इसी दर्द भरे तरीके से ही हम उससे मुक्ति पाने का आशय बनती हैं और उससे मुक्ति पाने का आशय से हम उसका समाधान चाहना शुरू कर देता हूँ। वह चाहा यदि बाकि हमारी जिंदगी की तरह–तरह जीने वाले जो प्रधानता रहती है और वरीयता है, उससे यदि वरीय हो जाये माने हम जितने तरीके से भी जीते रहे हैं, किसी का एक प्वांइट की कीमत रहता है, किसी का 10, किसी का 25 और किसी का 90, ऐसा कीमत से हम वरीयकता को आके रहते हैं। उस कम से हमारा दुनिया सबसे ऊपर हो जाती है। तब उसका समाधान सीचीन हो जाती है, उसका कोई एक प्रकार नहीं हैं, जैसा मैं आपको अभी उपलब्ध हूँ। मैं यदि उपलब्ध नहीं भी रहूंगा तो संसार में अस्तित्व में सवाल का उत्तर रहता ही है। ये कोई आश्चर्यजनक विधि से सोचने की जरूरत नहीं है, तो अभी आपने यह बात बताई थी कि सवाल है तो उसका समाधान रहता ही हैं। यदि समाधान नहीं है, सवाल रह ही नहीं सकता। बिना दर्द का ऐसा कोई सवाल भी नही रह सकते और ये सवाल का कोई अर्थ बनता नही नहीं सवाल का जवाब न हो ऐसा यदि कोई सवाल करता है तो दर्द भरे होते ही हैं। मेरा भी ऐसा अनुभव कहता है, दर्द अति तीव्र होने के बाद ही हमारा जिज्ञासा तीव्र हो जाता है। छोटी सी बात है और वह दर्द जो है ना वरीयता कम में सबसे ऊपर होने के बाद उसको अपनाने की नौबत आती है और हम प्रमाणित होने वाली विधि से तरीका आवश्यकता सब बन जाती है। और तत्पर होने के पश्चात उसका तो खुशबू ही अलग होता है। स्वाभाविक रूप से ''प्रमाण'' मनुष्य का मूल वर्चस्व है। एक वाक्य यह बना मनुष्य है न जो समाधान का धनी है न कि सवाल का, अभी के वर्तमान में हम जितना परेशान हुये हैं, सवालों को पैदा करके विद्धान हो गये ऐसा हम सोचते है, वो सवालों को पैदा करने पर धनी नहीं है, विद्वान नही है, न ही मेधावी है, न जिज्ञासु हैं। सवाल पैदा करना कोई मेधावीपन का अर्थ नहीं हैं।

1. सवाल का जवाब चाहना मेधावियों का काम है।

2. वह समीचीन होने से उसको जीवन में उतारना मेधावियों का दूसरा वर्चस्व है।
3. इसको प्रमाणित करना तीसरा वर्चस्व है।

ये वर्चस्व के साथ ही मेधाविया संसार के लिये उपकारी को पाती है। और केवल जिज्ञासा किया जिसको हमको जीना ही नहीं है । ऐसा जिज्ञासा से कोई संसार का फायदा होने वाल नहीं है, पहला बात तो मेरा अनुभव यही कहता है। उसके बाद तो मूलतः अभी पहला जिज्ञासा यही है, अभी हमको जो आप लोगों ने समझा है उसके अनुसार मध्यस्थ दर्शन मैंने जो प्रस्तुत किया है, आप जैसे मेधावियों के करकमलों में और इसका प्रस्तुत किया करने के लिये प्रस्तुत तो कर दिया।

इसका मतलब यहॉ आप लोग सुनना चाहते है, ऐसा आप लोगों का जिज्ञासा है। मध्यस्थ दर्शन का मूल मतलब यही है जो विज्ञान से और अध्यात्म से अथवा आदर्शवाद से दोनों के हाथ में जो नहीं लगी वह चीज हमारे हाथ लग गई। इसका नाम मध्यस्थ दर्शन। अध्यात्म वाद में जो प्रतिपादन नहीं हो पाया, अध्यात्मवाद प्रमाणित नहीं कर पाया अध्यात्मवाद दूसरों को समझाने की तरीका या ताकत पैदा नहीं कर पाया या पहचान नहीं कर पाया इसका नाम है मध्यस्थ दर्शन। उसी भांति जो भौतिक वाद है वो पहचान नहीं पाया या प्रमाणित नहीं कर पाया, बता नहीं पाया, सोच नहीं पाया इसी का नाम मध्यस्थ दर्शन है, अर्थात विज्ञान और आदर्शवाद अभी तक दो ही चिंतन आई हैं।

1. रहस्य मूलक ईश्वर केन्द्रित चिंतन

ईश्वर से सब कुछ होता है ये नजरिया है इसको अपने को अच्छी तरह से हृदयंगम करने की आवश्यकता इसको ध्यान में रखने की आवश्यकता हैं। मध्यस्थ दर्शन को सटीक एक अपनी मूलतः स्वीकृति के रूप में पाने के लिये इसको याद रखने की आवश्यकता है। क्या हुआ आदर्शवाद रहस्यमूलक ईश्वर केन्द्रित चिंतन का जो अभिव्यक्ति है। हर बात को हम ईश्वर के साथ जोड़ना चाहते हैं। ईश्वर से ही पैदा हुआ, ईश्वर में ही मरेगा, ईश्वर में ही रहेगा, ईश्वर के कृपा से ही हम संबंध पायेगे। इस प्रकार से सारी बात आती हैं। हम यदि बहुत बड़े धनी होते हैं, ईश्वर की कृपा से होते हैं। बहुत बड़े भारी बली होते है तो हम ईश्वर की कृपा से ही होते हैं। बहुत भारी विद्वान होते है तो भी हम ईश्वर की कृपा से होते हैं। बहुत यश मिल जाता है तो ईश्वर की कृपा से होता है। हम हर बात को ईश्वर के साथ जोड़ना चाहते हैं। अच्छा मकान मिल गया, ईश्वर कृपा से मिल गया, अच्छा कपड़ा मिल गया ईश्वर कृपा से मिल गया, हर बात को ईश्वर की झोलीं में ड़ालना चाहते हैं और उसके मूल में रिक्तता क्या रही कि इसमें कई बात

तो आपकों बहुत दिन तक पता भी नहीं लगा। कुछ बात में फिर पता लगा ईश्वर को पहचाने बिना ईश्वर की झोली में कैसे ड़ाला जाये। इसके भी काफी चर्चायें हुई, उसका कोई उत्तर निकलता नहीं। इस ढ़ंग से बात हुई इसका प्रश्न चिन्ह पर कोई उत्तर है ही नहीं। सबका उत्तर हम देगें वह इसका भी मध्यस्थ दर्शन निष्पन्न होने का कारण में से एक है, इसके बाद जैसे ही विज्ञान युग आया अपने ढ़ंग से आदमी को पढ़ाना शुरू कर किया। अभी हम समझता हूँ आदर्शवाद से अधिक संसार में यदि शिक्षा स्वीकृत हुई वह विज्ञानवाद ही हैं, भौतिकवाद ही हैं । इसको पूरा देश स्वीकारा हैं। सभी देश में एक ही प्रकार से विज्ञान को पढ़ाना देखा गया हैं। किन्तु मनुष्य उसमें आता नहीं, कैसे नहीं आता है ये वस्तु से सब कुछ होता है। रासायनिक भौतिक वस्तु से सब कुछ होता है ये विज्ञान का कहना हैं। सारभूत बात इतना ही हैं, ये दोनों से बची हुई चीज ''जीवन'' पहचान विज्ञान से हुआ नहीं और उधर भी ईश्वरवाद के अनुसार ही जीवन का पहचान नहीं हो पाया। इसलिये आदर्शवादी ने ये कहा जीव और जगत का मतलब यही साधारणरूप में आप भी अनुभव कर सकते हैं, भौतिक रासायनिक संसार को जगत के नाम से अपनी अवधारणा में पा सकते हैं

और जीव के नाम से मनुष्य से लेकर सभी जीव के साथ मनुष्यों को भी जोड़कर आप एक अवधारणा पा सकते हैं। जबकि वस्तु स्थिति इससे भिन्न है। मनुष्य एक अलग ही जीनीष है और जीव संसार अलग ही जीनीष है, ये दोनों अपने को स्पष्ट दिखता भी है। कुछ समझने चलने से भी समझ में भी आता है। इसमें कष्ट निहित हो गई इस ढ़ंग से अध्यात्मवादी मनुष्य को पहचानने में रह गई और उसके साथ जीवन को पहचानने में रह गई । जीव जीव कहते हुये मनुष्यों को ले गये तो यह जीवन में भय की स्वाभाविक प्रवृत्ति बताया गया है। वह भय के लिये कोई आश्रय की आवश्यकता रहता है। मूल आश्रय ईश्वर बताया गया है, ईश्वर ही सबका भय को दूर करने वाला हैं। उनका कृपा होने का आवश्यकता है, ऐसा ले गये उसका दो शाखा हुआ पहले ज्ञान ही एकमात्र बात थी। उसके बाद भक्ति को भी लोक मान्यता मिल गई और लोगों ने भक्ति से भी भय का मुक्ति हो जाता हैं। ऐसा कुछ परिकल्पना आई। कौन छुड़ायेगा वाला बात है, उसमें भी ईश्वर के स्थान पर एक देवता आ गया। देवता को प्रमणित करने वाला कोई नहीं और देवता से भय दूर हो जाएगा ये हम सबके मन में भरे हैं। और भय को मनुष्य का स्वाभाविक गति बताया गया। इस तरह से भयभीत आदमी ईश्वर को वरकर भी कहीं कभी भयभीत से मुक्ति हो गया ऐसा सुनने में नहीं आया। यह भय से मुक्त हो गया ऐसा

व्यक्ति अपना घोषणा भी नहीं कर पाया कि हम भयमुक्त हो गया हूँ, भई भयमुक्त विधि से जी रहा हूँ, ऐसा कुछ भी नहीं कर पायें। भय से मुक्त हो गया ऐसा जो सोचता है, जैसा विद्ध पुरूष वो भी प्रार्थना करता है हमको भय से मुक्ति कराओं दरिद्रता से छुड़ाओं उनको भी प्रार्थना करना है, हमको भी करना है, क्या फर्क पड़ा इससे सारा दुख दरिद्रता से छुड़ाने के लिये सिद्ध आदमी भी वही प्रार्थना करता है, हमकों भी वही प्रार्थना करना है। क्या फर्क पड़ा इसमें ये तो करना ही करना। इस ढ़ंग से संसार में अभी तक जीव जगत के बारे में आदर्शवादियों का दिनचर्या यही रहा। जीवों के सदृश्य ही आदमी हैं। उसके बाद वह थोड़ा सा और भरे ईश्वर कृपा से जीवों के ऊपर करूणा होती है। वह करूणा है जो मनुष्य के ऊपर भी बरसता है, उसी के आधार पर घोड़ा भी बोला वेद को, भैंस भी बोला वेद को, बकरी भी बोला वेद को ये सब करना पड़ा, तो इस ढ़ंग से हम फैले। फैले करके हम कहीं के नहीं रह गये। भाषा में बहुत फैले किन्तु प्रमाण के रूप में कहीं नहीं रहे। इन दोनों से पीड़ित होकर जब हम मनुष्य जो समझने वाला हैं, रोने वाला हैं, जागने वाला है, हॅसने वाला है और पाने वाला है, खोने वाला है तो इसमें ईश्वर कौन सा चीज को छुड़ाकर ले जाता है। कौन ऐसा छुड़ाके ले जाने वाला ईश्वर के अलावा कोई चीज है तो क्या चीज है। कोई चीज के रूप में है कि भाषा के रूप में ईश्वर है, तो पहले ये भी कहें कि शब्द को प्रमाण मानते हैं वस्तु को प्रमाण माने नहीं। वस्तु जैसा आप है, आप गौण हैं, आपका नाम प्रथम है, ऐसा बात हो गई। इस प्रकार की चीजें आने से मनुष्य और भी गुमराह हो गया। तो मैं इसको शायद हमारा मूर्खतावश अथवा हटवश अथवा परिस्थितिवश या हमारा स्वविवेकवश अथवा नियतिवश कहीं न कहीं हम इसकों लांघ दिया कि ये तो सब स्पष्ट नहीं है इसका स्पष्ट रूपरेखा आवश्यक है।

जीवों में और मनुष्यों से दूरी स्पष्ट है। वह दूरी का रेखा कहॉ है। जीवों में मनुष्यों में कहॉ से अंतर शुरू होता है। ईश्वर और जीवन के संबंध में क्या संबंध है। यदि ईश्वर है तो वस्तु के रूप में क्या चीज है। ये हमारे मूल सवाल था, इसके बाद मोक्ष और बंधन के बारे में काफी बात किया जाता है। उपनिषदों में बहुत की गई हैं। ब्रम्हसूत्र और योगसूत्र में भी किया गया है। सभी के अपने अपने ढ़ंग से जो कर सकते थे वो हमारे लिये तो कोई स्पष्ट नहीं हुआ बोध नहीं हुआ। तो तत्कालीन विद्वान हमकों बोध कराने के लिये सक्षम नहीं हुये पूरा नहीं पड़ें। फलस्वरूप हम अपने में प्रताड़ित होना, दुखी होना, संकटग्रस्ट होना, स्वाभाविक बात रहा। इस ढ़ंग से वह संकट बहुत दूर तक बाकी जो हम जीने के लिये वरीयता बनाये रखे थे, फैक्टरी लगाना, दुकान लगाना,

व्यापार करना, ये करना, वो करना, घर में खूब आराम से रहना ये सब एक प्रकार से वरीयता क्रम में रहे थे। ये धीरे–धीरे एक एक को लांघता हुआ आगे चला। आगे चलकर के एक संयोग से सन् 1947 आया। 1947 से सत्ता हस्तांतर हुआ। हमारे देशवासियों के लिये उस समय में संविधान बनाने की आवश्यकता आई। उसमें जो पहले संविधान था उसको यथावत स्वीकारा गया। उसमें तीन को उद्धुत किया गया–

1. धर्म निरपेक्षता
2. समानता
3. गणतांत्रिक शासन

इसको स्वीकारा गया।

उसके लिए तरीका अपनाया, वह तरीका बिल्कुल कामयाब नहीं हुआ किन्तु उस समय में हम इस बात को स्वीकारा, की भई संविधान के तहत कोई सही आदमी का मूल्यांकन नहीं हो सकता, वह आज पूरा का पूरा उतर भी रहा हैं। धीरे धीरे यदी कोई कोने में नहीं उतरा होगा तो कल उतर जाएगा उस जगह में हम आ गए हैं। हमारा संकट की वरीयता ये सब से ऊपर चला गया, हमारा सारा सुविधा, संग्रह इन सबके ऊपर ये पहूँच गया, इसका वर्चस्व हो गया सब के ऊपर बाकी सब इसके प्रभाव से प्रभावित हो गये अन्ततःगत्वा मैं अपने को मानसीक रूप से तैयार किया। इसके ऊपर सोचा जाए। इसका निष्कर्ष निकाला जाए। मूल में क्या केन्द्रित हुई।

1. बंधन और मोक्ष की बात आई
2. संविधान के पक्ष में

संविधान का ध्रुवीकरण होता हैं, नहीं होता हैं, ये दोनों मूद्दे को लेकर पता चला जो कुछ भी साधना किया कही, अभ्यास किया कही, सोचा कही कुछ भी नाम दिजिए उसका परिणाम में हम सबको ये पता लग गई की ये अस्तित्व में जीवन नाम की चीज है। सब से बड़ी भारी बात क्या हो गई, जो आदर्शवादीयों के हाथ में नहीं लगी थी।

विज्ञानियों के हाथ में नहीं लगा है, वह चीज है, जीवन। वह जीवन हाथ में लग गई जीवन हमको समझ में आ गई। मैं जीवन हूँ, इस बात का यकिन मुझ में स्थापित हो गया। मैं ही कुल मिला करके अस्तित्व में द्रष्टा, कर्ता, भोक्ता हूँ। जो कुछ भी बाकी संसार है जैसे तारागण से लेकर, सूरज चॉद, आकाशगंगा से लेकर, धरती, हवा से लेकर पानी, मट्टी से लेकर जीतने भी चीज हमारे चारो तरफ फैली हुई हैं, इसके साथ ही में होता हूँ, इसको छोड़कर तो हम कहीं जाता नहीं हूँ, इसीलिए ये सह अस्तित्व है,

साथ–साथ में होना हैं इसका प्रमाण हमको समझ में आ गया। उसके बाद ये भी आ गई ईश्वर और जीव जगत के बारे में जो बात करते रहे, ईश्वर के बारे में ये बात पता लगा, पहले से एक उपकार तो किये थे हमारे बुजुर्गो ने ईश्वर व्यापक हैं। उसको पूछा गया था, उपनिषदों में चर्चा किये थे, व्यापक का क्या मतलब हैं। बताया ईश्वर, ईश्वर में व्यापक रहता है, लोहा लोहा में व्यापक रहता हैं, इस ढ़ंग से बात कहना चाहा इन चाहत के आधार पर हम संतुष्ट तो नहीं थे, किन्तु ये भाषा दे गये थे, तो उसके बाद जब हम देखे एक अस्तित्व के पूरा स्वरूप को ये सब जगह में फैला हुआ वस्तु हैं, जिसको हम व्यापक कह सकते हैं, जो व्यापक रूप में फैला हुआ हैं, इसी में सभी प्रकृति माने चैतन्य प्रकृति, जीवन को हम चैतन्य प्रकृति नाम दिया तो चैतन्य प्रकृति भी इसी व्यापक वस्तु में नहीं थे, जड़ प्रकृति, जो रासायनिक भौतिक वस्तुएँ हैं, ये भी इसी में निहित है, ये पता चला इसको अच्छी तरह से हमने समझा, ये दोनो समझ में आने के बाद पता चला कि मूलतः सहअस्तित्व ही हैं, एक–एक प्रकृति व्यापक वस्तु में नित्य सहअस्तित्व है, ये बात समझ में आया, इस नित्य सहअस्तित्व कभी भी वियोग नहीं होता, इसको फाड़ा नहीं जा सकता, ना फटता हैं, इसको अलग नहीं किया जा सकता , अलग होता नहीं इसलिए सहअस्तित्व नित्य वर्तमान हैं।

आकाशगंगा से धरती तक, पानी तक, हवा तक, सब के साथ हम रहते है। इसमें भी सहअस्तित्व ही हैं, मूलतः सहअस्तित्व है, फल भी सहअस्तित्व है, और मूल भी सहअस्तित्व है, ये बात स्पष्ट हो गई इस ढ़ंग से भौतिक वाद और आदर्श वाद से छुटी हुई जीवन ज्ञान हासिल होने से ये मध्यस्थ दर्शन और जो भौतिक वाद, आदर्शवाद से छुटी हुई थी इसीलिए सहअस्तित्व वाद। मध्यस्थ दर्शन, सहअस्तित्व वाद में हम इतना निहित अर्थ को लिखा है और उसी को स्पष्ट करने के लिए कई विधि से प्रयत्न किया हैं। उसको जो चार अध्यायों में पूरा मध्यस्थ दर्शन को लिखा हैं।

1. मानव व्यवहार दर्शन
2. मनव कर्म दर्शन
3. मनव अभ्यास दर्शन
4. मनव अनुभव दर्शन

अनुभव के बारे में विगत में ये बात सोचा जाता था कि अनुभव को बताया नहीं जा सकता। बिल्कुल उसका उलटा हुआ, यदि सही ढ़ंग से सटीक ढ़ंग से उचित ढ़ंग से, कारगर ढ़ंग से, और जीने के ढ़ंग से, प्रमाण के ढ़ंग से कोई चीज बताया जा सकता है,

तो अनुभव ही हैं। हम यहॉ आ गए। कितना उलटा हो गया, एक दम पलटी खा गई यहॉ से शुरूआत हुई होते–होते हर मोड़ मुद्दे पर जहॉ–जहॉ व्यर्थता का मान्यता है, वहॉ सार्थकता के लिए हर मोड़ मुद्दा आने लगी वह पलटी खाने लगी, पलटी खाते–खाते यहॉ आ गई तो बहुत सारे अभ्यास, साधना, योग ये सभी बातें आते हैं, हम ये सब से गुजरे ही थे, इसका भी बात समझ में आ गई ये सब समझदारी की अर्जन करने के लिए है, ना कि समझदार होने का प्रमाण, ये सारे उपक्रम को समझदार होने के लिए प्रयोग करना कोई अनुचित नहीं हैं, समझदारी यदि लक्ष्य है, यदि समझदारी लक्ष्य नहीं है, ये ही समझदारी है, क्या चीज? योग अभ्यास तप, हवन, पूजा, पाठ, प्रार्थना यही हमारी समझदारी का अगर प्रमाण बताना चाहेगे ये सार्थक नहीं है, ये भी समझ में आ गया। हम ये सब कुछ करते हुए ही आए। इससे ये पता चला और भी अच्छी ढ़ंग से हमको ये समन्वित भी हुए, सम्बंध भी हुए, प्रमाणित भी हुए, ये सबके बाद जो हमारा समझदारी आई,

हम सहअस्तित्व में जीने में सार्थक ही गये। सहअस्तित्व में जीने के लिए तैयारी कर लिए तो क्या परिवर्तन हुआ? हर समस्या का समाधान हमारे पास हर परिस्थिति में हम अपने में समर्थ है, हम पराधिन नहीं है, हम भयभित होने का कोई जगह नहीं हैं, अपने पुरूषार्थ से हम समृद्वि का अनुभव करते है, अपने ही परमार्थी अर्थात अभ्यास विधि से हम समझदारी से संपन्न हो जाते है, समाधान से परिपूर्ण हो जाते हैं। अब अभ्यास का दो ही विधि बनी,

1. समझदार बनने के लिए अभ्यास करिये, उसको हम जिज्ञासा कहते हैं,
2. समझदारी को प्रमाणित करने में अभ्यास करिये,

जो कि मैं स्वंय करता हूँ। इस ढ़ंग से सहअस्तित्व वाद का प्रयोजन जिने की जगह तक पहूची, जिने में आने में क्या बनता हैं, समाधान, समृद्वि पूर्वक हर परिवार में जीना बनता हैं, ये मुख्य बात हैं। इससे जो उपकार का रास्ता बनी बहुत लंबा बनी, ऐसा हर परिवार हो सकता हैं, नहीं हो सकता है, बात आई, उसके बाद ये हुआ, हम जो समझा हूँ दूसरा कोई समझ सकता हैं कि नहीं, इसको कसौटि में लाने की आवश्यकता आई। जो समझा हूँ उसको और हमारे मानव परंपरा में जो है, उनमें ड़ालने की कोशिश कि, ऐसा लगा की दूसरो को ये पहुंचता हैं। उसका प्रमाण भी धीरे–धीरे धरती में उद्य होने लगी, और इसमें शोध शुरू हो गई। इस ढ़ंग से जो हम समझा हूँ इसका प्रमाण हम

किसी को समझाना। वह दूसरो को समझाने पर वह समझ जाना इस स्थिति में हम प्रमाणित होते हैं।

हम समझ गया हूँ, हम हमारे में कोई प्रमाण नहीं है। सह अस्तित्व में ही प्रमाण होगा समझाकर ही हम समझदार प्रमाणित होता हूँ। हम किसी को सिखाकर ही हम सीखा हुआ हूँ, इस बात का प्रमाणित होना बनता है। किसी को उपलब्ध करा दिया तो हमारा उपलब्धि होना भी प्रमाणित हो जाता है। इस ढ़ंग से ये तीन जगह में कुछ पाने के लिये, कुछ करने के लिये, कुछ समझाने के लिये आदमी जिज्ञासु है।

जिज्ञासा में सबसे बाधक है भय। भय तो है न ईश्वरवाद शुरूवात किया। ईश्वर को जब तक हम ओढ़े रहते हैं तब तक हम भय से मुक्ति नहीं पायेगें। ईश्वर वाद का क्या मतलब हैं, ईश्वर सब कुछ करता है। इस भ्रम को छोड़ देना चाहिये। ईश्वर के ताकत से हम सब भरेगें। इसको उपयोग करके हम समृद्ध हो सकते हैं, समाधानित हो सकते हैं। इस तरीके से सोचने की आवश्यकता है। सह अस्तित्व वादी विचार का मूल रूप ऐसा हैं, जैसा आप हमारे बीच में जो रिक्तस्थली है, वही स्वयं में व्यापक वस्तु है, पर परस्परता में यह रिक्तता है। ये खाली स्थली रहती है। एक परमाणु अंश से लेकर दूसरे परमाणु अंश के बीच में रिक्त स्थली रहती है, यदि गणितिय भाषा को संख्या भी मानते है, हम गणितियों को वस्तु मानते है, संख्या विधि से किसी एक को विखंड़ित करते चलें कितना भी विखण्ड़ित करें एक टुकड़ा से दूसरा टुकड़ा बीच में यह रिक्त स्थली रहती है। रिक्त स्थली से मुक्त कोई होता ही नहीं कितना भी टुकड़ा कीजिए सभी टुकड़े के सभी ओर यह रिक्त स्थली रहेगी। इसलिये टुकड़ा माना जाता है नही तो कोई दूसरा रास्ता ही नहीं टुकड़ा मानने की, ये तो कल्पना से ही आता है। संख्या से विखंड़ित करना। हर टुकड़े के सभी ओर यह रिक्तस्थली रहती है, तभी हम टुकड़ा कहते हैं। नही तो कह ही नहीं सकते। पहले कैसा था वह टुकड़े में रिक्त स्थली बना ही था उसके बाद आपके सहयोग से वह प्रदर्शित हो गया। इस ढ़ंग से यदि हम चाहते है तो पता लगता है कि ये व्यापक वस्तु सभी वस्तु में सभी एक–एक वस्तु में पारगामी है, आर पार हैं। इसमें सभी एक–एक बल संपन्न हो गये। ऊर्जा संपन्न हो गये, चुबकीय बल संपन्न हो गये। चुंबकीय बल संपन्न होने का क्या प्रमाण मिला। प्रमाण ये मिला एक–एक परमाणु अंश एक से अधिक मिलकर व्यवस्था को प्रमाणित किया, एक से अधिक परमाणु मिलकर एक अणु को प्रमाणित किया और एक से अधिक अणुयें मिलकर एक रचना को प्रमाणित किया, और वहीं अणुयें प्राणकोषा बनकर अनेक प्रकार का रचना बना ये

रासायनिक भौतिक कार्यक्रम का यही लंबाई चौड़ाई जो हम आपको फलवती के रूप में मिलता है, उसके ऊपर कितना भी प्रश्न हो सकता है, उसका उत्तर हमारे पास है, धीरे धीरे यह बात को तय किया जा सकता है।

इसमें कोई शंका होता है, उसको विश्वास की धरती तक पहुँचाने का विधि पहुँचने का कार्य और ये सब में हम कुशल हैं। विज्ञान से ये जुड़ गयी और मान्यताओं से आधारित बनी, अब क्या हुआ विज्ञान एक अलग संसार नहीं है, ना तो आदर्शवाद कोई अलग संसार है। अस्तित्व में ही हम विज्ञान और विवेक दोनों का प्रयोग करते हैं। मैं क्या हूँ ज्ञान से विवेक विवेचना करने की विधि बनती हैं, उससे लक्ष्य निर्धारित होती है, क्या लक्ष्य है। मानव लक्ष्य वनस्पतियों का लक्ष्य व पदार्थ संसार का लक्ष्य। सब समझ में आता है। निर्धारित विधि से सभी पदार्थ संसार अपना कार्य कर ही रहे हैं। इसका नाम है पदार्थ संसार जो कार्य करते है नियम पूर्वक करते हैं। नियंत्रण पूर्वक करते है और संतुलित पूर्वक करते हैं। ये तीन विधि से रासायनिक भौतिक संसार अपना कार्यकलाप को सम्पन्न करता ही आया है।

पहले से भी आया था अभी भी कर रहा है इसी विधि को जो अनुसरण करते है, वह उसी में सफल हो जाता है। उस विधियों को हम जहॉ कहीं भी ताक में रखते है वहॉ हम सफल नहीं होते। अभी दोनों विद्या से आदमी काम कर रहा है प्रयोग कर रहा है। उसके अनुकूल प्राकृतिक नियति विधि के अनुकूल कुछ कार्य योजनाओं को बनाता है इसमें सफलता का अनुभव करता है, इसके विपरित करता है असफलता का अनुभव करता है। असफलता का फलस्वरूप नाना प्रकार के परेशानियों को हम झेलते हैं। सफलता के आधार पर अपना छातियॉ फुलती है, ये दोनों को मनुष्य करता रहा है। सह अस्तित्व वाद का मतलब क्या हुई व्यापक वस्तु एक एक वस्तु साथ साथ में है। ये विगत हो नहीं सकता इसलिये सह अस्तित्व वाद है। हम विज्ञान विधि से जो भी तर्क प्रोड्यूस करते है, उसका पूरा तर्क विधि इसी से जुड़ा हुआ है। मध्यस्थ दर्शन के आधार पर हम जो कुछ भी प्रतिपादन करता हूँ, ये सह अस्तित्व वाद से ही निर्भर है, इसको मध्यस्थ दर्शन नाम दिया है, नाम कैसा दिया क्यों दिया क्योंकि विज्ञान अछुता रखा और आदर्शवाद ने अछूता रखा। इसका ये मनुष्य अपने में विश्वास करना नहीं बना फलस्वरूप हम कहीं ना कहीं लटके रहना किसी बैशाखी को खोजते रहे। आज भी उसी स्थिति में आदमी जात हैं। आदमी जात की इस विपन्नता को दूर करने की संभावना हैं। सह अस्तित्व वाद विधि से, ये निरंतर व्यवस्था में रहते है इसीलिये सह अस्तित्व वाद ये सतत् सभी जगह में सह

अस्तित्व वाद का जो प्रतिपादन व्यवस्था के रूप में हर वर्तमान में नित्य वर्तमान में प्रमाणित होती है। हर मनुष्य का अस्तित्व से जीवन का अस्तित्व समझ में आता है । ये मध्यस्थ दर्शन सह अस्तित्व वाद का सार संक्षिप्त स्वरूप हैं।

प्रश्न– बाबाजी आपने इस चिंतन को अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन ऐसा क्यों कहा? मानव क को केन्द्र में रखकर सोचने की क्या जरूरत थी? और अस्तित्व मूलक होने से आपका क्या आशय है? और पुरानी विचार धारा जो हमको मानव जाति को मिलती है उसमें क्या कमी रह गई थी। जिसके लिये आपको इस चिंतन को इस नाम से मनुष्य जाति के सामने रखना पड़ा।

उत्तर– अभी इस बात पर आपने प्रकाश डालने के लिये कहा है कि मध्यस्थ दर्शन अपने आप में ये प्रतिपादन किया है कि अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन है, दूसरा विधि से यह भी बता कहा है अस्तित्व वाद निष्पन्न हुई आपने इस बात का प्रश्न किया है अभी विगत में जो दो बात आ गई थी उसके बाद भी आप तीसरे प्रकार से अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन बताने की क्या आवश्यकता है। ये आवश्यकता ही नहीं नितांत तकाजा हो गई दूसरा कोई रास्ता ही नहीं रह हैं। दूसरा कोई विधि से इसको कोई बताया ही नहीं जा सकता है। ऐसा हम परिस्थति में आ गये। क्योंकि अस्तित्व विगत दोनों प्रकार के विचार से यह अस्तित्व पूरा अध्ययनगामी नहीं हुआ एक बात हैं। दूसरा मनुष्य को तो पहले से भी था मनुष्य सब कुछ करता रहा विचारता रहा मनुष्य अपने जीवन को पहचानने में कोई रास्ता नहीं निकला। तीसरा बात ये भी बताया है जीवन ही दृष्टा कर्ता भोक्ता है, दृष्टा पद को कर्ता पद को भोक्ता पद का मानव परंपरा में ही जीवन प्रमाणित करता है। मूल मुद्दा यही है जैसा कि जीव संसार में भी जीवन होता हैं, होते हुये दृष्टा, कर्ता, भोक्ता पद को वह प्रमाणित नहीं करता। इस आधार पर मनुष्य ही दृष्टा, कर्ता भोक्ता को प्रमाणित करता हैं, इस विधि से अस्तित्व तो नित्य वर्तमान है ही है,

आप माने चाहे न मानें जानें चाहे न जानें इससे फर्क नहीं पड़ने वाला। अस्तित्व तो रहता ही है, जो था नहीं वो होता ही नहीं है। अस्तित्व में जो कुछ भी प्रमाणित होता है, वह था ही पहले, वही प्रमाणित होने में आता है। अब बात है कि वह जो था क्या वह मनुष्य ने पहचाना था, यह प्रश्न बनता है। इस प्रश्न के अर्थ में तो पहले कुछ पहचाना गया, ईश्वर परमात्मा, देवता इस प्रकार की परिकल्पनायें हुई और उसके बाद वस्तु रसायन, भौतिकता ठोस, तरल, विरल ये सभी बातें शुरू हुई। इसके आधार पर कुछ

बातें ये प्रस्तुत किये। प्रस्तुत करने पर इसका गम्यस्थली संग्रह सुविधा की जगह पर पहुंचा। भौतिकवादी विधि से पूरा होने वाला नहीं है। इसीलिए ये कहीं भी परिवार या समाज व्यवस्था होने का आधार नहीं बना। आदर्शवादी विधि से हम चले गये ईश्वर सब कुछ करता है। हमारा कोई जिम्मेंवादी नहीं रहा। हर क्षण में हर पल में ईश्वर से ड़रते रहों और डरकर प्रार्थना करते रहो जो कुछ भी घटीत हो रहा है, उन्हीं की कृपा से हो रहा है। मर गये तो ईश्वर की इच्छा से जी गये तो ईश्वर की कृपा से, इस ढ़ंग से हम व्याख्या देने लगे। इस ढ़ंग से जोड़ा है। नर्क के प्रति भय पैदा करना स्वर्ग के प्रति प्रलोभन पैदा करना। जितने भी परिकथायें लिखी गई है, इसका मतलब उतना ही है। डर भय से मुक्ति आवश्यक है, हर मनुष्यों को, हर मनुष्य यही चाहता है डर भय न रहे और ये चाहता है विश्वासपूर्वक जी सके। यह हर मनुष्य में निहित है। मनुष्य अपने में विश्वास करना जब तक भय है, तो कहॉ से विश्वास करेगा। इसीलिये डर भय के स्थान पर समाधान समृद्धि उपस्थित हो सके इस स्थिति को हमने देख लिया, जी लिया। इसके बाद हमने सोचा अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन। चिंतन कहॉ से आ गई। अस्तित्व तो था ही मानव था ही किन्तु यह अस्तित्व से सारा–सारा सूत्र, समाधानित होने का सूत्र, समृद्ध होने का सूत्र, वर्तमान में विश्वास करने का सूत्र और सह अस्तित्व में जी रहे है, इस बात को प्रमाणित करने का सूत्र। हासिल कहां से करता है, अस्तित्व से करता है। प्रकाशित कौन करता है? मानव ही करता है, दूसरा कोई करने वाला नहीं है। जीव संसार ये काम करेगा, नहीं वनस्पति संसार ये करेगा नहीं और पदार्थ खनिज करेगें नहीं। ये बात अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन का आधार बना। वर्तमान में प्रमणित होने के धरती से ये नाम पड़ा। अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन विधि से ही हर मानव समाधानित होगा अध्ययन से और अनुभवमूलक विधि से इस समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व को प्रमाणित करेगा। जो समाज का वांछित फल है। समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व मानव जाति का अपेक्षा है। ये चारों एक आवश्यकता के रूप में रखी हुई है। इसको सार्थक बनाना अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन से ही सार्थक हुआ। क्यों हुआ? आदमी जिम्मेवार बनता है, इस आधर पर समझदारी आती है। समझदारी के बाद ईमानदार, ईमानदार के बाद जिम्मेवार, जिम्मेवाद के बाद भागीदारी करता है। समझदारी का फलन में ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व इस ढ़ंग से अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन का नाम रखना उचित समझा। इसमें और भी मेधावियों का सुझाव संभावित है, और इसको हम स्वागत करते भी हैं, और इसमें यदि कोई न्यूतम हो उसको पूरा करने के

लिये हम पूरा तत्पर हैं। इस संबंध में जितना भी प्रश्न होगा, उसका उत्तर हमारे पास है सार्थकता के आधार पर।

1– अस्तित्व ध्रुव है।

2– मानव में जागृति ध्रुव है।

जगृति ध्रुव होने के बाद उसका कसौटी यहां आती है। क्या मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व पूर्वक जी रहा है? जीने के लिए तत्पर है? इस तरीके से ये दोनों चीज प्रमाणित हो जाते हैं। अस्तित्व भी और जागृति भी। मानव में ही जागृति प्रमाणित होगी। जागृति हर मानव में प्रमाणित होने की स्थिति में समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व निरंतर प्रमाणित होगी। फलस्वरूप आदमी जो अमन चैन चाहता रहा, सुख समृद्धि चाहता रहा, जान–माल की सुरक्षा चाहता रहा, वह सार्थक हो जाता है, अभी तक वह सार्थक नहीं हुआ। धर्म तंत्र से भी नहीं हुआ राजतंत्र से भी, इसलियें अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन इस जगह पर पहुंचाने के लिये सार्थक है, इसको मैंने देखा है। इसको मैं जिया है इसमें मैं स्वयं प्रमाणित हूँ।

जीवन में शक्ति और बल

मानव शब्द आता है, और अस्तित्व शब्द आता है, अस्तित्व में भी पुनः अवलोकन करने की आवश्यकता है। अवलोकन का मतलब अवधारणा के रूप में वस्तु को देखने की विधि, अवलोकन करने के कम में ही अभी मानव को पहले स्पष्ट कर लेते है, और अस्तित्व को स्पष्ट कर लेते हैं। अस्तित्व का विधि को भी समझ लेते है। मानव का जीवन और शरीर का समूचय जो विधि है, उसको समझ लेते हैं। यही मानव विधि बनेगी। विधि व्यवस्था के बारे में आदिकाल से जो हम फंसे हुये हैं, दिशा विहिन, लक्ष्य विहिन विधि से सब कुछ करके क्षत विक्षत होकर गिर जाते हैं। जो कुछ भी करने जाते हैं अन्ततोगत्वा विफल हो जाते हैं, और जो सोचते है उससे भद्दी ही विधि को सोचा जाता है, और हम जहां पहुंच गये है जो हमको खुद को भी ज्यादा स्पष्ट नहीं है, फिर भी मुद्दे के रूप में यह हो गई है, धरती रोग ग्रस्त हो गई है। मानव के पास दिशा और लक्ष्य नहीं हैं। ये यहॉ तक तो सुस्पष्ट है, अभी सारा अभियान इसीलिये है कि मनुष्य के लिये दिशा और लक्ष्य स्पष्ट हो जाये। ओर धरती का रोग दूर होने की कोई विधि तैयार हो जाये। इसी आशय से इस कार्यकम को शुरू किया गया है अभी सहमति तो सबकी 99 प्रतिशत है । निष्ठा कैसे स्थापित किया जाये? निष्ठा कैसे परंपरा में प्रमाणित हो जाये इस आशय को लेकर इस कार्यकम को हम संपन्न कर रहे हैं। अस्तित्व में मानव एक इकाई है। मानव का अध्ययन मैंने किया है। मानव शरीर और जीवन है। जीवन का अध्ययन कैसे कर लिया है, ये सुस्पष्ट प्रश्न है। मानव का जीवन का अध्ययन इस प्रकार से कर लिया उसके मूल में अस्तित्व को समझा। समझने पर यह पता चला परमाणु में विकास होता है। विकास का आधार परमाणु है और कुछ भी नहीं। विकास पूर्णता का आधार परमाणु ही है। जागृति पूर्णता भी जीवन परमाणु नहीं है। और कुछ नहीं है। अभी तक का नजरिया आदर्शवादी विधि से ईश्वर से सबको जीवन प्रदान करता है, प्राण रूप है, प्राण से सब कुछ संचालित होता हैं, इसके बाद कहा आत्मा के रूप में सबको संचालित करते हैं। प्राण से आत्मा में आ गई। आत्म के बारे में जब वाद विवाद हुआ चर्चाये हुई आत्मा को स्पष्ट करने में असमर्थ है। अध्यावसायी विधि से आत्मा स्पष्ट नहीं हुआ। इस ढ़ंग से आदर्शवादी बात यहां तक हो गई। और प्रेरणा विधि बात कुछ न कुछ मनुष्य का परस्परता में कुछ न कुछ तो हैं ही इसके आधार पर बहुत सारे साधना विधि हेन तेन तैयार कर लिया। उसको

भी बहुत सारे लोग प्रयोग किये। प्रयोग करने के बाद ये तो नहीं निकला, कि मनुष्य की जो आवश्यकता है सुख, सुख के मूल में ये है समाधान।

समाधान को छोड़कर मनुष्य को सुख मिलने वाला है ही नहीं। समाधान के मूल में समझदारी, समझदारी जो है स्वयं मनुष्य का अध्ययन हो जाये समझदारी कहा जाये। अस्तित्व का अध्ययन हो जाए समझदारी कहा जाएँ, इससे ज्यादा कुछ होता नहीं हैं, इससे कम में समझदारी होती नहीं। इस ढ़ंग से आदमी जात के सन्मुख चाहे वरदान कहिये या अभिशप कहिये ये अपने सन्मुख आ गया है। इस क्रम में ये सवाल है मनुष्य अध्ययन करने योग्य है कि नहीं हैं? इस बात को जांचा, जांचने पर पता चला अध्ययन करने योग्य है। अध्ययन क्या आंख, नाक, पैर अध्ययन करता है? या और कोई कुछ करता है। पता चला और कोई चीज करता है और कोई कुछ करता है, पता चला और कोई चीज करता है और कोई चीज करता है तो आदर्शवादीयों के आधार पर आत्मा होता है। सह अस्तित्व वादी विधि से जीवन है। जीवन अध्ययन करता है ये बात बना। पहले आत्मा को अध्ययन विधि से बोध गम्य करना असफल था, अब अध्यावसायी विधि से बोध गम्य कराना सफल हो गया हूँ। हम मनुष्य का अध्ययन में लगे, शरीर का करने पर यह पता चला गर्भाशय में मनुष्य का शरीर रचना होता है और गर्भाशय के बाहर होने के बाद, बड़ा होना, रोगी होना या स्वस्थ होना,

ये सब चीज शरीर के साथ जुड़ी हुई है किन्तु रोगी शरीर या स्वस्थ शरीर हो गर्भाशय में ही रचित होता है । ये बात की पुष्टि मिल गई। संभवतः अभी जितने भी शरीर शास्त्र अध्ययन किये है उनका भी ऐसा ही निष्कर्ष होना चाहिए। इसी आधार पर कृत्रिम रूप में भी शरीर रचना का बात सोचते हैं और प्राण कोषायें नहीं बन पाई। फलस्वरूप कृत्रिम रूप से शरीर रचना का बात अधुरा है। आगे चलकर अनुसंधान करेगें, शोध करेगें जो सफलतायें मिलेगी वो मानव सन्मुख आता रहेगा। ये निष्कर्ष आ जाता है कि मानव शरीर रचना गर्भाशय में ही होता है और गर्भाशय जैसे ही परिस्थितियों निर्मित करने पर होते हैं। ऐसा हम कल्पना कर सकते हैं। प्राण तो यही है, मानव शरीर रचना मानव गर्भाशय में ही तैयार होता है। मानव शब्द में नर–नारी दोनों इंगित हैं, समाहित हैं। इस आधार पर मानव शरीर में ही गर्भाशय में शिशुओं का संरचना होना सर्वविदित है। मानव शरीर द्वारा जो प्रमाणित होने वाली वस्तु आशा पहले, जीने की आशा, ये आंख में है आशा, पैर में है उसको खोजा गया। ये दोनों से परे है। ये पता चला, इस प्रकार इसको सोचने के बाद अस्तित्व में जो देखा गया परमाणु में विकास को

देखा गया परमाणु में विकास के क्रम में भौतिक रसायनिक प्रक्रिया तो होते हैं। इसके बाद जो विकास पूर्णता के पद में जीवन पद प्रतिष्ठा प्रमाणित हो जाते हैं। जीवन के रूप में एक परमाणु संक्रमित होना पाया जाता है। आप यदि देखेंगें, समझेगें, शोध करेगें आप भी पायेगें, मैं पा चुका हूँ। ऐसे जीवन पद में संक्रमित परमाणु चैतन्य इकाई के रूप से अपना कार्य करते हैं।

चैतन्य इकाई, जड़ इकाई में क्या अंतर है, ये बात तो अच्छी तरह से देखा गया है, जड़ इकाई में परमाणु से अणु, अणु से रचित रचनायें के रूप में प्राणकोषा भी अणु का एक रचना है। अणु रचित रचना के रूप में रासायनिक भौतिक संसार को पहचानते हैं। अभी तक चह रहा अध्ययन में भी ऐसा निष्कर्ष निकले होगें या नहीं निकला होगा तो आगे निष्कर्ष निकाल लेगें। चैतन्य इकाई गठनपूर्ण परमाणु का प्रतिष्ठा है, इसमें क्या विशेषता है थोड़ा सा ध्यान देने की बात हैं, जो मनुष्य में प्रमाणित होता हैं।

जीवन अपने आप मे भार बंधन और अणु बंधन मुक्त है। इसका प्रमाणप हमारे जितने भी कल्पनायें है कहीं पर सीमित होने की व्यवस्था नहीं है। कहीं बंध गया ऐसा नहीं हैं, आगे की करते ही हैं, आशा के प्रवाह को अक्षय प्रवाह के रूप में हम देख पाते है, अक्षय प्रभाव के बारे में जब हम पहचान कर पाते है, उस जगह यह जिज्ञासा होता है, क्या भौतिक रासायनिक अणु से ये निष्पन्न हो सकता है? पता चला भौतिक रासायनिक परमाणु से ये अक्षयता निष्पन्न नहीं होता है, क्योंकि वर्धमान विधि, क्षय विधि हैं। इन दोनों में क्षय विधि को हम क्षरण विधि मानते हैं। माने इन दोनों में क्षय विधि को हम क्षरण विधि मानते हैं। माने कम होत हुये इस स्थिति में पाते है और वर्धमान विधि को बढ़ते हुये देखते है। उदाहरण– प्राणकोषा है एक के जगह में लाखों हो गये, इसका रचना हो गया। वर्धमान विधि से हर रचनायें हुई है, इसी प्रकार पहाड़ पत्थर, लोहे का पत्थर, और मणी, धातु ये सब चीजें अणुओं से रचित हुई हैं, वर्धमान विधि से जुड़े रहते हैं। इसका परिणाम भी होता हे, पुनः वापस मिट्टी, पत्थर, मणि, धातु में परिणत होते हैं। इसको एक आवर्तनशीलता के रूप में हम देख सकते हैं। अस्तित्व में ये सभी चीज रहेगा ही पदार्थावस्था की चार वस्तु को मृद, पाषाण, मणि, धातु इसका निरंतर होना पाया जाता हैं, ये समृद्ध होने के बाद ही प्राणावस्था की प्रवृत्ति है। ये प्रवृत्ति कहा से आता है? इसके लिये प्रवृत्ति मूलतः सह अस्तित्व में से आता है। सत्ता सबमें पारगामी होने के आधार पर सभी ऊर्जा संपन्न हैं, बल संपन्न है। यह बल संपन्नता ही चुम्बकीय बल संपन्नता के रूप में विद्यमान रहा है। इसी से एक परमाणु अंश दूसरे परमाणु अंश को

पहचानना और स्वयं स्फुर्त विधि से व्यवस्था को प्रमाणित करते हैं, क्योंकि अस्तित्व में यह भी देखा गया हैं, प्रत्येक एक अपने त्व सहित व्यवस्था में है, समग्र व्यवस्था में भागीदार रहता है। स्वयं स्फुर्तता का स्रोत है हर एक–एक व्यापक वस्तु में भीगे रहने से ये स्वयंस्फुर्तता स्वयं सिद्ध है। यह अस्तित्व सहज है, शाश्वत है, नित्य है कभी भी इसका विच्छेद होता नहीं, अस्तित्व में हर वस्तु स्वयंस्फूर्त है। क्रियाशीलता के रूप में स्वयंस्फूर्त है और क्रियाशीलता के रूप में विकास क्रम जागृति क्रम के रूप में स्वयं स्फुर्त है। इसको समझने वाला केवल मानव है, केवल मानव है, केवल मानव है, केवल मानव है और कोई समझता नहीं है।

इस आधार पर मानव को हमने इस ढ़ंग से पहचाना अभी तक भौतिकवादी, अध्यात्मवादी, जीवों के रूप में पहचानते रहे। ज्ञानावस्था की इकाई के रूप में मैंने पहचाना। इसीलिये मानव को नाम दिया ज्ञानावस्था की इकाई। मानव ज्ञानावस्था की इकाई होने के आधार पर भौतिक ज्ञान, रासायनिक ज्ञान, जीवन ज्ञान, में जागृत होना बनता है। अभी भौतिक ज्ञान, रासायनिक ज्ञान, से जागृत हैं कि भ्रमित है? हमारे अनुसार भ्रमित हैं, क्योंकि इसका उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनशीलता को बिना पहचाने हम अपना हवश पूरा करने के लिये भौतिक, रासायनिक वस्तुओं का उपयोग करने लगे हैं। फलस्वरूप धरती रोगी हो गई। विज्ञान संसार इसको पूरा समझा नहीं है। नीम, हकीम खतरे जान स्वाभाविक होते ही हैं। धरती बीमार होने के बाद ज्ञानी, अज्ञानी, विज्ञानी सब एक साथ धरती पर ही हैं, ये क्या हो गया? आगे क्या होगा? कोई सोचता है, कोई ग्रहगोल खोजेगें, वह हमारे जात पात आदमी को ले जायेगें बाकि को मरने देगें। कुछ लोग ऐसा सोचते है, नहीं ये ठीक नहीं है, हमको इसका कोई उपाय खोजना चाहिये। ऐसा चर्चायें होती रहती है। अभी तक जितने सेमीनार, सभा, विमर्शात्मक सभायें होती हैं, सभी को हम सुनते हैं, किन्तु उसका कोई निष्कर्ष नहीं निकला। पर्यावरण के परंगतों के साथ हमारी चर्चा हुई है, उनकी मत से यही है, अभी मनुष्य कितना प्रदुषण में जी सकता है, उसको पहचानना है, उसका स्टेंडर्ड बनाना है। यदि यही सच है, तो अभी आप ऐसा कोई अवधि निश्चित करेगें, इस अवधि तक आदमी जीयेगा, और जीयेगा नहीं । पहले जो है ना कोई प्रदूषण था नहीं, उस समय मे आदमी जीता ही रहा, अभी प्रदूषण होने के बाद, इतना प्रदूषण में आदमी जीयेगा ऐसा एक रेखा बनाइयें, रेखा बनाने के बाद थोड़ा दिन के बाद वह रेखा पार हो जाता हैं, उसके बाद आगे प्रदूषण की रेखा, ये कब तक चलेगा? घुटकी में सांस चलता रहता है, तब तक, जब तक सांस चलती रहेगी तब तक रेखा बदलती रहेगी, रेखा बनाते

रहेगें, हम सुनते रहेगें। इसका निराकरण क्या है? अध्ययन मे क्या निराकरण आई? स्टेडर्ड के नाम से पैसा के लिये रेखा बनाते है। पैसा दिये बिना रेखा भी नहीं बनाते। इससे प्रदुषण विधि का कोई सही सलामत विधि नहीं होता। सह अस्तित्व वादी विधि से यदि हम सोचते है, तब यह निकलता है, मनुष्य अपनी पद प्रतिष्ठा को पहचाने, उस पर विश्वास करे, क्या पद? मानव जो है ज्ञानावस्था की इकाई है, देव मानव पद में मानव है, और भ्रमित, पशुमानव पद में होता है। देव मानव का मतलब है, आदिकाल से हम बहुत कुछ अच्छे–अच्छे शब्द का प्रयोग किये है, प्रबुद्धता का नाम दिया हैं। प्रबुद्धता, देव पद प्रतिष्ठा को वैभव है, समझदारी ज्ञान पद प्रतिष्ठा के एक वैभव है। अस्तित्व को पूरा समझने से समझदारी है। मानव को पूरा–पूरा समझने से समझदारी है। पूरा का मतलब, जीवन और शरीर दोनों। और इसका प्रयोग व्यवहार में आता हैं, इसका नाम है मानवीयता पूर्ण आचरण। उसका कसौटी है व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होना। प्रत्येक एक अस्तित्व में अपने त्व सहित व्यवस्था में है, समग्र व्यवस्था में भागीदारी है, इस सूत्र के साथ जुडने के लिये इतना कसरत मानव जाति को करना लिखा है। अभी तक इस ओर कोई प्रयास हुआ नही। प्रौद्योगिक विधि से सोचा गया, प्रौद्योगित ही व्यवस्था है, मानव का मैनेजमेंट कठिन है, यंत्र का मैनेजमेंट ठीक है। यंत्र से मैनेजमेंट कन्ट्रोल में रहता है, मानव का मैनेजमेंट कर नहीं सकते इसके आधार पर जितने भी उत्पादन कार्य है उसको हम यंत्रीकरण किया कि हमारा मैनेजमेंट के लिये सुगम हो जाये। जितना यंत्र बनाया उतना ही आदमी बेकार हो गया और दुष्कर्म में प्रवृत्त हुआ, और समझने के लिये कोई रस्ता देने का था नहीं, जितने भी हमारे अर्वाचीन समय में सत कर्म की बात करते है, न तो परिवार बन पाते है, न व्यवस्था बन पाते हैं, न परिवार को प्रमाणित कर पाते हैं, न समाज को, न व्यवस्था को। यदि सब बात के लिये आप यंत्र बना लिये, उसके बाद आदमी क्या करेगा? उसके बाद कुछ देशों ने सोचा, मौज मस्ती मनायें। बहुभोग, अतिभोग, को ये मौज मस्ती माना है। इसको ज्यादा से ज्यादा सोचें। यौन संवेदना में दिन भर मगन रहे, उसके लिये गाड़ी चाहिये, घोड़ा चाहिये, पोशाक चाहिये, जूता, चप्पल, तलवार, बंदूक, हेन, तेन इसमें जब कभी प्रभावित होता है, आदमी आत्महत्या का डोज खाकर सो जाता है। सवाल ये आता है कि इस विधि से कहां पहूँचेगें। विज्ञान को इतना बड़ा भारी दुधारू माना, संसार ने इतना विश्वास रखा, इससे सारा मानव जाति तर जायेगा, उससे पहले आदर्शवादी विधि से मानव तर जायेगा,

इस बात का आश्वासन पहले से देते आ रही हैं। कोई कोई देश मिलावट के बारे में यह कह रहा है, 15 प्रतिशत वैध है, उससे ज्यादा होने से वैध नहीं है। इसका मतलब है, प्रदुषण में जीना जरूरी है और मिलावट खाकर जीना जरूरी हैं, इसके बाद आता है रिश्वतखोरी, रिश्वतखोरी में भी ऐसा सुनने में आता है, सरकार में यह प्रधान पद, प्रतिष्ठा संपन्न पद वालों से, ये सुनने में आया है कि 15 प्रतिशत तक का रिश्वतखोरी अच्छा है, इससे ज्यादा होने से खराब है। रिश्वतखोरी में भी आप गुजांइश निकाल लिये। आज 15 प्रतिशत वैध है कल 50 प्रतिशत, परसों 100 प्रतिशत। मिलावट भी ऐसा ही है, प्रदुषण रेखा भी ऊपर और ऊपर होता है। एक तरफ विज्ञानी लोग कहते हैं जनसंख्या बढ़ गई, जनंसख्या समस्या का कारण है, दूसरे तरफ लेबरोटेरी में आदमी को तैयार कर देता है। एक आदमी का कितना बनाना है? एक लाख बनाना है, पैसा दो, हम बना देते हैं, करोड़ बना देते हैं, आपका प्रतिरूप को बना लीजिये। इसको क्या कहा जाये?एक तरफ कहते है जनंसख्या बढ़ गई एक तरफ कहते है आदमी करोड़ो बना सकते हैं। उसके लिये वह आकर्षित करते है, पैसा दिजिए, बनवा लीजिये, कौन सा सही है? जनसंख्या बढ़ गई ये सही है या एक आदम को करोड़ो आदमी बना दिया जाये इसका जरूरत है आवश्यकता है। दोनों को हम सही ठहराते हैं। औचित्यता के बारे में कौन जिम्मेदार है? औचित्यता को बताने का आधार कहां है?

मनुष्य जागृत, स्वयं पर विश्वास होने के अपरांत माने स्वयं का अध्ययन पूरा होना, माने जीवन और शरीर ये दोनों का संतुलित अध्ययन हो जाना, स्वयं पर विश्वास का आधार हैं। ये नहीं होने से स्वयं पर विश्वास नहीं होगा। मैं कैसा हूँ, क्यों हूँ, ये दोनों का उत्तर होने के बाद स्वयं पर विश्वास होता है। जीवन में अक्षय शक्ति, अक्षय बल, होता है उसको हम अध्ययन कराते है। जीवन में कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता, निरंतर स्फूर्त होता रहता है। कर्म स्वतंत्रता, कल्पनाशीलता का बिन्दु क्या है? इसके लिये मनुष्य सदा–सदा शोध करता रहता है। वह भी हम पढ़ाता हूँ। जागृत होने के बाद व्यवस्था के रूप में जीने से कल्पनाशीलता, कर्मस्वतंत्रता की तृप्ति बिन्दु मिलती है। समझदारी का दूसरा बिन्दु अस्तित्व है। अस्तित्व स्वयं सह अस्तित्व है। अकेले नाम का चीज नहीं है, व्यापक वस्तु एक–एक वस्तु नित्य वर्तमान है। इसके बाद ये प्रश्न समाप्त हो जाता है, एकांत में सुख है। अभी तक आदर्शवादी विचार एकांत में सुख को खोज खोजकर क्षत विक्षत हो गया है। न स्वयं प्रमाणित हो पाया न उसके सम्मोहन से छूट पाया। हमारा परिवार परंपरा में 700 वर्ष में अनेक लोग संन्यासी होते रहे हैं। एक भी लाईन ऐसा नहीं

दे पाये, जो संन्यास के बाद हम लोग पा गये, आप लोग नहीं पाये। सबको यही कहा किताब पढ़ लो। मेरे अनुसार किताब आदमी लिखता है, हर आदमी किताब से बड़ा है, हर यंत्र से बड़ा है एक एक आदमी। यदि ये सच है हर आदमी, हर यंत्र और किताब से बड़ा है। तब किताब के अंदर मनुष्य को समा लेना संभव नहीं हैं।

किताब को इतना पूजा किया गया उससे ज्यादा किसी को पूजा भी नहीं किया होगा, इतना पूजा करने के बाद भी कोई आदमी किताब के अंदर समाया नही। अभी विज्ञानियो ने इतना प्रमाण बता कर यंत्रो को, संसार को इतना सम्मोहित किया, कि देखो यंत्र स्वचालित होता है, यंत्र ये करता हैं, वो करता हैं, इसके बाद भी मनुष्य किसी यंत्र मे समा गया ऐसा कुछ होता नहीं हैं। मेरा घोषणा ये है कि प्रत्येक मनुष्य हर एक किताब से बड़ा हैं, हर एक यंत्र से बड़ा हैं, इस बात पर विश्वास रखने कि जरूरत हैं। उसके लिये हमारे जीवन में जो अक्षय शक्ति अक्षय बल हैं, उसको जागृति पूर्वक नियोजित करने कि विधि अपनाने तक समझदारी हैं, उसके बाद प्रमाणीत करने की परंपरा। जिस आदमी को जिज्ञासा होती हैं, स्वागत हैं, इसको हम अध्ययन कराता हूँ। अस्तित्व में विकास क्रम बनी, विकास क्रम में परमाणु ही वस्तु हैं। गठन पूर्णता नामक एक पद आती है, जिसमें परमाणु प्रस्थापन और विस्थापन से मुक्ति हो जाती हैं। ना प्रस्थापन हो सकता हैं ना विस्थापन। ऐसे जगह में आने के बाद उस परमाणु का नाम हैं गठन पूर्ण परमाणु, परमाणु के बीच में एक क्रिया होती हैं, जिसमें परार्वतन, प्रत्यार्वतन दो विधी होते हैं, बीच में एक ही होता हैं, इसको हम आत्मा नाम दिये है, आत्मा क्रिया है, अनुभव एक क्रिया है प्रमाण एक क्रिया है, प्रमाणिकता एक नित्य क्रिया हैं। इस ढ़ग से जागृत क्रिया में प्रमाणिकता ही जीवन का पूंजी है।

जीवन के पूंजी के रूप में प्रमाणिकता जब तक समायी रहती हैं, तब तक मानव स्वयं में विश्वास करता हैं। जागृति का मतलब स्वयं मानव अपने आप को समझने के बाद प्रमाणिकता सदा सदा के लिये बना रहता हैं। एक बार समझने के बाद उसका निरंतरता होती ही हैं, एक बार हम कोई झाड़ को देखकर समझ लेते हैं, उसके बाद वह समाप्त होता ही नहीं हैं, सदा बना रहता हैं, सदा सदा उस झाड़ के नीचे खड़े रहने कि जरूरत नहीं होती हैं। वह झाड़ जब कभी सामने आया उसका उपयोगिता हमको पता ही हैं। इस प्रकार मानव जब कभी एक बार जागृत हो गया, उसके बाद उसका निरंतरता होता ही रहता हैं, प्रमाणिकता ही जीवन का संपदा हैं। यही चीज प्रत्यावर्तन में अनुभव के रूप में परावर्तन में प्रमाण के रूप में होता हैं, ये दोनो क्रिया निरंतर करते रहते हैं। अनुभव के

आधार पर ही बाद में बोध नाम का किया, इच्छा नाम का किया, विश्लेषण नाम का किया ये सब चीज निरंतर कियान्वंय होते हुए, जीवन समग्र जागृति के अर्थ में काम करता हुआ हमको मिला मैं जागृति पूर्वक हर काम करता हूँ, इस लिये सुखी रहता हूँ, हम जो जागृति पूर्वक काम करके, सोच के, विचार के, अनुभव करके, दे के, ले के, हम अभी तक दुखी नही हुआ हूँ, इतना तो आप भी करते हो, इतना मैं भी किया हूँ, हम हर मुद्दे पर सुखी रहता हूँ, काहे के लिये? हम जागृत रहता हूँ, सूखी रहता हूँ। वही चीज करीये, भ्रम पूर्वक, हर जगह में आदमी कुठिंत, प्रताड़ित, दुखी, पराश्रीत, ये बना ही रहेगा। इसके लिये एक ही उपाय हैं, हर आदमी को समझदार बनाया जाए। बहुत छोटा सा काम हैं, अभी हम शिक्षा का उपकम बहुत सारा बना ही रखे हैं, उसमें समझादारी को समा लेना ही एक मात्र उपाय हैं। इससे हर व्यक्ति नैसर्गिकता के साथ उचित कार्य करना सीखेगा, जिससे प्रदुषण होने का जो सिलसिला है वह रूक सकता हैं। अब आदमी जो हैं, दुष्ट प्रवृत्ति से सबको रोजी–रोटी दे दिया, जबकि पहले सोचा गया यंत्र बना करके सबका रोजी रोटी को छीन लिया, ये बात आपके सम्मुख प्रस्तुत हैं। सबके रोजी रोटी कैसे छीनी? सबके लिये यंत्र बना दिया, फलस्वरूप रोजी रोटी छीन गई। जैसे मिक्सी बन गई, अब हाथ का ट्रेनिंग आ गया, कुछ न करों। उसी प्रकार औषधी तंत्र में भी यही हैं, तुम कुछ नहीं करना, शरीर का अंग प्रत्यंग, हम दवाई देते हैं, उससे काम निकल जायेगा। जैसे गुर्दे से संबंधित रोग, खुन में होने वाले रोग को हम छान बीन कर अलग कर देते हैं, अब काहे के लिये गुर्दा काम करेंगा? पता चला चार दिन के बाद दूसरा गुर्दा लाओं। इस ढ़ंग से सम्मोहन और निरूत्तर विधि सामने आदमी के पास कोई उत्तर नहीं है। उस विधि से आदमी को फसाया जा रहे है, इस पर पूनः विचार करने के जो ताकत, योग्यता, कियाशिलता हैं, वो सभी चीज तभी स्वंय स्फूर्त होते हैं, जब आदमी जात समझदार होते हैं, भ्रम का मूल कारण हैं, शरीर को जीवन समझना। भौतिक बाद भी जीव कहता हैं, आदर्शवाद भी जीव कहता हैं, जीव से अधिक आदमी को बताया नहीं, मैं बता रहा हूँ।

1– आदमी ज्ञानावस्था का इकाई है।

2– समझदार होना ज्ञानावस्था का प्रमाण है।

3– समझदारी का प्रमाण है, समाधान।

4– समाधान का प्रमाण है, सुख, समृद्वि, अभय, सहअस्तित्व, ।

5– हर एक परिवार समृद्वि चाहता हैं।

6– एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के परस्परता में निरंतर स्नेह विश्वास चाहते हैं।

यहॉ तक तो हम आ चुके हैं, पहले घर के स्वामी आते ही सब घर के अन्दर छुप जाना, भाग जाना, ऐसा करते रहें हैं। आज कल ऐसा नहीं है, हर बच्चे गृह स्वामी को भी जॉचने के जगह में आ गये हैं, इसलिये गृह स्वामी का काम यह बनता हैं, स्नेह पूर्वक विश्वास पूर्वक परिवार के साथ जीना, तब गृहस्वामी के जगह नाम होता है,

घर परिवार का भागीदारी एक सदस्य हैं, यही कुल मिलाकर प्रमाणित होता हैं। साथ–साथ रहना को यदि हम सच मानते हैं, उस स्थिति में समझदारी की आवश्यकता है, मानव जीवन के संबंध में मुख्य उपलब्धि, वह जीवन समझदार होने के विधि में हैं। मनुष्य शरीर समझदारी को प्रमाणित करने योग्य हैं, जीव शरीर उसके योग्य नहीं, मनुष्य जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में हैं। जीव कोटी का जीव भी शरीर और जीवन के साथ रहते हैं। केवल मनुष्य ही समझने योग्य है और प्रमाण को प्रमाणित करने योग्य हैं, इस बात की पुष्टि में ये आपके सामने प्रस्तुत हुई, मैं विश्वास करूगा इस पर आपका ध्यान गया हैं, इसमें आप विश्वास करेगें, शरीर का जो संरचना हैं मूलतः सभी धातुऍ और मेधस तंत्र जो जीवन अपने जागृति को व्यक्त कर सकता हैं, इससे कम विकसित मेधस तंत्र और सप्त धातुओं का संतुलन जीवन संसार हैं। उसके पीछे जो भौतिक रासायनिक संसार हैं, उसमें मेधस तंत्र का कोई लक्षण नहीं है, ना उसमें वह प्रकाशन हैं, ना उसका प्रमाण है, इस ढ़ग से अपन निश्चय कर सकते हैं। हमारा जो कुछ भी चिंतन है, ये मानव से सम्बंधित ज्यादा हैं, और मानव ही जागृति को प्रमाणित करने योग्य हैं, बाकी यांत्रिक रूप में रासायनिक भौतिक संसार कार्य कर रहा हैं, उसमें त्व सहित व्यवस्था प्रकाशित हैं। मनुष्य ही एक मात्र इकाई हैं, अपना त्व सहित व्यवस्था को पहचान नहीं पाया, इस चिंतन के बाद आप और हम त्व सहित व्यवस्था में होना पहचान सकते हैं। जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में होने का मुख्य प्रयोजन क्या है? मानव अपने मानवत्व सहित अपने प्रमाणों को प्रस्तुत कर सकता हैं, प्रमाणों को प्रस्तुत करता है, तो व्यवस्था में ही होता है, व्यवस्था के अलावा दूसरा कोई प्रमाण भी नहीं होता हैं, प्रमाण व्यवस्था, जागृति, समाधान के रूप मे होगा, शरीर का संरचना गर्भाशय में होता है, परमाणु अस्तित्व में विकसित होकर जीवन पद में संक्रमित हुआ रहता हैं। भौतिक परमाणु और जीवन परमाणु का मौलिक अंतर क्या हैं?

1– भार बंधन, अणु बंधन से मुक्त हो जाता है।

इसी का नाम है जीवन परमाणु, चैतन्य परमाणु, चैतन्य इकाई, इसी चैतन्य इकाई में सम्पूर्ण समझदारी को व्यक्त करने की संम्भावना भ्रुण अवस्था में होता है, उसके बाद मनुष्य शरीर में शनैः–शनैः जीव शरीर में कुछ होता है, उसके बाद मनुष्य शरीर में शनैः–शनैः व्यक्त होते होते आज की स्थिति में पूरा जागृति को व्यक्त करने योग्य हो गये है। इसको मैं प्रमाणित किया इसलिये आप भी प्रमाणित कर सकते है, इसका मुख्य आधार यही हैं, मैं समझ गया, प्रमाणित कर दिया इस आधार पर, समस्त मानव जाति इसकों समझ सकते है, प्रमाणित कर सकते है, फलस्वरूप अस्तित्व में व्यवस्था परंपरा के रूप मे प्रमाणित कर सकते है, व्यवस्था में जी कर परस्परता में विश्वास को पूरा कर सकते है, समृद्वि पूर्वक हर परिवार जी सकता है, इस बात का आश्वासन इससे मिलती है, ये जीवन और शरीर के संयुक्त रूप मे होने वाले प्रयोजन, जीवन का स्वरूप गठन पूर्ण परमाणु होने के कारण, जिसमे तात्विक रूप में अंशों को घटना–बढ़ना से मुक्ति पाया रहता है, ये पहला वैभव है, उसमें परिणाम होना बंद हो जाता है। परिणाम का अमरत्व ही जीवन पद है, ये तात्विक रूप में होने वाली बात है, इसको समझदारी से स्वीकारने की आवश्यकता है।

2– अक्षयबल, अक्षयष्शक्ति।

अक्षयबल के रूप में सभी मानव के जीवन में समानता है, जीवन के स्वरूप में भी समानता है और जीवन लक्ष्य में भी समानता है। कल्पनाशीलता को हम कितना भी करते है, और करने की पूंजी बना ही रहता है, आशा को हम जितना भी कर पाते है और करने की पूंजी यथावत बना ही रहता है, विचारों को हम जितना भी कर पाते है और करने की पूंजी यथावत बना ही रहता है, संकल्प, निष्ठा, प्रमाणित को हम जितना भी कर पाते है और करने की पूंजी यथावत बना ही रहता है,

और प्रखर होते जाता है और उज्वल, सही सटीक होता जाता है, इस आधार पर हमारा विश्वास ये होता है, हर मनुष्य जीवन रूप में समान है, इनमें समानता ।

क– गठनपूर्ण परमाणु के स्वरूप में ।

ख– अक्षयबल, अक्षयशक्ति के रूप में ।

ग– लक्ष्य के रूप में ।

जीवन लक्ष्य–सुख, शांति, संतोष, आनंद हैं।

मानव लक्ष्य–समाधान, समृद्वि, अभय, सहअस्तित्व।

जीवन का अध्ययन मानव ही कर पाता है, जीवन, शरीर के साथ रहकर ही जीवन का अध्ययन करेगा, जीवन जागृति को प्रमाणित करेगा, मानव परंपरा में ही ये प्रमाणित होगा, और कोई परंपरा में ये प्रमाणित होने वाला है नहीं। ये ही मौलिक वरदान हैं मानव कुल के लिये, मानव कुल के मौलिक वरदान को हम अभी तक पहचान नहीं पाये, पहचाने के लिये रास्ता को खोजते रहे, वह रास्ता इस प्रकार से निकला है। इस प्रकार शरीर का रचना गर्भाशय में होते हुए जीवन के संपूर्ण जागृति को प्रकाशित करने योग्य रचना रहता है, ये मानव परंपरा में प्रमाणित होने कि बात, मानव ही देवमानव, दिव्यमानव, पद में प्रकाशित होकर अपने जागृति को व्यक्त करता है, मानव पद में, देव मानव, दिव्यमानव पद में क्या होता है, वह मानव व्यवहार दर्शन, मानव संचेतना वादी मनोविज्ञान में काफी विस्तार रूप में बताया गया है।

हमारा आशा, विचार, इच्छा, संकल्प, प्रमाणिकता आदि जो कार्य है, इसमें बल को, हम स्थिति में देखते है, और गति को शक्तियों में देखते है। जैसे आशा, गति में, आस्वादन स्थिति में होता है, आस्वादन आप हम सभी करते है, ये स्थिति में होता ही है, आस्वादन के लिये चयन कही ना कही, बाहर से ही होता है। बाहर से भीतर से मतलब क्या होता है? एक तो सम्बंध के आधार पर मूल्य, मूल्यों का आस्वादन के आधार पर चयन होना एक विधि है, संवेदना के आधार पर चयन होना, दूसरा विधि है, संवेदना के आधार पर जो चयन होता है, उसको भ्रमित बुद्धि देखा गया है, और मूल्यों का जो चयन होता है, उसको जागृति विधि के रूप में पहचाना गया है।

विचारों में जो विश्लेषण करने का कार्यक्रम है, वह नजरिया पर आधारित रहता है, मानव के पास नजरिया के दो ही तरीका है।

1– प्रिय, हित, लाभ।

2– न्याय, धर्म, सत्य।

इन दो तरीके से जीवन अपने को विश्लेषित करने का कोशिश करता है, और जब भी प्रिय, हित, लाभ के साथ विश्लेषित करने जाता है, इंद्रिय सापेक्ष विधि से विश्लेषित करता है, जब न्याय, धर्म, सत्य को विश्लेषित करने जाता है, अनुभव के आधार पर विश्लेषित करता है, इसका मूल पहचान यही है, जीवन ही अनुभव करता है, आत्मा ही अनुभव करता है, यह बात आगे आता है, इसके बाद आता है, साक्षात्कार, बोध और चित्रण। चित्रण में स्मृतियॉ काम करते है। शब्दों का स्मृति होती है, रूप का भी स्मृति होता है, किन्तु धर्म और स्वभाव की स्मृतियॉ नहीं होती है, इसके साक्षातकार होना ही

पड़ेगा। केवल स्मृति से स्वभाव, धर्म को पहचाना नहीं जा सकता, शब्दों से पहचाना नहीं जा सकता, इसको शब्द के अर्थ में पहचाना जा सकता है।

धर्म एक शब्द है, धर्म के अर्थ को हम पहचानते है, साक्षात्कार करते है, जैसे मनुष्य सुखधर्मी है, सुख शब्द में नहीं आता है, साक्षात्कार में आता है, अनुभव में आता है, बोध में आता है, यह हम संकल्प पूर्वक प्रवर्तित हो के प्रमाणित करते है, इस ढ़ंग से चिंतन पूर्वक जो चित्रण होता है, न्याय, धर्म, सत्य के आधार पर चित्रण होना शुरू हो जाता है। हम जितने भी कार्यक्रमों को बनाएँगे,

वह सभी चित्रण, न्याय, धर्म को प्रमाणित करने का अर्थ में ही होता है। इतने में संवेदनाएँ नियंत्रित हो जाती है, चिंतन पूर्वक जीने का प्रमाण यही है, संवेदनाएँ नियंत्रित हुआ या नहीं हुआ। इसको हर कोई जॉचा करो, उसमें हर व्यक्ति को उतना ही अधिकार है, जितना मुझकों अधिकार है, वह आप अपने में जॉच कर देखिए यदि संवेदनाएँ नियंत्रित हुई है, न्याय, धर्म, सत्य के चौखट में ये संवेदनाएँ अपने को स्थिर होना पाया, माने संवेदनाएँ नियंत्रित हो गया। यदि संवेदनाएँ न्याय, धर्म, सत्य से बाहर भागने लगा, ये नियंत्रित नहीं है, यदि इस कसौटी से हम उभर जाते है, स्वाभविक रूप में न्याय, धर्म, सत्य का बोध होता ही है, यह अध्ययन क्रम में होने वाली प्रक्रिया है, जैसे ही न्याय, धर्म, सत्य हमको बोध हुआ, संबंधों को बोध पहले से ही रहता है, चित्रण रहता है, साक्षात्कार रहता है, संबंधो में मूल्यों का निर्वाह करने में हम सक्षम हो जाते है। संबोधन तो हम पहले से ही कर रहे है, मॉ, पिताजी, भाई करते रहते है, ये आयु, परिस्थिति, आवश्यकता को देखकर बदलती चली जाती है। क्या चीज? निर्वाह करने के बात। क्या निर्वाह करने की बात। विश्वास को निर्वाह करने की बात। एक समय में जैसे विश्वास निर्वाह होगा, दूसरा बार ऐसा नहीं हो पाता है। कब तक? भ्रमित रहने तक। विश्वास जैसे लगता है, विश्वास हुआ नहीं रहता है। विश्वास होने के लिये साक्षात्कार होना बहुत अनिवार्य है। हर संबध को जो स्वभाव धर्म है, ये हमको साक्षात्कार होने की आवश्यकता है, इसमें कसौटी की बात यह है, संवेदना को नियंत्रित कर पाना, हमारा कसौटी ठिक है, हम स्थिर हुए, निश्चित हुए, निश्छल भी हुए। इसमें दोहरा व्यक्तित्व कि संभावना मर जाती है, इस स्थली में हर व्यक्ति इसको अनुभव करेगा, दोहरा व्यक्तित्व को मृत्यु स्थली यही है। जिस क्षण में जिस मुहुर्त में हम अपने को जॉच पाते है कि, संज्ञानशीलता में संवेदना नियंत्रित हुआ, उसी क्षण में मृत्यु होता है, दोहरा व्यक्तित्व का। दोहरा व्यक्तित्व ही है, भ्रम का सबसे बड़ी भारी कवच, यहीं भ्रम और जागृति का निर–क्षिर न्याय हो पाता है। इसका लक्ष्मण

रेखा यही बन पाता है, सही गलती का, जागृति भ्रम का लक्ष्मण रेखा यही बनता है, इस ढ़ग से जीवन वैभव कितना जबरदस्त है, इसको आप देख सकते है, इस बोध के बाद स्वाभाविक है, बोध को प्रमाणित करने के लिये तत्पर होते है, अनुभव होता है, अनुभव विधि से पूरा जीवन अनुभूत होता है। अनुभूत का मतलब अनुभव के रूप में सभी प्रकियाएँ होने लगता है, अनुभव आत्मा में होता है, आत्मा में अनुभव किया हुआ बुद्वि में बोध और संकल्प में आता ही है,

बिना अनुभव वही बोध और संकल्प, चिंतन और चित्रण में आता ही है, चिंतन और चित्रण पूनः तुलन और विश्लेषण में आते है, वही तुलन और विश्लेषण, आस्वादन और चयन में आता है। जागृति पूर्वक क्या आस्वादन होता है, मूल्यों का आस्वादन होता है।

भ्रम पूर्वक क्या आस्वादन होता है? संवेदना का आस्वादन होता है। अब आदमी स्वंय तय करे, संवेदना का आस्वादन करना है, या मूल्यो का आस्वदन करना है, इस ढ़ंग से यह अध्ययन की गरिमा है, इसमें जीवन स्वंय में जागृत होने वाली, जागृति परंपरा में मानव का आश्वस्त होने के बात फलस्वरूप परिवार में सुख, समृद्वि, समाज में सुख, समृद्वि, वर्तमान में विश्वास, व्यवस्था में हम सुख, समृद्वि, अभय, सहअस्तित्व को प्रमाणित कर देते है, इसे हर व्यक्ति परीक्षण, निरीक्षण और निर्धारित कर सकता हैं, इसमें हर व्यक्ति स्वतंत्र है।

व्यक्ति के स्वतंत्रता में स्वत्व क्या होगी? जागृति ही होगी, समझदारी ही होगी, प्रमाण ही होगी, प्रमाणिकता ही होगी, ये जागृत मानव का स्वत्व है, इसको समझाने के लिये, अभिव्यक्त करने के लिये स्वतंत्र है। इसमें दो विधि है।

1– अनुभव मूलक विधि ।

2– अनुभव गामी विधि ।

अनुभव मूलक विधि से हम प्रमाणित होते है, अनुभव गामी विधि से हम प्रमाण को, दूसरो को बोध कराते है। अभी मैं अनुभव मूलक विधि से आपको बोध कराने की इच्छा से, हमारा अभिव्यक्ति है, अभी आप, हम यकीन करते है, जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में मानव होता है। भ्रमित मानव में शरीर को जीवन मानना ही मूल मुद्दा रहता है, जागृत मानव ।

1– जीवन कियाओं को पहचानता है।

2– अस्तित्व नियति को पहचानता है।

3– हर मोड़ पर समाधान मिलता है।

4– हर कार्य व्यवहार में न्याय को प्रमाणित कर देता है।

जब हम संज्ञानशीलता, संवेदनशीलता मुद्दा को साक्षात्कार करते है, संज्ञानशीलता प्रभावी होने के बाद संवेदनाएँ नियंत्रित होते है, यदि ये बात हमकों पूरा का पूरा स्वीकृत होती है, स्वीकृत तो सबको होता है, भ्रमित आदमी को भी स्वीकृत होता है, किन्तु स्वीकृत के बाद निष्ठा पैदा हो जाएँ, उसके लिये साक्षात्कार आवश्यक है। साक्षात्कार चिंतन में ही होता है, ये चिंतन में हम अपने को नियंत्रित पा लिया, हमारे व्यवहार में नियंत्रित होना प्रमाणित हो जाता है। चिंतन में हम समाधानित होना पा गया, व्यवहार में हम समाधानित होना पाते ही है।

चिंतन में हम न्यायिक होना पा गया, व्यवहार में हम न्यायिक होना पा ही लेते है। इसको पाने के बाद ये पता लगता है, मानव कितना बड़ा है, अभी तक जो हमारा बचपना है, आदमी को यंत्र में देखने के लिये, अथवा किताब में बैठ के देखने के लिये, ये सबको मूल्याकिंत होना बन जाता है। ये बहुत महत्वपूर्ण घाट है, इस घाट को मनुष्य ही पार करता है, जीव, जानवर नहीं करते है, हर मनुष्य को जीव, जानवर के साथ जोड़कर भाषा सिखाते है, कार्य प्रणाली को सिखाते है, निति शतक को सुनाते है, हम कैसे आदमी है आप ही मूल्याकंन कर लो। हमारा सारा बैसाखी, सारा भ्रम इससे टूट जाते है, सारे अतिवाद ध्वस्त हो जाता है। सर्व शुभ को जो हमने परिकल्पना में देखा, संभावना में देखा, योजना मैं देखा, कार्ययोजना में देखा, इस विधि से हम जागृति को पा गये, दर्शन की बात आ गये, दर्शन का मतलब ही होता है, समझना।

1– चिंतन ही समझने की पहला सीढ़ी है।

2– स्वीकार हो जाना माने बोध हो जाना।

3– अनुभव हो जाना माने तृप्त हो जाना।

जिसको हम साक्षात्कार किया, बोध किया, उससे हमको तृप्ति मिल जाना इसका नाम हैं, अनुभव। साक्षात्कार और बोध का तृप्ती बिंदु का आ जाता है, कर्मस्वतंत्रता, कल्पनाशीलता कि तृप्ती बिंदु उसी मुर्हत में आता है। कल्पनाशीलता का तृप्ती बिंदु कर्म स्वतंत्रता में होना कैसे होता है, वो तुरन्त उसका ध्रुवीकरण हो जाता है। उसी के साथ कर्म करते समय स्वतंत्र, फल भोगते समय परतंत्र वाला जो बात रहता है, उसका निराकरण हो जाता है, कर्म करते समय भी स्वतंत्र हो जाते है, फल भोगते समय भी

स्वतंत्र हो जाते है। भ्रम पूर्वक किया हुआ किसी भी कर्म फल का परीणाम है, फल बांटने में कोई लेता नहीं, संसार में बांटने जाने से कोई लेता नहीं, जागृत पूर्वक किया हुआ कर्मफल को हर व्यक्ति, घर में घाट में दरवाजा में, रस्ते में हर व्यक्ति लेने के लिये बैठे रहते है, इस ढ़ग से जागृति पूर्ण विधि से जो हम कर्म को करते है, उसका फल को कितना भी बांट सकते है, और भी कर्म कर सकते है, और भी बांट सकते है,इस ढंग से हम धनी होने का सिद्वांत बनता है, इसी आधार पर आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने की कार्यप्रणाली आती है। हमारा आवश्यकताएँ कम होना और संभावना अधिक होना, यह भी सिद्वांत इसी के साथ जुड़ती है। सब शास्त्र से और विचार से जुड़ने वाली स्थली जागृति है,

नही तो बाकी सब भ्रम पूर्वक शरीर से ही जुड़ा रहता है, अब कुछ भी वैज्ञानिक प्रकिया करों, किन्तु शरीर से ही संवेदना से ही जुड़ा रहेगा, ये शरीर संवेदना से जुड़ा हुआ जितना भी कार्यप्रणाली है, कही ना कही कुन्ठीत होता है, कही ना कही जितना हम अच्छा मान कर चले थे, उससे बड़ा प्रश्न आ जाता है, हम स्वयं क्या किया, उसको शोध करने के लिये और आवश्यकता बन जाती है, इसी कम में ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी सब समाये है, समझादारी ही दर्शन है।

1– जीवन को समझना।

2– अस्तित्व ही सहअस्तित्व है।

3– मानवीयता पूर्ण आचरण।

मानवीयता पूर्ण आचरण होना एक सहज किया होने से मनुष्य, परिवार में भी सुखी, समाज में सुखी, राज्य में सुखी, अपने में सुखी, पराये में सुखी, सभी अवस्थाओं में सुखी, बच्चों के साथ सुखी, बड़ों के साथ सुखी, वृद्वों के साथ सुखी, साथियों के साथ सुखी, संबंधियों के साथ सुखी, सब के साथ सुखी रहना बनता है। फल स्वरूप हम को सुखी करना बन जाता है। इसका एक सूत्र है जिसके पास जो पूंजी रहता है, उसको वह आवंटित करता है। भ्रमित मानव के पास दुख का क्षण होता है, परेशानी का क्षण होता है, परेशानी के क्षण में आदमी परेशानी को बांटता ही बांटता है। और सुख के क्षणों में सुख बांटता ही बांटता है। इस बात को मैंने अनुभव किया है, मैं समझता हूँ, आप भी अनुभव करेगें, और सुखी होगें, ये कुल मिला के जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में होने वाली प्रकियाएँ है । उसके बाद आता है, शरीर के साथ जीवन का जो कार्यकलाप है उसमें भ्रम और जागृति की दो बात पूरा हुआ। ये समझ में आया की जागृति यदि हमारा वरीय होता

है उसके लिये हम जी जान लगाएगें ही और उसमें हम जीएगें ही, जीनको ये जरूरत पड़ता है, वह अपना निष्ठा को प्रमाणित करेगा ही जिनकी जरूरत नहीं है, नहीं करेगा, क्या आपत्ति है? ये शरीर यात्रा तो बार–बार बनती रहती है, ये शरीर यात्रा में कोई नहीं माना आगे शरीर यात्रा में अनुकूल परिस्थितियॉ बना ही रहता है, वह जागृत होने की संभावना बना रहता है।

– व्यवहार दर्शन

– अनुभव दर्शन

–कर्म दर्शन

– अम्यास दर्शन

ये दर्शन का सूचना है।

सब का जिज्ञासा है, अनुभव दर्शन पर कुछ प्रकाश ड़ाले।

अनुभव पूर्वक ही हम ठोस पूर्वक अपने बात को प्रस्तुत करना बनता है, उससे पहले अनुभव विहिन विधि से हम प्रस्तुत तो होते हैं, किन्तु वह ठोस पन नहीं आता है, हमको ये कहना पड़ता है, किताबों में लिखा है, यंत्र ऐसा बताता है। हम दूसरा कोई ना कोई संदर्भ को बताकर ही अपना सारा भाषा को प्रयोजीत करते है, नही तो हमारे पिताजी ऐसा कहे थे, हमारे बड़े लोग ऐसा कहे थे, हम लैबरैटरी में ऐसा देखा, हम क्या किए? ये बताना बनता नहीं, अनुभव मूलक विधि से हम स्वयं जिम्मेवार होना बन जाता है, मैंने अनुभव किया है ये उद्गार आता है, अनुभव के बाद अस्तित्व का नियम, अस्तित्व, अस्तित्व का प्रकिया, अस्तित्व में होने वाले विकास, विकास कम, जागृति कम, जागृति इन सभी के साथ जुड़ कर के हम कहते हैं, हम अनुभव किया है, हम ये कहते नहीं की, हम ये भाग को अध्ययन किया, ये कहते बनता है, समग्रता को अध्ययन किया, समग्रता में कितना सुगम है वह बात आपको बताना चाहते हैं, व्यापक वस्तु में एक–एक वस्तु होने का अवधारणा जब आ जाता हैं, मनुष्य भी व्यापक वस्तु में एक–एक वस्तु में एक है, उसमें से मनुष्य में जो विशेषता है वह यही है, जीवन और शरीर का संयुक्त रूप, जीवन कुल मिलाकर के अनुभव करने वाला वस्तु है, ये आपके स्वीकृति में आ जाता है, अनुभव करने के लिये मात्र जीवन है, जीवन में ही हमें जागृति करना है, अस्तित्व को सह अस्तित्व रूप में, जीवन की जागृति के रूप में, दोनो को हम को अनुभव करना है, इसका ना कोई दूसरा विधि है, ना किताब बन पाता है, हर व्यक्ति ही अनुभव का जिम्मेंदार है, अनुभव करने में कोई मिशन की, कोई माध्यम को हम यदि कहें, ये ठीक है वह होने

वाला नहीं। मनुष्य ही अनुभव करेगा, मनुष्य ही जिम्मेदारी की कसौटी में जिम्मेदारी को निरंतर जॉचेगा। क्या जिम्मेदारी? व्यवस्था में जीना जिम्मेदारी। समझदारी पूर्वक व्यवस्था में जीना बनता है, ये व्यवस्था को ही हम नियति कहते है, समग्र व्यवस्था को हम नाम दिया है नियति, नियति ही समग्र व्यवस्था है, ये समग्र व्यवस्था में हम भागीदार होने के लिये हम समझदार होते है, फलस्वरूप व्यवस्था में भागीदार करते हुए हम प्रमाणित हो जाते हैं, यही अनुभव का द्रष्ट फल है, ये फल को प्रयोग करने के लिये हर आदमी सह अस्तित्व में अनुभव होना, अनुभव किए रहना एक आवश्यकीय मुद्दा है, जब कभी अनुभव होगा, सह अस्तित्व में ही अनुभव होगा, इससे पहले आदर्शवादी विधि से एकांत में अनुभव होता है, ये बात को सूचना में दी थी, और उसकों समाधि स्थली बताया गया। उसको हम भले प्रकार से देखा, उसमें मैं अनुभव किया हूँ, ये घोषणा हम कर नहीं सकते, हम चुप हो जाते है, यहॉ हम समझदार हो गये ये भी नहीं बता पाते, नासमझ है, इसको भी घोषणा नहीं कर पाते। इस प्रकार की स्थिति में आ गये है, इसको भले प्रकार से देख लिया गया है। सहअस्त्तिव में अनुभव होने की स्थिति में, हम सहअस्तित्व को समझा हूँ, ये समझ में आता है। सहअस्तित्व में ही जीवन का अनुभव मुझको हो गया है, इसको हम घोषणा कर सकते है, जीवन का अनुभव होने के आधार पर हम न्याय, धर्म, सत्य को प्रमाणित करना बन जाता है। अस्तित्व में अनुभव होने के आधार पर सहअस्तित्व को प्रमाणित करना बन जाता है, अस्तित्व में समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना बन जाता है। सभी प्रयत्न का जो अभीप्सा, आवश्यकता और जागृति का पहचान ये इतना नहीं होता है।

इससे ज्यादा कुछ होता नहीं, इससे कम में आदमी प्रमाणित नहीं हो पायेगा। इससे कम में प्रमाणित होना संभव नहीं, इससे ज्यादा कुछ आवश्यक बनती नहीं। समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने के बाद हम न्याय, धर्म, सत्य को प्रमाणित करने की स्थिति में आ जाते है। यही ज्ञानवस्था की बहुत सारी उपलब्धि और परंपरा के रूप में प्रमाणित होने की संभावना, ये एक साथ उद्य होता है, किस आधार पर उद्य होता है? चिंतन में हम शरीर और जीवन का, जागृति और भ्रम का लक्ष्मण रेखा को देख लेते है। उस पार भ्रम है, इस पार जागृति, उस पार अन्याय है, इस पर न्याय है, उस पार समस्या है, इस पार समाधान। इस बात की साक्षात्कार हुआ रहता है, यही साक्षात्कार की महिमा है, इन महिमा के आधार पर हम कुछ भी योजना बनाते है, हम प्रमाणित होने के अर्थ में ही बना पाते है, इसीको प्रमाणित करने के अर्थ में ही योजना होती है। चाहे कुछ भी कर लो, कोई

भी यंत्र बना लो, कोई भी इमारत बना लो, मनुष्य का जहॉ तक मूल्याकंन है, प्रमाणित होने की मुद्दे पर आकर टिकती है, इसीलिए मनुष्य को अनुभव मूलक विधि से जीना आवश्यक है। अनुभव मूलक विधि से, अनुभवगामी पद्वति से अध्ययन कराना भी आवश्यक है। दोनो एक साथ हो जाता है। अनुभव दर्शन में इस बात को स्पष्ट किया है। जीवन एक ऐसा अमूल्य वस्तु है, नियति सहज् उपलब्धि है, इसमे ना कोई हस्तक्षेप है, ना व्यापक वस्तु इसको बनाने, बिगाड़ने में लगा है। दूसरे वस्तु जीवन को बनाने में, बिगाड़ने में कुछ भी हस्तक्षेप करने में नहीं है, हर एक जीवन के स्वरूप मे होनें के लिए और जीवन के स्वरूप में प्रमाणित होने के लिए, जीवन के स्वरूप में निरतंर रहने के लिए, ये निरंतर सहायक हुए, इस बात को स्पष्ट करता है, अनुभव विधि से यदि हम अपने मूल्यों को पहचान लेते है, वो नित्य निरंतर प्रमाणित होने का प्रवाह बन जाता है। अनुभवात्मक अध्यात्मवाद में यही है। सत्ता में अनुभूत होता हूँ, सत्ता में समग्रता को अनुभव करता हूँ, सत्ता में समग्रता के साथ व्यवस्था का अनुभव करता हूँ।

पूर्वाजों ने एक भाषा दिये थे, आध्यात्म को व्यापक, उस व्यापक को हमने हर एक परस्परता के बीच में प्रमाणित करने की विधि दिया है, और इस विधि से व्यापक वस्तु सबको बोध होने की बात आ गई। पॉचवी पढ़ने वाले बच्चे भी व्यापक वस्तु को पहले बोध करते है, उसके बाद एक–एक वस्तु को पूरा बोध करना बनता है।

एक–एक वस्तु को बोध करने के लिये रूप स्वरूप, गुण, स्वभाव, धर्म इन चारो को बोध करना पड़ता है, केवल व्यापक वस्तु में सर्वत्र विद्यमानता और पारदर्शीता, पारगामियता से बोध करने की आवश्यकता बनती है। सबको बोध होगा, इस आधार पर हम शुरूआत किये। अनुभवात्मक अध्यात्मवाद मनुष्य को सार्थकता के स्वरूप में स्थापित करता है। धर्म सहज् विधि से जीने के लिए अभ्यास दर्शन, कर्मदर्शन ये दोनो नियोजित होते है, न्याय, धर्म, सत्य पूर्वक जीना ही, इसको प्रमाणित करना ही, जागृति को प्रमाणित करना है। जागृति स्वंय में सहअस्तित्व रूप में है। एकांत रूप में कोई जागृति नहीं है। एकांत का अंतिम बिंदु समाधि है। इससे हम अच्छे है, बुरे है, इसको हम घोषित नहीं कर सकते। हम समझा हूँ, नहीं समझा हूँ, इसको घोषणा नहीं कर पाते। यदि आपको शंका है तो समाधि की स्थिति को पाइये, उसके बाद घोषणा कीजिए। समाधि में कोई प्रमाणित होने की प्रवृत्ति नहीं है। उसका आशय बताया, योगस्य चित्त्, वृत्ति निरोधः, चित्त् वृत्ति चुप हो जाये इसी को निरोधः कहते है, निरोधः होने के बाद यह प्रमाणित होने की आवश्यकता नहीं। एकांत में कोई चीज प्रमाण होता नहीं, दूसरा एकांत

नाम की कोई घाट नहीं है। ये दोनो के नहीं होने के आधार पर व्यर्थ का प्रयास करना होता है, यदि किसी को बहुत ज्यादा जरूरत हो तो, कुछ नहीं कहेगें, किन्तु इसमें सार्थकता तो कुछ भी नहीं है, अनुभवात्मक अध्यात्मकवाद नाम इसी लिए रखा, एकांतवाद में अनुभव है, कहते रहे, हम कहते है, सहअस्तित्व में ही अनुभव है। इसमें मौलिक अंतर क्या है, व्यापक वस्तु को अध्यात्म नाम दिया है, ''आधारं आत्मानाम, यत्रस्य तत्र अध्यात्मः'', अध्यात्म को हम यदि परिभाषा करते है, सभी आत्मा का आधार है। हम पदार्थात्मा, प्राणात्मा, जीवात्मा, ज्ञानात्मा के रूप में प्रतिपादित किए है। आत्मा मध्याशं को बताया है, परमाणु के मध्याशं को आत्मा बताया है। आत्मा मध्यस्थ किया करता है, इस कारण से सम–विषम का बाधा, होता नहीं है। मध्यस्थ किया के साथ यदि आश्रित कियाएँ बुद्वि, चित्त्, वृत्ति,मन काम करने लग जाते है, इसको हम जागृति कह रहे है, इस ढ़ंग से होता भी है, मैं स्वयं इसका प्रमाण हूँ, इसके सार्थकता हर आदमी समझदार होने उपरांत प्रमाणित करने के पद्वति से आप देखिये, इसके मूल में अध्ययन नाम की चीज आती है, अध्ययन का मतलब है, ''अधिष्ठान पूर्वक अनुभव के साक्षी में, अनुभव के रोशनी में, अनुभव के अर्थ में जो स्वीकृतियॉ होती है, इसका नाम है, अध्ययन'' अध्ययन के मुद्दे पर हम ध्यान दिये कि स्मरण पूर्वक अध्ययन के रोशनी में हम जितने भी स्वीकृतियॉ पा लेते है, इसको हम अध्ययन कहा है, समझदारी का विश्वास करने का ठौर है, '' बोध होना, अर्थ का ही बोध हो पाता है''। वस्तु के साथ अर्थ बना रहता है, शब्द के साथ अर्थ बना रहता है, शब्द के साथ जो अर्थ बना रहता है, वह वस्तु सहित है, वस्तु में निहित अर्थ सहित शब्द है, जैसे–राम। राम एक नाम है। राम कोई वस्तु के रूप में मिल जाता है, तो इसका नाम है राम। वह वस्तु में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म निहित रहता है, वस्तु का अर्थ में जाते है, तो रूप, गुण, स्वभाव, धर्म, के रूप में हमकों प्राप्ति होती है, और शब्द को अर्थ को हम ले जाते है, तो वस्तु रूप में मिलता है। वस्तु का अर्थ रूप,गुण,स्वभाव,धर्म है, और शब्द का अर्थ वस्तु है, ये मुख्य मुद्दा है। इस ढ़ंग से प्रमाण क्या होगा, वस्तु होगा या शब्द होगा? सोचने पर पता चलता है, अस्तित्व में वस्तु ही प्रमाण है, ना केवल शब्द। शब्द से इंगित वस्तु मिलने पर ही प्रमाण है,

प्रमाण का स्वरूप वस्तु है ना कि शब्द। वस्तु में रूप, गुण, स्वभाव, धर्म अविभाज्य है। कोई भी वस्तु रहेगा, कोई संज्ञा में रहेगा, वह उसी अर्थ को प्रस्तुत करता है, क्या अर्थ को? जो रूप, गुण, स्वभाव, धर्म उसका होता है।

उसको बताने के लिए सारे अस्तित्व में चार अवस्थाएँ पाये।

1– पदार्थावस्था

2– प्राणावस्था

3– जीवावस्था

4– ज्ञानावस्था

ज्ञानावस्था में मानव को पा करके मानव का रूप, गुण, स्वभाव, धर्म की एक संम्पूर्णता में अध्ययन है, जीवन और शरीर के सह अस्तित्व में, उसके बाद जीवन के रूप में अध्ययन किया, जीवन क्या कार्य करता है, इसको भी हम अध्ययन किया, अनुभव किया, और उसके बाद शरीर के रूप में क्या कार्य होता है, क्या कार्य को प्रमाणित करता है इसको भी अध्ययन किया । इससे स्पष्ट रूप में दो कार्य आते हैं, शरीर में – 1. क्रियावाही 2. ज्ञानावाही दो क्रिया होता है।

ज्ञानावाही क्रियाएँ ज्ञान से संपादित होते है, क्रियावाही क्रियाएँ शरीर के व्यवस्था से संपादित होते है, हाथ, पैर, नाक, कान, ये सब क्रियावाही है, किन्तु इसमें होने वाले जो कार्यक्रम है, संवेदनाएँ है यह जीवन के बिना होता नहीं, जीवन के साथ ही संवेदनाएँ शुरू होता है, जीवन शरीर को पहले जीवन्त बनाए रखता है, और ज्ञानवाही तंत्र पर अपने संकेत को प्रसारित करता है, फलस्वरूप शरीर में संवदेनाएँ प्रमाणित होता है, हर व्यक्ति इसको अनुभव करता है, इस क्रम में ये बताया, संवेदनाशीलता पूर्वक मनुष्य व्यवस्था में जीना बना नहीं, ना तो परिवार व्यवस्था और ना समाज व्यवस्था। दोनों नहीं आने से पूर्नविचार की आवश्यकता थी। इस विधि से क्या हुआ? संज्ञानशीलता पूर्वक जीना आ जाता है, संवेदनाएँ नियंत्रित होता है, फलस्वरूप हम व्यवस्था में जीना प्रमाणित हो जाता है, अध्यात्मवाद, आदर्शवादी के अनुसार संवेदना को इंनजेक्सन दे कर के मृत्युशया में सुलाओ, ये कहते हैं, संवेदनाएँ ना हो, भौतिकवादी ये कहते हैं, संवेदना में डूबे रहो एक कहता है, बिल्कुल इस को अलग कर दो, एक कहते है इसी में में डूबे रहो, अब इसमें कहॉ जाए आदमी? ये सोचने की मुद्दा है हम को जो अनुभव हुआ है, यही है, जीवन्त शरीर में संवेदना का होना एक स्वाभाविक प्रकिया हैं। एक अनवरत प्रकिया है, ये व्यवस्था के अर्थ में यदि संयत होता है, इसमें मानव परंपरा में कोई अड़चन नहीं है, यदि व्यवस्था के अर्थ में संयत नहीं होता है, उसमें मानव परपंरा में सारा परेशानियॉ आएगी, जो आज भोग रहे है, एक प्रकार का जाति ये कहते हैं, सब को मार ड़ाले, हमारा जाति पैदा करे, किन्तु घटित नहीं हो पाया इसी प्रकार से मनुष्यो में अनेकानेक उद्गार निकलती है, इसको काट दो, उसको मिटा दो। ये संवेदनाओं का अतिवाद कहलाया हम

बहुत भूगते है, हम रोने लगे, रोने से क्या होगा? रोने में अच्छा अवश्य लगा, हुआ कहॉ अच्छा? अच्छा लगना, अच्छा होना में दूरी है कि नहीं है? दूरी को पाटना जरूरी है की नहीं, ये सोचने का मूद्दा बनता है, उसमें से अच्छा होने को हम वरा, अच्छा लगने को हमने नहीं वरा, उससे क्या हुआ? सेवदनाए नियत्रित होने का द्रष्टा मैं बन गया, कितना छोटी सी बात है, मैंने भावावेश से रोना, गाना, नाचना, सारा विलाप, प्रलापकरना, चीखना, चिल्लाना, हाथ–पैर पटकना ये सब हम करके देखे है, उससे कुछ भी नहीं निकला, तब हमे लगा होना क्या चाहिए? होना ये चाहिए, संवेदना को देखने के लिए दृष्टा पद–प्रतिष्ठा है, दृष्टा पद प्रतिष्ठा तभी होता है, संवेदना से जो करने जाते हैं, संज्ञानशीलनता में संवेदनाऍ नियंत्रित रहते है, तब संज्ञानशीलता का हम द्रष्टा होते है, जीवन ज्ञान का दृष्टा जीवन ही है, ये बात हम समझे हैं, इसलिए हमने जीवन ही जाना, दृष्टा, कर्ता भोक्ता पद में है। इस बात को हमने घोषणा किया है, भोगने वाला भी जीवन है, शरीर थोड़े भोगता है, दर्द को? जीवन्त रहता है शरीर तब तक दर्द, उसके बाद कहॉ दर्द? मरा हुआ आदमी को कहॉ दर्द होता है, जला देते, गाड़ देते सारा कर्म करते है, इसलिए शरीर को दर्द होता है, ये बात हम को समझ में नहीं आया, हम ये समझे शरीर में दर्द नहीं होता है, जीवन दर्द को पहचानता है, फलस्वरूप दर्द से मुक्ति का उपाय खोजता है, उसी कम में पहले से हम आयुर्वेद को सोचा है, ज्योतिषी को सोचा है, ये बात को सोचते चले आए, अभी भी सोचते रहते है, संज्ञानशीलता पूर्वक हम संवेदनाओं को नियंत्रित होता हुआ देख पाते है, संज्ञानशीलता प्रमाणित होता है, सार्थक होता है, यही दृष्टा पद प्रतिष्ठा है, ऐसे दृष्टा पद प्रतिष्ठा में जागृत जीवन रहता है, जीवन का वैभव, अनुभव का वैभव है, उनको प्रमाणित कर देना, दृष्टा पद में पहचान लेना ही, अनुभव का वैभव यह है, उसको प्रमाणित कर देना दृष्टा पद में पहचान लेना ही अनुभव है, उसका मतलब यह है स्वानुशासित होने का मतलब यही है, इसी व्यवहार को अनुभव दर्शन में लिखा।

इस ढ़ंग से दर्शन विचार, शास्त्र निष्पन्न हुई, सह अस्तित्व में ही हम प्रमाणित होते हैं, अनुभव का

` भी प्रमाणित कर पाते हैं, न्याय को भी प्रमाणित कर पाते है, समाधान को भी प्रमाणित कर पाते हैं, ये तीन चीज को प्रमाणित कर देना ही जागृत जीवन हैं, ये जागृत जीवन में संवेदनाए नियंत्रित होता हैं, ये करते हुए हम आराम से जी सकते है, सुख से जी सकते हैं।

दर्शन वाद और शास्त्र

अनुभव के बाद अनुभवात्मक अध्यात्मवाद लिखना, वाद लिखने के बाद शास्त्र लिखना, शास्त्र लिखने के बाद योजनाओं को लिखना, ये कार्य का संपादन मैंने किया है। मनुष्य जो व्यवहार और प्रमाणित करेगा, अनुभव तक इसका लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई इतना है। मैंने व्यवहार से ले कर, कर्म प्रमाण से ले कर, विचार और विचार से समाधान प्रमाण से ले कर, अनुभव प्रमाण तक पूरा लंबाई,चौड़ाई है,यही अनुभव दर्शन, व्यवहार दर्शन, कर्म दर्शन, अभ्यास दर्शन में लिखा। इसी लिए लिखा, संज्ञानशीलता से संवेदना नियंत्रित रहते हुए, देखने की दृष्टि से, समझाने की दृष्टि से, समझाने के बाद प्रमाणित होने के दृष्टि से, इसको ऐसा लिखा। इस ढ़ंग से पूरा दर्शन, विचार,ष्शास्त्र और योजना निष्पन्न हुई, ये पूरा सहअस्तित्व पर निर्भर है, ये सहअस्तित्व में ही हम सभी प्रमाणों को सभी अवस्था में प्रस्तुत कर पाते है। अनुभव को भी प्रमाणित कर पाते है, न्याय को भी प्रमाणित कर पाते है, समाधान को भी प्रमाणित कर पाते है, इन तीनो को प्रमाणित कर देना, कुल मिलाकर जागृत जीवन का रास्ता है, इन जागृत जीवन के रास्ते में संवेदनाए नियंत्रित होते है, व्यवस्था के अर्थ में हो जाते है, कोई उद्दमबाजी करते नही है, आराम से सुख पूर्वक जीते हुए परस्परता में विश्वास निर्वाह हो सकता है।

दर्शन का मतलब है, दृष्टा पद प्रतिष्ठा में जीवन है। सम्पूर्ण वस्तु को यथावत स्वीकार लेना ही माने सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति को स्वीकारा, सम्पूर्ण कियाओं को स्वीकारा, विकास को विकास कम, जीवन को स्वीकारा, जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में जागृति को स्वीकारा, जागृति को प्रमाणित करने का विधि को प्राप्त कर लिया है, शास्त्र में विधि को निश्चय किया गया है। हम जागृति को व्यवहार में, वस्तु में, उत्पादन मे कैसा प्रमाणित करते हैं, समझना तो व्यक्ति से व्यक्ति समझेगा, ये पुस्तिका केवल पठन के लिए होता है, पुस्तक से कोई चीज, सही चीज समझ में आएगा नहीं। आदमी के सानिध्य से ही सही चिज, सही ढ़ंग से दूसरे को समझ में आएगा। मनुष्य को हटा करके कोई अध्ययन हम नहीं करा सकते, सूचना दे सकते है, सूचना शब्द होता है, उससे उत्साह बढ़ सकता है, जिज्ञासा भी आ सकता है, किसी किसी को बहुत कम लोगों को जिज्ञासा आएगा, किन्तु

सूचना सब को हो जाती है। हमारे सारे कार्यक्रम में इसको मूल्यांकित की गई है। जागृत जीवन दर्शक होता है, जीवन का भी दर्शक, अस्तित्व का भी दर्शक। इसलिए दर्शन नाम दिया, दर्शन का मतलब है, समझना, समझने की सारी प्रकिया मिलकर दर्शन है।

वाद में तर्क संगत विधि से प्रस्तुत किया। तर्क संगत विधि से प्रस्तुत करने के बात विज्ञानियों से शुरू हुई। इससे पहले तर्क को वितण्ड़ाबाद, नास्तिक कहते थे, विज्ञान के बाद तर्क को स्वीकाराना, सुनना शुरू हुआ,ष्शुरूआत होकर वहॉ पहुॅच गया, तर्क ही तर्क रह गया, वस्तु नहीं रहा, कैसा दुष्परिणाम है। पहले तर्क स्वागतीय नहीं थी, बड़े लोग कहते थे, तुम कुछ पूछने का अधिकारी नही हो, ईश्वर के बारे में कुछ पूछने का अधिकार नही हो, विज्ञान उस रस्ता को खोल दिया। विज्ञान सिस्टोमेटिक, तर्क संगत है। इस विधि से जो प्रस्तुत हुआ, तर्क पसंद आई। तर्क करने के विधि में काफी लोग जुड़े, तार्किक हुए भी, तर्क पूर्वक प्रस्तुत करते भी है। इस ढ़ंग से तर्क संगत करना भी एक आवष्यक कार्य है, अभी भौतिकवाद के अनुसार ''द्वन्दात्मक भौतिक वाद'' प्रस्तुत किए, संघर्ष उसका केन्द्र बिंदु है, स्वयं के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए सबको मिटा सकते है। सबको मिटा दो अपने को बनाए रखो, ये मानव के लिए तर्क संगत, व्यवहार संगत, अनुकुल नहीं हुआ, इसीलिए जीने के जगह सर्वाधिक लोगों के लिए अस्वीकृतियॉ हुआ। करने जाते है, जीने जाते है, हस्तक्षेप के साथ ही जीते है, ये बात को भी स्वीकारा। उसके आधार पर हमने लिखा ''समाधानात्मक भौतिकवाद'' ।

संघर्ष उनका शुरूआत थी, हमारे अनुसार शुरूआत होता है पूरकता, सह अस्तित्व पूर्वक, पूरकता कम से विकास कम, विकास दोनो मानव को अध्ययनगम्य होता है, इस ढ़ंग से ''समाधानात्मक भौतिकवाद'' का सार्थकता हमको समझ में आया। उसके आगे ''व्यवहारत्मक जनवाद'' अभी जो प्रचलन में है, वह है, ''संघर्षात्मक जनवाद'' संघर्ष करो तुम जीते रहो, बाकी को मिटाते रहो, हम कहते है, सह अस्तित्व में सुख है, शांति है, संतोष है, समझ है, विश्वास है, सह अस्तित्व नित्य वर्तमान है।

उसके बाद ''अनुभवात्मक आध्यात्मवाद'' लिखा, अध्यात्मवाद तर्क संगत से लिखा, तर्क का मतलब विवके सम्मत विज्ञान, विज्ञान सम्मत विवेक, विवके का मतलब है, लक्ष्य को पहचानने की कार्यक्रम, पहचानने की विधि, लक्ष्य के स्थिरता के बारे में विश्वास करने की विधि को तर्क संगत विधि से जोड़ दिया, उसको जोड़ने के बाद हमको व्यवस्था के प्रति विश्वस्थ होने का आधार मिल गई, व्यवस्था के प्रति यदि विश्वास होता है, ऐसा तो आप और हम सब व्यवस्था वरते हैं, अव्यवस्था की बिल्कुल नहीं वरते है, परिस्थिति वश

अव्यवस्था में हाथ बटा देते हैं, इससे मनुष्य का दोहरा व्यक्तित्व का आसार हो गया, उस परेशानी को मिटाने के लिए हमने लिखा है, अनुभवात्मक अध्यात्मवाद। इसमें दोहरा व्यक्तित्व की जरूरत नहीं है। बिल्कुल आराम से, सक्षम से समाधान से, लक्ष्य से, जुड़ी हुई, समाधान से जुड़नें पर व्यवस्था में प्रमाणित हो जाते है, लक्ष्य से जुड़ने पर अनुभूत हो जाते है। इसीलिए अनुभवात्मक अध्यात्मवाद व्यवहारिक है, इसको अध्ययन करने की आवश्यकता है, पहले ''रहस्यात्मक अध्यात्मवाद'' । ''रहस्यात्मक अध्यात्मवाद'' व्यवहार में प्रमाणित नहीं होता, हम उसको बताया। अध्यात्म भी कोई वस्तु है, वह व्यवहार में ही प्रमाणित होगी।

शास्त्र में हमारे पास ''लाभोन्मादी अर्थष्शास्त्र'' हमारे प्रचलन में है, अभी शिक्षा संस्कार में प्रचलित है, उसका मूल सिद्वांत है, '' आवश्यकताएँ अनंत है, साधन सीमित है''। इसी लिए संघर्ष करना जरूरी है, मतलब लूट–पाट करना जरूरी है, वहॉ से अर्थष्शास्त्र को शुरू करते है, हम शुरू करते है, '' आवर्तनशील अर्थष्शास्त्र'' इसमे यह बताया गया है,जागृति के बाद मनुष्य की आवश्यकता निश्चित होते है, संयत होते है, निर्धारित होते है, सीमित होते है, संभावनाएँ अधिक हो जाते है। हमारा आवश्यकता पूरा होने की संभावना बढ़ जाता है। हमारा आवश्यकता कम हो जाता है, हम आवश्यकता से अधिक का उत्पादन कर सकते है, समृद्वि का अनुभव कर सकते है। आवर्तनशील अर्थष्शास्त्र में इस बात का प्रतिपादन है। इसके साथ एक और बात कही गई है, श्रम का नियोजन, श्रम का मूल्यांकन। श्रम मूल्यों के आधार पर वस्तुओं का आदान प्रदान। इस पद्वति को बोध के रूप में, अध्ययन के रूप में, सूचना के रूप में दिया। यदि यह अध्ययन गम्य हो जाता है, आदमी को स्वीकार हो जाता है, ये चोरी–चमारी सब समाप्त हो जाएगी, इसको यहॉ से रोका जा सकता है। वर्तमान में व्यापार संसार में जो उत्पादन से लेकर व्यापार तक अव्यवस्था बनी हुई है, ये दूर हो सकता है। अच्छे स्वंछन्द विधियों से हम वस्तुओं को निर्मित कर सकते है, हस्तांतरित कर सकते है, हमारा आवश्यकता के वस्तु को सुलभ रूप में प्राप्त कर सकते है।

''व्यवहारवादी समाजष्शास्त्र'', अभी हमारे पास जो समाज शास्त्र है, वह ''भोगोन्मादी समाजष्शास्त्र'' है, उसके स्थान पर हम ''व्यवहारवादी समाजष्शास्त्र'' लिखा, न्यायिक समाज। समाज शास्त्र का मतलब है, न्याय को प्रमाणित करना। सम्बंधो का पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभयतृप्ति विधि से हम सामाजिक होते है, उसका

प्रमाण में बहुत सारे मॉडल प्रस्तुत किए है, उसका अध्ययन से मनुष्य काफी आश्वस्त होगा, आगे की पीढ़ी भी अभ्युदय हो सकता है।

''मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान''

मनोविज्ञान मे इस बात को दर्शाने की कोशिश किया है मानव संज्ञानशीलता, संचेतना में संज्ञानशीलता और संवेदनाशीलता समाहित है, संचेतना को यदि हम प्रयोग करते है, किस प्रकार से हम व्यवहार कार्य करते है, कितने आयामों में करते है, कितने कोणों में करते है, उस बात को तर्क संगत विधि से बोधगम्य विधि से प्रस्तुत किया है, इस ढ़ग से दर्शन विचार और शास्त्र को प्रस्तुत करने की कोशीश किया, उसी के आधार पर योजनाओं को प्रस्तुत कर दिया वह है।

1– जीवन विद्या योजना 2– शिक्षा का मानवीय करण योजना 3– परिवार मूलक स्वराज योजना

मानव शरीर रचना

हरि–हर का मतलब किसी भी वस्तु का स्थिति और गति से है। अस्तित्व में ये देखा गया है, हर वस्तु में अपना स्थिति गति में ही होना पाया जाता है। इसलिए होने का स्मरण करते हुए, हर कार्य को हम शुरू करते है, होने के अर्थ में ही हमारा पूरा प्रस्तुतियॉ है, अभी शरीर होने के बारे में कुछ बात शुरू कर रहे है।

शरीर का संरचना गर्भाशय में होती है, उसको शिशु कालीन शरीर हम मानते है, गर्भाशय में शरीर रचना जितना लंबा–चौड़ा हो पाता है, उसको शिशु हम नाम दिया, ऐसा संरचना के मूल में ड़िम्ब कोशा के ड़िम्ब सूत्र और शुक्र के शुक्र, ये दोनो के संयुक्त वश भ्रुण बनता है, और भ्रुण बनने के उपरांत वह शिशु रचना हो पाता है, ये प्रकृति सहज विधि से आदि काल से होते ही आई है। इसके बारे में काफी लोगों ने सोचा समझा, वह कृत्रिमता को, मनष्य अपने ढ़ंग से इन सब प्रकिया को साध्य करने के लिए खोजा, सोचा। अतंतःगत्वा प्राण कोशा नहीं बना, प्राण कोशा के बिना, अभी ये सोच रहे है, चमड़ें से, पेड़ से, हाथ से, चमड़ी निकाल के और सूत्र को निकालकर उसको फलित बनाकर, पुष्ट बनाकर, उसको गर्भाशय या गर्भाशय के सदृश परिस्थिति में रखकर, शिशुओं को तैयार करने के लिए हम सोच रहे है। उसके साथ यह भी जुड़ा रहता है, यह हो–हल्ला हम

करते है, कि धरती पर जनसंख्या बढ़ गई, एक तरफ यह हल्ला, एक आदमी को करोड़ो में हम बना लेगें, पैसा भर चाहिए, ऐसा अब स्थितियॉ बना रहे है, इसमें बुद्विमत्ता क्या है? उसको सोचने पर पता चलता है, इस प्रकार का प्रयास का सर्वथा जरूरत नहीं है। अभी जितना जनसंख्या धरती पर है, उसमें से जितना सिर का दर्द है, वह सिर का दर्द, मनुष्य जाति सहने से अधिक हो चुकी है। उसका भी प्ररिणाम के बारे में लोग सोचते है, कि आगे ऐसा हो जाएगा, तैसा हो जाएगा,सब मर जाएगे, ये सब बात आ ही रही है। इस मुद्दे को देखकर लग रहा है, मनुष्य का संख्या को बढ़ाने की प्रवृत्ति, वैज्ञानिक विधि से हमको प्रयत्न करने की कोई आवश्यकता दिखता नहीं, व्यापारिक विधि से जो दिखता होगा, वह दिखता होगा, पेपरो में आता है, हल्दी बिल्कुल नागपुरी नाम देते है, खड़ी हल्दी को 1500रू कुछ भी पैसे लिखे रहते है, हल्दी पिसी हुई, 1200रू लिखा रहता है। आप भी सुने होगें, इसको हर दिन छापा जाता है, उसको सरकार सुनता है, उसको वैध मानता है, उसके बाद सरकार क्या है, आप ही सोच लो। व्यापार में जो आवश्यकता है, वह हम नहीं जानते, मानव परंपरा में इस प्रकार की प्रयत्न की आवश्यकता नहीं है।

शरीर संरचना जब गर्भाशय में तैयार होता है, 5 मास जब तक होता है, तब तक मेधस रचना पूरा हो जाता है। मेधस रचना के बाद ही कोई ना कोई जीवन शरीर को चलाने के लिए प्रयत्न करता है। इसका संकेत कैसे मिलता हैं? गर्भाशय में शिशु अपने आप में घूमने लग जाता है, हरकत शुरू करता है। इसको हर एक मॉ बनने वाली महिला पहचानती है। यदि बच्चा को सिरोभाग दाहिने तरफ यदि रहता है, अंत में वह लड़का के रूप में आता है, बाऍ तरफ रहने पर लड़की के रूप में आता हुआ, देखने को मिलता है, सर्वाधिक ऐसा ही प्रमाणित होता है। इस ढ़ंग से ये गर्भतंत्र में होने वाली प्रकिया भ्रुण से शिशु से जीवन और शरीर का संयुक्त रूप, जीवन और शरीर के बाद शिशु का पूरा आकार, प्रकार, स्वरूप और उसके बाद शिशु गर्भाशय से बाहर होने की उपरांत, वह कितना लंबा–चौड़ा, नस्ल, रंग होना है, उसका पूरा प्रमाणीकरण, ये कुल मिला के शरीर तंत्र का मतलब शरीर रचना में मेधस तंत्र बना रहता है।

मेधस तंत्र के आधार पर ही जीवन कार्य करता है, सारे संज्ञानशील प्रकिया को संम्पन्न करता है, ज्ञानवाही तंत्रो को तंत्रित करता है, संवेदनाए पूरा काम करता है, संज्ञानशीलता प्रमाणित करता है, जीवन और शरीर के संयोग में ज्यादा से ज्यादा हमको प्रमाण मिलता है।

संज्ञानशील कार्यकलाप में जीवन और शरीर का कार्यकलाप पूरा होता है। संज्ञानशीलता को पहचाने के बाद ये बहुत अच्छी ढ़ंग से प्रमाणित हो जाती है। केवल संवेदनाशीलता के विधि से इस बात को पहचानना बहुत कठिन है, क्योकि वंशानुषगीं विधि से जीवों में भी संवेदनशीलता व्यक्त हुई है। ये मनुष्य को भ्रम में ड़ालता है, भ्रम में ड़ालने का आधार, गधा, घोड़ा, कुत्ता, बिल्ली में भी संवेदनाएँ होती है। मनुष्य में भी संवेदनाएँ होते है, ऐसा जोड़ लेते है, ऐसा जोड़ कर मनुष्य को जीव संज्ञा में हमको बताते आए है, जब की जीव संज्ञा में मनुष्य नहीं होता है, ज्ञान संज्ञा में होता है, जब कभी हम ज्ञानावस्था के इकाई होने के कारण हम अपने कार्य कलापो को संज्ञानशील विधि से सम्पन्न करना शुरू करते है, उसके तुरंत बाद ही शरीर और जीवन को संयुक्त कार्य कलाप का जो प्रकिया है वह अपने में प्रमाणित होना शुरू करता है, इसको पूरा देखा जा सकता है।

प्रश्न– आपने शरीर रचना के बारे में जो बात कही, गर्भ में लिंग का निर्धारण कब होता है? जीवावस्था का शिशु का शरीर रचना और मानव शरीर, शिशु का शरीर रचना में क्या फर्क है?

उत्तर– गर्भ में शिशु संरचना के पूर्व भाग में, माने आदि भाग में भ्रुण नाम का एक अवस्था होता है। 27 दिन तक भ्रुणावस्था मानते है। वह भ्रुण का पुष्टिकरण होने के पश्चात, वह भ्रुण और शिशु रचना की बिच की एक अवधि है, वह 57 दिन तक बना रहता है, वह 57 दिन के पहले, 52 दिन के बाद जो कुछ भी परिस्थितियॉ रहते है, लिंग निर्णय होने की अवधि है। उसमें महिला शरीर बनना है, या पुरूष शरीर बनना है, वह उन 4–5 दिनों में निर्णय हो जाता है,

एक बार वह अवधि पार हो जाता है, उसके बाद वही बना रहता है। उसी के आधार पर 5वें महीने के बाद, दाहिने तरफ, बाएँ तरफ सर रहने वाले बात है, उसका भी संकेत मिलता है, इस ढ़ंग से शिशु संरचना के पश्चात जो संपूर्ण वंशानुषंगी विधि से बच्चों को एक विकास होना चाहिए, बालक, युवावस्था, प्रोढ़ावस्था इत्यादि अवस्थाएँ होना चाहिए, कम से होता हुआ आपको पता लगता है। ये हुआ मनुष्य शरीर रचना और उसका पालन पोषण से होने वाली, मनष्य का आकार, प्रकार, नस्ल और रंग के साथ, वह हर जगह में, हर वंश में, ये प्रमाणित होता ही रहता है।

मानव शरीर, गुण और नस्ले

मनुष्य का गुण रचना, गुणों को प्रमाण, ये ऐसा मानी जाती है, शरीर के आधार पर गुणों का प्रकाशन होता है, ऐसा भौतिक शास्त्र कहते है, क्योंकि, रचना के आधार पर गुणों का बात ऐसा सोचते है, ये सर्वथा गलत है। सर्वथा इस ढ़ग से है, कोई भी ऐसा नस्ल नहीं जो कुछ करता हो, दूसरा ना कर सकता हो, ऐसा कोई समझ नहीं है, ऐसा कोई कार्य नहीं है, ऐसा कोई उपलब्धि नहीं है, जो की दूसरा नस्ल वाले नहीं कर सकते हैं। ऐसा कोई काम आज तक आया नहीं, कोई जात वाले करते हो कोई काम वह दूसरा जात वाले नहीं कर सकते हो, ऐसा कोई काम, धाम, समझ कुछ नहीं हैं। हर प्रकार के नस्ल वाले, रंग वाले, जात वाले संप्रदाय वाले, जो एक व्यक्ति कुछ कर पाते है, समझ पाते हैं, पा लेते हैं, वह चीज को सभी नस्ल, रंग, जात, पात वाले पा सकते हैं, इस आधार पर क्या हुआ, हमारा कुछ बातें, रंग और नस्ल के आधार पर पाया जाता है, किन्तु रंग और नस्ल अलग–अलग होने मात्र से, हम जो कुछ भी पाते हैं, ये वाले नहीं पायेगा, ऐसा कोई चीज को अलग नहीं किया जा सकता । इसको यह भी देखा गया है कि, दूध पीने वाला आदमी भी गाड़ी चलाता है, और दारू पीने वाला भी चलाता है, उनके हाथो से भी गाड़ी चल जाती है, इनके हाथों से भी गाड़ी चल जाती है, उनके हाथों से भी बहुत सारे ंबबपकमदज होते है, इनके हाथो से भी होते है। ये भी नहीं कि दूध पिने वालो से कोई ंबबपकमदज ही नहीं हुआ। ये भी दावा नहीं किया जा सकता, इसलिए शुद्व बुद्वि से, ये सभी बातें अच्छी ढ़ंग से सोचने के काम है। विशेष नाम की चीज, ना कोई जात होती है, ना संप्रदाय होता है, ना नस्ल होता है, ना कोई रंग होता है, इस ढ़ंग की स्वरूप बनी हुई है। अस्तित्व सहज विधि से हर व्यक्ति, हर नस्ल वाले, जात वाले, रंग वाले, समझदार हो सकते है, ईमानदार हो सकते है, भागीदार हो सकते है। इसमें से किसी को आप मना नहीं कर सकते, आप के पास कोई तंत्र ऐसा नहीं है। इस ढ़ंग से क्या हुई, पहले से बनी हुई पुरोहितवाद से लेकर आरक्षण वाद या काई वाद, किसी को भी हम विशेष बनाने के लिए हम कोशिश करते है, वह सब अतंतःगत्वा आदमी जात के छाती के परपल ही होगा, ये आदमी को त्रस्त करके ही छोड़ेगा। क्या त्रस्त करेगा? मार काट और क्या। लूटमार, काटमार, जानमार, इस पहल से कोई ना कोई पहल से, त्रस्त होगा ही। इससे पहले बर्हिविरोध, गालीगलौच, ये सब होना ही है, इस ढ़ंग से आदमी

जात का बहुरंगी जो कार्यक्रम हैं, आदमी को कहॉ ले जाएगा, अभी कुछ कहा नहीं जा सकता। जैसा ये अनिश्चयता के साथ चलती हुई भदरंगी परिस्थितियॉ है, ये कही ना कही सुखद घटना के स्तर पर ही ले जाएगा। उसका ये एक लक्षण दिख रहा है, बहुत सारे कट्टरपंथी विधि से, बर्बरता के ढ़ंग से या फिर जातिवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद की बात करते है,

तो उनके अनुसार भी, परस्परता में, शांति पूर्वक जीने की कामनाऍ है। उसको काफी ध्वनित करता हुआ हम देखते हैं। इन सभी चीजे मनष्यों को याद रखने की बात है।

दुष्टता में भी सभी रंग, जाति ,नस्ल वाले शामिल हैं, शांति पूर्वक जीने में भी सभी रंग, जाति, नस्ल वाले शामिल है, शासन करने में भी सभी रंग, जाति, नस्ल वाले, शामिल है, और धर्मो को मानने वाले में भी सभी अपना–अपना धर्म को मानते है। कुल मिलाकर के आदमी को अलग–अलग करने का 2 ध्रुव अभी प्रभावशील हैं, राज्य और धर्म, हम अलग राज्य के हैं, हम अलग धर्म के हैं। ये बात को अलग–अलग करता है, ये 2 कांटा है, आदमी को चैन से रहने नहीं देता। क्योंकि धर्म में भी, हमारा धर्म के अलावा दूसरा कोई धर्म वाला रहा ना करे ऐसा भी सोचने वाले अच्छे लोग है, इस धरती पर, सोचते है, अपने ढ़ंग से कुछ काम भी करते हैं, स्वयं संकट में फंसे रहते है। दूसरों को संकटग्रस्त करने की कोशिश करते हैं, ये सब हम देखते ही हैं, दूसरे विधि से जाने से राज्य विधि से, हमारे राज्य में यही जात रहे दूसरे जात ना रहें, ऐसा भी सोचने वाले होते हैं, इस ढ़ंग से संकट को घटित करने के लिए बहुत सारे प्रयास चली है।

इसके बावजूद सर्वाधिक आदमी शांति प्रिय है, और जो सुख शान्ति से जीना चाहता है, और समृद्धि से जीना चाहता है, समाधान से जीना चाहता है, कही भी सर्वेक्षण करेगें, मानव का यही चीजें निकलती हैं। इसको हम कर सकते हैं, देख सकते है, निर्णय कर सकते हैं। नस्लवाद, रंगवाद से, ना हिंसा जानमारी, सेंधमारी में कोई एक जात वाले की पहचाना नहीं गया, अनेकजात वालों को पहचाना गया। दूसरा राजगद्दी में बैठने को इच्छुक एक जात वाला, एक रंग वाले की बात ना रहकर के, सभी जात, रंग वाले गद्दी में बैठने की बात को भी पहचाना गया। उसी प्रकार पैसे के बारे में सभी जातवाले, रंगवाले नस्लवाले, पैसा की प्राप्त करता हुआ देखा गया , और सभी जात, रंग, नस्ल वाले गौरव सम्पन्न होने के लिए, (जो बहुत सारे लोग पैर पड़े) ऐसे व्यक्तियों को सभी रंगवाले, नस्लवाले, धर्मवाले सब को देख लिया गया, इस तरिके से सभी जात, धर्म वाले सभी कर्म कर सकते है, इसलिए मानव एक ही है, एक ही जात है। उसको हम इस विधि

से भी देख सकते हैं। कुलमिला करके ये सब नजिरे हमारा सन्मुख आया हैं, इसको अच्छे ढ़ंग से ध्यान में लाएँ तो ये पता चलता है, मानव जाति मूलतः एक ही है। रंग पर कोई जाति निर्णय होता नहीं, रंग पर कोई रिर्जवेशन हो नहीं सकती और जाति पर नहीं हो सकती, नस्ल पर नहीं हो सकती, संप्रदाय पर हो ही नहीं सकती, इस बात को यदि हम पहचान लेते है, उसी के आधार पर आदमी को धर्म को भी पहचान सकते है, आदमी जात एक है, इसको पहचान सकते हैं। धर्म का मतलब? जो मानव धर्म के बारे में अभी याद दिलाएँ थे, ''सुख धर्म'' सुखी होने का आशय सभी में निहित है, सभी रंग, नस्ल, जाति वाले के पास सुखी होने का आशय सब में समान है।

इन सभी सुखी होने के विधि को हम पहचान सकते है, खोज सकते है और उसका लोकव्यावीकरण कर सकते है। उसी के आधार पर हम सुखी होने के दिन का इंतजार कर सकते हैं, उसी कम में ये कार्यकम है। इसका मूल तत्व यही है, ''मानव जाति एक है''। मानव जाति एक होने के आधार पर हम मानव धर्म को पहचानते है। मानव धर्म सुख धर्म है, किसी जात–पात संप्रदाय का उसमें कोई झगड़ा होते ही नहीं हैं सभी आदमी सुखी होने के कम में समझदारी पूर्वक सुखी हो सकते है। समझदारी पूर्वक सूखी होना, सभी जात–पात, संप्रदाय वालों के लिए सुलभ है, उसी के आशय में समझदारी को परिपूर्ण करने के लिए शुरूआत है। गर्भाशय में नस्लों के आधार पर शरीर आता है, जीवन मनुष्यों में प्रधान वस्तु है। जीवन सुखी होने के आशय में काम करता है, शरीर रंग, नस्ल को ले करके घूमता रहता है। मानव सुखी होना चाहता है। इस आधार पर अच्छे दिन का इंतजार कर सकते हैं अब शिक्षा में मानवीय शिक्षा को पहचानने की जरूरत, राज्य में मानवीय संविधान को पहचानने की आवश्यकता, आचरण में मानवीयता पूर्ण आचरण को पहचानने की आवश्यकता, परिवार में समाधान समृद्वि से कैसा जीया जाएँ, इसको पहचानने की आवश्यकता है। इस पर चलने से बहुत सारी आवश्यकताएँ हल हो सकती है।

जीवन और शरीर का सम्बन्ध

प्रश्न– मां का जीवन और बच्चें का जीवन के बीच में जो व्यवस्था होती हैं, उसके बारे में बताइये?

उत्तर– पेट में शिशु के रचना काल में मॉ के संस्कार का क्या प्रभाव है, यह पहला बात है। 5महिने के बाद जैसे ही जीवन शरीर को संचालित करना शुरू करता है, जैसे आप हम सुनते है, मॉ के सारे सुनी हुई बातों को शिशु सुनता ही रहता है। यही गर्भगत् संस्कार है। गर्भ में शिशु रहते समय जो संस्कार होता हैं क्या होता है? मॉ जो कुछ भी बोलती है, करती है, शिशु का अवगहन में आता ही रहता है, उसी प्रकार मॉ जो सुनती रहती है, उसको शिशु भी सुनता रहता है, यह मुख्य बात है, इसको परीक्षण करने के लिए कोई यंत्र–मंत्र होता है, तो कर ले परन्तु होता यही है, गर्भ में रहते हुए शिशु का संस्कार गर्भाशय में जब तक शिशु रहता है, तब तक शिशु में क्या संस्कार ड़ालना है, इसको समझें रहने के लिए समझदार होना पड़ेंगा। दूसरा कोई विधि से होने वाला नहीं।

प्रश्न– दोनो का जीवन पुंज आपस में किस तरह व्यवस्थित है, जो मॉ का जीवन पुंज, बच्चे के जीवन पुंज को प्दजमतंबज नहीं करता?

उत्तर– मॉ का जीवन मेधस तंत्र में, ज्ञानवाही तंत्र को, तंत्रित करने में कोई अड़चन नहीं ड़ालती, क्योंकि गर्भ तंत्र में ही जो सीमित रहता है, शिशु का शरीर, उतने में ही दूसरा जीवन शिशु को संचालित करता रहता है, ये मॉ का मेधस तंत्र से कोई संबंध नहीं रखता। इस ढ़ंग से इन दोनो का निश्चित कार्य प्रणाली बन जाती है, इन निश्चित कार्य प्रणाली में ना तो शिशु को मॉ का जीवन अपने मेधस तंत्र में कार्य करने में कोई परेशानी या अड़चन पैदा नहीं करता है, वैसे ही शिशु का मेधस तंत्र में जीवन को अपने कार्य करने में मॉ का जीवन कोई व्यवधान पैदा नहीं करता । ये दोनो एक दूसरे के पूरक हो जाते है, सुखद् सहवास होता है, फलस्वरूप शिशु श्रेष्ठतम् शरीर रचना के रूप में धरती को मिलता है और मानव परंपरा को मिलता है, मॉ के गोद में होता है। इसको हर दिन हम देखते ही है, इसमें कोई किसी का हस्तक्षेप नहीं है, यह हस्तक्षेप वाद से कोई प्रगति होती नहीं हस्तक्षेप केवल मनुष्यों को छोड़कर दूसरे कोई करते भी नहीं। प्राकृतिक रूप में मनुष्य ही हस्तक्षेप करता है।

प्रश्न– जीवन और शरीर के बीच में मेधस द्वारा सूचना का जो आदन–प्रदान होता है, उसको थोड़ा विस्तार से बताइये?

उत्तर– संवेदनशीलता के रूप में जीते तक हम भ्रंमित होने की संभावना बनी ही है, क्योंकि जीवों के सदृश ही मनुष्य भी संवेदनाओं का गणना करना शुरू कर देता है, संज्ञानशीलता पूर्वक जब जीना शुरू करते है, हमको संवेदनशीलता का समीक्षा हो जाता है, तब तक यह होने वाला नहीं हैं, संवेदनशीलता से संवेदनशीलता का कोई मूल्यांकन नहीं होता, ना ही उसका कोई समीक्षा हो सकती है,

संज्ञानशीलता पूर्वक जीना बन जाता है तब संवेदना का समीक्षा हो जाती है, उसी के आधार पर आपको ये बात को स्पष्ट किया है, संज्ञानशीलता पूर्वक जीने के कम में संवेदनाएँ नियंत्रित रहते हैं, नियंत्रित रहने का मतलब है, व्यवस्था के रूप में व्यवस्था में संयत रहने से ।

प्रश्न– जीवन और शरीर इन दोनों के बीच संबंध किस तरह से स्थापित होता है, जीवन किस ढ़ंग से कार्य करता है?

उत्तर– मेधस तंत्र एक महत्वपूर्ण रचना है, उससे एक प्रकार से सूक्षतम रचना कुछ भी नहीं है, शरीर में सूक्षमत तंत्र के रूप में बनी हुई है। मेधस तंत्र को देखने पर ऐसा लगता है जो मलाई जमा रहता है, उसको पलटा के देखोगे तो कैसा लगता है, वैसा लगता है और उसमें अन्नत कोशाएँ बनी रहती है, तन्तु के रूप में। वह एक रासायनिक जल में तैरता रहता है, सिवंज होता रहता है। उसमें दोनो तरफ मूंछ जैसी तन्तु निकला रहता है। जब कभी भी जीवन मेधस तंत्र पर तंत्रित करना चाहता है, वह रासायनिक जल पर अपने तरंग को पैदा करता है, अपने उद्देश्य के तरंग को पैदा करता है। वह जो मूंछ जैसा निकली हुई जो तन्तुएँ होते है, उस संकेत को ग्रहण करते है। इसमें आश्चर्यजनक बात नहीं है, एक स्वाभाविक किया है, चाहे आश्चर्यजनक नाम दिया जाएँ। कम से कम दो मेधस सूत्र जो हैं वह संकेत को ग्रहण करते है, कम से कम 2 । उसके तुरंत बाद उससे संबंधित तन्तु के द्वारा संवेदनाएँ स्पष्ट होने लगती है। मन में सर्वप्रथम संवेदना का स्वीकृति होता है। संवेदनशील विधि से तंत्रित करना एक भाग है, उसके बाद संज्ञानशील विधि से भी उसी तंत्र पर उसी प्रकार से संप्रेषित करने की विधि। जीवन जब कभी भी संप्रेषित करता है, संवेदनशील कार्यकलाप के लिए, अथवा संज्ञानशील कार्यकलाप के लिए, मेधस तंत्र को तंत्रित करता हैं, मेधस तंत्र में डूबी हुई जो रस द्रव्य है, उसी के ऊपर अपने तंत्र को व्यक्त करता है, उसके बाद पुनः वापस जा करके उसी जल में मेधस के

सूत्र जो प्रभावित हुए थे, वही प्रभाव से जो तंत्र है, वह जल में वह तरंग को पुनः पैदा करते हैं, उसको जीवन स्वीकार लेता है। इस ढ़ंग से जीवन और मेधस तंत्र का संबंध स्थापित हुआ रहता है। उसके अलावा एक और महत्वपूर्ण काम रहता है, जीवन और शरीर के साथ, पूरा शरीर को जीवन्त बनाए रखता है। पहले जीवन्त बनाए रखना और मेधस तंत्र पर ज्ञानवाही किया कलापों को संपादित करना, ये 2 काम। शरीर को जीवन्त बनाएँ रखने का जो काम है, ये जीवन एक परमाणु है, ये बात पहले स्पष्ट हो चुकी है। प्राणकोषाओं में जो ताना–बाना बनी हुई है, जैसा चमड़ा बनी है, उसके अन्दर जो मांस बनी हुई है, मेद बनी हुई है, स्नायु बनी है, खून बनी हुई है, रस बनी हुई है, मज्जा बनी हुई है, ये सभी चीजों के ताना–बाना जो बनी हुई है उसके भीतर जो छेद बनी है, वह छेद के अन्दर से पूरा शरीर में संचार करता रहता है, जीवन। पूरा शरीर में संचार करने के फलस्वरूप ही हर भाग जीवन्त रहने के जैसा हमको लगता है, जीवन्त बनाएँ रखने की विधि ये बनता है, संकेतो को प्रसारित करने का विधि ये रहता है । उसका क्या प्रमाण है? आदमी सोया रहता है, जीवन्त रहता है।

इसको हर व्यक्ति अनुभव कर सकता है, जीवन्त रहने के लिए शरीर के सरंचना के जो छलनी है, वह छलनी के अन्दर भ्रमण करना प्रधान वस्तु है, और ज्ञानवाही कार्यक्रम के लिए मेधस तंत्र में अपने संकेतों को प्रसारित करना और ग्रहण करना प्रधान कार्य है, जीवन ये दोनो कार्य को संम्पन्न किया रहता है, सब स्वस्थ्य शरीर में आप और हम निरीक्षण कर सकते है, परीक्षण कर सकते है, उससे तृप्त भी हो सकते हैं।

प्रश्न– मेधस में जो सिवंजपदह हैं, और ऊपर का`ानसस है, इन दोनो के बीच में खाली स्थान रहता ही होगा।

उत्तर– इस तंत्र के पूरा रचना को ऐसे देखा जा सकता है, एक तो बताया मलाई जैसी लगती है, पूरा मेधस तंत्र, तंत्र का मतलब इस प्रकार से बना हुआ है, जो रसो के संकेत को ग्रहण कर सकता है, इतना सूक्ष्म तंत्र। उसके बाद उसमें जो एक थक्का जमी हुई है, वह उसका पूरा एक तरफ का मूंछ ऊपर की झिल्ली से जुड़ी रहती है। मेंधस तंत्र के ऊपर एक झिल्ली होता है, नीचे एक झिल्ली होता है। ऊपर के भाग की जो झिल्ली है, वह झिल्ली से ये सारे मूंछ छुए रहते है। नीचे वाले मूंछ पानी में तैरता रहता है। जब कभी संकेत आता है, कम से कम दो मेधस सूत्र अपने कार्य को संपादित करता है। वह ऊपर की झिल्ली से जुड़ी हुई जो तंत्र है, उसको संकेत को प्रसारित करता है। उसके

बाद पुनः एक जल का आवरण है, 2दक सिववत । उसके बाद एक और झिल्ली है, दो झिल्ली के बाद`ानसस। ये`ानसस और झिल्ली के बीच में सामान्य`चंबम रहता है।

प्रश्न– सामान्य`चंबम का मतलब?

उत्तर– सामान्य`चंबम माने`ानसस से जुड़ा नहीं रहता है,`ानसस से । खाली स्थान सा रहता है, उस खाली स्थान में बवनही पिइमत दौड़ता रहता है, लोचदार बनाए रखने के लिए ये दौड़ता रहता है, इस ढ़ंग से इसकी रचना बवनही नाक से निकालते हो, कई–कई बार। खोपड़ी में जो हड्डी की रचना है, उसके नीचे बवनही उसके नीचे एक झिल्ली, उसके नीचे एक रस (बहुत अच्छी रासायनिक जल का) उसके नीचे और झिल्ली, उसके नीचे एक मेधस तन्त्र, ऐसा बनी हुई है।

प्रश्न– मेधस से प्राण, सांस, हृदय, शरीर और शरीर से कार्य व्यवहार, इस पूरी चैन को थोड़ा विस्तार पूर्वक समझाइये?

उत्तर– इसके बारे में जो अभी आपने बोला, मेधस तंत्र से कियावाही कार्य है, सांस लेना, दिल धड़कना, खून बहना ये कियावाही कार्य है। ये कार्य के लिए मूल तत्व है हृदय, हुदय तंत्र से खून संचालित होता है, खून संचालित होने के आधार पर फेफड़े की किया स्पंदन फेफड़े के किया कलाप से, सांस लेना, सांस छोड़ना बनता हैं।

प्रश्न– हृदय और मेधस कैसे जुड़े हुए हैं?

उत्तर– हृदय का मतलब है, खून को सब जगह में पहुंचाना, पहुंचाने के बाद जीतना गंदा होकर वापस आता है, वह फेफड़े में शुद्व होकर पुनः हृदय में पहुॅचना। ये कियावाही कार्य है, इसमें मेधस को कुछ नहीं करना, ज्ञान तंत्र को कुछ नहीं करना, जीवन्त रखना प्रर्याप्त है। जीवन्त रहने की किया करता ही रहता है। इतने में ये संपादित हो जाता है, ज्ञान तंत्र को उसको, खून बहाओं, खून बंद हो जाओं ये कहना नहीं है।

प्रश्न– आवेशित होने पर हृदय की गति कम ज्यादा होती है?

उत्तर– आवेशित होने की बात दूसरी हो गई, आवेशित होने के लिए हम को कोई ना कोई ज्ञानवाही तंत्र को बहुत ज्यादा उत्तेजित करना होता है। वह जीवन करता है, क्योंकि जीवन शक्ति अक्षय है, वह अपना गति से जहॉ कहीं भी तन्त्रित किया अपने से भड़भड़ाना स्वाभाविक है। भड़भड़ाया तो सांस लम्बी हो गई, गर्म हो गई और फिर बेहोश होने लग गए, चक्कर आ गया। ये सब तो होता ही है, उससे ज्यादा हो गया तो ठच बढ़ गई, उससे ज्यादा हो गया तो हृदय अवरोध हो जाता है।

अधिक गुस्सा होना, आवेश ही तो हुआ। आवेश होने से आवेश के आधार पर जितने भी ज्ञानवाही तंत्र तन्त्रित होता है, उसके फलस्वरूप में हृदय गति, फेफड़े की गति सब बढ़ जाती है, बढ़ जाने पर वह किसी अवधि से अधिक होने पर मर जाता है। शरीर तो जीवन के गति के अनुसार चल नहीं सकती है, मनोगति से शरीर चलेगा नहीं, आवेशित गति को सहने की, माने जीवन्त रहने की कुछ अवधि होती है, उतने तक आवेश को सहता रहता है, उससे ज्यादा होने से स्वाभाविक है, कोई ना कोई पिसनतम होता ही है।

प्रश्न– जीवन का जो आवेश है, वह मेधस के माध्यम से ही तो जतंदेवित होता होगा?

उत्तर– हॉ ऐसे ही होता है, वह मेधस तंत्र द्वारा ज्ञानवाही तंत्र में जब तंत्रित हो पाता है, तभी ये हृदय तंत्र आवेशित होगी, फेफड़े तंत्र आवेशित होगी, 2 तंत्र आवेशित होगी।

प्रश्न– ज्ञानवाही तंत्र किस तरह से कार्य करता है?

उत्तर– संवेदनाशीलता को व्यक्त करने के लिए, कोई ना कोई संवेदना के विरोध में क्रोध आता है, पक्ष में आवेश आता है। ये दोनों अतिरिक्त होने की आवश्यकता है, पक्ष में या विरोध में, किसी ना किसी संवेदना की। आप अपने में देख लो। ये अपने आप में संवेदना के यदि विरोध ना हो, या अति प्रलोभन ना हो आवेशित हो जाए, ऐसा कोई चीज आप नहीं पाओगे। अति विरोध, अति सम्मोहन, दो स्थिति में मनुश्य आवेशित होता है, इन आवेश के फलस्वरूप हृद्य तंत्र परेशान होता है और फेफड़ा तंत्र परेशान होता है। ज्ञानवाही तंत्र के द्वारा आवेश को दर्शाता है। कियावाही तंत्र द्वारा रोगो अपने को प्रस्तुत करता है। आवेश को प्रस्तुत करता है, ज्ञानवाही तंत्र द्वारा।

प्रश्न– सहज गति में कैसा होता है?

उत्तर– सहज गति में संज्ञानशीलता में संवेदनशीलता नियंत्रित होता है। मानव का सहज गति यही है, माने भय, प्रलोभन से मुक्त, या विरोध से मुक्त। हम संज्ञानशीलता पूर्वक जीने पर संवेदनाएँ नियंत्रित होती है। सारे बात के लिए जीवन जिम्मेंदार है। जीवन मन के द्वारा मेधस को संचालित करता है।

प्रश्न– ज्ञानवाही तंत्र क्या स्नायुतंत्र की तरह ही काम करता है? उमकपबंस`बपमदबम से ये पता है कि स्नायु कैसे पूरे शरीर में जाल की तरह फैला हुआ है। ज्ञानवाही तंत्र का जाल कीस तरह फैला हुआ है?

उत्तर– सभी जगह में होता है, ज्ञानवाही तंत्र कियावाही तंत्र, जो कियाएँ संचालित करने के लिए तंत्रणा है, सोते समय भी होता है। बेहोश में भी होता है। उसके बाद जब कभी हम संवेदनशीलता, संज्ञानशीलता को प्रमाणित करते है, उस समय में ज्ञानवाही तंत्र कार्य किए रहते हैं, संवेदनाओं को जब कभी भी आपको प्रमाणित करना होता है। ज्ञानवाही तंत्र के द्वारा ही होता है। ये दोनों प्रकार की तंत्र पूरा शरीर में फैली हुई है, इसको हमारे उमकपबंस`बपमदबम में भी कहते हैं।

प्रश्न– ज्ञानवाही तंत्र और कियाावाही तंत्र का सम्बन्ध कहां पर है?,

उत्तर– मेधस में इसका सम्बंध है। मेधस में संयोजित है, ये रचना अपने में सम्पूर्ण है। इस सम्पूर्णता के अगंभूत एक–एक कियाएँ होती हैं।

ज्ञानवाही तंत्र द्वारा कियावाही तंत्र को आवेशित करना, इसका नाम है आवेश। जीवन पहले से आवेशित रहने से मेधस के द्वारा आवेश को प्रसारित कर देता है, फलस्वरूप ज्ञानवाही तंत्र कियाओं को आवेशित कर देता है, इसीलिए सम्बन्ध होना प्रमाणि होता है।

प्रश्न– प्राणवायु के सम्बन्ध में जीवन प्राण वायु का मेधस पर परस्पर प्रभाव, प्राणवायु का रूप में क्या स्वरूप है?

उत्तर– प्राणवायु का मतलब ये होता है, जो अपने फेफड़े में जा कर के सम्पूर्ण प्राणकोशा के लिए जो वायु की जरूरत है, उसका नाम है, प्राणवायु। सम्पूर्ण कोषाएँ जो श्वास प्रश्वास करते रहते हैं, हर कोशाएं सांस लेने के लिए जो हवा चाहिए, उसका नाम है प्राणवायु। उस प्राणवायु के अलावा और कुछ भी हमारा नाक से, मुंह से जाता है उसको फेफड़े में छान देता हैं। छान कर के जीतना प्राणकोषा की जरूरत की हवा है, उसको भेज देता हैं, प्राणकोषाएँ हवा को सेवन करते हैं, स्वस्थ रहते है, वह हवा ना मिलने से मर जाते है। हवा के बिना प्राणकोषाएँ रह नहीं सकती। उनको जिस प्रकार की वायु चाहिए, वह मिलने का जो प्रणाली है, उसका नाम प्राणतंत्र है। वह प्राणतंत्र फेफड़े से संबंधित हैं। फेफड़े में ही उसके अतिरिक्त बाकी चीजों को अलग करता है। अलग करने के बाद ये प्राणवायु सभी कोशाओं में सुलभ हो जाता है, वायु संचार उसको कहते

हैं, शरीर में प्राणवायु संचार, और उसके बाद प्राणकोशाएँ जो हवा को निकालते हैं, वह सब निकलकर के बाहर आते हैं, और जो हम खाएँ रहते हैं, उसमें से जो उपयोगी वस्तुएँ है,

शरीर में लगता है, और उससे जो अनुपयोगी वस्तु रहती है, उसे अपान वायु कहते हैं, प्राण कोषाओं से बाहर आया हुआ और हमारा खाया हुआ, तत्व से अपान वायु तैयार होता है। इस ढ़ंग से प्राण वायु, अपान वायु का पहचान हो पाता है।

मेधस तंत्र में जो प्राणकोषाएँ है, उनको भी प्राणवायु चाहिए। वह फेफड़े से ही संचालित है। व्यवस्था जो है ना कहीं भी कटा नहीं है, खिड़की नहीं है। वैज्ञानिक बुद्वि ही खिड़की बनाता है।

प्रश्न– प्रचलित वैज्ञानिक अवधारणा कहॉ पर पिस रही है? शरीर के बारे में मानव के बारे में उसमें कहॉ–कहॉ कमजोरी है। जैसे की क्छ।एत्छ। के बारे में प्रचलित है कि मानव शरीर, व्यवहार के सारे गुण नियंत्रित होते है?

उत्तर– ये बहुत ही विशाल भी जटिल भी यह प्रश्न है। इसके बारे में मेरे निष्कर्ष को मैं बताता हूं, मैं जो निष्कर्ष निकाला हूं, वह निष्कर्ष हम बताएगें। जो आप सोचते हो उसमे हमारा कोई हस्तक्षेप नहीं है। किन्तु ऐसा होता नहीं, इतना ही सम्मान जनक उत्तर है उसका । ये कहां से ऐसे हो गया?

विज्ञान विधि में जितने भी ककंड़, पत्थर अभी तक मिला है, उसमें जीवन को पहचाना नहीं, गया। ना पहचान सकते। जिस विधि से चल रहे हो जीवन को आप पहचान ही नहीं सकते। क्योंकि आपकों बवदजतवस मंवितज चाहिए। बवदजतवस मंवितज में जीवन मिलना चाहिए। वह मिलेगा नहीं, बवदजतवस मंवितज जो तैयार किया है, वह जीवन ही किया है। सारा बवदजतवस मंवितज को जीवन बनाया है। जीवन अपने से छोटे चीज को ही बनाता है। छोटे चीज में बड़े चीज समाता नहीं, तर्क संगत विधि से यदि हम जपेलि होना चाहते है, वह ये पूरा करता है।

1– विज्ञान संसार जीवन को पहचान नहीं पाया।

2– प्राणकोषाओं की किया को वह जीवन समझता है।

3– इसलिए उसी में मानव का सभी गुणों को व्याख्यायित करना चाहते हैं।

ये बहुत समय से हो चुकी, 200 वर्ष बीत चुकी, अभी तक व्याख्यायित नहीं हुआ, ये करोड़ो वर्ष प्रयत्न करे प्राणकोषाओं में हम मानव के गुण को व्याख्यित करेगें, ये होने वाला नहीं। जीवन को समझने के बाद ही मानव गुणों को पहचाना जा सकता है। इसके

पहले होता नही। यह त्ण्छण्।ण्में आता नहीं,क्ण्छण्।ण् में आता नहीं है, जीवन। मैंने जीवन को देखा है, प्राणकोशाओं को भी देखा है। अणुओं को भी देखा है, परमाणु को भी देखा है। परमाणु में निहित अंशों को भी देखा हैं, उसके बाद क्या बचता है इस सत्यता को हम स्वीकारते है। उसमें बहुत जरूरी है जीवन परमाणु को पहचाना। जीवन होने का जो तरीका है, और स्वरूप है, उसका कार्यप्रणाली है, लक्ष्य है, सभी चीजों को पहचानने की जरूरत है। उसके अलावा विज्ञान पूर्ति हो नहीं सकती ना ज्ञान पूर्ति हो सकती ।

ज्ञान विधि से भी हम मनुष्य को पहचानने से चुक गए, वह भी केवल जीवन को पहचाना नहीं जीवन के स्तर पर और कुछ कल्पना देना चाहा वह प्रमाणित नहीं हुआ। अभी विज्ञान भी जीवन के बदले में त्ण्छण्।ण् ए क्ण्छण्।ण् परिकल्पना देना चाहते हैं।

मध्यस्य दर्शन एवं मेड़ीकल साइंस

प्रश्न– प्रचलित चिकित्सा विज्ञान और आप जिस तरह चिकित्सा विज्ञान को प्रस्तुत करते हैं, इसका थोड़ा सा व्याख्या कर दिजिए?

उत्तर– जहॉ तक चिकित्सा विज्ञान, शरीर ज्ञान की बात है, विज्ञानी शरीर को पहचाने होगे। मेधस तंत्र से लेकर फेफड़े तंत्र तक, वृक तंत्र तक जीतने भी तंत्रणाएँ है। इन सभी तंत्रों को जैसा भी अभी पढ़ाते है, शरीर के सम्बंध में, शरीर शास्त्र के संबंध में उनको जीव शास्त्र भी मानते हैं, मानव शास्त्र भी मानते हैं, उस आधार पर प्राणकोषाओं में मनष्य को खोजने की कार्यक्रम चल रही हैं, हमारे अध्यात्मवादी, आत्मा परमात्मा की ले करके जीवन को बताना चाहते रहे। वह भी पिस हुए। ये भी पिस हुए। वह जैसा पिस हुए उससे अच्छा ये पिस हुए, उससे अच्छा वह पिस हुए दोनो का बराबरी है, जीवन का व्याख्या न आध्यात्मवादी विधि से हो पाई, ना भौतिक वादी विधि से हो पाई। यही तो रिक्तता है, मेरे अनुसार यदि कोई भी एक विधी से जीवन का व्याख्या हो जाती, जीवन का स्वरूप समझ मे आ जाती, समझाने की विधि तैयार हो जाती। उसके बाद जहॉ हम दीन, हीन स्थिति में पहुॅच गए हैं, दुर्गति में पहुॅच रहे हैं, अनिष्ट घटना के कवलीत होने की जगह में जा रहे हैं। उसका मूल ध्रुव क्या हैं, धरती बीमार होना। धरती बीमार होने के बाद आप क्या करोगे, विज्ञान क्या करेगा, ज्ञान क्या करेगा? मध्यस्थ दर्शन क्या

करेगा? धरती बीमार होने के बाद कौन तमचंपत करेगा। मध्यस्थ दर्शन इस बाद का अपना दावा ले करके खड़ा हैं। मध्यस्थ दर्शन के अनुसार जीवन यदि अपने को व्याख्या कर लेता है, व्याख्या करने में समर्थ हो जाता है, शिक्षा विधि से मानवीयता पूर्ण विधि से जीना बनता हैं, उससे धरती को घायल करने वाला काम बंद हो जाएगे, ये बात की सच्चाई है। उतना के दवाई ले के चला है, मध्यस्थ दर्शन। और रह गया, घायल हुआ भाग भरना। वह धरती ही भरेगी, उसको दर्शन तो भरेगा नहीं।

प्रश्न– प्रचलित चिकित्सा विज्ञान काफी हद तक शरीर गत समस्या का निराकरण कर चुका है। इस संदर्भ में मध्यस्थ दर्शन क्या कहता हैं,?

उत्तर– शरीर, शरीर है, जीवन,जीवन हैं, अस्तित्व, अस्तित्व है। इन तीनो के बीच में है विकास कम, विकास जागृति कम, जागृति। अस्तित्व हैं ही, उसको आप नहीं बनाओगे, मैं नहीं बनाउंगा, हमारा दर्शन नहीं बनाएगा। जो है उसका हम दर्शन किया हैं, जो नहीं है, उसको आपका दर्शन बताता हैं, भौतिक दर्शन। आप बोलते हो जो हैं नहीं उसको हम करते है, हम कहते है,

जो हैं उसी को हम करते हैं, दोनो में अंतर इतना ही हैं। नहीं है, उसको आप कर ही नहीं सकते ना हम कर सकते हैं।[९]

शरीर ज्ञान के बारे में हमारा सहमति यही है, अभी तक शरीर को विज्ञानी ने काफी अच्छी ढ़ंग से समझे, इसमें कोई शंका नहीं। विज्ञान के पहले आयुर्वेद विधि, जो शरीर को समझे थे, उसमें भी सुस्पष्ट रूप से कई चीजो को समझे हैं। इसमें हमारा सहमति है ंदजपइपवजपब का क्या मतलब होता हैं? प्राण कोषाओं का विरोधी यही मतलब होता हैं,उसके लिए हिन्दी करण किया हैं ''प्राणरक्षक'',ये अच्छे आदमियों का काम हैं कि नहीं हैं। मैंने एक शब्द के तर्जुमा की बात किया। कितने अच्छे आदमी हैं, उसको प्राणरक्षक दवाई प्रयोग किया है, उसमें लिखे हैं, प्राणनाशक दवाई । ंदजपइपवजपब का जो मतलब होता है, प्राणनाशक दवाई होता हैं। हम क्या कहते है, प्राणरक्षक दवाई। दोनो कितना समिचीन हैं।

विज्ञानियों के प्रयोग में ये देखे गये, इंबजंतपं जो मिलती हैं, उसके ऊपर जो दवाईयॉ डा़लते हैं, जिससे वह मर जाता हैं, उसको उस रूप के लिए तमबवउउमदक करते हैं, साथ में ये लिखे रहते हैं, उसको ज्यादा प्रयोग नहीं करना हैं, ज्यादा प्रयोग

करने बहुत ज्यादा हानि पहुचता हैं। होता क्या है? ये जो प्राणनाशक कीट रहता है, माने स्वास्थ्य प्राण कोषाओं को हलाकान करने वाले जो सूत्र आते हैं, एक को मारने पर हजार स्वस्थ्य कोषाओं को भी मारे रहता हैं, ये ंदजपइपवजपब । इसका प्रमाण कैसे मिलता है? उसको हम लोगों ने देखा, टाइफाईड, निमोनिया नाम का एक रोग होता हैं, उसमें ऑतों में ज्वर होता है, ऐसा आयुर्वेद के अनुसार है, ऑतों में छोटे–छोटे छाले हो जाते हैं, उसके बाद उसमें ज्वर पैदा होता हैं, उसको ज्यादा दिन रहने वाला ज्वर मानते हैं। उसके लिए अलग चिकित्सा लिखी हुई हैं,उसके लिये ंदजपइपवजपब प्रयोग किया जाता हैं। प्रयोग करने के बाद वह आदमी एक प्रकार से अधमरा जैसा हो जाता हैं। उसको हम आयुर्वेद औषधियों से भी चिकित्सा देते हैं, इससे रोगी एकदम स्वस्थ्य जैसा होता नहीं हैं, किन्तु इससे बहुत ज्यादा स्वस्थ्य दिखता हैं। इसको हमने बहुत जगह प्रयोग करके देखा।

प्रश्न–शरीर को स्वस्थ्य बनाएँ रखने के लिए वर्तमान में आयुर्वेदिक`लेजमउ का आधार क्या हैं?

उत्तर– हम यदि ऐसा बवदबसनेपवद निकाल लिए तब उसके अलग अर्थ होते है, कैसे शरीर को भावी रोगों से, भविष्य में होने वाले रोगों से बचाया जा सके। एक विधि वह बनता हैं, रोग आ ही गया हैं, उसकी तत्काल कैसे शमन किया जाए, रोग असाध्य रूप धारण कर लिया हैं,

उस स्थिति में हमको क्या–क्या करना चाहिए? इस ढ़ंग से 3 चरण में उसके बारे में बात किया जा सकता हैं, इसको अलग से विस्तार में समझा जा सकता हैं।

समय, काल, वर्तमान

प्रश्न– समय क्या चीज है? समय या काल, ज्पउम का जो हम लोग घड़ी से नापते हैं, उसको समय कहते हैं, शास्त्रों में काल को काल भगवान ऐसा भी कहा गया है, वास्तव में समय क्या चीज है? और उसकी वास्तविकता क्या है?

उत्तर– क्रिया की अवधि बराबर काल, किसी क्रिया कि अवधि को हम काल नाम दिया है। ''काल न जगत भक्षकः'' ऐसा शास्त्र में लिखा हुआ है। ऐसा भक्षण करने वाला 12,1/2 हाथ का दांत लगाकर के कोई चीज बैठा नहीं है, किसी को भी फुरसत नहीं है, सभी को चबाकर मरम्मत करें। काल जो है, किसी क्रिया की अवधि को हम नाम दिया है, काल उस में गणितज्ञ ने बड़ी कमाल किया है, काल तो नित्य वर्तमान है। यथार्थता में नित्य वर्तमान ही काल हैं।

1. मनुष्य अपने जो कालखण्ड़ को अनुभव करने के लिए, अपना नित्य कर्मो को तय करने के लिए कालखण्ड़ो को पहचानने की आवश्यकता महसूस हुई।
3. ज्योतिषीयों के लिए कालखण्ड़ को पहचानने की आवश्यकता निर्मित हुई। ज्योतिषीयों के अनुसार क्रिया की अवधि को काल के रूप में पहचाना गया। क्या काल? अधौ सुर्योदय से अर्धा सुर्योदय तक एक किया, क्या चीज किया? धरती की किया । धरती की क्रिया को एक दिन नाम दिया। ''उद्यात उद्यम दिनम्'' ये लिखा हुआ हैं, अर्ध सूर्योदय से अर्ध सूर्योदय तक एक दिन कहते है, एक दिन को 24 घंटा, एक घंटा को 60 भाग, और 60 भाग, ऐसा कर करके सुक्ष्म–सुक्ष्मतम् कालखण्ड़ को हम लोग पहचानते हैं। वह दिन को हम बनाए रखे थे। विज्ञान आने के बाद वर्तमान को काट कर अलग कर दिया। काल को इतना सुक्ष्मतम् खण्ड़ किया, वर्तमान कुछ होता ही नहीं। अस्तित्व जो हैं वर्तमान में हैं, वर्तमान नित्य है, निरंतर है, अनादि–अनादि काल तक। वर्तमान कभी खत्म नहीं होता। काल को विखण्ड़ित करते हुए, कहॉ वर्तमान हैं, कोई वर्तमान नहीं हैं, वर्तमान शून्य हो गया, कहना शुरू कर दिया गणित के अनुसार। काल को पहचानने की अभिपसा तो आदमी में रहा ही हैं। इसको पहचानने का मूल मूद्दा वर्तमान ही हैं, वर्तमान को ही पहचानना होगा। वर्तना और मात्रा होना, ये दोनो का संयुक्त रूप में वर्तमान हैं। मात्रा सहित होना, इसका नाम हैं वर्तमान। वर्तने के मूल में मात्रा होता ही हैं। स्थिति गति, वर्तने का मूल वस्तु हैं। हर एक मात्रा के साथ

स्थिति गति बनी ही रहती हैं। चाहे कितने भी परिणाम हो, कितने भी विकास हो, स्थिति गति इकाई की अविभाज्य वर्तमान है। ये कुल मिलाकर स्वरूप है, वर्तमान का। निरंतर मात्रा सहित होना, कैसे होना?

स्थिति गति में होना।कोई ऐसी मात्रा नहीं है जो स्थिति गति के रूप में विद्यमान ना हो, वस्तु में जो भौतिक, रासायनिक परिवर्तन होता हैं, उसके परिणत होने से ये विगत जैसा लगता हैं।

विगत जैसा काहे को लगता हैं, परिणति भावी हैं, हर एक वर्तमान आगे चलकर, कई कियाएँ परिणत होकर के दूसरे किया के रूप में में ही होते हैं। कोई अभाव थोड़े ही हो जाता हैं,। जैसे लोहा परिणत हो गया, मिट्टी हो गया, मिट्टी अपने आप में वर्तमान हैं ही हैं। मिट्टी परिणत हो गया, पत्थर हो गया, पत्थर वर्तमान है ही हैं। पत्थर परिणत हो गया मणी बन गया, मणि अपने आप में वर्तमान है ही हैं, मणी परिणत हो गया, धातु बन गया, धातु अपने आप में वर्तमान हैं ही हैं। ये कभी भी समाप्त नहीं होता हैं, एक जगह में ठोंस रूप में रहता हैं, दूसरे समय में विरल भी हो सकती हैं, ये भी वर्तमान ही हैं। वर्तमान कहॉ पीछे छूटा, कहॉ पीछे छूट सकता हैं, किसने इस बात को प्रमाणित कर सकते हैं। वस्तु हैं ही, तिरोभावित हो नहीं सकता, होता ही नहीं हैं, परिणत होता हैं, ये बात सही हैं, परिणत कारी वस्तुएँ भौतिक संसार में होते ही हैं, रासायनिक संसार में परिणतियॉ होते ही हैं, ये दोनो परिणाम वादी हैं ही। इसको ही हम भौतिक रासायनिक संसार कह रहे हैं। और जड़ प्रकृति इसी को कहते हैं, परिणाम वादी, परिणामशील वस्तु को हम क्या कहते हैं? जड़ प्रकृति। परिणत होने के बाद वस्तु दूसरे स्वरूप में कार्य करता ही रहता है, कार्य मुक्ति कभी भी वस्तु का होता नहीं। मात्रा सहित वर्तने का कार्य हैं, वह नित्य हैं, वह परिणत हो या एक यथा स्थिति में हो। कई वस्तुए यथा स्थिति में बहुत समय तक रहते हैं, बहुत सारी वस्तुए शीघ्र परिणामी हो जाते हैं। ये दोनो चीजे देखा जा रहा हैं। इसी कम में जीवन जो हैं, अपरिणामी हैं। जीवन के साथ परिणाम का साथ छूट जाता हैं और उसमें गुण परिवर्तन होना भावी हो जाता हैं । भावी का मतलब इसके बाद, दूसरे स्वरूप में, श्रेष्ठतम स्वरूप में वर्तने का बात आती हैं, जीवन में गुणात्मक विकास की बात आती हैं, और भौतिक रासायनिक वस्तु में मात्रात्मक विकास, ह्रास गणना होता हैं। विकास, ह्रास का जो गणना है, उसी को हम कहते हैं, परिणाम। परिणाम को हम काल के आधार पर बताने जाते है, हम फंस जाते हैं, काल का कोई निश्चित स्वरूप बनता नही, काल का आधार यदि सूर्योदय से सूर्योदय तक एक काल मान

लिया किन्तु सूर्योदय से सूर्योदय होता ही रहता है, क्रिया का निरंतर होना हमारे सामने रखा ही रहता है, तो ये कभी समाप्त होता नहीं। काल को यदि सूर्योदय से सूर्योदय तक मानते हैं, उसको यदि खण्ड–विखण्ड करके छोटे से छोटे टुकड़े तक पहुच जाते हैं, क्रिया को भूल जाते है, काल को पकड़ लेते हैं, वस्तु विहिन काल हो जाता है, वर्तमान शून्य कहते हैं, वस्तु विहिन होता नहीं है, हमारा गणित के अनुसार संख्या के अनुसार, हम वस्तु विहिन जगह में पहुच जाते है, इस प्रकार से गणित बहुत बड़ी भारी शक्ति का गणना करता है, ऐसा हमारा नहीं कहना, गणना वस्तु का करना है, क्रिया का करना हैं,

ये हमारा वाछिंत काल का गणना करा हैं, वाछिंत काल क्या हैं? किसी भी एक दिन कहते हैं, 2 दिन कहते हैं, 10 दिन कहते हैं, इसका गणना गणितीय विधि से ही हो सकता हैं, काल का गणना गणित नहीं कर सकता। काल का जो परिकल्पना मनुष्य के पास हैं, वर्तमान को जब कभी भी खण्ड–विखण्ड़ में देखना चाहते हैं, रासायनिक परिणाम के आधार पर, भौतिक परिणाम के आधार पर अथवा दिन, रात्रि के आधार पर,

हम यदि कोई काल को परिगणना करना चाहते हैं। वह क्रिया तो निरंतर रहता ही है, परिणाम होना निरंतर बना ही है, तो एक धरती जैसा ये धरती है, ये ठोस है, तरल भी है विरल भी है। दूसरा धरती वह ऐसा नहीं हैं, कालातंर में वह ठोस होता हैं। ठोस होने के समय भी वर्तमान के रेखा में ही होता है ये नहीं वर्तमान को छोड़कर के और कोई रास्ता पकड़ लिया और वह ठोस हो गया ऐसा होता नहीं, ये वर्तमान अभी भी है, कल भी वर्तमान है और भी वर्तमान। वर्तमान की निरंतरता है, उस श्रृखला में एक समय में एक धरती ठोस हो जाता है। एक धरती विरल हो जाता हैं, एक धरती बर्बाद हो जाता हैं, एक धरती आबाद हो जाता हैं, ये भी हो सकता है, इसमें कोई शंका नहीं हैं, उसी प्रकार रासायनिक भौतिक परिणाम भी यथास्थिति से विकसित होना, ह्रास हो जाने को हम परिणाम कहते हैं। ये वर्तमान की रेखा में ही है, और परिणाम हो कर के वह स्वंय में अपना यथास्थिति हैं। वह यथास्थिति रहता ही है, कोई चीज समाप्त होता नहीं है, क्यों की ये हम पा गये है, कि अस्तित्व ना घटता है ना बढ़ता है, इस आधार पर वर्तमान निरंतर है। अब परिणाम से मुक्त है जीवन। जीवन के लिए तो कोई कालखण्ड़ बनता ही नहीं है। वह सतत् बना ही रहता है, शरीर चलाओं चाहें शरीर ना चलाओं, जीवन को रहना ही हैं। जीवन में परिणतियॉ होती नहीं है, उसमें काल का बाधा होता नहीं, काल का बाधा नहीं होने के साथ–साथ और भी बहुत सारे चीजों का बाधा से मुक्त हैं। रासायनिक भौतिक वस्तुओं की जो पुष्टि और असहयोग ये दोनो की बाधा से भी जीवन

मुक्त हैं। शरीर भी एक रासायनिक भौतिक वस्तु हैं, इस को छोड़कर के जीवन रहता ही है। यदि ये बाधा हो जाता इसके साथ ही जीवन भी तिरोभाव हो जाता या ऐसा कुछ होता नहीं या परिणत हो जाना या ऐसा भी नहीं होता है। जीवन जो हैं ना शरीर के साथ भी वैसे ही रहता है। शरीर के बाद भी वैसे ही रहता है। इस आधार पर जीवन का निरंतरता है ही, यथास्थिति बना ही रहता है, उसमें गुणात्मक परिवर्तन होता हैं। तो जीवों में कुछ गुण प्रचलित हुई माने प्रमाणित हुई, मनुष्य में कुछ गुण प्रमाणित हुई और गुणों की प्रमाणित होने की आवश्यकता है। उसकों हम जागृति नाम दे रहे हैं, यथा स्थिति जागृति पूर्वक हो जाए, निरंतर हो जाए, वह निरंतरता सुखद होता हैं, सुन्दर होता है, सौभाग्यमयी होता है। हम अपना अनुभव में, परिकल्पना में जोड़ कर के हम चल रहे हैं। इस ढ़ंग से काल का यदि हम सही व्याख्या पाना चाहते हैं।

वर्तमान ही निरंतर काल हैं। परिणाम के आधार पर काल , रचना विरचना के आधार पर काल, दिन–रात्रि के आधार पर काल, कुछ भी हम गणना करते हैं, वह निरंतर बना ही है। परिणाम भी निरंतर बना है। संगठन, विघटन भी बना ही है। वर्तमान की रेखा में वह बनती ही रहती है। उसके बाद भी वह और कार्य करता रहता हैं। परिणत हो कर के भी एक यथा स्थिति में है। अभी एक यथा स्थिति है, परिणत हो कर के दूसरा यथा स्थिति में रहता ही है। जैसा शिशुकाल में बच्चें बहुत छोटे रहते हैं,उसमें यथास्थिति दिखता ही हैं, थोड़ा दिन के बाद शिशु का लम्बाई–चौड़ाई बदल जाता जहे। उसका यथा स्थिति भी बना ही रहता हैं, उसके बाद जितना तन्दरूस्त हो ही जाता हैं, उसके बाद धीरे–धीरे बुढापें की ओर चला जाता है,

वो भी यथा–स्थिति में आता ही है उसके बाद मरने के पहले भी यथा स्थिति बना ही रहता है। शरीर छोड़ने के बाद भी शरीर का यथा स्थिति दिखता है, उसके बाद जलाने के बाद, गाड़ने के बाद, सड़ने के बाद, मिट्टी में खाद गोबर होने के बाद, तब भी यथा स्थिति बना ही है, यथा स्थिति बने नहीं ऐसी कोई दवाई नहीं हैं। हर परिणाम की एक यथास्थिति बनी रहती हैं। वो स्टेट्स अपने में एक स्थिति है ये वर्तमान में ही हैं, वर्तमान की निरंतरता को अच्छे ढ़ंग से भली प्रकार से हम स्वीकार सकते हैं, वर्तमान में कुछ कारणों से हम कियाओं को देख कर हम समय को छोटे–छोटे टुकड़े में पहचान करके वर्तमान के महिमा की यथावत् हम स्वीकारते हुए चल सकते हैं।

उदयात् उदयम् दीनम्, ये जो बताया तो उदय से उदय तर्क को दिन की बात है वह निरंतर हैं । निरंतर उदय से उदय से, उदय से दिन होते ही रहता हैं। एक दिन हो

गया दूसरे दिन बंद हो गया ऐसा तो होता ही नहीं निरंतरता को भूल जाने से हम भूलो में पड़ जाते है। भूलने का काम आदमी करेगा, स्मरण रखने का काम आदमी करेगा। समझदारी का काम आदमी देखेगा, प्रमाणित करने का काम आदमी करेगा। इस ढ़ंग से मनुष्य की प्रमाणित करने का कार्यकलापों के परंपरा को हम जागृति कहते हैं । जिससे आदमी समाधान पूर्वक जी पाता है। समाधान = सुख।

विज्ञान

प्रश्न– हमने ज्ञान नाम का एक शब्द सुना है, विज्ञान की कुछ रूपरेखा पहले भी रही होगी, आधुनिक विज्ञान क्या हैं, उसको क्या होना चाहिए? पुराना उसका स्वरूप क्या था? विज्ञान का दिशा धारा के बारे में आपका क्या कहना हैं?

उत्तर– विज्ञान के अनुसार जितना भी धरती के साथ कुकर्म करना है, उसमें हमारी गति बढ़ी, मानव के साथ जितना कुकर्म करना था उसमें गति बढ़ी, विज्ञान का इतिहास क्या हो ये बताता हैं। सामरिक तंत्र को बुलंद करने के लिए विज्ञानियों को पैसा दे कर के सामरिक शक्तियों को बढ़ाई गई। ये सब की शुरूआत राजा युग का ही देन हैं। उसी को राजयोग कहते है। मारे–पीटे, धन को हड़पें लड़कियों को हड़पे, इस कर्म को राज योग लिखा हैं। आप रामायण, महाभारत पढ़ीए, युवराज अपने गद्दी में आ गया, और महाराज बनने के पहले राज्य का विस्तार करना हैं, राज युग में ही ये सम्पूर्ण युद्व तंत्र का बुलंदी हुई। उसकी ये गणतंत्र भी बरकरार रखा। ये कोई कसर नहीं छोड़ा उसी के लिए ये विज्ञान सकल यंत्रो को बनाया। उसमें से बचक कर कुछ–कुछ लोक उपकार के लिए बन गया। जैसे– गाड़ी, यंत्र।

प्रश्न– लोक व्यापी करण की नियत भले ना रही होगी लेकिन बनाने के पीछे सामरिकता का नियम कैसे रहा होगा?

उत्तर– शुरूआत जो है ना सामरिक प्रयोग के लिए ही, पूरा दूर संचार शुरू हुआ है। आप ठीक से इतिहास को पढ़ीये, पूरा संचार व्यवस्था जो है, ये सामरिक तंत्र के लिए

बनी, संयोग ये हुआ की उसके साथ व्यापार बुलंद हो गया। राजा के हाथ से बाहर बचकने को जो बात आई, वह प्रौद्यौगिकी विधि आ गई। प्रौद्यौगिकी विधि आने से जो सामरिक तंत्र के लिए`नचचसल कर के उद्योगपतियों का पेट भरा नहीं, तब क्या करते? सब मानव उपयोगी विधियों को अपनाओं बोले। और छोटा गाड़ी दे दिया, आदमी गाड़ी में घूमना शुरू कर दिया। फोर्ड़ नाम का एक आदमी हुआ। वही पहले बार आदमी को गाड़ी बनाकर के दे दिया। आप इतिहास को देखिएँ उसके बाद बाकी सब लोग आते हैं, फोर्ड़ फाउड़ेंशन अभी बैठा हुआ है। वही आदमी है, जो छोटा सा गाड़ी उसने विश्वास दिलाया, राजतंत्र को इसमें क्या होने वाला है? सिर्फ 2 आदमी बैठने वाला गाड़ी है। उससे पहले एक भी आदमी गाड़ी में नहीं घूमता था, उसके बाद दूरसंचार में ूपतमसमे आया।

उसकी अभी भी बवदजतवस के रखे हैं, कि सबको नहीं देना, उनका जो सामरिक प्रकिया है, संघर्ष करके, ऐसा मानकर के आज भी रखे हैं। ूपतमसमे को वह तो पकड़कर रखा, पदजमतदमज बच का दिया।

तुम रखे रहो, तुम्हारा ूपतमसमे को वही ूपतमसमे यहां से 10ाउण जाने से पहले पदजमतदमज में करोड मील चला गया। दूरसंचार बचक कर के आम आदमी के हाथ में पड़ गई, उस कम में अन्ततगत्वा ये स्वीकार लिया, राज्य भी स्वीकारा, जनता भी स्वीकारा, उसको बनाये रखने के लिए ये तैयारी किया। ये जतंपद भी कहॉ से शुरू हुआ, उसी के लिए, उपसपजंतल के लिए। उसके जगंल को दोहारने के लिए शुरूआत हुआ। उसके बाद बचक गई। अभी ये दोनो रह गए, आदमी घूमना ज्यादा हो गया।

प्रश्न– जिस व्यक्ति ने`जमंउमदहपदम का आविष्कार किया वह ये सोच के तो नहीं किया है, कि इसमें बाद में युद्व करेगें?

उत्तर– जमसमअपेपवद का युग जब शुरू हुई, सन् 1945 से, वह युग आने तक में वह दूसरे स्थिति हो गई।`जमंउमदहपदम भी जहॉ तक टेकनिक हैं, वह उसके लिए नहीं बनी थी। वह युद्व को लेकर के नहीं बना। आम आदमी`जमंउमदहपदम को पहचाना। उसको बाद में बवदजतवस में ला कर युद्व में प्रयोग किया उसके बाद बचक कर के आदमी के पास आ गया।

प्रश्न– बाबाजी इसमें 2 पक्ष हो गया। एक तो किसी चीज का आविष्कार कर लेना, दूसरा बात है, उसको लोक व्यापीकरण करना या नहीं करना, इसमें जो आविष्कार वाला मुद्दा हैं, उसमे तो किसी का बुद्वि नहीं था व्यापार करने का ।

वह हठात् है, घटना विधि से आविष्कार हुई हैं, ये बात सही है, उसमे ना व्यापार या ना कुछ था, ना उपसपजंतल थीं। ये तो बात सच हैं, चीज जो पहचानने में आया हैं, जैसे चक्का घूमाना। चक्का घूमाना जो है ये युद्व को थोड़े ही सोच कर के हुआ , चक्का समझ में आने के बाद उसको युद्ध में उपयोग करने के लिए ज्यादा ंजजतंबज हुए। वैसे युद्ध में मदहपदम को उपयोग करना, गाड़ी को उपयोग करना शुरू किए ही हैं। आविष्कार एक अलग चीज हैं, मनुष्य को हाथ लगाने की तरीका अलग चीज है। वस्तु को निमार्ण करन की मूलभूत प्रेरणा मिलना एक अलग चीज हैं, वह प्रौद्यौगिकी में आना और जो वाछिंत व्यवस्था में प्रयोजित होना एक अलग हैं । उस वाछिंत व्यवस्था में प्रयोजित होने के बारे में हम बात कर रहे हैं अभी।

प्रश्न– लेकिन जब विज्ञान की इतिहास के बात करेगें, अनुसंधान की भी बात आएगी।
उत्तर– ये विज्ञान और तकनीकी 2 बात है, ये तकनीकी, पढ़ा, लिखा आदमी से आविष्कार कम हुआ है, उससे यदि आविष्कार हुआ भी होगा। इस प्रकार का चीजों को बनाने में कितना योगदायी है, उसको इतिहास में देखने को मिलता है, जो वस्तु मूल में ेजमंउमदहपदम का प्रेरणा है, सामान्य बुद्दु आदमी के पास ये प्रेरणा आया, जमसमचीवदम का प्रेरणा एक बुद्दु आदमी के पास आया। ंमतवचवसंदम को उड़ाने का प्रेरणा सामान्य एक मेकेनिक को आए।

इस प्रकार से सामान्य व्यक्तियों के पास ये सब चीज आया। बहुत पढ़ा लिखा व्यक्ति के पास ये कुछ नही आया, पढ़ा लिखा आदमी के पास जो आया हैं, परमाणु बंम बनाने की प्रेरणा, ये सब चीज आया होगा। उसको आप लोंग सटीक देखेगें, इसके बावजूद सामान्य आदमी में आ तो गया, उसका उपयोग करने के लिए राजविद्या में जो बात आई, सामरिक में उपयोग ज्यादा से ज्यादा हुआ।

प्रश्न– विज्ञान और उससे पैदा होने वाली तकनीकी, उसके उपयोग दुरूपयोग के आधार पर उसका समीक्षा करें?
विज्ञान जिस अवधारणा पर आधारित हैं, हम उसका समीक्षा करे?
उत्तर– सह अस्तित्व वादी विधि से विज्ञान का मतलब ये होता हैं, विवेक पूर्वक निर्धारित लक्ष्य के लिए दिशा निर्धारित करना विज्ञान है काम है। लक्ष्य क्या होता है? मानव लक्ष्य

क्या होता है? जीवन जागृति परम लक्ष्य । उसके लिए विज्ञान कैसा दिशा निर्धारित करता हैं, उसके बाद समाधान स. अ. स. के लिए विज्ञान क्या दिशा निर्धारित करता है। यही हमारा सह अस्तित्व वादी विज्ञान, विवेक का मतलब, इसमें परिवार से लेकर अखण्ड़ समाज, सार्वभौम व्यवस्था तक की लक्ष्य निर्धारित होता है, दिशा निर्धारित होता है।

उसके बाद आता है प्रचलित विज्ञान के बारे में जो बताया, विज्ञान का सर्वोपरी उपयोग, समारिक तंत्र के लिए हुई, विज्ञान का मूलभूत बात है, वह यह हैं, विज्ञान सत्य को उद्‌घाटित करने के लिए अपना आश्वासन देता है। यंत्रो से जो कुछ भी उनका सत्य को बताने के लिए आधार है, प्रमाण है, वह यंत्र है। यंत्रों से जो कुछ भी तमेनसज निकलती है, परिणाम निकलती हैं, उसको अंतिम सत्य नहीं मानना हैं, ये विज्ञान का आज का स्थिति हैं, शुरूआत की स्थिति हैं। इसके लिए आगे उसको, और कोई यंत्र बनाने के लिए सोचना,और कोई प्रयोजन निकालने के लिए सोचना, इस ढ़ग से परंपरा बनाने की बात कहते हैं। उसमें मूलभुत प्रश्न यही आता हैं, क्या परम सत्य, अंतिम सत्य को विज्ञान संसार समझा हैं। जिसको खोजने चला है, यदि नहीं समझा हैं।

तब परम सत्य, अंतिम सत्य का क्या होगा? ये बात प्रश्न चिन्ह में आ जाता हैं? जैसे अदैत्यवादी का मोक्ष का बात हैं। मोक्ष के बारे में गवाही कौन देगा? उसके लिए उत्तर दिया हैं, हमारे यहॉ जो नमक का पुतली समुद्र को नापने गया तो समुद्र में गल गया, मैंने बोला, कॉठ का पुतली होगा तो क्या होगा?

तैरेगा। तैरेगा तो नापेगा, आप हमारे कल्पना के दौड़ में कुछ भी हम कह ले। उसके लिए हम कह ही रहे हैं, ''प्रतीक प्राप्ति होने वाला नहीं हैं, उपमा उपलब्धि होगी नहीं'' ।

विज्ञान क्या सत्य को समझ कर प्रयोग कर रहा हैं? सत्य को ना समझ कर के सत्य को खोज रहा हैं, ये सोचने की बात हैं, हर जगह यही बात आती हैं, यह अंतिम सत्य नहीं हैं, हर यंत्रों से उपलब्धि को यही कहा जाता हैं। इसमें हमारा कोई आरोप नहीं हैं, इतिहास रखा ही हैं। अतंतगत्वा क्या हुआ, विज्ञान से कोई दिशा या लक्ष्य निर्धारण करने में हमारा कोई सहायता हुई नहीं हैं।

सुविधाओं में बहुत सारी चीज उपलब्ध हो गई, वह निर्धारित रूप मे महत्वाकांक्षा रूपी सुविधाएँ उपलब्ध हुआ हैं, उसके लिए हम कृतज्ञ हैं ही।

जो कोई भी दो ग्रह, जैसे की धरती घूम रहा हैं, धरती कोई दूसरा कोई धरती से, सूर्य से या कोई ग्रहगोल से खिचांतानि वश घूम रहा हैं, ऐसा इनका सोचना हैं। हमारा सोचना यह हैं, व्यवस्था में भागीदारी कर रहा हैं। दोनो में कितना दूर है? समाधानात्मक भौतिक वाद में यह हम कह रहे हैं, ये दोनो अपने व्यवस्था को प्रमाणित करने के लिए स्वंय स्फूर्त विधि से काम कर रहे हैं, धरती अपने को व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने के क्रम में काम कर रहा हैं।

द्वन्दात्मक भौतिक वाद ये कहता हैं, ये दूसरे ग्रह की खिचांतानि से अपने को बचाव के लिए घूमता रहता हैं, विज्ञान में अभी यह कठिनाई हैं, कि द्वन्दात्मक भौतिक वाद से शुरू करता हैं, उसका जो निष्कर्ष निकलता हैं, वह संघर्ष के लिए ही जाता हैं। इसी आधार पर धरती के साथ भी संघर्ष कर डा़ला। संघर्ष एक आवश्यकता जैसी दिखने लगती हैं।

हम सहअस्तित्व वाद से शुरू करते हैं, निष्कर्ष जो निकलता हैं, पूरकता के अर्थ में परिभाषित हो पाती हैं। एक दूसरे के व्यवस्था में भागीदारी करना का मतलब ही पूरकता को प्रमाणित करने का मतलब ही है, प्रयोजनों को पूरा करना, माने प्रमाणित करना, प्रयोजनों को प्रमाणित करने का मतलब ही हैं, व्यवस्था को प्रमाणित करना।

विवेक

प्रश्न– विवेक क्या है? आदमी के जिंदगी के साथ उसका क्या संबंध है? अभी बहुत सारी बातों के बारे में चर्चा हुई, विवेक के द्वारा इस सब पर क्या रोशनी पड़ती हैं, या कैसे हम उसको समाधान के क्रम में प्रयोजित कर सकते हैं?

उत्तर– विवेक का मतलब होता है, लक्ष्य को पहचानना। अस्तित्व का लक्ष्य क्या है? सह अस्तित्व। सहअस्तित्व ही अस्तित्व का लक्ष्य है। उस को छोड़ कर के आप क्या भागेगें मैं क्या भागूंगा, कहॉ भागूंगा हर जगह में सह अस्तित्व मूल लक्ष्य है। वह मूल लक्ष्य के आधार पर हम राज्य के बारे में क्या कहेगें? अर्थ व्यवस्था के बारे में क्या कहेगें? समाज के बारे में क्या कहेगें? ये सब करने से समाधानात्मक भौतिक वाद आता है। सह अस्तित्व को मूल में रखा, सहअस्तित्व को शीर्ष में रखा, ये लक्ष्य हैं। समाज का लक्ष्य क्या हैं?

अभय, सहअस्तित्व । इसी विधि से समाज का व्याख्या किया । ये आपको भी ठीक लगता हैं, स्वीकार होता हैं, हमकों भी होता हैं। जिनके पास बहुत सारा पैसा हैं, उनको भी ठीक लगता हैं, जिनके पास नहीं हैं उनको भी ठीक लगता हैं, जो शोषण करते हैं, उनको भी ठीक लगता हैं, जो दान करते हैं, उनको भी ठीक लगता हैं। ये नहीं था तब संघर्ष ही ठीक लगता था, आदमी को कैसा आदमी कहोगे, क्या कहोगे, आप ही बताओं? उससे पहले संघर्ष करना ही ठीक लगता था, हम पूछे संघर्ष करके क्या करोगें? तो बोले 2–4 प्रतिशत आदमी हैं, उनको घाट उतार दिया तो सब सही हो जाएगा। संघर्ष नाम का जो भाषा हैं, ये हमारा भ्रम का उपज हैं। भ्रम मे हम कही भी तालमेल बैठा नहीं पाते हैं, जैसा की उत्तर प्रदेश में कई ऐसा परिवार हैं, बींपद तमंबजपवद वाला । कोई एक आदमी एक आदमी को गोली से मार देता हैं, वह तो चले गये अपने यात्रा में, जो मर गया उनके बच्चों के लिए 2 भैंस खरीदते हैं। अभी दूध दूहों, इनको पिलाओं । जब बच्चों का आयु आया, इनको दंड़ पेलो, ताकत बनाओं। ताकत बनाकर करके बन्दूक ला करके दे दिये। उसको मार के आओं। मार के चला आया। उनके बच्चे अभी भैंस खरीदना शुरू किये, दूध पीना शुरू किये। बींपद तमंबजपवद हजारों परिवार में आपको मिलेगी।

वही बींपद तमंबजपवद कौमी विधि से, कौमी भावना से, एक कौम जो है ना अभी ड़ण्ड़ा खा कर के थोड़ा चुप हो गया तो सोचा नहीं भई, दूध पीया करो, हड्ड़ी चाबा करों। और बंदूक चलाओ– – – जाओं वह सारे कौमिओं की मार के आओं, सारे कौमिओं को मारो तो एक ही कौमी रहेगा। यही है संघर्षात्मक, जनवाद या द्वन्दात्मक भौतिक वाद, अब उनके लिए लिखा, समाधानात्मक भौतिक वाद। संम्पूर्ण भौतिक पदार्थ व्यवस्था में है, और मानव भी व्यवस्था में हो सकता है। संघर्षात्मक जनवाद, संघर्ष करने की जरूरत नहीं हैं, आवश्यकता से अधिक उत्पादन करना, समृद्वि का अनुभव करना, ये चाहिए, वह चाहिए,

सोच लो। मस्त जो है ना आवश्यकता से अधिक उत्पादन किया और ठसके से जीया और 10 व्यक्तियों का उपकार किया। ये ठीक है, 10 व्यक्ति का जेब काटना?

व्यापक को हम अनुभव किया, आप अनुभव करोगे, व्यापकता रहस्य नही हैं, अस्तित्व में कोई रहस्य नही हैं, ये अनुभवात्मक अध्ययत्मवाद का मेमदबम चवपदज हैं। अब इसमें कौन सा भारी पसीना बहाना हैं, अनुभव ना करे? रहस्य को कब तक पूजा

करे? इतना क्षत–विक्षत हो गये है, उसके बाद भी हठ धार्मिता को करेगें और क्षत विक्षत ही होगें, परिणाम ही उसका वही है।

सह अस्तित्व को लक्ष्य के रूप देख लेना ये विवेक है, यही आवश्यकता है, अस्तित्व जो है ना बिल्कुल नित्य वर्तमान, प्रकाशमान विद्यमान और प्रमाण है। वर्तमान में जब प्रमाण है, तो वह कौन सा रहस्य है भाई। व्यापक वस्तु जीतना सुलभ रूप में हर एक को समझ में आता है, एक–एक वस्तु उतना सुलभ रूप से समझ में नही आएगा। व्यापक वस्तु को सर्वाधिक ग्रहण, दुरूह, रहस्य बना कर के करोड़ों अरबों आदमियों को गन्ने के जैसे कोल्हू में ड़ालकर के पेर ड़ाला। सब आदमी खाद–गोबर हो गये भाई। हमारा परिवार में सैकड़ों आदमी खाद गोबर हुआ। जिसका इतिहास के लिए हम स्वंय साक्षी हैं, आदमी सार्थक होने वाला विधि को अपनाने की आवश्यकता है। उसी विधि में ये आया, अनुभवात्मक आध्यात्मवाद। अस्तित्व में कोई रहस्य नहीं है, अस्तित्व हमको समझ में आया है, आपको भी समझ में आयेगा। यदि हमको समझ में आया आपको समझ में नहीं आता है, तो रहस्य है। अस्तित्व में न सिद्वि है, ना चमत्कार है, अस्तित्व में जो कुछ भी है, एक निश्चित प्रणाली है, निश्चित परिणाम है, निश्चित फल है। निशचित प्रणाली पद्वति के अनुसार अध्ययन करना आवश्यक है, मनुष्य समझदारी मूलक विधि से ही जीने योग्य इकाई है, इसलिए इसका नाम ज्ञानावस्था का इकाई दिया गया। अध्यात्मवादी इसको जीव दिये है, भौतिक वादी भी आदमी को जीव ही कहा है, सोशल एनीमल नाम दिया है, तो रहस्य में जीना है या यर्थाथता के साथ जीना है, पहले हमको निर्णय लेने की आवश्यकता है, रहस्य में जीना है, तो किताब प्रमाण होता ही है। यदि किताब प्रमाण के अनुसार आदमी में जीना दुभर हो गया है, उसके बाद यर्थाथता के साथ जीया जाए, देखा जाए, किसको क्या आपत्ति हैं। अगर थके नहीं है, तो और रहस्य में जीया जाए, देखा जाए। रहस्य जो है, सुख, शांति अमन, चैन का आधार नहीं है। चमत्कार आदमी को अमन–चैन जान–माल की सुरक्षा करने में असमर्थ है। मनुष्य को मानवीयता पूर्ण यर्थाथता के साथ जीने की पद्वति, प्रणाली, रीति, निति सबको तैयार किया जाए। यहॉ से मानवीय इतिहास शुरू होगा। अभी तक जो इतिहास है, रहस्यता के ऊपर, राक्षसीयता के ऊपर पाश्विकता के ऊपर है,

इन्हीं के बवदजपदनंजपवद में जीना होगा तो मना करने वाला कोई आता ही नही। जीना है तो ये विधि, सहअस्तित्ववादी विधि।

मध्यम मार्ग एवं दर्शन

अभी जीतने मेधावियॉ यहॉ पर उपलब्ध है, इनके बीच में मध्यस्थ दर्शन के संबंध में, जो कुछ भी बातें हुई और शंकाएँ इस प्रकार से आई की विगत में बुद्ध दर्शन को मध्यम मार्ग नाम दिया है। ये मध्यस्थ दर्शन से ऐसा ध्वनित होता हैं, ये मध्यम मार्ग का तो काम नहीं हैं, ये मूल शंका ऐसा बनता हैं। उसके साथ ये बात स्पष्ट कीजिए की वे उस तत्काल में जो एक दक्षीणाचार, वामाचार ये इन दोनों के बीच में आचार संहिता को बुद्ध ने प्रणीत किया । उसको मध्यम मार्ग नाम दिया है। यद्यपि इसका आधार भीन्न है, इसके बावजूद भी आपका ऐसा पूछना है। इसके आगे और भी दर्शन में जो प्रतिपादित किए हैं, उन मुद्दे पर ध्यानाकर्षण करना चाहते हैं। वह यह है, आगे चलकर के दर्शन में यह प्रतिपादन हुई हैं, मध्यस्थ क्रिया, मध्यस्थ दर्शन, मध्यस्थ जीवन, मध्यस्थ बल, मध्यस्थ शक्ति को प्रतिपादित किया। मध्यस्थ जीवन को इस आधार पर प्रतिपादित किया हैं, सम, विषम मध्यस्थ शक्तियॉ होते हैं,। मध्यस्थ शक्ति जब जागृत होता है, सम, विषम दोनो मध्यस्थ के अनुरूप कार्य करते हैं। इस बात को प्रतिपादित किया। मध्यस्थ बल का मतलब ये है अनुभव मूलक विधि से हम व्यक्त होने से मतलब, मध्यस्थ जीवन का मतलब हैं, अस्तित्व में अस्तित्व जैसी परम सत्य में अनुभूत हो कर प्रमाणित करने की क्रिया कलाप को मध्यस्थ जीवन के नाम से नाम दिया। यह बात यदि गले से उतरता हैं, ये मध्यस्थ दर्शन का सार्थकता आपकी भी समझ में आएगी हमें भी समझ में आएगी।

आहार, विहार, व्यवहार, व्यवस्था में भागीदारी = व्यक्तित्व

एक सूत्र हमने लिखा हैं, आहार+विहार+व्यवहार+व्यवस्था में भागीदारी = व्यक्तित्व,

आहार+विहार = स्वास्थ्य

इस सूत्र के अनुसार स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए, मानव अपने आहार को पहचानने की आवश्यकता है। मानव अभी तक अपने आहार को पहचाना, नहीं, पहचाना, पहले इसी को सोच लो। इस बारे में हमारा उदघोष यही हैं, मानव अपने मानवीय आहार को पहचाना नहीं, कैसा? मानव शाकाहार भी करता है, मांसाहार भी करता हैं, कुत्ता क्या करता है? दोनो करता है। मांसाहार भी, दूध –रोटी भी, इन दोनो में क्या अंतर है? आपको प्रकृति सहज विधि से पूछ रहा हूं, इसमें आरोप, प्रत्यारोप की कोई आशंका नहीं हैं। मैंने इस बात का घोषणा किया। मानव अपने आहार को नहीं पहचाना। ये बात

सच्चाई हैं, पहचानने की जरूरत है, नहीं है, सोच लीजिए। उसमें एक उदाहरण प्रस्तुत किया, कुत्ता और मनुष्य। आहार विहार को हम स्वंय यदि नहीं समझेगें, कुत्ता भी संवेदनशीलता में घूमता ही हैं। और मनुष्य भी संवेदनशीलता में ही घूमता हैं। उसमें भी कोई अतंर नही। आहार में भी अतंर नहीं हुआ। यदि संवेदनशील विधि को ही हम विहार मानें, कुत्ता के विहार में और और मनुष्य के विहार में क्या अंतर होगा?

तुलनात्मक विधि के लिए आप के सम्मुख प्रस्तुत किया। संवेदनशील विधि की सीमा में कुत्ते को विधि से और मनुष्य के संवेदनशीनल विधि से कोई अंतर दिखता नहीं हैं, आहार में अंतर दिखता नहीं है। तब क्या किया जाएँ? मनुष्य अपना आहार विधि को भांति–भांति व्यापार में आदमी लगाता हैं, कुत्ता नहीं लगाता। आदमी आहार को ड़ब्बा में बंद करके, जंका– मंका करके इसको व्यापार में लगाता हैं। कुत्ता वह धंधा नहीं करता हैं। मनुष्य और कुत्ते की अंतर यहॉ से शुरू हुआ। इस स्थिति में क्या घोषणा करें? मनष्य अपने आहार पद्वति को पहचाना। माना जाए नहीं पहचाना, माना जाए। इस गवाही के साथ हमारा निष्कर्ष ये हैं, हम मानव, मानवीय आहार पद्वति को अभी तक ना पहचान पाए हैं, ना ही उसको ठीक निष्ठा से हम लेके चलने में समर्थ हुए हैं, कितने वर्ष तक हम समझ पाएगें आप सोच लीजिए। धरती बीमार हो गई, झझंट ये पैदा हो गई, धरती बीमार नही होता, अपन इतंजार करते की अभी नहीं तो आगे युग में होगा, उसके आगे युग में होगा, उसके आगे युग में होगा। अब धरती ही बीमार हो गया तो हम कहॉ तक इतंजार करें, क्या करें। यदि ये झूठा है तो माना न जाए। सच्चा है तो सोचने की मुद्दा हैं। आहार, विहार को हमको पहचानना ही होगा। उसके पहले हम व्यवस्था में जी नहीं सकते। आदमी व्यवस्था में तो जीएगा नही। आहार, विहार में ही विचलित हो गया। उसके बाद कौन सा व्यवस्था में जीएगा। जीवों से भिन्न रूप में जीने के लिए, आहार, विहार एक बहुत ही आवश्यक वस्तु है। इसका हम निश्चय करते है, निर्णय करते हैं, उसका पालन करना ही पड़ेगा। निर्णय करने मात्र से होता है क्या? पालन करने से निर्णय किया हुआ गवाही मिलती है। इस कम में हमारा जो सुझबूझ है, हमारा अनुभव है, मेरा स्वंय का अभ्यास है, वह यह कहता है।

1. मनुष्य का शरीर रचना शाकाहारी शरीर के रूप में बनी हुई हैं।
2. मनुष्य की अर्न्तरचना और बाहार में नाखून और दांत का रचना ये भी शाकाहार शरीर रचना के रूप में है।

मांसाहारी जीव जानवरों का दांत और नाखुन अलग प्रकार से बनी रहती हैं, और शकाहारी जीवजानवरों का नाखून और दांत अलग तरीके से बना रहता हैं।

3. शाकाहारी जानवर होठ से पानी पीते हैं, मांसाहारी जानवर जीभ से पानी पीते हैं।

इन 3 जगह में यदि हम ध्यान दे तो मनुष्य का शरीर रचना शाकाहारी जानवरों के सदृश है। इस कम में ये निश्चय हम कर पाते हैं। तब हम आहार पद्वति को पहचान पाते हैं। आहारपद्वति को पाने के लिए विधि यही है, अभी तक परंपरा में ये बात का मदद हो चुकी है, अनेक प्रकार के अनाजों को हम पैदा करने की हैसियत पैदा कर चुके हैं। विज्ञान आने के बाद क्या किया? वह हैसियत को हटा दिया। विज्ञान युग आने से पहले हमारा देश में कम से कम 7000 प्रकार की धान थें। अभी 700 नहीं हैं। थोड़ा दिन बाद इनका संइवतंजवतल में ही रह जाएगा। धान और किसानों के पास एक भी बीजा नहीं रहेगा। उसका इंतजाम कर ही रहे है।

इस ढ़ंग से विज्ञान मानव का उपकारी हुआ, मानव को बरबाद किया इसको सोचना है। ये नहीं है, विज्ञान से कोई मदद नहीं हुआ, ऐसा मेरा कहना है, जहॉ तक दूर दर्शन, दूरगमन, दूरश्रवण संबंधी जीतने भी कार्यकम साकार हुए हैं। इसमें मानव जाति की गति के लिए बहुत उपकार हुआ है। मेरा मूल्यांकन इस तरह है, किन्तु बाकि दिशाओं में जो क्षति हुई, उसको भी अनदेखी नहीं किया जा सकता। उपकार हुआ है, उसका भी मूल्यांकन होना चाहिए जो उपकार नहीं हुआ है, हानि हुआ है। उसका भी समीक्षा होना चाहिए। ऐसा मेरा तमुंमेज है। इन दोनों भाग को ले के चलने पर ये पता चलता है, विज्ञान से बहुत उपकार हुआ हैं। क्या उपकार? दूर दर्शन, दूर गमन, दूर श्रवण विज्ञान उसके बाद तर्क संगत वार्तालाप के लिए बहुत सारा खिड़कियॉ खोली । ये बहुत बड़ा भारी उपकार हुआ। दोनो जगह में इसका उपकार हम को पहचानने में आया है। इसके अलावा बहुत जगह यदि होगा, वह विज्ञानियों को हम पहचानेगें समय–समय पर, और उसके बाद जो बरबाद की पहचान हुआ ये सच्चाई हैं, ये जो बीज विधि और बीज को उन्नत बीज बनाने की विधि से, मनुष्य का ज्यादा उपज पैदा करने के लिए, उन्नत बीज बनाने का जो प्रकिया किया उसका परपंरा हो नहीं सका।

फलस्वरूप जो बनी हुई बीज परंपराऍ ध्वस्त हो गई, समाप्त हो गई। अब किसान खाली बैठने के जगह में आ रहा हैं। इसमे दो ही मुद्दा है, किसान पुनः अपने जागृति को पैदा कर लें, अपने खेत में होने वाली धान, बीज वगैरहः कुछ भी,

उसको अपने में संरक्षित करें। ये ही इसका उपाय है। इन उपायों को अगर नहीं अपनाते हैं, एक दिन अपने को, संइवतंजल से जो दुकान लगा के बैठे हैं, उनसे यदि बीज नहीं मिला आप दाना नहीं बो पाओगें।

विज्ञान विधि से हम आहार निर्णय कर नहीं सके। मांसाहार, शाकाहार का समानता को विज्ञान ने प्रतिपादित किया। क्योंकि विज्ञान विधि से मांस को परीक्षण करने पर भी पुष्टि तत्वों का पहचान होता हैं, इसमें दो राय नहीं है। क्योंकि शरीर में पुष्टि तत्वों का उपयोग होता है, मांस के रूप में वह परिणत होता भी है, इसको हम अच्छी तरह से जानते हैं। वही पुष्टि तत्व वनस्पतियों में भी मिलता हैं, ये भी बात सही हैं। जो वनस्पतियों को सेवन करते हैं, उनमें भी पुष्टि होता हैं, जो मांसाहार करते हैं, उनके शरीर में भी पुष्टि तत्व होता है, ये चीज में तो समानता हैं, इसके मूल में जो मूल तत्व हैं, जीवन और जीवन मानसिकता।

मानसिकता के ऊपर है ये, आगे जो कुछ भी हमारा मन्तव्य हैं, वह मानसिकता के अर्थ में है, मानसिकता शोषणवादी होना, हिंसावादी होना, नहीं होने के आधार पर, सम्पूर्ण मांसाहार प्रकिया आदमी को शोषण और हिंसा की ओर प्रस्तुत करता हैं। हिंसा और शोषण मनुष्य के लिए अत्यन्त हानि प्रद प्रवृत्तियॉ, परिवार में भी हिंसा और शोषण हानिप्रद हैं, समाज में भी हानिप्रद हैं और व्यवस्था में भी हानिप्रद हैं, परस्पर समुदाय के साथ भी हानिप्रद हैं, देश के साथ भी हानिप्रद हैं, परस्परता में भी हानिप्रद है इस बात को साधारण मन से ही पहचान सकते हैं।

मांसाहार, शाकाहार की पुष्टि तत्व के आधार पर समानता को बताकर एक सिर का दर्द पैदा किया। इसमें मानसिकता का पहचान ना होने का ही फल रहा है। विज्ञान विचार से, जीवन, शरीर से अलग से कोई चीज है, ऐसा कोई सोचने की तरीका ना होने से इस प्रकार का महानतम गलती कर बैठा।

ज्योतिष शास्त्र और किरणें

ज्योतिषी को जानने मानने की इच्छाएँ मानव परंपरा में तो आज भी देखने को मिल ही रहा हैं, बहुत सारे लोग ज्योतिषी के बारे में जुड़े भी हैं, ज्योतिषी का मूल रूप क्या है, इसके बारे में मैंने जो देखा यही है, ब्रम्ह्राण्ड़िय किरणों को, बम्ह्राण्ड़िय किरणों का तो संचार होता ही रहता हैं, वह होते हुए, निश्चित ग्रह को जो सौर व्यूह में पहचानी गई है, उन ग्रहों के माध्यम से वह किरण कैसा काम करता है? जैसा सूर्य के माध्यम से ब्रम्ह्राण्ड़िय किरण कैसा काम करता है। बुध एक ग्रह है, उसके माध्यम से कैसा ये काम कर रहा हैं, मंगल, चन्द्रमा के माध्यम से कैसा काम कर रहा हैं। इसको पहचानने की विधि को हम ज्योतिषी श्शास्त्र कहते हैं, और इसको पहचानने की कम को एक गणितिय विधि से, इस बात को पहचाना गया की अक्षांश रेखाएँ की संयोग से एक वर्ग को, छोटे से छोटे, बड़े से बड़े वर्ग को पहचानने की विधि तैयार कर लिया। उस वर्ग मे, उस समय में कैसे ग्रहों का किरण का प्रभाव रहता है, उसका अध्ययन है ये। उससे होने वाली फलाफलों को बताने के लिए, सही फलों को या गलत फलों को दोनों को बताने की विधि है, इसके आगे, इसके आधार पर ज्योतिषी भी यही मानता हैं, ये ज्योतिष तंत्र के साथ ही सारे मानव तंत्र ऐसा शुरू कर देते हैं। जब की वास्तविकाता इससे भिन्न है। शरीर के ऊपर जो ब्रम्ह्राण्ड़िय किरणों का फल होता हैं, प्रभाव होता है, परिणाम होता है, जीवन के ऊपर इन ग्रहों का ब्रम्ह्राण्ड़िय किरण का एक भी प्रभाव नहीं, एक भी परिणाम नहीं ये शरीर के ऊपर ही सारे फल परिणाम होते हैं।

ब्रम्ह्राण्ड़िय किरण ये चीज है, जैसा हमारा धरती है, इस धरती में विकिरणीय जो प्रवाह है, वह सतत् निश्रृत होता ही रहता है। वैसे ही कई ग्रह से विकरणीय प्रवाह बहती रहती हैं। इसको ब्रम्ह्राण्ड़िय किरण हम कहते हैं, ये प्रवाह कभी भी बंद होते ही नहीं। ये ग्रह गोल मे जीतना विकसित रहता हैं, उतना हो ज्यादा उसमें से विकिरणीय प्रभाव बर्हिगत होता ही हैं, हर ग्रह का विकिरणीय प्रभाव रहता ही है, इसमे 2 राय नहीं। इस प्रकार से ब्रम्ह्राण्ड़िय किरण का स्वरूप, विकिरणीय प्रवाह के स्वरूप में हम पहचान सकते हैं, विकिरणों का जो प्रवाह किसी धरती से, किसी ग्रह गोल से, माध्यम से वह हर एक अक्षांश, देक्षांश के वर्ग को बताया, उस वर्ग में कैसा प्रभाव पड़ता हैं, उसका गणना करना

ही ज्योतिषी का मतलब। उस वर्ग में जो आदमी पैदा होता है, और जीवित रहता है, और उनके शरीर पर कैसा काम करता है, उसको बताना है, उसी से रोग, हानि, लाभ के बारें में बताते हैं, उसके परिहार के लिए कुछ उपाय भी बताने हैं, इस ढ़ंग से ज्योतिषशास्त्र का मतलब है, उसका जीवन के ऊपर प्रभाव नहीं होता हैं, ये बात अभी ज्योतिषशास्त्र नहीं समझा हैं। आगे चलकर के समझेगा, कालातंर में समझेंगा। अभी जैसा विज्ञानी नहीं समझें हैं।

वैसे ही ज्योतिषशास्त्र भी जीवन को नहीं समझा हैं। वह श्शरीर को जीवन मान के सारे भविष्य फल को बताया करते हैं। उसके बाद एक आत्मा नाम की चीज को मानते हैं,

ज्योर्तिविद भारत में, अन्य देशों में क्या मानते हैं, हम नही जानता हूँ,भारत में आत्मा को मानते हुए आत्मा से आत्मर्विद ज्योतिषी होते नहीं आत्मा को कोई समझा ही नही ंतो ज्यातिषी क्या समझेगा। आत्मा का नाम का प्रयोग करते हैं, ये जरूर है ब्रम्ह्राण्ड़िय किरण का प्रभाव शरीर के ऊपर होता है।

प्रश्न– बाबाजी ज्योतिषी में जो ब्रम्हज्ञानी बनने का योग रहता हैं, राजा बनने का योग रहता हैं, अगर वह जीवन को, जीवन के जागृति के स्थिति को नहीं जानता। ब्रम्हज्ञानी को किस आधार पर, क्यों कि ऐसे बहुत सारे महापुरूषों की कुण्ड़लियों का विष्लेषण करने से पता लगा, वाकई अपने युग में वह लोग ब्रम्हज्ञान को उपलब्ध हुए, समाधान को उपलब्ध हुए। आपकी और उनका बात का तालमेल कैसे होगा?

उत्तर– सभी बम्हज्ञानी जो हुए हैं, वह तो अपने को नहीं कहा की हम ब्रम्हज्ञानी हुए, एक भी आदमी नहीं कहा। उपनिषद युग की ऐसे ही अवधारणा हैं, उसमें लिखा है, उपनिषदों में जो कहता है हम ब्रम्हज्ञानी हो गये बिल्कुल ब्रम्हज्ञानी वह नहीं हैं। उसके बाद में और कोई कहा होगा। तो बात अलग है, अभी उपनिषद के कथन के अनुसार ''हम ज्ञानी हो गये, इस बात को हम सत्यापित नहीं कर सकते'' ज्ञान का जो कुछ भी प्रवोधन की बात है, इशारा करने की बात है, उसको शास्त्र को ही प्रमाण माना हैं, और दूसरे किसी को प्रमाण नहीं माना, व्यक्ति को प्रमाण नहीं माना। लोग बहुत सारे लोगों की ब्रम्हज्ञानी मानते रहे हैं, ये बात लोगों ने माना है, ये ठीक हैं, इस विधि से हम यहॉ निष्कर्ष में पहुँचते हैं, उसके साथ–साथ यह भी हमारे पास गवाही है, मैं जब समाधि को देखा था, उस अवस्था में हम ब्रम्हज्ञानी हो गया हूँ, ये हम स्वंय नहीं कह पाए थे। शास्त्र में लिखी हुई बात उसमें गवाहित हुई। ''सुख दुख से परे'' सुख का भी हम गवाही नहीं कर पाते

थे, ना दुख का गवाही कर पाते थे। इसी घटना की यदि सुख–दुख से परे माना जाए वह लिखा हुआ, ठीक है। सही गलती को भी हम बताने में असमर्थ रहें, ये बात जरूर थे, कोलाहल संसार से, संसार को दुख मानने वालां के लिए ये समाधि स्थली बहुत राहत वाला जगह हैं। इसको मैं सारे प्रकार से देखा हूँ। दुसरा आप ब्रम्हज्ञान योग और राजायोग के बारे में बोला था हो सकता है हुआ हो। सही को ही हम मान के चलेगें, हम दूसरे भाग को लेगें नहीं, यदि 10 जगह में ठीक हुआ हैं, 4 जगह में नहीं हुआ हैं, उसको हम नहीं कहेगें, हम सही हुआ है, उतने को ही ले के चलेगें। इस बात के लिए ये जो अभी बताया था, बम्ह्माण्ड़िय किरणों के आधार पर वह किसी वस्तु को प्रभावित करता हैं, तो ब्रम्हज्ञानी को पहचानने की विधि विरक्त होना, और वस्तु से रिक्त रहना की योग को पहचान लिया। विरक्ति का मतलब ये होता है, संग्रह सुविधा से दूर रहना। उसी को विरक्त योग कहा गयां। ये बात वस्तु से ही संबंधित हैं। उस ढ़ंग से सन्यास योग को बताया, परिव्राजक योग बताया, ये बात हमको समझ में आता हैं।

प्रश्न– बाबाजी ब्रम्हज्ञान योग भी बताया।

उत्तर– ऐसे विरक्ति को ब्रम्हज्ञान बनने का योग हैं, ऐसा कहा होगा ।

प्रश्न– नहीं बाबा, बाकायदा आत्मज्ञान ऐसा।

उत्तर–ठीक है, भाषा के बारे में हमकों कोई एतराज नहीं, प्रमाण तो कुछ होता नहीं व्यवहार में, इसको तो आपने सुन लिया ''हिमालय के योग से'' अध्यात्म से व्यवहार से लेन–देन नहीं, ब्रम्हज्ञानियों के बारे में ही मैं कह रहा हूं, जैसा समाधि को आप क्या कहोगे? ब्रम्हज्ञानी मानोगें की नहीं मानोगे। मैं स्वंय गवाही कर रहा हूं हम ब्रम्हज्ञानी हो गया हूं। इस बात को समाधी के बारे में बताने में असमर्थ हूं। आपके सम्मुख जीता जागता हुआ एक आदमी है। ये सच्चाई की बात है। हम ये नहीं कह सकते हम ब्रम्हज्ञानी हुआ हूं सही और गलती को हम नहीं बता सकते। हम समझा हूं ये भी नहीं बता सकते, नहीं समझा हूँ ये भी नहीं बता सकते। हम सुखी हो गया हूं, ये भी नहीं बता सकते, हम दुखी हूँ, ये भी नहीं बता सकते, ऐसे स्थिति में हम स्वंय रहे हैं, शास्त्र में लिखी हुई,वह बात सच्चाई उतरती है, जो सुख, दुख से परे। ये बात से हम संतुष्ट हो सकते हैं तो ऐसे ब्रम्हज्ञानी हो सकते है। तीव्र रूप में यदि विरक्त होने का योग आता है, वस्तुओं से दूर रहने की योग बनता है, ऐसे स्थिति में ये ब्रम्हज्ञानी हो सकता है, ऐसा हम भविष्यवाणी कर ही सकते हैं, ऐसा मेरा सहमति हैं।

दूसरा योग। ये राजयोग की बात। राजयोग का मतलब हैं, दूसरे की वस्तु को ज्यादा से ज्यादा जो हड़प सके, वह सब राजयोग है। पुराने समय में भी ऐसा या आज भी वैसे ही है। आज भी राजयोग का मतलब वहीं जाता है। दूसरे की वस्तुओं को हड़प के अपना बनाने में समर्थ होता है। ऐसे व्यक्तियों को हम राजयोगी कहते हैं। ज्योतिष के अनुसार वही मुद्दा हैं , हमको ज्योतिषी से विरक्ति पैदा किया। हम इसमे सहमत हो भी नहीं सकते। राजयोग जिसको बोलते है। वह संसार के धन को अपहरण करता हैं, हड़पते हैं, सारा झूठ बोलते हैं, उसके बाद भी अच्छे आदमी बने रहते हैं।

प्रश्न– क्या राजयोग में संसार उनको स्वेच्छा पूर्वक धन अर्पित नहीं करता है? हड़पता ही हैं, हॉ, दूसरा कोई रस्ता ही नहीं है, हड़पने की स्थिति नहीं आए, जैसा विवेकानंद ने विश्व का दौरा किया और अरबों रूपया का सहायता लोगों ने दी, तो वे तो राजा जैसा जीया, शान से जीया, बहुत सम्मानित हो के जीया, वह भी एक तरह का राजयोग था, सन्यास योग के साथ हर बार राजा लोग हड़पकर ही राजा बनगें, ऐसा कहॉ सिद्व हुआ। कुछ लोग अपने प्रतिभा से बहुत सम्पत्ति बनाते है।

उत्तर– वह बात को अपन नीर, क्षीर, न्याय कर सकते हैं। अधिकांश राजयोग का आधार वही है, जो मैने पहले कहा है। अब रहा गया विवेकानंद जी कि बात इसमे स्वधन में यह बात लिख हुई है, की पारितोष और पुरस्कार के रूप में जो कुछ की प्राप्ति होती हैं, प्रतिफल रूप में जो प्राप्त होती है। इसको हम स्वधन के नाम से प्रतिपादित किया।

इसी कम में विवेकानंद जी, गांधीजी स्वयं में उपार्जन नहीं किए, किन्तु उनको पारितोष में बहुत कुछ मिला। उसको अच्छी ढंग से एक जगह में संग्रह कर के लोग उपकार के लिए अर्पित करके यह लोग चले गये। वह स्वंय में कितना उपयोग किया हम नहीं जानते हैं, किन्तु वह जीतना उपयोग किया उससे ज्यादा संसार के लिए अर्पित करके ही गए हैं, ऐसे लेग कई हुए। इसमें से एक व्यक्ति विवेकानंद जी भी हैं। विवेकानंद जतनेज में इस बात को देखा जा सकता हें, वैसे ही गांधी स्मारक निधि में भी ऐसे ही चीज देखा जा सकता हैं। फोर्ड नाम का एक आदमी था। वह बहुत धनाग्य हुआ, उनका एक ट्रष्ट है, संसार को हर वर्ष अरबों रूपया बॉटता है, फोर्ड फाउड़ेशन नाम है। वह लोग पैसा बॉटने के अर्थ में बने ही हैं। इस बात को यदि हम ठीक से समझ पाते हैं, तो उसमे राजयोग का जो बात आती है, उसको हम अच्छी तरह से प्रतिपादित कर सकते है। वस्तु प्राप्त होते हुए भी जब त्याग देते हैं, उसको हम परिव्राजक योग कहते हैं, वस्तु

हमको बहुत प्राप्त हो गई, उसको हम उपयोग नहीं करते हैं, जनोपयोग के लिए अर्पित कर देते हैं, इसको परिव्राजक योग नाम दिया हैं। इस प्रकार के योगों से भी ऐसे महापुरूषों का मूल्याकंन किया जा सकता हैं। राजयोग से परिव्राजक योग बहुत दूर है, उसमें एक प्रकार से हठ पूर्वक, बल पूर्वक, छल पूर्वक हड़पने की बात आती है, राजयोग में, जब की परिव्राजक योग में एक पुरस्कार रूप में, परितोष रूप में, सम्मान के रूप में देने की बात आती है। इन बातों में दोनों में बहुत अतंर है। जैसा हम ही हैं, बच्चों के लिए कुछ भी हम न्योछावर कर देते हैं, कुछ भी पैसा खर्च कर देते हैं, वही बल पूर्वक हमसे 2 रूपया खर्च करने के लिए कोई आदमी कहता हैं, उसमें हम सिर काटने के लिए, सिर कटाने के लिए, तैयार हो जाते हैं। देखने में ये कितना बड़ी–बड़ी विरोधाभास हैं। हजारों रूपया हमारा चाहत जहॉ बना रहता है, हमारा मन जहॉ लगा रहता हैं, वहॉ हजारों रूपया लूटा देते है, 2 रूपया छीनने नहीं देते हैं, इस ढ़ंग से बल पुर्वक, छल पूर्वक जो धनार्जन करते हैं,

उसको राजयोग बताने के बात से हम सहमत नहीं हो पाए। इस तरीके से ब्रम्हाण्ड़िय किरणों की सहायता से, धरती के अक्षांश, रेक्षांश के वर्ग में क्या प्रभाव पड़ता है, उसको पहचानने की बात, उसके आधार पर मनुष्य शरीर पर क्या प्रभाव पड़ता हैं,उसको गणना करने के बाद, शरीर के आधार पर मन को परिकल्पना देने की बात और जो पूर्व पुण्य योग्य बताते हैं, कैसे पृष्ठभूमि से वह शिशु पैदा हुआ रहता है, उस पृष्ठभुमि को पूर्व पुण्य योग्य बताते हैं, उस पूर्व पुण्य योग के आधार पर उसका भविष्य फल बताते है। राजा का घर में एक लड़का पैदा होता है, राजयोग होगा ही, इस ढ़ंग से सोचा गया। कोई दरिद्रयोग मैं पैदा होते है। कोई –कोई राजा के घर मे पैदा नहीं हुए है। उनको भी राजयोग आ गया, क्या है जो राज्य के सिंहद्वार में सबेरे 5 बजे पहुॅच गया, उसको पकड़ लाओं हमारा लड़की की शादी कर देते हैं, उनको राज्य मिल गया। राजयोग हो गया । ऐसे बातें को परिकथा में लिखा हुआ हैं। ये सुनने के बाद भी जो उसमें अधिकांश भाग है, ये छल बल के साथ ही धनार्जन, धन का अर्जन, यश का अर्जन, ये सब जुड़ी हुई है। ये हमारा सोचने की तरीका इसमें हमारा ये आग्रह नहीं है कि इसी को सभी कोई मानना।

प्रश्न– बहुत सारे ग्रह, नक्षत्रों के प्रभाव के वजह से, जैसे ज्योतिषशास्त्र के गणित है, मनुष्य को सांसारिक जीवन के ढ़ेर सारे सुखों और दुखों को भोगने की स्थिति आती हैं। दुखों से बचने की मनुष्य का आकांक्षा तो स्वाभाविक हैं, उसके लिए जो उपाय बताए गए

हैं, और ग्रहों का जो असर बताए हैं, उसमें बहुत सारी बातें सही उतरती देखी गई हैं, तो उनका करोड़ों मील दुर ग्रह या नक्षत्र का स्वभाव से, इस धरती के जीवन में कोई घटना, घटित हो और सालों साल पहले जीसका घोषणा की जा सकें, वह किस तरह से काम करता हैं, और उससे बचने के लिए जो उपायों की चर्चा की गई है, उसको हम लोगों ने थोड़ा बहुत अनुभव भी किया। वह उपाय कहॉ तक कारीगर है। उन उपायों की और कारीगर बनाने की ये , हमारा कोशिश क्या होना चाहिए?

उत्तर– मानव इतिहास के अनुसार हमारे यहां भविष्यवाणी का 2 ही बात हैं। 1. सुफल, 2. दुष्फल

अनिष्टफल, इष्टफल। इष्टफल, धन प्राप्ति, पद प्राप्ति, यश प्राप्ति को माना गया हैं। अच्छे भार्या, पति की प्राप्ति, बच्चों की प्राप्ति ये सब चीजें जो आज तक देखा गया। इन प्राप्तियों के क्रम में 1000 वर्ष पहले मनुष्य के साथ जीतना, दुर्घटना घटित थीं, आज उतना दुर्घटनाएॅ नहीं है। ओसतन दुर्घटना हो रही है। किन्तु मानसिक रूप में वहीं का वहीं है। दुर्घटनाओं को घटित करा नहीं पाता। कम हो गया। अभी 1000 वर्ष पहले दिन में 2 बार युद्व होता था। अभी कई वर्षो में एक बार देश के सम्मुख युद्व को स्थिति बनती हैं। 1000 वर्ष पहले आदमी के पास कल के लिए दाना–पानी जुटाना इतना आसान हंउम नहीं था, कल के लिए हमारा दाना–पानी सुरक्षित है।

इसको सोचना बड़ा दुष्कर था। अधिकांश लोगों के पास आज उसका विलोम हैं। आज अधिकांश लोगों के पास कल के लिए दाना–पानी सुरक्षित है। इन दोनों चीज को ध्यान में रखते हुए ज्योतिष तंत्र को हम सोचते हैं, इष्ट, अनिष्ट घटनाओं के बारे में, उन दिनों में जैसे हम भविष्यवाणी करने के लिए आधारों की सोचते रहें, आधार तो रोजमर्रे को देखकर ही बनता हैं, रोजमर्रे की आधार पर भविष्यवाणी किया जाता हैं। आज का रोजमर्रे का आकार 2000 वर्ष पहले, 1000 वर्ष पहले की आकार से भिन्न हो सकती है। आज परिवेश भिन्न होने के आधार पर ज्योतिषी को सटीक प्रस्तुत करने के लिए पुर्न आयाम को पहचानने की आवश्यकता। आदमी का जो आज की मानसिकता, धरती को स्वस्थ बनाने की मानसिकता सर्वाधिक लोगों में। धरती स्वस्थ रहेगा तो हम भी रहेगें। धरती को स्वस्थ बनाए रखने के लिए जो पर्यावरण समस्याएॅ हैं, उसका निराकरण, मनुष्य परंपरा में जो बनी हई, व्यापार बुद्वि हैं, उसकी समृद्व बुद्वि की और दिशा देना। दिशा चाहता है, आदमी इन 3 आयामों पर सोचने की आवश्यकता । हर परिवार समाधान, समृद्वि पूर्वक जीना चाहता है, इसमें सफल होने के बारे में सोचने की आवश्यकता हैं, तभी ज्योतिषी

को सार्थकता की ओर ले जाएगें। एक और आयाम हैं, मानव को मानवीयता पूर्वक जीने के लिए कहना। राक्षसियता, पाशवियता से जीने के दिन को ज्योतिषी ने अच्छी तरह से परिगणना कर लिया। मानवीयता पूर्वक जीने के दिन कब से शुरू होगा? और उसके लिए क्या उपाय करना होगा?

इस आयाम में अपने को बहुत काम करने की जरूरत हैं। ये मानव के लिए उपकार होगा, परंपरा स्वस्थ होने के लिए साधन बन जाएगा।

प्रश्न– एक व्यक्ति के जिन्दगी में करोड़ों मील दूर ये ग्रह नक्षत्रों के द्वारा कैसे प्रभावित होता है, इसको कई बरस पहले भविष्यवाणी कर देते हैं और वह भविष्यवाणी सही साबित होता हैं। उसका प्रक्रिया क्या है, और उससे बचने का जो उपाय बताये गये हैं, जिन उपायों को कई क्षण पर कारीगर होते हुए उन उपायों को उपादेयता, और उनकों ज्यादा मम्मिबजपअम बनाने की तरीका मानव को दुख से परेशानी से बचाने के लिए।

उत्तर– ब्रम्ह्माण्ड़ीय किरण सदा–सदा बहता ही रहता हैं। दुर से पास से संबंध नहीं है उसका। ब्रम्ह्माण्ड़िय किरण सतत् बहाव है। ये कभी रूकता ही नहीं है, इस धरती में भी बहुत सारे ब्रम्ह्माण्ड़िय किरण सम्पर्क में आते हैं। इस धरती से भी ब्रम्ह्माण्ड़िय किरण के लिए उपादेयता बनी हुई हैं। ये अपने को पहचानने की आवश्यकता है। ये पहचानने के उपरांत ब्रम्ह्माण्ड़िय किरणों का बहाव के साथ, जितने भी भौतिक, रासायनिक परिवर्तन होते हैं, उसको हम को पहचानने की आवश्यकता।

इन भौतिक रासायनिक परिवर्तन के साथ जीवन अपने आप को अभिव्यक्त करने में अपनपे सार्थकता को सिद्व करने में जीतना अड़चन पैदा होता है, और जीतना सुगमता पैदा होता है, उसको निर्धारित करने की बात है। अभी वह समय समिचीन हैं अभी आगे ज्योतिषी में जो उपलब्धि कराने की बात आती है, वह यही है। उसका ध्रुवीकरण का बिन्दु यही बनता है। मानवीयता पूर्ण आचरण। वह चौखट को ध्यान में रखते हुए ज्योतिषी, पहले राजा को ध्यान में रखते हुए सारे पाप, पुण्य, कार्यकम वह पर्याप्त नहीं हुआ। अब मानवीयता पूर्ण मनुष्य को पहचानते हुए वह सारा गणना, पाप, पुण्य, को बताने की आवश्यकता हैं।सही गलती को बताने की आवश्यकता है, और दुर्घटना, सद्घटना को बताने की आवश्यकता है। ये बहुत सटीक उतरने वाली भविष्य वाणी होगीं।

प्रश्न– एक आदमी के जिन्दगी में जिसकों हम दुर्घटना मानते हैं या अच्छी घटना मानते हैं, क्यों वे घटती है। उसके घटने का जो फिनोमिना हैं, कैसे घटती है। उसका प्रकिया क्या हैं?

उत्तर– अभी तक जो बीता है, उसके अनुसार हम भ्रम विधि से ही शास्त्र की बात को ताना बाना बनाएं। इस बीच कुछ ऐसे भी बात प्रमाणित हो चुकी है, जैसे ज्योतिषी की बात कर रहे हैं। ज्योतिषी को हम जागृति पूर्वक ये सब गढ़े हैं, ऐसा नहीं है। हम जैसे भी थे उसी से इतने को गढ़े। हमारे में आदिकाल से शुभ की अपेक्षा रही । कल्पनाशीलता तो प्रभावशील रहा ही है। जंगल युग, कबीला युग, शिलायुग, राजयुग, विज्ञानयुग में हम पहुँच चुके हैं। हमारा कल्पनाशीनता कर्म स्वतंत्रता के चलते ये सबको हम प्रमाणित किया। प्रमाणित करने के कम में पहले की अपेक्षा गतियॉ बढ़ती गई। जब पैर से चलते थे, उस समय भी पैर में ठोकर लगते ही थें, पैदल चलने वाला भी फिसल के गिरा है।

अभी जो है, गति बढ़ गई, मोटर से गिरेगा, तो और कुछ होगा, हवाई जहाज से गिरेगा तो और कुछ होगा। जलयान से यदि गिरेगा तो और कुछ होगा। जिस प्रकार की गति में हमारा व्यतिरेक बनता है, जो परेशनियॉ निर्मित होते है। उसको सोचने की बात है। उसको यदि हम सोचने जाते हैं। ये पता लगता है, जैसे ंमतवचसंदम से गिरने को ंमतवचसंदम पिस होता होगा, नही ंतो काहें को गिरेगा आदमी। यंत्र पिस होगा, तो आदमी गिरेगा हीं, इसको अपने को अच्छी तरह समझना चाहिए। अब क्या हुआ? यंत्र के ऊपर आ गया ज्योतिष। यंत्र ठीक चलेगा की नहीं, आज वहॉ पहूँच गए। मनुष्य का ज्योतिषी तो पिस हो गई। यंत्र का ज्योतिषी प्रवल हो गई।

प्रश्न– जब हवाई जहाज उड़ातें हैं। तब पूरा बीमबा कर के जब वा हो जता हैं। जहॉ तक यात्रा में जाना है, वहॉ तक ठीक चलेगा। ऐसा स्वीकारने के बाद हवाई जहाज को रवाना करते हैं, उसके बावजूद भी केश होता हैं। कभी–कभी हो जाता हैं। ऐसा होगा, ये बहुत लोग भविष्यवाणी कर दिये थें, और सचमुच वह घटना के रूप में घटित हो गया।

उत्तर– ठीक है, ये मान लिया गया, ये सब बात को अनुभव भी किया गया है, ज्योतिषी के ऊपर हम जितना काम किया, उसमें ये सब बातें परिकल्पना में हमारा आता हैं, ये सब बात घटित भी हो सकता हैं, कुल मिलाकर के भविष्यवाणी यंत्र के आधार पर चला गया। जो अभी जतंपद ंबबपकमदज हुआ, उतने लोगों को एक साथ कोई मृत्यु योग का

परिस्थिति बनता नहीं, आदमी को बेवकूफी से, यंत्र को गलती से ये घटना घट सकता हैं। उसमें क्या हुआ? किसी एक आदमी के कारण से सब आदमी मारे गए। वह एक आदमी का गलती सबकों ले जाने वाला योग है। सही बात तो यही बनता है। अभी 1000 आदमी मर गए, उस मुहूर्त मे मृत्यु सबका एक साथ बनता नहीं। अभी युद्व में जो आदमी मारे गए उतने लोगों का उस समय में मृत्युयोग रहता नहीं भूकंप में कहॉ मृत्यु योग रहता हैं। धरती धंस कर तालाब हो गया इसमें मृत्यू योग क्या काम करेगा, धरती का योग काम करेगा। तो यंत्री को रचयिता, यंत्री का जो जातक है, उसको हम को पहचानना पड़ेगा।

प्रश्न– ब्रम्ह्राण्ड़िय किरणों का शरीर को प्रभावित करने की प्रकिया क्या हैं?

उत्तर– मनुष्य के साथ है, ये ब्रम्ह्राण्ड़िय किरणों का, एक आदमी गलती करता है, उससे हजार आदमी मरता है। वह एक आदमी को यदि भविष्यवाणी कर पाते हैं, उस आदमी से बचा जा सकता हैं।

प्रश्न– ब्रम्ह्राण्ड़िय किरण द्वारा घटनाओं के घटने का प्रकिया क्या हैं?

उत्तर– ब्रम्ह्राण्ड़िय किरण बहता रहता है, प्रभावित करता रहता हैं, और सकारात्मक, नाकारात्मक घटनाओं को घटाता रहता हैं। धरती में 2 प्रकार की रेखा खीचॉ जाता हैं। एक अक्षांश रेखा, एक देशानंतर रेखा। एक गोल–गोल रेखा एक उत्तर ध्रुव, दक्षिण ध्रुव की रेखा।

इसको खींचने पर अपने को छोटे से छोटे और बड़े से बड़े वर्ग मिलते हैं। उन वर्ग पर इन ब्रम्ह्राण्ड़िय किरणों का प्रभाव (बुध ग्रह का), कैसा प्रभाव होता है, और मंगल ग्रह के द्वारा कैसा प्रभाव होता हैं, उसको हम पहचाना। यही ग्रहों को पहचानने का मतलब। इसको पहले ध्रुवीकरण करिए। इस मुहूर्त में शरीर से तमसिमबज ही कर जो ब्रम्ह्राण्ड़िय किरण आती है, उसका क्या प्रभाव पड़ेगा, उसको कुछ परिकल्पना भी बनी है, ग्रहों का प्रभाव के लिए मनुष्य, वह स्थली जो आक्षांश रेखाएँ का वर्ग बताया वह स्थली, वह प्रभाव जिस ग्रहों के द्वारा आई वह मुहूर्त यह स्थल?, समय और उसका तमेवनतबम, ब्रम्ह्राण्ड़िय किरणों का तमेवनतबम इन तीनों मिलकर घटना घटता हैं, इन तीनों को पहचानना ही ज्योतिष शास्त्र का महत्वपूर्ण भूमिका। यही ज्योतिषशास्त्र में हम लोग पहचानते हैं, इस विधि से भविष्यवाणी होते ही हैं, इस समय शनि का प्रभाव इस प्रकार से हैं,

शनि का रूप पहचानने की विधि अलग हैं, शनि स्वस्थ हैं, अस्वस्थ हैं, ग्रहण ग्रस्त हैं, ये सब को पहचानने की विधि। इन विधि के आधार पर खुशहाली के समय में वह क्या

करता है? इसको पहचानने के बाद वह स्थान वह समय को निर्धारित करते हैं, उस समय में उसके आधार पर फल क्या होगा, उसको हम देखते हैं, वह फल को बारम्बार हम वइेमतअम किए रहते हैं। उसका सर्वेक्षण हमारे पास रहता हैं, उसके आधार पर फल सुचि को आगे गतित कर के या यथावत फलश्रुति करने की अभ्यास बना के रखे हैं।

प्रश्न– इस बात को बाबा एक ऐतिहासिक उदाहरण से समझें जैसे– नेस्त्रादयस सन् 1553 में एक किताब ने हिटलर के जर्मनी में तानाशाह के रूप में आने की और सारे दुनिया में युद्व` तहलका मचाने की भविष्यवाणी उससे 450 साल पहले कर दी थी, वास्तव में आधा अक्षर की कमी से हिस्टलर नाम दिया था, बाद में हिटलर नाम हुआ। जो आप बालते हैं, कि एक आदमी को अगर रोका जा सके दुर्घटनाएँ रूक सकती हैं, हिटलर को सत्ता में आने से रोकने के लिए वहॉ के राष्ट्रपति, वहॉ के जनता, अर्न्तराष्ट्रीय कम्युनिष्ट आंदोलन, तनेपंसभी लोगों ने कोशिश की थीं, उसके बावजूद वह आदमी सत्ता में आ गया औार ूवतसक ूंत के परिणाम के चलते उस समय हमतउंदल बहुत कमजोर था। उसके बावजूद उसने हमतउंदल को उस समय का सबसे ताकतवर देश बनाया, दुनिया को रौंद दिया और लगभग 10 करोड़ आदमी का मौत का कारण बना। तो ऐसा एक मानवीय प्रयास होते हुए भी, जो घटना अभी घटी नहीं हैं, जिसका कोई संभावना तक नहीं ह।, 450 साल पहले उसने घोषणा भी कर दी । इस तरह का सैकड़ों उदाहरण हमारे पास हैं। मानवीय प्रयास के बावजूद हिटलर के घटना का रूक जाना संभव नहीं हुआ, भविष्यवाणी घटीत हुआ।

उत्तर– पहले से भविष्यवाणी हैं, विनाश करेगा। उसको रोकने की बात आता है, रोकने के लिए जीतने प्रकार की प्रवृत्ति होना चाहिए, उसमे कहीं ना कमी रह गई है,

वह नहीं रूका क्योकि घटना उसका गवाही है, तो घटना घटित हो गई। घटना घटित होने के लिए पहले जिस व्यक्ति को भविष्य की सुगंध मिल गई थी दुर्गध मिल गई, उसकी बना दिया। इसका मतलब ये नहीं हुआ सभी भविष्यवाणी फलीत् होता हैं। सर्वाधिक जो हैं, मानव का आज भी, पहले भी शुभ घटना के पक्षधर हैं। जितने भी दुर्घटनाएँ प्रकट होते हैं, वह कम है अपने आप में कोई–कोई दुर्घनाएँ घटित होते हैं।

ज्ञानवाही और कियावाही तंत्र

ज्ञानवाही किया कलाप के बारे मे बताया जो कान का होना, शब्द को सुनना, शब्द जो कान से सुनने वाली बात कियावाही तंत्र है। हाथ में छूना ये किया वाही तंत्र है, मल विसर्जन होना, कियावाही तंत्र हैं। दिल में खून धड़कना ये कियावाही तंत्र हैं। सांस लेना ये कियावाही तंत्र है। ये समझ में आता हैं। संवेदनाओं में प्रवृत्त होना, श्शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गधेन्द्रियों का संचालित करना शुरू करना, गंध से सुगंध का अपेक्षा रखना ये ज्ञानवाही तंत्र है। सांस लेना कियावाही तंत्र है, जीभ में रूची देखना ये ज्ञानवाही तंत्र हैं, और शब्दों में हमारा सुंदर शब्दों को सुनने की अपेक्षा होना ये ज्ञानवाही तंत्र है, सुखद स्पर्श का अपेक्षा रखना ये ज्ञानवाही तंत्र है। इस बात को हम सब पहचानते हैं, ये ज्ञानवाही कियावाही तंत्रों में जो प्रयुक्ति होने वाली बात आया ये भी तंत्रणा सदा बना रहता हैं, वह कियावाही तंत्र भी बना ही रहता है। इसकों कहीं भी बंद नहीं किया जा सकता। कियावाही तंत्र के साथ भी जीवन शरीर को जीवंत बनाएं रखने की आवश्यकता बना रहता हैं, तभी ये तंत्र पूरा संपादित हो पाता हैं। और ज्ञानवाही तंत्र तो जीवन के बिना कोई काम हो ही नहीं सकता। थोड़ा सा भी जीवन ओझिल होता है, ज्ञानवाही तंत्र लुप्तप्राय हो जाता हैं। कियावाही तंत्र जो है, ना यह थोड़ा देर तक चलता रहता है, और उसके बाद वह भी बंद हो जाता हैं।

प्रश्न– क्या दोनों मेधस से बवदजतवसस हैं?

उत्तर– मेधस से बवदजतवस नहीं हैं, कियावाही तंत्र, मेधस के ज्ञानवाही तंत्र से भिन्न रहता है, फिर भी मेधस से संबंध रखता हैं, शरीर के अनुसार कियावाही तंत्र है, और जीवन के अनुसार ज्ञानवाहीतंत्र है। ये दोनों को ऐसे पहचाना। कियावाही तंत्र से क्या–क्या किया होता है, वह भी स्पष्ट हैं। ज्ञानवाही तंत्र के साथ–साथ न्याय, धर्म, सत्य को प्रकाशित करना भी, प्रमाणित करना भी बनता है, ये ज्ञानवाही तंत्र का सार्थक स्वरूप वही हैं और प्रारंभिक स्वरूप संवेदनाओं को व्यक्त कर देना है। प्रारंभिक स्वरूप में जीव, संसार, मनुष्य संसार का संवेदना में समानता रहता हैं। भौतिकवाद के अनुसार मनुष्य को जीव कहते ही हैं, और अध्यात्मवादी भी मनुष्य को जीव ही कहते रहें।

ज्ञानवाही तंत्र बंद होने के बाद कियावाही तंत्र बंद होता है। शरीर में आई हुई रोगों को ठीक करने के लिए ज्ञानवाही तंत्र भरसक प्रयत्न करता ही रहता है। जीवन ज्ञानवाही तंत्रणा से रोग को ठीक करने के लिए प्रयत्न करता ही रहता हैं। हर एक शरीर में अन्ततगत्वा नहीं होता है, तो शरीर को छोड़ देता हैं।

कामनाओं का विश्लेषण

प्रश्न– गायत्री परिवार ने लाखों आदमी द्वारा जप कराया, जब भारत में जमसपहीज गिरने वाला था, तो हमारे ऊपर ना गिरे, परंपरा में जो प्रचलित हैं, जप, तप, पुण्य से क्या कारीगर होता है?

उत्तर– वह सब शुभ कामना व्यक्त करने का प्रकिया। क्या कारीगर होता हैं, इसमें? शुभकामना करते रहे, उसके साथ–साथ और भी बिजवत जुड़ी थी, विज्ञान विधि से उसकों कितना टाला जा सकता है, उसका भी प्रयत्न चलती रही। अन्ततगत्वा वह टल गई। हम सब शुभकामना करते रहे वह शुभ में परिणत हो गई। वह धरती पर गिरता, या दिल्ली पर गिरता, कोई गॉव पर गिरता, खेत पर गिरता और कुछ दुर्घटना हो सकता था। बात इतना ही है, गिरा तो सही। गिरने वाली बात में तो कोई कमी नहीं। समय–समय पर जो युद्व की स्थितियॉ बनती हैं, मन्दिर में, मठ में, मस्जिद में, प्रार्थनाऍ की जाती हैं। इसमे क्या शंका है।

प्रश्न– इस तरह से हमारा द्वारा किया गया जो प्रयास है, परंपरा में प्रचलित। इसके तो प्रयास ही करते हैं, कि दुर्घटना ना हों, ये सिर्फ हमारा मन का भ्रम हैं। या वास्तव में मानव जाति की दुर्घटना से, या व्यक्ति विशेष को बचाने में कारगर हैं।

उत्तर– कामना कहो प्रयास क्या? कामनाऍ ही है, महाराज जी उसको बढ़ा–चढ़ाकर बताते हो? क्या प्रयास है, इसमें? हम कामना करते हैं, एक जगह में बैठकर। आप प्रयास कहते हो, हमारे हिसाब से कामना हैं। प्रश्न ये है आपका की शुभकामनाऍ, दुषकामनाऍ कारगर होता है या नहीं? मानव के साथ क्या है, ये शुभकामना भी ऐसे होते हैं, भविष्य वाणी जैसा। कामनाऍ जो है भविष्य में घटने वाली के सदृश कामना हो जाती है। दुर्घटना भी वैसे ही है। हम कामनाऍ करते हैं, कि किसी दुर्घटना के लिए वह घटित हो जाता है। ये दोनों कामना, घटित होने वाली कामना हो जाते हैं। इस ढ़ंग से घटित माना जाता हैं।

प्रश्न– बाबाजी मैं एक मनुष्य के लिए कामना करता हूं, ये मनुष्य बहुत अच्छा हो जाए, वह अच्छा हो जाता है। मैं एक पत्थर के लिए सोचता हूँ, कि ये पत्थर उठकर वहॉ चले

जाए या वह पत्थर लुढ़क कर गिरने वाला हैं, रूक जाए तो क्या कामना पत्थर को रोक सकता हैं?

उत्तर– कामना, कामना ही हैं बाबा, पत्थर जहॉ गिरना हैं, वही गिरता हैं, तो हमारे कामना के अनुरूप हमारे सिर पर नहीं गिरा इसलिए हमारा कामना, सफल हो गया, हम सोचते हैं, यही बात है और दूसरा कुछ बात नहीं हैं।

सच्चाई यही है, यदि वह घटित हो जाता है, हम सोचते हैं कि हमारा कामना या ऐसा माना जाता हैं। होता हमारा कामना से कुछ नही हैं। कर्म से होता है, कार्य से होता है। कामना और कार्य में अंतर आपकी समझ में आता है।

प्रश्न– मैंने जैसा प्रयास, ऐसा श्शब्द उपयोग किया दुर्घटना से बचने के लिए आपने कहा वह कामनाएॅ है। कामना और प्रयास को परिभाषित कर दीजिए?

उत्तर– कामना और कार्य, कार्य क्या हैं? अभी आप ही ने बताया था, ेंजमसपहीज गिर रहा हैं। उस समय कई देशों को तैनात किया, तैनात करके जो जिस कपतमबजपवद से आता रहा उसकी बदलने के लिए त्नेपं ने प्रयत्न किया और ।उमतपबं ने प्रयत्न किया। उसमें दोनों सिनसियर ंजजमदक किया। एक साथ, एक मन से उसकी वह सफल हुआ मानते हैं। उसको हम कहते हैं, कार्य। हम बैठकर के यह जो गिर रहा है, हमारा सिर पर ना गिरे, और हमारा देश पर ना गिरे, और दूसरे मनुष्य के ऊपर ना गिरे, वह बैठ कर के कामना करते हैं। वह जो गिरने वाला था, उसी जगह में गिरा, कार्य को संयोग से, स्वंय की गति को संयोग से, जहॉ गिरना था, वहॉ गिर गया। उसके साथ हमारा शुभकामना भी फलित हो गई उन का कार्य भी फलित हो गया।

प्रश्न– कई लोगों ने माना हमारा जप के फलस्वरूप मानव विनाश से बच गया। समुद्र में जा के गिर गया। उसका क्या वास्तविकता हैं?

उत्तर– वह भ्रम हैं, ऐसा पूछोगे तो उसका उत्तर वही हैं। श्शुभकामना करना हमारा फर्ज था, हमने किया, हमसे जितना बन सकता था, शुभकामना का समय दिया। मंत्र, जाप, कर्म नहीं कामना है। ये जितने भी अनुष्ठान करते है, हमारा शुभकामना। कुछ नहीं होता हम कहॉ कह रहे हैं, यदि घटित होने वाली हमारा कामना हो जाए तो घटना होने पर हम सफल मानते हैं। नियति क्रम में होने वाला था, उसी के अनुरू‍प में हमारा कामना जुड़

गया। वह हमारा कामना हमारे लिए तो सुख देता हैं, शुभकामना हमारे लिए सुख देता हैं, अनिष्ट कामना हमारे लिए दुख देता ही हैं।

प्रश्न– इस तरह की दुर्घटना है, दित्यमानव के स्तर के लोग है, वह इस तरह के दुर्घटना में इस तरह की आपत्ति में उस में कुछ बचाव नहीं कर पाते?
उत्तर– वह कर ही रहे हैं, आदमी को समझदार बना रहे हैं, दुर्घटना का प्रश्न ही नहीं है। मानव जाति के साथ जितना दुर्घटना हुआ हैं, उस से ज्यादा सद्घटना हुआ है। दुर्घटनाओं के लिए प्रयत्न अधिक हुआ हैं। सद्घटना के लिए कम हुआ हैं। सद्घटना ज्यादा घटित हुआ हैं,
दुर्घटना कम घटित हुआ हैं। बात इतना ही हैं। समझदारी के बिना रस्ता में चल नहीं सकोगे आप। समझदार बनाने से अधिक कोई काम नहीं हैं।

प्रश्न– अभी जब तक मानव जाति समझदार बना नहीं हैं, समझदार बनने के क्रम में है और इस बीच जो दुर्घटनाओं से गुजरता हैं, कैसा होगा?
उत्तर– बचने के लिए हम अभी तक जो प्रयत्न करते रहे, करते रहें प्रयत्न भी साथ चले, दुर्घटनाओं स बचने के लिए, इसके बावजूद दुर्घटनाएँ होते ही हैं। हमारा कहना यह हैं, जितना दुर्घटना हुई हैं, वह सद्घटना के अपेक्षा में कम हैं, किन्तु मानव का कामना जो हैं, मानव का प्रयत्न हैं, दुर्घटना के लिए ज्यादा काम किया हैं, और सद्घटना के लिए कम काम किया। आदमी दोहरा है, दोहरा जात। भीतर कुछ होता हैं, बाहर कुछ होता है। मानव का यही लक्षण है। इसको ध्यान में रखकर के बात करिए। अभी मानवता से सम्पन्न कार्य को सम्पन्न करना हमारा कार्य हैं। उसी से मानव के पास श्शुभ घटनाओं को घटित कराने की ताकत बढ़ेगी । अभी कामना करने की बात तो हैं ही । दो बात समझना हैं।

1. मानव का निश्चित आशय।
2. नियति क्रम विधि।

नियति क्रम विधि के अनुसार मानव यदि अपने को तालमेल बनाता हैं, नियति क्रम में कोई भी दुर्घटना नहीं है। जैसे भूकंप हो गई । अभी जितने भी भूकंप हो रहे हैं, उसमें 80ः/90ः मानव ने जितने भी, धरती के अंदर जो परमाणु विस्फोट को पैदा किया हैं, उसका परिणाम हैं, बाकि 20ः धरती के स्वभाव गुण हैं। धरती में भूकंप होगा, भूकंप कभी–कभी होते रहेगा। उसका निश्चित स्थान, निश्चित गति, निश्चित दिशा बनी रहेगी।

उसको जागृत मानव पहचान सकता है। उससे बच सकता है। उसके बाद चकवात, झंझावात, ये चीज होगा। ये इस आधार पर होगा, धरती अपने में गतिशील हैं, धरती को गति के साथ, और ग्रह गोलों, को जो समीप होना, दूर होना बनता रहता है। समीप होने से धरती पर वायुमंड़ल का जो दबाव हैं, भिन्न होता है, दूर होने से भिन्न होता हैं। इस आधार पर झंझावात, चकवात होने की संभावनाएँ बनी रहती हैं। जागृत मानव परंपरा इसकी पहचान सकता हैं। उसका निश्चित दिशा होती हैं, निश्चित तरीका होगी, निश्चित गति होगी, उसको पहचान कर के उससे आदमी बच सकता हैं, बाकि सब मानव का घटित किया हुआ दुर्घटना हैं। जैसे ेालसंच की बात को, मानव ने आकाश में रखा हैं, उसका कार्य क्या हैं? क्या होना था? क्या हो गया? आकाश में अभी बहुत सारे ेजमसपजम मनुष्य के बवदजतवसस से बाहर हो चुका हैं। इसका दो ही विधि हैं।

1. जैसा ेालसंच गिरा वैसा गिर जाए।
2. अपना गति का कपतमबजपवद बींदहम करके कोई ना कोई धरती में जा के गिरे।

जितना भी मनुष्य के बवदजतवस से बाहर हो गई हैं, उसका 2 परिणाम ।

1. यथावत जा कर के कोई जगह में गिरे।
2. या वह धूली के स्वरूप में हो जाएँ।

धुली के स्वरूप में होने के लिए समय ज्यादा लगता है। ज्यादा लगने के कम में धूली होने के बाद भी वह गति यथावत बना रहता हैं। जब कभी वह दिशा परिवर्तन होगा (वह किस आधार पर) ग्रह गोलों का पास आना, दूर होने के आधार पर दिशा परिवर्तन होगी। दिशा परिवर्तन होने के बाद धूल किसी ना किसी धरती में विलय हो जाता हैं। अभी जो धुमकेतु वृहस्पति में मिला वह धूली के रूप में ही था। ये होता क्यों हैं? आकाश में जितने भी छोड़े हो वह सब धूल के स्वरूप में परिणत होना ही हैं। उसका एक सिद्वान्त, फटीक सिद्वान्त । क्या फटीक सिद्वान्त? ''वस्तु शुन्य में अवस्थित होने के बाद अपने गति के अनुसार घूमता रहता हैं''। या तो उसको विकसित होना है, या ह्रास होना हैं। 2 में से एक ही गति विकसित होने के लिए उनके पास सभी सामग्री नहीं हैं। उस स्थिति में धूली हो जाता हैं। उसका नाम हैं, फटीक।

प्रश्न– क्या ये बात सही हैं कि जो घटना, घटना तय हैं, आप उसमें कुछ नही कर सकतें?

उत्तर– गलत, मनुष्य के प्रवृत्ति के अनुसार घटनाएँ परिवर्तित हो जाती हैं, मनुष्य से घटित करने वाली जितने भी घटनाएँ है। मनुष्य के प्रवृत्ति के अनुसार मनुष्य घटित करने वाली कियाएँ बदल जाते हैं। ये समझ में आता हैं, या नहीं ये मनुष्य के घटना कम के बारे में बताया। मनुष्यों के प्रवृत्ति के आधार पर घटना को कमेपहद कराना, घटित कराना बनता हैं। इसको करते ही आया,

प्रश्न– जैसे मृत्यू है, शरीर का छूटना?

उत्तर– घटित कराने के लिए जितने भी कमेपहद बनाता है, घटित कराते आया है कि नहीं आया हैं आप घटित कराने के लिए जो कमेपहद बनाया आप घटित करा पाये । बस इतना सा मतलब है, आदमी जात के प्रवृत्ति के आधार पर घटना का कमेपहद हैं। ये धटनाएँ मनुष्य घटाता आया, घटता गया और उसका परिणाम होता गया। उसी कम में धरती का बीमार होना भी हम पा रहे हैं। उसके बाद होता हैं, धरती के कार्य विधि में घटित होने वाले काम, उसमें 3 बात होता हैं।

1. भूकंप 2. चकवात 3. ज्वालामुखी

ये 3 बात घटित हो सकता हैं, इन तीनों बातों से जागृत आदमी परिचित हो सकता हैं।

प्रश्न– जो बच्चा अभी पैदा नहीं हुआ हैं, उसको इस–इस उम्र में इस तरह का रोग का संभावना बनती हैं। उसको जो भविष्य वाणी करते हैं, और जो आगे जा के सही भी उतरता हैं, उसका आधार क्या हैं? तो फिर घटना निश्चित हुआ?

उत्तर– ठीक हैं भाई, उस लग्न में बच्चें को मत बुलाइयें, लग्न को बदलिए। आप ही से घटित होता हैं, बच्चा होना। मनुष्य ही बच्चा पैदा करता हैं। ये बात ठीक है ना, सही समय में पैदा करें, उसको ज्योतिषी बताता हैं।

प्रश्न– यदि बच्चा के पैदा होने के समय के आधार पर उससे जुड़ी हुई घटनाएँ तय होती हैं, तो घटना के लिए किसी आदमी के जिन्दगी में ग्रह–नक्षत्र का प्रभाव हो गया, हर आदमी के जीवन में जो अलग–अलग शुभ, अशुभ घटना घट रहा हैं, उसका मामला ग्रहों के बवदजतवस में हो गया। जीवन का इसमें क्या रोल हैं?

उत्तर– इसको अच्छे से समझों, ये रोग राटा शरीर की बात कर रहे हैं, बाकि बातों को ताक में रखी। निरोगी बच्चा चाहिए, उसके लिए हम समय बताते हैं, पैदा करिए, निरोगी

बच्चा होगा, ठीक हैं, आपके अनुसार रोगी भी होगा, निरोगी भी होगा। सभी रोगी हो गये ऐसा भी नहीं हैं, सभी निरोगी हो गये ऐसा भी नहीं हैं। तंदकवउसल चलता रहता हैं। ये भी सच्चाई हैं, निरोगी अधिक है, रोगी कम हैं।

प्रश्न– मानव के साथ घटने वाली घटना में क्या उसका पूर्व शरीर का भी कोई भागीदारी हैं या ये उससे बिलकूल स्वतंत्र हैं?

उत्तर– अभी जिस समझ की बात हैं, उसमें से हम लोग संस्कार को पहचानते हैं। संस्कार समझदारी के आधार पर होता है। ना समझी का कोई संस्कार होता नहीं। ऐसा हम बताते हैं, ईमानदारी, बुद्विमानी का ही संस्कार होता है। जितना हम समझदार है, उतना हमारा इस शरीर यात्रा में उपकार करता ही हैं। इसी के प्रमाण में हम पहले मानव से आज तक भी जितने विकसित हो पाए हैं, जागृति कम में वह हमारे सम्मुख रखा ही हैं।

प्रश्न– पिछले शरीर यात्रा से समझदारी, संस्कार की जो पूंजी मैं ले के आया हूँ, ये एक स्थिति हो गई। घटनाओं का जो घटने का कम हैं, उसमें भी क्या हम पिछले शरीर यात्रा से लेकर आए हैं। उसका कोई सपदा इसमें जुड़ता हैं या नहीं हैं?

उत्तर– सारे दुर्घटना, घटना के रूप में शरीर गत जितने भी शरीर के साथ घटने वाली घटनाएँ हैं, ग्रह, नक्षत्र का योग रहता ही हैं। मनुष्य के प्रवृत्ति साथ में होने से दोनों एकत्रित होने से घटनाएँ घट जाता हैं।

अखण्ड़ समाज व्यवस्था

जीवन सुख चाहता ही हैं, इसी आधार पर अनुसंधान पूर्ण होता हैं, जागृति तक पहुँचते हैं, इसके लिए प्रधान स्थली परिवार हैं। परिवार और बहुत सारे परिवारों के साथ ही एक परिवार जीना, देखने को मिलता हैं। इन सभी परिवार के साथ शिक्षा, संस्कार, कार्य एक परंपरा हैं। उसी के साथ–साथ ये समझदार होना, नहीं होने वाला बात घटित होता हैं। अभी तक मनुष्य के समझदार बनाने की कोई शिक्षा संस्कार की व्यवस्था नहीं हो पाई थी। अभी अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चितंन के अनुसार ये स्वाभाविक रूप में आती है। इस आधार पर यदि हम सोचना शुरू करते हैं, अपने में एक बहुत अच्छी शुरूआत ये हो सकता हैं। हम अच्छे ढ़ंग से, शोध को, अनुसंधान को, कार्य को शुरू कर सकते है। हमको जागृत होना है, ये उद्देश्य बनता हैं। जागृत होने के लिए, जैसा हैं, वैसा वस्तु को समझने की बात आती है। ऐसे समझदारी विकसित होने के उपरान्त ही,

हम जागृत पथ पर चलना शुरू करते है। अस्तित्व को पूरा समझने पर सह अस्तित्व को रूप में समझदारी होती है।, जीवन को समझने से समझदारी होती है। मानीवयता पूर्ण आचरण को समझने से समझदारी होती है। इन तीनों मुद्दा यदि समझ में आता हैं, तब हम समझदार हो पाते हैं।, इसके पहले नहीं हो पाते। इससे ज्यादा हमको आवश्यकता नहीं बनती हैं। इतने में हम समझदार हो कर के परिवार में प्रमाणित होना शुरू कर देते हैं। क्या प्रमाणित होते हैं? परिवार व्यवस्था मं हम प्रमाणित होते हैं। परिवार के समाधान, समृद्वि में भागीदारी कर पाते हैं। फलस्वरूप हम समाज में भागीदारी करने के लिए, व्यवस्था में भागीदारी करने के लिए तत्पर हो जाते हैं। समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने का कम में ही हम अपने सम्पूर्ण जागृति को प्रयोग कर पाते हैं। और बाकि जगह में सम्पूर्ण जागृति प्रयोग नही हो सकता। समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना ही परिवार मूलक स्वराज व्यवस्था का मतलब हैं। इस रूप में म जागृत होकर समाधान, समृद्वि को प्रमाणित करते हैं। उसके साथ ही उपकार कार्य करते हैं, उपकार के रूप में शिक्षा देते हैं, संस्कार देते हैं, न्याय को परस्परता में प्रमाणित करते हैं, इस ढ़ंग से उपकार कार्य शुरू होता हैं, न्याय पूर्वक जीने से उपकार हैं, समाधान, समृद्वि पूर्वक जीने से उपकार है, समझदारी की बारंबार आगे पीढ़ी को अर्पित करने में उपकार हैं, और स्वतंत्र रहने से उपकार। इस तरीके से मनुष्य में उपकार का एक समुह अपने आप में बनता हैं। इसमें जी करके ही आदमी अपने को सुखी होना पाता हैं, और दूसरों को सुखी करना बनता हैं। ऐसे अनेक परिवार एक ग्राम में होते हैं,

ऐसे अनेक गॉव या देश मिलकर एक समाज होता हैं। परिवार में तृप्ति का जो स्त्रोत हैं, वह बात पर ध्यान देना आवश्यक हैं, परिवार में सम्बंधो का पहचान एक आवश्यक हैं,

सम्बंधी को पहचानने के पश्चात मूल्यों को निर्वाह करने की बारी आती हैं इन मूल्यों को निर्वाह करने की कम में विश्वास सबसे पहला मूल्य है, विश्वास का निर्वाह करना आवश्यक बन जाता हैं। परिवार के परस्परता में, परिवार में जितने लोग रहते हैं, उनके परस्परता में कोई ना कोई संबंध का संबोधन रहता ही हैं। चाहे भाई हो, बहन हो, माता हो, पिता हो, दादी हो, दादा हो, इस प्रकार से कोई ना कोई नाम से हमारा संबोधन रहता ही हैं। ऐसे संबोधन के साथ–साथ मूल्यों को निर्वाह करनेकी बात आती हैं। बड़ें बुजूर्गो के साथ सम्मान सहित विश्वास को निर्वाह करना होता हैं, और साथियों के साथ विश्वास को निर्वाह करना होता हैं, अपने से छोटों के साथ भी विश्वास निर्वाह करना होता हैं। विश्वास निर्वाह करना, प्राथमिक काम हैं। प्राथमिक मूल्य, साम्य मूल्य हैं।

इस आधार पर विश्वास को हम निर्वाह करना बन जाता हैं, बाकि मूल्य अपने आप में निर्वाह होना बनता हैं। इस कम को अपने को अपनाने की आवश्यकता, ऐसा करने पर मनुष्य में कए बहुत बड़ी भारी ताकत जन्मती हैं, हम संबंधो को निर्वाह कर लिया, मूल्यों को निर्वाह कर लिया और मूल्यांकन किया, उभय तृप्ति पा लिया और साथ में समाधान सिंद्व हो गई और इसके साथ समृद्वि को सिद्व कर लिया। हम ये किए बीना रह ही नही सकते। हर व्यक्ति उपकार करने योग्य हो जाते हैं।

उपकार करने के कम में समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने योग्य हो जाते हैं, ऐसा कम अखण्ड़ समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में, मानव जाति एक होने के आधार पर अखण्ड़ समाज को परिकल्पना आती हैं, और अखण्ड़ समाज में सार्वभौम व्यवस्था ही एक मात्र व्यवस्था हैं, उसमें और कुछ व्यवस्था हो ही नहीं सकता, वह परिवार मूलक स्वराज व्यवस्था ही होता हैं। जिसमें आराम से आदमी व्यवस्था को पा लेता हैं। उस व्यवस्था के अनुसार हमारा जो भागीदारी की मुद्दा आती हैं, तो न्याय सुरक्षा में भागीदारी करना बनता हैं। हम आसानी से कर लेते हैं, और उत्पादन कार्य में भागीदारी करना होता हैं, इसको भी हम पूरा करते हैं। विनिमय कार्य में भागीदारी करते हैं, उसको भी पुरा करते हैं, स्वास्थ, संयम कार्य में भागीदारी करते हैं, उसके बाद सबसे अच्छी बात शिक्षा, संस्कार कार्य में भागादारी करते हैं, इसको पूरा करने पर हमको अपना समझदारी का प्रमाण, प्रमाणित होता हुआ दिखाई पड़ती हैं। स्वंय का तो तृप्ति होती ही हैं, जिस बच्चों के बीच में हम प्रमाणित करने गया हूँ, उनमे भी उतने ही उत्सव और उत्साह देखने को मिलता हैं। वह सब हमारे जीने का तरीका को देखकर उसमें बहुत आस्वस्त हो जाते हैं, विश्वस्त हो जाते है।

अरमान को पैदा करते हैं, इतने ही अच्छे ढ़ंग से जीना चाहिए, ऐसे प्रवृत्ति बनती है। ऐसे उत्सव से मानव में प्रगति होना स्वाभाविक हैं, गलती, अपराध करने वाली प्रवृत्तियॉ अपने आप से दूर होगी, अखण्ड़ समाज विधि से सभी का सुखी होने का रस्ता बनता है।

तकनीकी का प्रयोग

तकनीकी के बारे में बात अपन सोचते हैं, इसी में मदहपदममतपदह आता हैं, उसमें रासायनिक तंत्र भी आता हैं, भौतिक तंत्र भी आता हैं, और यंत्र की तंत्र भी आता हैं। तो इन्हीं तंत्रों को जो हम समन्वय करते हैं, उत्पादन के लिए एक अनुकूल परिस्थितियॉ को बनाते हैं, अनुकूल योजना बनाते हैं, और इन सभी तकनीकी को नियोजित कर के उत्पादन कार्य को संपादित करते हैं, उसी के साथ–साथ एक सड़क हुआ, सेतु हुआ,

बड़े–बड़े यंत्र हुआ, इन सब को बनाने के लिए हम तकनीकी का प्रयोग करते हैं, तकनीकी, किसी विचारधारा का उपज नहीं हैं, मनुष्य का आवश्यकता का उपज है, सभी तकनीक हमारा आवश्यकता के बाधार पर उपजी हुई तकनीकीयॉ हैं। भौतिक वाद के आधार पर तकनीकी आई, ऐसा कुछ भी गवाही नहीं, अध्यात्मवाद के आधार पर तकनीकी आ गई, ऐसा कोई गवाह नहीं, सह अस्तित्व को ध्यान करने पर भी यही निकलता हैं, सह अस्तित्व के आधार पर कोई तकनीकी निर्धारित होगी, ऐसा नहीं है। सह अस्तित्व के लिए हम तकनीकी को उपयोग करते हैं, आवश्यकता के आधार पर तकनीकी आती हैं। हल जोतने की आवश्यकता आई, हल बनाने की तकनीकी आ गई, गाड़ी की आवश्यकता आई, चक्का का तकनीकी आ गया, हम को ऊष्मा की जरूरत पड़ी, आग का आविष्कार हो गया। सह अस्तित्व वादी विधि से आग कैसे पैदा करोगे? सह अस्तित्व विधि में हम इंधन नियोजन को हम पहचाने में, उसके बारे में बात हो चुकी हैं।

ईंधन विधि को तकनीकी है ही हैं, ईंधन विधि हमको पता ही हैं। ईंधन क्या हैं? हम को पता हैं, अभी पहले हम विचार किए की कोयला को कोड़ना तकनीकी हैं, कोयला को जलाना, आग से आग जलता हैं, सिद्वान्त हैं।

1. आग से ईंधन जलता हैं।
2. ईंधन से आग जलता हैं।

दो पद्वति हैं, ईंधन में तेल को इतना दबाव में लाते हैं, वह जल जाता हैं। यह एक विधि है, दबाव वश ईंधन प्रज्वलित हो जाना, एक विधि हैं, आग से आग जलना एक विधि हैं। पेट्रोल ईंजिन में आग से आग लग जाता हैं। ये तकनीकी को हम सह अस्तित्व विधि से नियोजित करते हैं, वह खनिज तेल को हम उपयोग करेगें नहीं, उसके जगह में यंत्रो को चलाना होगा तो तैलीय वृक्षों को हम लगाएगें, उनसे तेल प्राप्त करेगें, उस तेल से यंत्रो को चलाएगें। हम यंत्र नहीं चलाएगें ऐसा नहीं हैं। क्यो इतना करोगे? ईंधन अवशेष जो है, ना धरती को वातावरण के लिए हानिप्रद हो गई, धरती का वातावरण बिगाड़ने के बाद धरती में बुखार आई, इसके दवाई के लिए हम इसको अवपक करेगें।

सारा तकनीकी को बरबादी के लिए नियोजन किया। उस तकनीकी को हम आबादी के लिएनियोजन करेगें, सह अस्तित्व वादी विधि से वही तकनीकी को सह अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए करेगें।

क्या तकलीफ हैं इसमें? तकनीकी नहीं हैं, ऐसा कुछ नहीं हैं। आदमी को आबाद करने के लिए, बरबाद करने के लिए, दोनों के लिए तकनीकी लगती हैं। वैसे ही धरती को आबाद करने के लिए बरबाद करने के लिए तकनीकी लगता हैं। उत्पादन को संपादित करने के लिए, उत्पादित वस्तुओं को बरबाद करने के लिए तकनीकी लगती हैं। अभी आप देखेते ही है, एक ड़ायनामाइट लगाते ही इनपसकपदह धरासायी हो जाता हैं, इतने लेाग मर जाते हैं, रोज पेपरों में पढ़ने को, सुनने को मिलता है। सब जगह में तकनीकी लगता ही हैं। कोयले को कोड़ने के लिए भी बारूद लगता ही हैं, बारूदों को कहॉ जरूरत हैं? यदि वह बारूद से वातावरण प्रदुषित ना होता हो, मानव के लिए हितकर हो, बारूद से बनने वाली हम यंत्रो को नहीं बना सकते। बारूद जब कोयला को फोड़ता हैं, पत्थर को फोड़ता हैं, इनपसकपदह को गिराता हैं, वस्तु को प्रयोग की आवश्यकता है कि नहीं समझ कर प्रयोग करें। आवर्तनशीलता होने के स्थिति में उसको इसमें भी प्रयोग कर सकते हैं। तंपसूंल मदहपदमम में या और कोई बड़े–बड़े यंत्रो में, हम उपयोग कर ही सकते हैं। बारूद के प्रदूषण से, ईंधन अवशेष से यदि वातावरण को बिगाड़ना नहीं हो और उससे कोई विपदा पैदा नहीं होता हैं, उस स्थिति में उसको भी उपयोग कर सकते हैं। वह बढ़िया स्त्रोत भी हैं। निश्चिय करना अपना काम हैं, वह तकनीकी है, इसको परीक्षण, निरीक्षण पूर्वक निश्चिय करना भी तकनीकी हैं। वह निश्चिय करने के बारे में कई चीजों को सरसरी तौर पर निश्चिय कर सकते हैं, जैसा प्रवाह बल को यंत्रों के कियाकलाप नियोजित कर सकते हैं। उसको प्रयोग करके सिद्व करना तो बाकी है ही हैं, ऐसे प्रवाह बल को उपलब्धियों को देखने पर लगता हैं, ये प्रचुर मात्रा से हो सकता हैं, और प्रयोग सिद्व करने के कार्यक्रम में हमको लगना ही होगा। प्रयोग सिद्व करते हैं, वही तकनीकी हैं। उद्देश्य बन जाने से उसके योग्य तकनीकी हम उपलब्ध कर सकते हैं, हमारे जो मानसिकता हैं, मानव मानसिकता हैं, लक्ष्य को यदि पहचान लिया, ये होना चाहिए, उपलब्धि, उसके लिए जो युक्तियों को खोज लेता हैं, वही तकनीकी हैं, वैसे ही सारा यंत्र जो बने ही हैं, ऐसा कार्य करने वाले यंत्र बनाना हैं। एक उद्देश्य बनता हैं, ऐसा कार्य करने वाले यंत्र बना लेते हैं। इस विधि से आगे भी कोई उद्देश्य पहचानते हैं, उसके योग्य यंत्रों को हम बना लेते हैं। आवश्यकता के आधार पर जो वस्तुओं को पहचान होता हैं, लक्ष्य पहचान होता हैं, उत्पादन का लक्ष्य, उस उत्पादन के लिए योग्य यंत्रों को बना लेना, मनुष्य की हाथ का खेल है, ऐसा मेरा सोचना हैं। यंत्र

बनने के पश्चात वह कैसे उपयोग करता है, वाली बात आई, अब हम जो है, ना सह अस्तित्व विधि से यंत्रों को उपयोग करेगें।

परमाणु :– ८

चार प्रकार की अवस्था पहले बताई गई हैं,

1. पदार्थावस्था
2. प्राणावस्था
3. जीवावस्था
4. ज्ञानावस्था

ये अर्न्तसंबंध, बाह्य संबंध बना हुआ है। ये सब एक साथ हैं, ये अलग–अलग कोई भी नहीं होते । ये धरती नहीं होता तो पदार्थ ही नहीं हैं, धरती अपने में हैं,इसी के आधार पर संपूर्ण पदार्थ भी हैं, पहला ज्ञान तो यही हैं, पदार्थ ही मृद, पाषाण, मणि, धातु के रूप में उपलब्ध हैं। इन सब चीजों का मूलरूप परमाणु ही हैं। इन परमाणु में विभिन्न प्रकार के प्रजाति के परमाणु, परमाणु के अंशों के संख्या भेद से प्रमाणित होना पाया जाता हैं। इन आधार पर विभिन्न प्रजाति के परमाणु, अस्तित्व में होने के आधार पर, धरती समृद्व होता हुआ, रासायनिक किया कलाप में परिवर्तित हो जाता हैं। रासायनिक कियाकलाप का मतलब है, कम से कम 2 प्रजाति की अणुएँ मिलकर, अपने–अपने आचरण को त्यागकर तीसरे प्रकार की आचरण में प्रवृत्त हो जाने से हैं। जैसा पानी हैं, पानी में 2 पदार्थ होता हैं, वह है जलने वाला और जलाने वाला । ये दोनों मिलकर अपने–अपने आचरण को परिवर्तित कर दिया, परिवर्तित करने के बाद ये पता चला, इसमें प्यास बुझाने वाली गुण पैदा हो गया। प्यास बुझाने का गुण जैसे ही पैदा हुआ, वह पानी का स्वरूप अलग दिखने लगा, जलने वाला, जलाने वाला, स्वरूप से भिन्न। ये दोनों चीज अलग हो गया। स्वरूप में भी परिवर्तन हो गया, गुण में षि परिवर्तन हो गया। इस ढ़ंग से जल एक रासायनिक वस्तु हैं, रसायन है, जल के बिना धरती में और कोई प्रगति हो ही नहीं सकती। जल के बाद अम्ल और लवण रसायन पैदा होता है, तैयार होता है, फलस्वरूप इन सब के योगफल में विभिन्न प्रकार का रासायनिक द्रव होना पाया जाता है। इसी कम में अनेक प्रकार के प्रजाति का रस उपरस होना शुरू होता है। इन रासायनिक, रस उपरस

के आधार पर ठोस, तरल, विरल रूप में रासायनिक द्रव्य होना पाया गया, ठोस द्रव्य ने प्राणकोषा के रूप में अपना काम करना शुरू कर दिया। इस ढ़ंग से पदार्थावस्था से ही प्राणावस्था का संबंध जुड़ा हुआ अपने को समझ में आता है, यही प्राणावस्था के वस्तु जब कभी विरचित हो जाते हैं, वह सब खाद हो करके धरती में मिल मे जाते हैं।

प्रश्न– परमाणु अंश परमाणु में कैसा परिणत होता हैं?

उत्तर– परमाणु अंश इसलिए परमाणु के रूप में गठीत होता हैं, परमाणु अंश में स्वंय प्रवृत्ति रहती हैं, व्यवस्था में भागीदारी करने का।

स्वंय स्फूर्त है, वह सत्ता में पारगामी रहने के आधार पर, ऊर्जा सम्पन्न होने के आधार पर स्वंय स्फूर्त होता हैं। उसी के आधार पर एक परमाणु अंश दूसरे परमाणु अंश को पहचानता है, निर्वाह करता है, फलस्वरूप कम से कम 2 परमाणु अंशों से एक परमाणु का गठन होता हैं। वह व्यवस्था को प्रमाणित कर देते हैं। इसमें श्रम, गति, परिणाम भावी हो जाते हैं, उसके बाद विकास कम शुरू होता हैं, विकास कम में यही होता है, श्रम के लिए विश्राम, गति के लिए गन्तव्य, परिणाम के लिए अमरत्व। ये तीन चीज भावी हो जाता है। उसमें से विकास कम में चलते–चलते परमाणु एक गठन पूर्ण स्थिति में आता हैं, तब तक कई प्रकार के परमाणु कम के बाद गठन पुर्ण परमाणु होना बनता हैं। कम से कम 60 प्रकार के परमाणु को लांधने के बाद ही गठन पूर्ण परमाणु गठित होने का संभावना बनती हैं। यद्यपि हम देखें हैं, भूखे परमाणु 60 होते हैं, अजीर्ण परमाणु 60 होते हैं, बीच में एक परमाणु होता है, तृप्त परमाणु उसी को हम जीवन परमाणु नाम देते हैं, जीवन परमाणु में कुल मिलाकर के 122 कियाएँ होते हैं, परावर्तन, प्रत्यार्वन के रूप में। उसका पूरा–पूरा विश्लेषण मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान में प्रस्तुत कर दिया हैं। मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान इस बात का द्योतक है, जागृत जीवन जागृति के बाद क्या–क्या कर पाता हैं। मानसिक रूप में क्या –क्या करता हैं, वह व्यवहार में उतरने पर क्या–क्या होता है। उसमें पूरा–पूरा उल्लेख है, उसमें जितना तालिकाएँ चाहिए वह भी दिया हैं, उसको हम देख सकते हैं।

प्रश्न– आपने बताया की 60 परमाणु जीर्ण और 60 परमाणु अजीर्ण है। एक परमाणु गठन पूर्ण है। क्या गठनशील परमाणु में ही गठन पूर्ण बनने की संभावना रहती हैं? किस स्तर में गठनशील परमाणु , गठन पूर्ण परमाणु बन जाता हैं?

उत्तर– परमाणु अंश बदलना ही गठन पूर्ण, गठनशील हैं। गठन पुर्ण में परमाणु अंश घटता नहीं हैं ना बढ़ता हैं, इसी का नाम है गठन पूर्ण। सभी गठनशील परमाणु को गठन पूर्ण होना है, ऐसा कुछ नहीं हैं, अपना जो मानसिकता ऐसा दौड़ता हैं, उसे बंद कर देना चाहिए, सभी अवस्थाएँ रहेगें, इस पर अपने को आश्वस्त होना हैं। कोई एक अवस्था में सब परिवर्तित हो जाएगें ऐसा कुछ होता नहीं हैं, पदार्थावस्था भी रहेगा, प्राणावस्था भी रहेगा, जीवावस्था भी रहेगा, ज्ञानावस्था भी रहेगा। क्रम से ये मात्रा कम होते जाता हैं, ज्ञानावस्था में कम से कम मात्रा हैं, उससे ज्यादा जीवावस्था में हैं, उससे ज्यादा प्राणावस्था में हैं, उससे ज्यादा पदार्थावस्था में हैं,

मात्रा का मूलरूप परमाणु ही हैं। अगर हम ये सोचने लगे की सब परमाणु एक दिन जीवन बन जाएगा, इस प्रकार से अपने सोचते हैं, अस्तित्व में सभी अवस्थाएँ रहेगें। मेधस तंत्र बनते हुए, हाथ, पैर, नाक सब मेधस तंत्र बन जाएगें । एक प्रकार का सोचने की विधि नहीं बनता हैं, ऐसा नहीं होता हैं, प्रकृति में अपने में नियति विधि से सब व्यवस्था में रहता है। उसमें अपना मनमानी काम नहीं करता है।

अपने मनमानी से सोचना एक अलग चीज हैं, अस्तित्व में जो चीज हैं, उसको देखना, समझना, उसके अनुसार जीने के लिए योजना बनाना ये अलग चीज है। मेरे अनुसार अस्तित्व में जो चीज हैं, जैसा है उसको वैसा समझना चाहिए। समझने के बाद उसी क्रम मे जीने की कला को विकसित करना चाहिए, उस प्रकार से विकसित करने जाते हैं, तब हम व्यवस्था में जीने के लिए बाध्य हो जाते हैं, तैयार हो जाते हैं, स्वीकृत हो जाते हैं, सब कुछ हो जाता हैं।

प्रश्न– जैसा आपने बताया सबके सब गठनशील परमाणु सबके सब गठन पूर्ण बने इसकी कोई आवश्यकता नहीं हैं, इनका एक निश्चत अनुपात रहता हैं। उनका अनुपात अस्तित्व में किस तरह हैं?

उत्तर– अस्तित्व स्वयं में निश्चित करता है, इसको । अनुपात कितना है, इसका संख्या गणित में नहीं बनता अस्तित्व स्वयं इस अनुपात को निश्चित करता हैं, कितना परमाणु पदार्थ अवस्था में रहता हैं, इसको आप गिन नहीं सकते। कितना परमाणु प्राणावस्था में रहेगें इसको गिन नहीं सकते, गिनना ये बनता हैं। पदार्थावस्था रहता हैं। प्राणावस्था रहता हैं, जीवावस्था रहता हैं, ज्ञानवस्था भी रहता हैं। ज्ञानावस्था में हम को क्या सार्थक होना है उसको सोचने की बात हैं, बाकि सभी चीज अपने में सार्थक है ही हैं, उनको

कोई सिखाने की जरूरत नहीं, हम उसी को जानते हैं, अभी जैसा धरती को प्यास सिखने गये, धरती पानी पिना नहीं जानता हैं, अभी हम पानी पिना सिखाते हैं, इसमें कुछ निकलने वाला नही हैं। धरती में जो गुण हैं, वह अपने में स्वंय में व्यवस्था के रूप में विद्यमान हैं, उसके लिए आप हमको कुछ करना नहीं है। इसका ये मतलब हुआ पदार्थावस्था को कुछ पाठ सीखना नहीं, प्राणावस्था को कुछ सीखना नहीं, ना जीवावस्था को सीखना हैं और स्वंय मनुष्य को जो सीखा है, वह सीखना बना नहीं। आहार को निश्चय नहीं कर पाया, इतना विज्ञान, ज्ञान सब हो गया। यती, सती, सिद्व सभी हो गये , इस धरती पर, उसके बावजूद भी हमकों ये पता नहीं लगा कि मानव का आहार क्या हैं।

अस्तित्व जैसा है, उसको वैसे समझने की आवश्यकता हैं, समझने पर यही बनता है, सभी अवस्थाऍं रहेगें।

सभी अवस्थाऍं रहते हुए सभी एक दूसरे के साथ पूरक विधि से व्यवस्था में जीना हैं, अभी मनुष्य जी नही पाया, उसके लिए एक तरीका उपलब्ध कराने के बारे में आप और हम सोच रहे हैं।

प्रश्न– अंश वस्तु के रूप में क्या हैं? अंशों की प्रकृति क्या हैं?

उत्तर– अंशों का मतलब कुछ नहीं निकलता, परमाणु अंशों का पूछना चाहिए। परमाणु एक स्वयं में वस्तु होता हैं, वस्तु का मतलब हैं, वास्तविकता को प्रकाशित किया रहता हैं। वास्तविकता ये है, हर एक परमाणु व्यवस्था के रूप में है, श्रम, गति, परिणाम के रूप में अपने को व्यवस्था के साथ सम्पूर्णता के साथ प्रकाशित किए रहते हैं, उसका अंश के बारे में आप पूछ रहे हैं।

अंश अपने में स्वतंत्र रूप में अस्तित्व में रहना बहुत मुश्किल हैं, कहीं भी अकस्मात्, परमाणु विघटित हो कर अंश के रूप में अस्तित्व में कहीं होता होगा तो होता होगा अन्यथा मनुष्य ही उसका मूल कारण है। अंश के रूप में परिवर्तित करने के लिए, एक मात्र मनुष्य ही है। मनुष्य यदि परमाणु के साथ अत्याचार ना करें, परमाणु, परमाणु अंश के रूप में अस्तित्व में होते ही नहीं हैं, बहुत नगण्य, बहुत ही कठीन और बहुत अपवाद रूप में कहीं एक आध अंश मिलता होगा तो मिलता होगा। इस ढ़ंग से इसको समझना चाहिए। परमाणु अंशो में क्या विशेषता हैं, तो परमाणु अंश में भी सत्ता पारगामी हैं, सत्ता पारगामी होने की वजह से परमाणु अंश भी स्वयं स्फूर्त हैं, व्यवस्था में भागीदारी करने के लिए। इस आधार पर एक परमाणु अंश, दूसरे परमाणु अंश को पहचानता हैं, ये

दोनों मिलकर के व्यवस्था को समीकरण कर देते हैं, व्यवस्था को समीकरण करने के कम में श्रम, गति, परिणाम ये तीन चीज क्रिया के रूप में व्याख्यायित होना देखा गया।

प्रश्न– अंशो की स्थिति, गति, आचरण व व्यवस्था का स्त्रोत क्या हैं?

उत्तर– अंशो का स्त्रोत कुछ नहीं होता हैं, परमाणु ही विघटित हो करके अंशो के रूप में होना पाया जाता हैं। अंशो का कोई स्त्रोत नहीं होता हैं, कि अंश बनता हो, कोई विज्ञानी बनाता हो, कोई बेवकूफ बनाता हो, पंडित बनाता हो, ऐसा कोई चीज नहीं है। परमाणु ही विघटित हो करके अंशों के रूप में कहीं हो सकता हैं, दूसरा कोई विधि इसका है ही नहीं। परमाणु अंश अपने आप में कोई तैयार होने वाली बात नहीं है। यदि परमाणु अंश विखंण्ड़ित होता हैं, मनुष्य के प्रयास से, दूसरे के प्रयास से तो होता नहीं हैं, पुनः वह संगठित हो करके परमाणु के रूप में आ ही जाता हैं। वह स्वाभाविक हैं, उसमें घुर्णन गति होती हैं, घूर्णन गति में यह प्रवृत्ति समाहित रहती हैं, परमाणु के रूप में भागीदारी करने का उसके लिए एक से अधिक परमाणु अंशों को पहचानने की जरूरत पड़ता हैं, ऐसा संयोग पा कर के परमाणु में भागीदार करने के लिए प्रवृत्त हो जाता हैं।

वह किसी ना किसी परमाणु में जुड जाता है, या एक से अधिक अंश यदि मिलते है, परमाणु के रूप में गठीत हो जाते हैं।

प्रश्न– अंशों का परमाणु के रूप में गठन का प्रयोजन, प्रकिया और प्रकिया को प्रभावित करने वाले लक्षण के बारे में।

उत्तर– प्रयोजन, व्यवस्था के लिए, व्यवस्था के रूप में प्रवृत्ति रहती हैं, एक से अधिक परमाणुएँ एकत्रित हो करके व्यवस्था को प्रमाणित करते हैं, हर एक परमाणु श्रम, गति, परिणाम के रूप में क्रियाशील रहते हैं। अपने में सम्पूर्ण हैं, उसका आचरण निश्चित रहता हैं, 2 अंश का परमाणु का आचरण निश्चित रहता हैं, जबकि आदमी का आचरण अभी निश्चित नहीं हुआ हैं।

प्रश्न– केन्द्र में एवं परिवेश में निश्चित संख्या का आधार क्या हैं?

उत्तर– निश्चित संख्या का आधार यही है, परमाणु विकसित होने का आधार हैं। विकसित होने का आधार हैं, पहले बाह्य परिवेश में परमाणु अंश बढ़ता हैं, बढ़कर के उसके आगे की परिवेश में जाता हैं, उसके आगे की परिवेश में जाता हैं, इसमें एक परिवेश ही नहीं

हैं। परमाणु में एक से अधिक परिवेश होते हैं। किसी–किसी परमाणु में एक ही परिवेश होता हैं, एक परिवेश जब तृप्त हो जाता है, उसके बाद दूसरा परिवेश शुरू हो जाता है, विकास की स्थितियॉ हैं ये। परमाणु अंश जैसे–जैसे बढ़ते हैं, उसको विकसित परमाणु माना जाता है, उस में स्थिरता और बढ़ जाती है, उसमें भार बढ़ जाती हैं। इस ढ़ंग से होते–होते ये धरती जैसी इकाई बनने के लिए आधार बन जाता हैं, धरती जैसे आकार होने के बाद इसमें बाकी विकास होने की संभावना उदय हो जाती है, जैसा प्राणावस्था, इसके आगे की विकास है, प्राणावस्था से आगे का विकास जीवावस्था, उसके आगे का विकास है, ज्ञानावस्था।

प्रश्न– केन्द्रों में अंश और परिवेश में अंशो का आचरण का परस्पर प्रभाव की व्याख्या?
उत्तर– केन्द्र में जो अंश है, वह मध्यस्थ क्रिया करती रहती हैं, परिवेश में जो हैं, सम,विषम कार्यो को करते रहते हैं। जब कभी भी मध्यांश से निश्चित दूरी से अधिक दूर भागने की स्थिति में मध्यस्थ क्रिया अपने प्रभाव को ड़ालकर पास में बुलाता हैं, और वही चीज यदि पास में आ जाता है, अपनी निश्चित अच्छी दूरी से पास में आने की स्थिति में वही मध्यस्थ क्रिया प्रभाव ड़ालकर उसको निश्चित अच्छी दूरी में स्थिर कर देता हैं।
इस ढ़ंग से व्यवस्था को संतुलित बनाए रखने के अर्थ में मध्यस्थ क्रिया अर्थात नाभकीय अंश रहते हैं, वह सब के सब काम करते हैं, नाभकीय अंशों का जहॉ तक बात हैं, परिवेश में जो अंश होता है, उतना ही होता हैं, किसी–किसी परमाणु में अधिक भी होते हैं।

प्रश्न– कम और अधिक का आधार क्या हैं?
उत्तर– अंशों का अपनाने का आधार पर है, परमाणु 2 तरह का है, भूखे परमाणु, अजीर्ण परमाणु। भूखे परमाणु अंशों को अपनाने में लगे रहते हैं, लगते समय मिल गया तो 2/3 ज्यादा भी ले लिया। इस ढ़ंग से काम हैं ये।

प्रश्न– केन्द्रों में अंशों के द्वारा सभी आवेशों को स्वाभाविक गति में लाने की क्रिया किस प्रकार संपादित होता हैं?
उत्तर– मध्यस्थ बल का प्रयोग से ये स्वाभाविक गति में आते हैं, उसका 2 ही आवेश है, दूर भागना, पास में आना। इसको निश्चित अच्छी दूरी में बनाए रखना ये मध्यस्थ क्रिया का प्रयोजन हैं।

ये अपने प्रभाव को ड़ालता हैं, वह निश्चित अच्छी दूरी में स्वंय पदस्थ हो जाते है। मध्यस्थ बल का मतलब है, सम, विषम आवेशों को सामान्य बनाने की प्रकिया। जब कभी भी सम आवेश होता हैं, वह अंश पास में आ जाता हैं, प्यार से सारे अंश, तब वह ज्यादा प्यार होना भी ठीक नहीं हैं। उसको निश्चित अच्छी दूरी में पदस्थ करता हैं, कभी–कभी रूठ करके , थोड़ा सा मुरझा करके दूर भागने लगते हैं, पुचकार करके पास में बुला लेता हैं। ये इसीलिए करते हैं, परिवेश ही आधार है, इसका। परिवेशिय दबाव, अकेले परमाणु तो है नहीं। सह अस्तित्व में बनाया गया अनेक परमाणु के बीच में एक परमाणु काम करता रहता हैं, इन अनन्त परमाणु का दबाव किसी एक परमाणु के ऊपर अधिक आने से वह केन्द्रिय अंशो के पास में पहुँच जाते हैं, उसी में यदि परिवेशियों अंशों का यदि आकर्षण बढ़ जाती हैं, दूर भागना चाहेगें, इस ढ़ंग से दूर भागना रहता है। तभी भी मध्यस्थ बल जो हैं, उसको पास में बुला कर के अवस्थित कर लेता हैं, मध्यस्थ किया के पास में आने की स्थिति में उसको निश्चित अच्छी दूरी में व्यवस्थित कर अपने में संरक्षित हो जाता हैं।

प्रश्न– क्या नाभीक में अंशों का होना ही मध्यस्थ किया कहलाया?
उत्तर– हॉ उसमें मध्यस्थ बल और मध्यस्थ शक्ति दोनों समाहित हैं। ये तभी काम में आता है, जब परिवेशिय अंश अतिवाद में आते हैं, अतिवाद का 2 ही प्रकार है, एक पास में आना, दूसरा दूर जाना। इतना ही होता हैं। तीसरा प्रकार का कुछ भी उत्पात नहीं होता।

प्रश्न– किसी गठनशील परमाणु में अधिकतम् कितने अंश हो सकते हैं?
उत्तर– गठनशील परमाणु के अजीर्ण परमाणु में ज्यादा अंश होते हैं, भूखे परमाणु में कम होते ही हैं। परमाणुओं का विलक्षण तरीका का रचना हैं। एक ही प्रजाति के परमाणु 2, 3 प्रकार से प्रस्तुत हो जाते हैं, जैसे 2 परिवेश में 200 अंश कार्य कर रहे हो, मध्य में 200 अंश से अधिक अंश हो जाते हैं, वही चीज यदि 3 परिवेश में हो जाते हैं, 4 परिवेश में हो जाते हैं, ये भी होते हैं, 2 ही परिवेश में बहुत सारे परमाणु अंश भी होते हैं।

प्रश्न– परिवेश में अंशो की संख्या तो निश्चित है ना बाबाजी, 2, 8, 18, 32 ।

उत्तर– वह दूसरी बात है, तृप्त परमाणु की बात हैं, गठनशील में 2 परिवेश भी होता हैं, 4 परिवेश भी होता हैं, 6 परिवेश भी होता हैं।

प्रश्न– क्या परिवेश में अंशों की संख्या निश्चित नहीं हैं?
उत्तर– उसमें घटता, बढ़ता रहता है, ये अनिश्चित है, कार्य करते समय में निश्चित संख्या में ही रहते है, उनका आचरण निश्चित होने का अर्थ बनता है, इसका मतलब है, निश्चित आचरण करता रहता है, वह बदलता नहीं है, ऐसा नही है, वह बदल जाता है, तो दूसरा प्रजाति के आचरण करता हैं।

प्रश्न– विज्ञान के अवधरणा के अनुसार तो जो वतइपजे हैं, इनमें अंशों की संख्या निश्चित है, 2, 8, 18, 32 कम से, जैसे बाबाजी ने कहा की दूसरे, तीसरे परिवेश में अंशो की संख्या 200 भी हो सकती हैं।
उत्तर– जो परिवेश होते हैं, 2 परिवेश का भी परमाणु हो सकता है, 4 परिवेश का भी हो सकता हैं, 5 का भी हो सकता है, 6 का भी हो सकता हें, ये बताया इसमें एक परिवेश में 200 अंश भी हो सकते हैं, उससे ज्यादा भी हो सकते हैं, ये जितने भी अंश परिवेशों में काम करते हैं, उतने ही अंश या उससे अधिक अंश मध्य में हो जाते हैं, उससे कम नहीं होते हैं।

प्रश्न– प्रथम परिवेश में अधिकतम संख्या 2 हो सकती हैं, दूसरे में 8, 18, 32 विज्ञान के अनुसार।
उत्तर–ऐसा कुछ नहीं हैं, प्रथम परिवेश में जो तृप्त परमाणु होता है, या तृप्त परमाणु भले ही ना हुआ हो जो अतृप्त रहा हो ऐसा भी हो सकता है,
उसमें तृप्त परमाणु में मध्य में एक ही अंश होता हैं, मध्य में यदि परिवेश के समान अंश हो जाते हैं, तब वह जीवन परमाणु नहीं होता हैं, भौतिक परमाणु ही होता हैं। गठनशील परमाणु में भी ऐसा कोई प्रजाति, यदि 2 ही अंश का परमाणु होना है, तब तो मध्य में एक ही होना आवश्यक बनता हैं।

प्रश्न– विज्ञान के हिसाब से केन्द्रों में तो उतने ही अंश होते हैं, जितना सारे परिवेश से मिलाकर होते हैं, या उससे ज्यादा, दोनों हो सकते हैं। प्रथम परिवेश में 2 हो सकते हैं,

दूसरे में अधिकतम 8 हो सकते हैं, तीसरे परिवेश में 18 हो सकते हैं, 4 में 32 हो सकते हैं। ऐसा $2द^2$ हिसाब से चलते हैं।
उत्तर– वह किसी एक प्रजाति के परमाणु हुआ ना।

प्रश्न– सभी प्रजाति के परमाणुओं में ऐसा ही होता है, इसमें ज्यादा नहीं होना चाहिए, उससे कम हो सकते हैं, ऐसा हो सकता है, तीसरा परिवेश पूरा नहीं हुआ , उसके बाद भी चौथा परिवेश शुरू हो गया।
उत्तर– ठीक हैं, इससे ज्यादा होने से तो आजीर्ण परमाणु हो जाते हें, ना इससे कम होने से भूखे हो गये।

प्रश्न– विज्ञान के हिसाब से भूखे में भी संख्या का कम चलता ही है, उससे ज्यादा नहीं हो सकते, लेकिन जो उसमें स्थिति होती है, वह इतना स्ववेम होता है कि वह निकलकर बाहर जाता रहता हैं।
उत्तर– ठीक हैं, बाहार निकलने का आखिर वतइपज ही होता है। परमाणु अंशों की संख्या सभी वतइपज में जितना होता है, उससे अधिक या उतना होना हर भौतिक परमाणु का स्वाभाविक प्रक्रिया है। हर प्रजाति का परमाणु, 2 अंश रहता है तो कहॉ रहता है ये परमाणु, 2 ही अंशो का जो परमाणु है फिर कहॉ से लाओगे, फिर ये 2, 8, 18, 32 सिद्वांत कहॉ गया।

प्रश्न– 2 से ज्यादा नहीं हो सकते, 2 से कम हो सकते हैं।
उत्तर– ऐसा उनका सोचना हैं, हमारा सोचना ऐसा है, अजीर्ण परमाणु में अधिक होते ही हैं, सभी परिवेश में अधिक होते ही हैं, भूखे परमाणु मैं कम होते ही हैं, भूखे परमाणु का मतलब ही हैं, कम होना।

प्रश्न– अजीर्ण का जो आखरी परिवेश हैं, उसमें अंश इतने कम होते हैं, कि उस आखरी परिवेश को बनाए रखना मुश्किल होता है, कम या अधिक जो भी होते है, आखरी का वजइपज में रहते हैं, उसके पहले के वतइपज पूरे हो जाते हैं।
उत्तर– ठीक है, इसको ऐसे मान लेते हैं। इसका मतलब हैं, 61 अंश से ज्यादा नहीं होना चाहिए।

प्रश्न– उससे ज्यादा हो सकते हैं, वतइपज की संख्या बढ़ सकती हैं।

उत्तर– जितना वतइपज बढ़ता हैं, उतना ज्यादा अजीर्ण होता है, जैसा भी हम वतइपज बढ़ाने जाते हैं, वह मध्यांश, उसको उंदंहम करने में असमर्थ होता जाता हैं, उसकी उंदंहम करना तकलीफ जाता हैं। वातावरण का दबाव बढ़ जाता है, और परिणाम घटित हो जाता हैं। इस ढ़ंग से परमाणुओं के अंशों के संख्या कें बारे में बहुत ज्यादा अपन निर्भर करने लगे, इतना ही संख्या में रहेगा ऐसा कोई जरूरी नहीं हैं, अधिकतम, न्यूनतम, न्यूनतम तो अपने को पता लगता ही है, कम से कम 2 होना । अधिकतम होने के लिए बीच में जो परमाणु हैं, जैसे भूखे परमाणु 60 अजीर्ण परमाणु 60 में कितना वतइपज हो जाएगें, कब वह कितना स्ववेम हो जाएगा, कितने क्षण में वह होगा, कितने काल में होगा, ये सब सोचने की मुद्दा बनता हैं।

जब कि जीवन परमाणु में 4 परिवेश होता ही हैं, उसी मे पूरा का पूरा विधि बनता हैं, बीच में एक होने से, प्रथम परिवेश में 2 होने से, दूसरे में 8 होने से , तीसरे में 18 होने से और चौथे में 32 होने से, ये पूरा`मज किया होती है। इन कियाएँ परावर्तन, प्रत्यावर्तन पूर्वक 122 कियाएँ होती हैं, इसको हमने बवनदज कर लिया हमारा जीवन में।

प्रश्न– ये जीवन के बारे में जो आपका बवदवितउंजपवद हैं। गठनशील परमाणु के प्रथम, द्वितीय जो परिवेश हैं, उसमे संख्या के बारे में आपका कहना है की उसमें 200 भी हो सकते हैं।

उत्तर– हॉ होते ही हैं, क्या आपके हिसाब से नहीं होते हैं, 2 परिवेश हैं, समझ लो, 4 ही होता है क्या?

उसी प्रकार चलते–चलते ये 100 भी होते हैं, 200 भी होते हैं, अजीर्ण बनने के लिए ये जितना ज्यादा से ज्यादा हो सकते हैं, होते जाते हैं, टुटते भी जाते हैं। ज्यादा अंश बढ़ते–बढ़ते एक स्थिति में वह टुटने के जगह में भी जाते हैं। मध्यांश को इन सारे अर्जीत अंशों को एक अपनी निश्चित अच्छी दूरी में अवस्थित करने का कार्य करते–करते वह कहीं भी यदि स्ववेम हो जाते हैं, उंदंहम कर नहीं पाता है, उस जगह में परमाणु अंश बिखर करके अलग हो जाते है। वह दूसरा कोई प्रजाति का परमाणु ही बनाते हैं, या दूसरे कोई परमाणु में घूस जाते हैं,

दोनों में से एक होता रहता हैं। इस ढ़ंग से परमाणु अंशो का स्वतंत्र रूप कहीं भी बहुत समय तक स्थिर रहना होता नहीं है। परमाणु अंशों के बारे में जितने भी गठनशील

परमाणु के बारे में, अजीर्ण और भूखे परमाणु को पहचाने होगें, बहुत अच्छी बात हैं, उसमें से अंशों का स्थिरता, अजीर्ण परमाणु में जल्दी बदलती रहती हैं, जितना जल्दी उसमें बदलता हैं, उसी प्रकार से दूसरा प्रजाति को परमाणुएँ बनते रहते हैं, और दूसरे प्रजाति के परमाणु बनते–बनते परमाणुओं की संख्या बदलती रहती है, घटती रहती हैं, बढ़ती रहती हैं, अंशों की संख्या ये ही ना बात होती है। इतना पर्याप्त है, कि नहीं है।

प्रश्न– विज्ञान अंशों के रूप में नहीं देखता, आवेशों के रूप में देखता हैं। केन्द्र में धनात्मक और परिवेश में ऋणात्मक, उसके प्रकार अलग–अलग हैं,
उत्तर– गति को यदि हम आवेश माने, हमारे अनुसार हम जो देखा हूँ, उसके अनुसार आवेशित गति, स्वभाव गति ये दोनों है, स्वभाव गति में आचरण निश्चित है। आवेशित गति में, आचरण निश्चित नहीं है। कोई भी परमाणु, जीवन ही आवेशित होता है, मान लो, जीवन आवेश्ति होने पर जीवन का आचरण निश्चित नहीं हैं, क्या आचरण कर ड़ालेगा। उसी भांति यदि भौतिक परमाणुएँ आवेशित रहते हैं, उनका निश्चित आचरण नहीं होता हैं।

प्रश्न– चवेपजपअम बींतहम ;धनात्मक आवेश) और दमहंजपअम बींतहम ;ऋणात्मक आवेश) के रूप में देखते हैं, परमाणु अंशों को। अध्ययन हमेशा प्रभाव के रूप में करते हैं।
उत्तर– प्रभाव, परमाणु के सभी ओर रहती है, प्रभाव क्षेत्र परमाणु के जो मात्रा रहती है, उससे बाहर में भी फैली रहती हैं, हर इकाई का प्रभाव। ये प्रभाव जो फैला रहना स्वाभाविक बात है, इसमें स्वभाव, गति, विधि से आगे की विकास व आचरण की निश्चयता दोनों बना रहता हैं। विकास की संभावना, आचरण की निश्चयता, दोनों एक साथ बनी रहती हैं ।

हर एक स्थिति में, इस आधार पर अस्तित्व में अवस्थाएँ, चार अवस्था में हो चुकी हैं। इसका गवाही ये ही है। चारों अवस्था के यदि मूल में देखे तो परमाणु ही हैं, मूल में यदि देख जाए तो परमाणु ही हैं और दूसरा कोई चीज है ही नहीं ।

प्रश्न– विज्ञान ने अंशों की परमाणु से हटा के या कोई अंशों को परमाणु में प्रवेश करा के, उसका जो प्रभाव पड़ता है, उसका अध्ययन किया है। आवेश के आधार पर चवेपजपअम बींतहमए ;धनात्मक आवेश) दमहंजपअम बींतहम ;ऋणात्मक आवेश) प्रतिपादित करने का प्रयास किया हैं।

उत्तर– आवेश होगा तो आचरण निश्चित नहीं होगा, यदि आचरण निश्चित मानते हैं, आप 10 अंशो की परमाणु का आचरण निश्चित यदि मानते हैं, वह स्वभाव गति में ही होगा।

प्रश्न– विज्ञान बींतहम ;आवेश) के आधार पर जो मगचसंपद करना चाहते हैं ऐसा करना आवश्यक नहीं हैं। अंशों के आधार पर इन सारे जो भी घटना चल रही है, प्रभाव, आचरण को मगचसंपद किया जा सकता है। बींतहम को लाने की जरूरत नहीं।
उत्तर– आप विदेशी शक्ति को पउचवतज किए बिना बींतहम का आपको पता लगेगा नहीं। आवेशित किए बिना आपका चार्ज पता लगने वाला नहीं हैं। मनुष्य का ऊंगली किए बिना, मनुष्य हस्तक्षेप किए बिना, विकृत बनाए बिना परमाणुओं को नापना संभव नहीं। परमाणुओं का गति, परमाणुओं का दंजनतम को मगचसंपद करना इतना संभव नहीं हैं। उसको ऐसे ही माना जाए ज्यादा सुखद, सुन्दर और शुभ रहेगा, हम को लगता है, जैसा है, कैसा हैं? मुल में परमाणु में ये ज्ञान हो गया । विज्ञानियों को हो गया, अज्ञानियों को भी समझ ले गए, ये बात अच्छा काम हुआ। क्यों अच्छा काम हुआ? जीवन को एक परमाणु के रूप में स्वीकारने में सहायक हो गया, उसके लिए ये मदद हो गया और कोई मदद हुआ है, ऐसा कुछ नहीं और तो परमाणु बम बनाएगें, ये बनाएगें, वह बनाएगें, मनुष्य का सहायक वस्तु नहीं हैं, सहायक ये हुआ अज्ञानी, ज्ञानी, विज्ञानी सब को परमाणु की स्वीकृति हो गई।

परमाणु :–ण्

किसी परमाणु को आवेशित कराने की बात आती हैं, आवेश को नापने की बात आती हैं, नापने के लिए कोई आवेश करने वाली चीज को प्रयोग किए बिना आवेश को नाप नहीं पाएगें, आवेशित कराकर ही हम आवेश को नापते हैं। इसमें तमंसपजल क्या हुई, सच्चाई क्या हुआ? वस्तु पकड़ में नहीं आई। वास्तविकता कहां पता चला। हम स्वयं हस्तक्षेप करके।

प्रश्न– निश्चितता तो पकड़ में नहीं आती, आवेशित करा के अध्ययन करेगें, तो आवेश्ति गति में ही करेगें।

उत्तर– उसका तमंसपजल कहॉ पता चला, इस ढ़ंग से हम लोग गुमराह हो जाते हैं, शायद उसको आप लोग अच्छी तरह से समझते हो। हस्तक्षेप करके अध्ययन करने से हस्तक्षेप का अध्ययन हो पाएगा, परमाणु का अध्ययन नहीं हो पाएगा।

प्रश्न– प्रथम परिवेश से प्रारम्भ करके, द्वितीय, तृतीय परिवेश में संख्या का निश्चितता होती है या नहीं, अधिकतम संख्या कितना है?

उत्तर– इसमें हमारा कहना है, कितने भी संख्या की जो परिवेशों में जितने भी संख्या होती है, उतना ही संख्या उससे थोड़ा कम ज्यादा वाला केन्द्रों में जो अंश होते हैं। उसके साथ–साथ एक आचरण निश्चित होता हैं। वह आचरण बदलता नहीं, उतना संख्या में संख्या बढ़कर वही संख्या में आएगा, तब भी वही आचरण करेगा, संख्या घटकर के वही संख्या में आएगा, तब भी वही आचरण करेगा।

प्रश्न– अंशों की निश्चित व्यवस्था अगर बन गई तो उसका एक निश्चित आचरण होगा।

उत्तर– स्वभाव, गति की प्रतिष्ठा हैं ये, स्वभाव गति प्रतिष्ठा आचरण की स्थिरता हैं, ये स्वभावगति प्रतिष्ठा में मानव भी अपने निश्चित आचरण को व्यक्त करता हैं। नही ंतो आदमी निश्चित आचरण को देने वाला नहीं हैं, जब की जड़ परमाणु में निश्चित आचरण होता हैं। यद्यपि प्राणकोषाएँ परमाणु के रूप में काम नहीं करते हैं, अनेक परमाणु उसमें होते ही हैं, प्राणकोषाओं की आचरण निश्चित हैं, उसका रचना विधि उसमें लिखा रहता हैं, जैसा अपने को कहते है ना कि तुम्हारा तकदीर में लिखा हुआ है, वह प्राणसूत्र में

उसका तकदीर लिखा रहता हैं, प्राण सूत्र में रचना विधि उसमें उभरा ही रहता हैं। वही रचना करेगा, वह दूसरा नहीं करेगा। कितना स्थिर आचरण है, आप सोच लो,
वंश के अनुसार हर जीव अपने आचरण को करते ही हैं। मनुष्य कब क्या आचरण करेगा, कहॉ से इसको निश्चय करोगे।

निश्चित आचरण नहीं हो सकता, इस बात को प्रतिपादन करने के लिए, सबकों अस्थिर, अनिश्चय बताना शुरू किया, जबकि हर एक परमाणु अपने निश्चित आचरण सहित हैं, स्वभाव, गति में ।
यदि आवेशित गति हो तो उसका आचरण निश्चित नहीं रहता । आवेशित किए बिना परमाणु के आचरण को हम देख नहीं पाते हैं, उसके बाद कहते है, हम ज्ञानी हो गए, आगे क्या किया जाए, आप बताओं? वस्तुऍ हैं, निश्चित है, ये हमको दिखता है, समझ में आता है, ये परमाणु के आचरण निश्चित है, इसीलिए वस्तुऍ अपने आचरण को बनाए रखें हैं, लोहे का परमाणु निश्चित है, इसीलिए लोहे का पिण्ड़ का आचरण निश्चित हैं।

प्रश्न– हर वतइपज में जो अंशों का अधिकतम संख्या है, वह बाबाजी के अनुसार, निश्चित है या नहीं हैं?
उत्तर– हर एक परमाणु में निश्चित संख्या होते ही हैं।

प्रश्न– जैस एक परमाणु में मान लीजिए 5 वतइपज हैं, तो पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे वतइपज में कोई उपदपउनउ संख्या निर्धारित है की नहीं?
उत्तर– जैसा 200 अंशों से 5 वतइपज बनी हैं, या 3 वतइपज बना हैं या 4 वतइपज बना हैं, कुछ भी बना हैं, 4 वतइपज होने की स्थिति में संख्याऍ भिन्न होती हैं, 3 वतइपज होने में और कुछ होते हैं, 5 वतइपज होने से और कुछ होते हैं, 200 अंश को परमाणु बनते ही हैं। वतइपज यदि स्थिर हो जाना है, तभी भी उसका आचरण स्थिर हैं। यदि एक परमाणु में 3 वतइपज हैं, उसमें 200 अंश होते हैं, समझ लो, उसका आचरण निश्चित है। 4 हैं, 200 हैं, तभी उसका आचरण निश्चित हैं।

प्रश्न– वैज्ञानिकों के अनुसार 2, 8, 18, 32 कम से ही वतइपज में ही परमाणु अंश होते हैं। अधिकतम तय है, प्रथम वतइपज में 2 दूसरे में 8, तीसरे में 18, 4 में 32। 200 अंशों के परमाणु में 5वें में 50, छठवें में 72 ऐसे वतइपज की संख्या बढ़ती जाती है।

उत्तर– आप लोगों का कहना ये हुआ, आपके जो उमेंनतमउमदज के अनुसार, वतइपज में जो कुछ भी शुरूआत है,

पहला वतइपज, हर एक प्रजाति के अंश में वह 2 ही होता है, 2 या 2 से कम, अधिकतम 2। इस प्रकार से आप गिने हो, यदि ये निश्चित है, इसमें क्या अपनी अपत्ति हैं। प्रस्थापन, विस्थापन की जो बात हैं, वह आपको पकड़ में आया की नहीं, प्रस्थापन में कोई अंश आ कर के उसमें जुड़ने की जरूरत है, विस्थापन में कोई अंश टूट कर के बाहार होने की आवश्यकता हैं। जब परमाणु टूटता है, उसके बाद परमाणु में परिवर्तिय जो आचरण आता हैं, वह स्वयं में आश्वस्त होता है। ये मानते हो कि आवेशित होता है, ये मानते हो। वह अपने आचरण में आश्वस्त हो जाता हैं।

जिसमें प्रवेश होता हैं, उसको आप क्या मानते हैं? वह भी स्वभाव, गति में आता हैं। परिवेश और अंश के बारे में ये निर्धारण हो चुकी हैं, उसमें हमारा कोई अपत्ति नहीं हम उसको मानने के लिए तैयार हैं। निष्कर्ष ये है कि परिवेश की संख्या कितने भी हो सकती हैं।

प्रश्न– क्या सभी अंश एक ही जैसे होते हैं?

उत्तर– हॉ अंश एक ही प्रकार के होते हैं। जगह के आधार पर आप चवेपजपअमए दमहंजपअम नाम देते हो तो उससे हमारा कोई लेन–देन नहीं। जगह का आधार, जैसे प्रथम परिवेश है, मध्यांश है, मध्यांश का तो अलग नाम हम भी देते हैं, आप भी देते हैं।

प्रश्न– बाबा `बपमदबम के अनुसार नाभिक में 2 प्रकार के अंश रहते हैं, प्रोटन और न्यूट्रान, यदि स्थान के आधार पर बोलेगें तो।

उत्तर– भूखा रहना और आगे अंशों की बढ़ाने को अवसर की बात है, अजीर्ण का मतलब है, परमाणु का अपने अंशों को घटाने की प्रवृत्ति की बात, ये दोनों को ऐसा हम अध्ययन कर सकते हैं। ये दोनों को भाषा इस प्रकार से हम दिए, बीच में तृप्त परमाणु के अपेक्षा में ही अजीर्ण और भूखे की नाम आता हैं। उस आधार पर उसका नाम रखा, नाम तो आप भी कई सारे रखे हो, किस अर्थ में रखे हो, वह पता लगने पर सोचा जाए। मध्य में अंश होते है, उसका आप नाम रखते ही हो, हम भी एक नाम रखे हैं। स्वाभाविक है, परिवेश में अंश होते हैं। हर एक परिवेश के अलग–अलग आप नाम रखे होगे। हम तो परिवेशीय अंश ही कहते हैं, प्रथम परिवेश, द्वितीय परिवेश ऐसा।

प्रश्न– विज्ञान के नाम के अलावा, अंशो का प्रकृति भी अलग–अलग होती है, जैसे इलेकट्रोन, प्रोटान, न्यूट्रान । एक चवेपजपअम बींतहम देता है। एक दमहंजपअम बींतहम देता है, एक न्यूट्राल।

उत्तर– न्यूट्राल बींतहम तो मध्य में ही होता हैं। जो कुछ भी तुम चवेपजपअमए दमहंजपअम कहते हो, उसका उमंदपदह क्या कहते हो? परमाणु में चवेपजपअमए दमहंजपअम कहने का हमारा मतलब ये हैं। मध्यांश के पास दौड़ना, मध्यांश से दूर होना, इसमें हम चवेपजपअमए दमहंजपअम बताते हैं। आपका आशय दूसरा होगा, उसको स्पष्ट करो।

प्रश्न–`बपमदबम , 2 के बीच मैं चवेपजपअम और दमहंजपअम बताता हैं, अपने आप में ही एक इकाई को + एक इकाई की – एक की न्यूट्राल बोल देते हैं।

केन्द्र में जो रहते हैं, उसमें 2 तरह के अंश रहते हैं। एक + बींतहम रहता हैं ओर एक न्यूट्राल बींतहम रहता हैं और जो परिवेशीय अंश में रहते हैं, उसमें केवल दमहंजपअम बींतहम रहते हैं और उनमें भार नहीं होता।

उत्तर– परिवेशीय अंशों में भार नहीं होता, वह ठीक है। वह भाग ठीक है। मध्य में जो अंश रहता है, उसी का भार मिलता है, जो कुछ भी परमाणु में भार है, पिण्ड़ में भार है, वह भार मध्य में जो रहता है, उन्हीं अंशों का भार हैं। लेन–देन के समय में चवेपजपअमए दमहंजपअम होता होगा, बाकि समय में न्यूट्राल रहता ही होगा।

प्रश्न– लेन–देन में भी +, – इस अर्थ में परिभाषित होता है, कि प्रस्थापन हो रहा है या विस्थापन हो रहा हैं।

उत्तर– हमारे अनुसार मध्यांश के पास दौड़ने पर कोई नाम दिया जा सकता हैं, मध्यांश से दूर भागने पर उसको एक नाम दिया जा सकता है, कुछ भी आप नाम रख लिए। हम सम, विषम का जो नाम दिया है, वह इसी आधार पर दिया हैं। परमाणु के मध्यांश में, मध्यांश के पास यदि आश्रितांश माने वतइपजंतल अंश जितना भी रहता है, वह यदि पास में आने लगते हैं। मध्यांश उनको अच्छी दूरी में प्रतिष्ठित करता हैं, वही चीज दूर भागने लगता हैं, तब भी अच्छी दूरी में बैठा देता हैं।

परमाणु, मध्यस्थ, बल और प्रजाति

परमाणु व्यवस्था में जिस प्रकार का कार्य विन्यास करना है, वह परमाणु में निहित है, पहले इस सिद्वान्त को समझों। एक तो बात समझो की परमाणु ऊर्जा सम्पन्न हैं, आपके अनुसार कुछ नहीं हैं।

प्रश्न– विज्ञान में भी जो प्रतिपादन करते हैं, उसको यदि देखें तो ऊर्जा सम्पन्नता से बात शुरू करते हैं, जैसा मसमबजतवद हैं, हमेशा अपना वतइपज में ही घूमता रहता है, `चपद उवजपवद है उसमें, ये सब ऊर्जा सम्पन्नता के आधार पर ही हैं।

बाबा जो मूल अंतर हो जाता है, सत्ता में भीगे होने के कारण हर अंश कियाशील है, उसके कारण घूम रहा हैं। विज्ञान के अनुसार एक चवेपजपअम बींतहम हैं, एक दमहंजपअम बींतहम हैं। इन दोनों का खिचांतानि से होता हैं।

प्रश्न– नहीं मसमबजतवद अपने आप में घूम रहा हैं `चपद उवजपवद में, उसको अपने आप मे प्रतिपादित करना पड़ेगा। चवेपजपअम बींतहम से उसका कोई तमसंजपवद ही नहीं हैं,

`चपद उवअमउमदज में अपना वतइपज में घूमता रहता है, वह अपने आप में घूम रहा है। एक पूरा परिवेश में घूम रहा हैं। अपने आप में जो घूम रहा हैं, उसको कोई भी लेना–देना चवेपजपअम बींतहम से नहीं हैं। उत्तर– अभी जो अपन कह रहे हैं, ऊर्जा सम्पन्नता उसके साथ बता रहे हो की वतपहपदंससल बता रहे हो, ऊर्जा को क्या मानते हैं वह? वह बात आती है ना,

प्रश्न– मदमतहल कहते हैं, उसको,

उत्तर– मदमतहल क्या चीज मदमतहल ?

प्रश्न– क्रियाशीलता से मदमतहल हैं, उनका आशय वहॉ हैं,

उत्तर– क्रियाशीलता कहॉ से आ गई?

प्रश्न– कहॉ से आ गया ये स्त्रोत भले ही मगचसंपद ना करें।

उत्तर– वही बात हैं, पहले कोई एक धक्का दे दिया, इसीलिए एक शुरू हुआ, दूसरा शुरू हुआ ये सब कहॉ चला गया, और उसके बाद खीचांतानि करते रहे ये सब कहॉ चला गया। खीचॉ तानी, धक्का मुक्की से छूट के क्या कोई और चीज आ गई । क्रिया के लिए पहले ये बताए हैं, ये हम सुने हैं, एक परमाणु, दूसरा परमाणु को धक्का दे दिया।

वह पहला परमाणु धक्का देना कैसा बन गया पूछा तो उसका चुप हो गए। उसके बाद खीचॉतानी से होता हैं, बोले ये उसको खीचंता है, वह इसकों खीचंता हैं इसीलिए सब गतिशील हैं, ये क्या चीज सही है?

प्रश्न– पूरी बवदेपकमदबल जो है वह उंपदजंपद नहीं हो पाती। बहुत सारे सिद्वान्त वह बहुत टुकड़े–टुकड़े में दिखाई पड़ती है, उसको अगर आप स्वहपबंससल प्रश्न पूछने जाएगें की इसका स्त्रोत क्या है, तो वहॉ जा के वह चुप हो जाते हैं।

उत्तर– कुल मिलाकर के यही बात बनता हैं, सत्ता में सम्पृक्त रहने वाला बवदबमचज नहीं आया है।

प्रश्न– सत्ता में सम्पृक्त रहने वाला और उसके आधार पर सह अस्तित्व के रूप में होने का जो सिद्वांत है, अंशो को हम सहअस्तित्व के रूप में है, ऐसा कह कर बात को शुरू करते हैं। अंश सह अस्तित्व मे हैं, ये एक मूलभूत प्रतिपादन से शुरू करते हैं। उनके लिए उसका मगचसंपद करना हैं, अंश क्यों परस्परता में हैं? उसको मगचसंपद करने गये, तो बताया विपरीत आवेश में हैं, विपरीत आवेश परस्पर आकर्षण करते हैं। विपरीत आवेश परस्परता में क्यों आकर्षीत करते हैं, तो जवाब नहीं मिलता।

उत्तर– इसमें यह सुविधा हो गई , सह अस्तित्व विधि से, परमाणु में हर अंश व्यवस्था में भागीदारी करने का प्रवृत्ति शील है ही हैं, इसीलिए जहॉ उसको स्थान मिलता है, उस जगह काम कर लेता हैं, मध्य में काम करने के लिए स्थान होता है, मध्य में काम कर लेता है, परिवेश में यदि स्थान होता है, उसमें काम कर लेता है, उसमें अपना आचरण को प्रस्तुत कर देता है, प्रत्येक अंश सत्ता में सम्पृक्त होने के आधार पर ये सब चीजें आती हैं।

प्रश्न– मध्यस्थ बल का स्त्रोत के बारे में थोड़ा बता दीजिए?

मध्यस्थ बल के लिए परमाणु के केन्द्र मध्यांश में एक ही अंश जिम्मेदार होता है या सभी अंश?

उत्तर– जीवन परमाणु में एक ही अंश जिम्मेंवार है, भौतिक परमाणु में एक से अधिक अंश जिम्मेवार होते है।। मध्यांश के अंश में इस प्रकार से आचरण है, वह पूरा का पूरा `चपद उवजपवद में रहते हैं, चाहे 2 हो, 200 हो, वह सारे अंश बीच में जो जमा रहते हैं। वह सब के सब एक एक `चपद उवजपवद में रहते हैं। घूर्णन गति में रहते हैं, परिवेश में घूर्णन गति के साथ वर्तुलात्मक गति, ये दोनों गति परिवेशीय अंश करते हैं,

उसको हम ये धरती के रूप में देख सकते हैं। धरती घूर्णन गति भी करता हैं, वर्तुलात्मक गति भी करता हैं, इन दोनों का योगफल में कम्पनात्मक गति, कम्पनात्मक गति जवजंस और व्यूह के साथ जुड़ता हैं, उसी तरह एक परमाणु में सभी अंश मिलकर एक परमाणु हैं, उन परमाणु में कम्पनात्मक गति है, केवल एक अंश में कम्पनात्मक गति की बात नहीं आती हैं सब मिलकर कम्पनात्मक गति को प्रस्तुत करते हैं।

परमाणु ं ीवसम में कम्पन्न हैं। मध्य में रहते हैं, बपतबनसंत में रहते हैं, वह सब मिलकर के कम्पन्नात्म गति की शुरूआत रहती हैं। ये बढ़ते जाता हैं। परमाणु में

1. वर्तुलात्मक गति

2. घूर्णन गति

3. कम्पनात्मक गति

मध्यस्थ बल में पहले आपको निवेदन किया, किसी भी परमाणु में मध्य में जितना अंश हैं, वह सब का सब घूर्णन गति में रहते हैं। इनका परस्परता में जो प्रभाव रहता हैं, गति का तो प्रभाव क्षेत्र बनता ही हैं, उन प्रभाव क्षेत्र का नाम हैं, मध्यस्थ बल।

प्रश्न– मध्यांश के जो अंश हैं, उनके घूर्णन गति के प्रभाव को मध्यस्थ बल कह रहे हैं। उसका नियोजन दो ही जगह में जाता हैं, पास में आ जाने से या दूर भागने से ये मध्यस्थ बल दौड़ करके, समझा बुझा करके अच्छे दूरी में अवस्थित कर देता हैं।

प्रश्न– बाबाजी थोड़ा ज्मबीदपबंससल समझाइये?

उत्तर– ज्मबीदपबंससल यही होता है, निश्चित दूरी में रहना पड़ेगा ।

प्रश्न– पास आने से दूर कैसा जाता है, दूर जाने से पास कैसा आता है , उसका उमबींदपेउ?

उत्तर– विकर्षण रूप में अपना बल को परिवर्तित कर के प्रभाव ड़ालता हैं, फलस्वरूप दूर हटता हैं, ये आकर्षण बल को बढ़ाता है, तब पास में आ जाता हैं, मध्यस्थ बल में ये दोनों चीज निहित रहता है, आवश्यकता अनुसार उपयोग करता हैं।

प्रश्न– ये जो दूरियॉ हैं, परिवेश की ये निश्चित हैं, इसको कमपिदम करना पड़ेगा।

उत्तर– मुख्य बिन्दु यही हैं, वातावरण के दबाव से पास दूर आते हैं, उसके आस–पास सब है ना सह अस्तित्व में। किसी को आकर्षण बल ज्यादा होने से दूर भागने की नौबत आती हैं, किसी का विकर्षण का बल ज्यादा बढ़ जाने से पास में आने की नौबत आती हैं, ये स्वाभाविक किया हैं, ऐसे स्थितियॉ बन सकती हैं, ऐसे स्थिति को ठीक से सटीक अपने अस्तित्व को, यथा स्थिति को बनाए रखने के लिए मध्यस्थ बल प्रयोजन होता हैं, अब अगर कोई आकर्षण बल लगाता हैं, परमाणु अंशों के ऊपर, मध्यांश क्या करता है? उससे ज्यादा आकर्षण बल लगाकर के वह अपने स्थान में बैठा देते है। परिवेश की निश्चित दूरी है, उससे यदि वह पास आ रहा है, तो विकर्षण बल हो जाता है।

प्रश्न– उसका आधार क्या है?

उत्तर– आधार यही है, जो अच्छी निश्चित दूरी, जिसमें व्यवस्था के रूप में होना, निश्चित रहती हैं, अव्यवस्था को पैदा करने के लिए पास आ गया, और उसी को व्यवस्था में अवस्थित करने के लिए बल प्रयोग होता हैं। व्यवस्था को प्रकाशित करने के कम में अर्न्तबल का प्रयोग होता हैं।

प्रश्न– केन्द्र है, केन्द्र से प्रथम परिवेश की एक निश्चित दूरी हैं, द्वितीय परिवेश की एक निश्चित दूरी है, यही परमाणु में व्यवस्था का स्वरूप हैं। उसको वह बनाए रखता है। उससे कम करेगें तो अव्यवस्था होने लगती हैं, उससे दूर करेगें तो अव्यवस्था। तब आकर्षण बल को लगाना।

उत्तर– इस प्रकार से जो परमाणु व्यवस्था के अर्थ में, मध्यस्थ बल, आकर्षण, विकर्षण पूर्वक अपने व्यवस्था को बनाए रखता हैं।

प्रश्न– गठनशील परमाणु के प्रकार की संख्या?

उत्तर– ये सब 121 हो सकता है। इसका आधार यह हैं, भूखे परमाणु तक 60 होता हैं, 61 में वह अर्जीण परमाणु होता हैं। 61 वतइपज में होने से, मध्य में पुनः 61 होने से, 5वॉ वतइपज शुरू हो जाता हैं, ये हो गया अजीर्ण परमाणु। ऐसा परमाणु हो सकता हैं, अस्तित्व में, उस प्रकार की वतइपज में पूरा कर पूरा 61 परमाणु अंश हो ऐसे परमाणु आपको मिल सकते हैं, तो उतना ही बीच में होगा, ऐसा वाला मिलेगा वह जड़ परमाणु कहलाता हैं। वह चैतन्य परमाणु नहीं होगा। इस प्रकार से क्या हुआ? 121 हुए। ज्यादा से ज्यादा 60 अजीर्ण परमाणु हो सकता हैं। अभी इस धरती पर कितने को नाप पाए हैं, पहचान पाए हैं, वह आप स्वयं सोच लो।

प्रश्न– इसमें 4 परिवेश हैं, तब ये कहना ठीक लगता हैं, कि 121 प्रकार के परमाणु हैं। 4 परिवेश से ज्यादा परिवेश अगर हों, तो फिर और परमाणु की संख्या बन सकती हैं।

उत्तर– ठीक हैं, इस प्रकार से 121 से अधिक होगा नही। अजीर्ण होने से कितने भी टूटगें, जितने में आएगें उसका निश्चित कार्य हैं, वह गलत कार्य नहीं होगा। कुछ भी अंश में हैं, 20 टूट गया मान लीजिए, तो बाकी अंशों की जो परमाणु का आचरण है, वह निश्चित है, वही आचरण करेगा वह कोई ना कोई संख्यात्मक परमाणु ही रहेगा। अजीर्ण परमाणुऍ 121 होने के बाद वह अस्थिर हो जाएगें। 121 के ऊपर वाले जितने भी अजीर्ण परमाणु होगें।

वह जल्दी–जल्दी क्षरणशील हो जाएगें, होते हैं तो, होना कोई उद्देश्य नहीं बनता हैं। अस्तित्व के उद्देश्य में उसका उपादेयता नही के बराबर हो जाता हैं, क्योकि पुनः टूटकर के कोई ना कोई 121 के अंदर ही रहना हैं। कोई एक निश्चित परिणाम के आधार पर या निश्चित उष्मा, दबाव के अनुसार 121 परमाणु प्रजाति संख्या होते हैं। उसमें निहित होने वाले अंशों का संख्या ज्यादा होते ही हैं, ज्यादा समय तक अपने यथा स्थिति को बनाए रखने लिए भूखे परमाणु ज्यादा जूझते हैं, और अजीर्ण परमाणु कम जूझ पाते हैं। अजीर्ण परमाणु में जो प्रजातियॉ हैं। 61 तक पहूँचने तक, अंशों को बढ़ाते–बढ़ाते 61 तक

पहूंचते हैं, इधर 60 से घटते–घटते 2 तक पहुँचते हैं। 2 अंश से कम कोई परमाणु होता नहीं।

परमाणु अंश और जीवन परमाणु

परमाणु में मूलतः रचना के रूप में, भौतिक रासायनिक परमाणु के बारे में, आपका सोच, हमारा सोच एक जैसा लगा। वह यह की परिवेश में जितना अंश होते हैं, उतना ही या उससे ज्यादा मध्य में होते हैं, इस बात पर विज्ञानियों का और हमारा दृष्टिकोण एक जगह मिली, उससे हमको ऐसा लगा सिलसिले से सिलसिलेवार यदि कोई चीज समझने की कोशिश किया हैं, कोई आदमी उनको अस्तित्व में जैसा एक व्यवस्था हैं, वैसे ही बोध हुआ हैं, ऐसा में समझा, दूसरा बात ये आई, कि जीवन एक परमाणु हैं, परमाणु गठन में मैंने ये देखा हैं, कि मध्य में एक ही किया होता हैं, जिसको आत्मा नाम दिया हैं । परिवेश में जो किया होते हैं, उनका नाम क्रम से बुद्वि, चित्, वृत्ति, मन नाम दिया हैं। इन परिवेशों में क्रम से ऐसे ही संख्यात्मक किया देखी गई हैं। बुद्वि में 2 किया, चित् में 8 किया, वृत्ति में 18 किया और मन में 32 किया होते हैं। उनका परावर्तन,

प्रत्यावर्तन क्रियाओं को मैं मानव संचेतनावादी, मनोविज्ञान में प्रस्तुत करने का कोशिश किया हूं, और ग्रन्थों में भी समय–समय पर जितना आवश्यकता रही वैसा प्रस्तुत किया हैं। आप लोगों ने बताया, भौतिक रासायनिक परमाणु के मूल रचना में यही विधि हैं, 2, 8, 18, 32 के रूप में रहते हैं। मध्य में उससे बराबर या उससे अधिक अंश समाहित रहती हैं। आप लोगों से ऐसा उद्गार सुन कर के हमकों बहुत अच्छा लगा, यदि विधिवत् ये बात देखें हैं, इसमें आप लोगों को अर्थात विज्ञान संसार को व्यवस्था में भरोसा ना होने का क्या कारण? अव्यवस्था पैदा करने का क्या कारण? उसका उत्तर आप लोगों से पाना हैं, कोई उत्तर देगा तो उनसे समझना हैं, अजीर्ण परमाणु और भूखे परमाणु का बात तृप्त परमाणु के अर्थ में ही हम समझा। नाम देना होगा यदि भूखे परमाणु और अजीर्ण परमाणु एक तृप्त परमाणु के आधार पर ही हम भूखे को बता सकते है और अजीर्ण को बता सकते हैं।

उस आधार पर हम शुरू किया। परमाणुओं के स्वरूप में अंशों का परिवर्तन होने की बात को हम स्वीकारा हैं। अंशों का परावर्तन जब तक होता हैं, यही भूखें और अजीर्ण परमाणु के रूप में रहते हैं। ये शुद्व भौतिक रूप में भी सहवासीय विधि से या तात्विक विधि से प्रदर्शित होते रहते हैं, और वही परमाणु जब कभी भी यौगिक हो जाते हैं, वह दूसरा प्रकार से आचरण को प्रस्तुत करते हैं, वह भी निश्चित है, जो रसायन संसार कहलाता हैं। मूल में ऊर्जा, ऊर्जा के बारे में हमने देखा हुआ हैं, सम्पूर्ण अस्तित्व सत्ता में सम्पृक्त हैं। सत्ता स्वयं में ऊर्जा हैं, व्यापक वस्तु सत्ता के रूप में विद्यमान हैं,

ये सर्वत्र एक सा विद्यमान हैं, समान रूप में विद्यमान हैं, एक ही स्वरूप में विद्यमान हैं, ज्यादा कम काई आरोप बनता नहीं ऐसी विद्यमानता के आधार पर ये हर परमाणु अंश से लेकर परमाणु तक, परमाणु से लेकर अणु तक, अणु से लेकर अणु रचित पिण्ड़ तक सत्ता पारगामी होने के रूप में मैंने देखा हैं, फलस्वरूप ये सभी वस्तुएँ ऊर्जा सम्पन्न होना मुझको समझ में आई है, ऊर्जा सम्पन्नता ही बल सम्पन्नता और चुम्बकीय बल सम्पन्नता के रूप में प्रमाणित होता हुआ देखा है, और इसी का समर्थन में अणु, अणु रचित पिण्ड़ के रूप में होना, और परमाणु अंश परमाणु में भागीदारी करने के लिए परिवर्तित रहना ये देखा गया। इसका प्रमाण यहीं है, परमाणु में हर परमाणु अंश अपने भागीदारी को निर्वाह करने के लिए परिवर्तित होते है, गठित होते हैं, और परमाणु अंश अपने स्वतंत्र स्वरूप में प्रकृति में होना बहुत कम हैं। इन्हीं परमाणु अंश अस्तित्व में

स्वतंत्र रूप में रहने के लिए आवेशित रहना आवश्यक हैं, क्योकि बहुत आवेशित होने के पश्चात परमाणुओं में समाने के लिए परेशानियॉ निर्मित होता हैं, वह शनैः–शनैः कहीं ना कहीं किसी–किसी योग संयोग वश आवेश सामान्य होने की भी व्यवस्था अस्तित्व में रखी हुई हैं, क्योंकि हर आवेश सामान्य होता हुआ देखा गया है। इसी प्रकार परमाणु अंश का भी आवेश कहीं ना कहीं किसी योग संयोग में सामान्य होगा ही ऐसा मेरा विश्वास। आवेश सामान्य होने की स्थिति में परमाणु अंश किसी परमाणु में भागीदारी करता हुआ हमें मिलेगा ही, ये सब सत्यता को लेकर सम्पूर्ण अस्तित्व अपने मे एक व्यवस्था में कार्यरत हैं, इसको मैंने देखा। उसमें परमाणु के कियाशीलता के बारे में जो कुछ भी आप लोगो से सुना है, खिचातांनि के रूप में दो अपने–अपने प्रबल श्शक्ति को, प्रबल चुम्बकीय बल को एक दूसरे के ऊपर प्रभावित करते हैं, फलस्वरूप ये खीचॉतानी से चलते रहते हैं, ऐसा आप लोगों का सोचना हैं। इसकी सुधार लेने की आवश्यकता है, हर परमाणु अंश भी ऊर्जा सम्पन्न है, इसका सुधार होना चाहिए, ऊर्जा सर्वत्र, सर्वदा, सभी वस्तु को प्राप्त हैं। किसी विधि से पारगामी होने के आधार पर, सत्ता पारगामी होने के आधार पर हर वस्तु को, हर स्थिति को, हर गति में सत्ता प्राप्त वस्तु के रूप में विद्यमान हैं। इसी आधार पर दूसरा आता हैं, अस्तित्व ना घटती हैं, ना बढ़ती हैं, अस्तित्व में घटना–बढ़ना है ही नहीं। उसके बाद आप हम व्यवस्था को ना स्वीकारने का क्या कारण रह गया, अव्यवस्था को करने के लिए मानसिकता कैसे पैदा हो गई, ये बात प्रश्नचिन्ह में आता ही हैं। उसको धीरे–धीरे समझने की बात, सुधारने की बात में आते हैं। परमाणु के रचना और उसके कार्य का जो स्वरूप हैं, उसमें जो 2, 8, 18, 32, के बारे में आपने कहा है, क्या सभी परमाणु इतना में रहता हैं, कम भी होते हैं, ज्यादा भी होते हैं। हमारे अनुसार परमाणु अंशो का परिवर्तन जब होता हैं, मध्य में भी परिवर्तन होता है, परिवेश में भी परिवर्तन होता है। परिवर्तन होने के लिए जो 2, 8, 18, 32 की आप और हम बात करते हैं, ये स्थिर रहना नहीं हो पाता हैं।

तभी परिणाम होना सिद्व होता हैं। इस पर ध्यान देने की आवश्यकता हैं, यदि स्थिर हो जाता हैं, उसके बाद बदलना नहीं चाहिए। बदलने वाले को आपने यही होता है , ऐसा कैसा कहा? हमारे अनुसार हम जो परमाणु को देखें हैं, हर परमाणु व्यवस्था में ही रहती हैं।

प्रश्न– आपके अनुसार अस्तित्व में कितने परमाणु हो सकते हें, कितने प्रकार के ? जैसे आपने कहा 120 प्रकार की गठनशील परमाणु और एक गठन पूर्ण परमाणु विज्ञान की अवधारणा के अनुसार अभी तक 108 प्रकार के पाए जाते हैं।

उत्तर– ठीक है, आगे चलकर के और भी पा सकते हैं, इसको आशा रखा जाए, जैसा है अस्तित्व उनके अनुसार तृप्त परमाणु की जो स्थिति है, 61वें नम्बर में है, उससे कम में नहीं है, उसके पहले नहीं है, हर तृप्त परमाणु जीवन रूप में जो प्रमाणित हैं, हर तृप्त परमाणु जीवन रूप में जो प्रमाणित हैं, उसमें 61 कियाकलाप होते ही हैं। इसमें खुबी यही है जो मध्य में एक ही अंश होता हैं, तृप्त परमाणु में। भौतिक परमाणु में परिवेश में जितना अंश होते हैं, उतना ही या उससे अधिक बीच में होते हैं। परिवेश में उतना या उससे अधिक होना ही भार बंधन का सूत्र हैं। भार के साथ ही एक परमाणु दूसरे परमाणु के साथ संयोजित होते है, भार को यदि व्यक्त नहीं कर पाते है, उस स्थिति में संयोजित होना होते ही नहीं, इस आधार पर हर एक परमाणु भार बंधन सम्पन्न हैं। कल ये भी बात आई थी, बीच में एक अंश होना या दो अंश की कोई परमाणु हो बीच में एक ही होगा। वह भार बंधन मुक्त हो गया ऐसा नहीं हैं, क्यों नही हैं? दो अंश है तो, एक अंश का भार उसमें निहित है ही। तृप्त परमाणु में क्या चीज है, परिवेश में 60 अंश होते हैं, बीच में एक होते हैं, तो ये 60 अंशों का जो भारमुक्त स्थिति हैं, वह एक को वहन कर लेता हैं। एक का भारमुक्ति दिला देता हैं। सह अस्तित्व का ये पहला सिद्वान्त यहीं व्यक्त होता हैं, परिवेशों में 60 कियाओं को मैंने देखा हैं, उसको 60 अंश माना जा सकता हैं, 60 कियाओं के चलते बीच में एक ही किया होता हैं, जिसको आत्मा मैंने नाम दिया है, आत्मा एक किया हैं, उसका परावर्तन में एक आचरण हैं, प्रत्यावर्तन में एक आचरण हैं, प्रत्यावर्तन में अनुभव आचरण हैं, परावर्तन में प्रमाण आचरण है। इस ढ़ंग से आत्मा की किया को देखा गया, परमाणु अंश एक ही होते हुए परावर्तन विधि से प्रत्यावर्तन विधि से 2 प्रकार की आचरण को देखा गया। उसको हम कवबनउमदजंजपवद करने को काम किया है। ''परमाणु का विकास'' नाम का अध्याय समाधानात्मक भौतिकवाद में जो उल्लेख हैं, उसमें भी परमाणु के बारे में बताने की कोशिश की हैं। परमाणु 120 प्रकार के तर्क संगत विधि से आता हैं, क्योंकि भूखे परमाणु, तृप्त परमाणु के पहले कहलाता हैं, वह 60 निश्चित हैं, कम ज्यादा नहीं हैं,

उसके बाद कितना हो सकता है, अजीर्ण परमाणु कहा जाए तो इसी के समान होता है। जितना भुखे, उतना अजीर्ण, इस तरीके से तर्क है, ये इसका जो प्राप्ति , सम्प्राप्ति, पहचान, ये तो आप लोग कर ही रहे हैं, उसमें से कुछ दूर तक पहचान हो चुके होगें और बाकि जो पहचान जो होना है, वह भी हमारा प्रयास यदि शुभ के लिए बना रहेगा। शनैः–शनैः समझ में आएगा। शुभ का मतलब, विज्ञान जो है ना व्यवस्था के निश्चितता के अर्थ में अपने को अर्पित करने की आवश्यकता है। जबकि इस रास्ता को विज्ञान छोड चुका है, उसका प्रधान प्रमाण, सर्वप्रथम धरती बीमार होना।

व्यवस्था के खिलाफ ही विज्ञान धरती के साथ सारा किया कलाप प्रस्तुत किया और इससे धरती बीमार हो गई।

प्रश्न– 60 अजीर्ण परमाणु आप कहते हैं, और 60 भूखे हैं, किस आधार पर आप ऐसा कह रहे हैं।

उत्तर– अजीर्ण और भूखे, नाम है एक प्रकार के इसको ऐसा समझना चाहिए। मानव संवेदना से जुड़ी हुई भाषा है, ये यंत्र और भौतिक रासायनिक तत्व से जुड़ी हुई भाषा नहीं हैं। मानव संवेदना से जुड़ी हुई भाषा है, ये इन शब्दों का अर्थ यही है, कम से हम यदि संख्या लगाते हैं, 2 अंशो का परमाणु से लेकर 61 अंशों तक ले जाते हैं, उसमें 60 होते ही हैं, बहुत ही आसान गणित हैं, इसमें कौन सा बड़ी भारी सोचने की बात हैं, और जितना भूखे रह गए भूखे के बाद एक तृप्त परमाणु की स्थान बनी वह मध्यम होना चाहिए, इस आधार पर बाकी 60 बाद में भी होगी। अजीर्ण परमाणु, अजीर्ण परमाणुएँ 60 होने के आधार पर ही ये 60 वह 60 दोनों मिलकर के 120 होता हैं। इस आधार पर 120 प्रजाति को परमाणु होने की संभावना अस्तित्व में रखी हुई है, ये भी नहीं है, इस धरती पर 120 प्रमाणित होना है, ये भी आप ना जाइये, हो सकता है, इसमें से 1, 2 कम भी प्रमाणित हो जाए। यदि ये धरती का विकास में कितना परमाणु प्रजातियॉ होना चाहिए, धरती की ही कार्यकलाप में निहित हैं ये। ये आप हमारे पुरूषार्थ से कोई चीज निहित नहीं हैं। धरती अपने विकास को प्रमाणित करने के लिए कितना प्रजाति के परमाणु चाहिए, वह सब को संपादित कर चुका हैं। उसके बाद 4 अवस्था का विकास आप हमारे सम्मुख उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हुआ हैं। अभी तक कृर्तिम विधि से पहले ये सुनने में आया था, प्रकृति पर विजय पाना हैं वह धीरे–धीरे वह प्रवृत्ति दब करके, प्रकृति को दोहन करना है, इस जगह में आ गए। दोहने का मतलब यही है, जैसा गाय में दूध दुहते

है, ऐसा शुद्व रूप देखने पर आता हैं, प्रकृति का शोषित करना हैं। कार्य रूप में तो यही दिख रहा हैं, प्रकृति का शोषण। शोषण विधि से शोषण करने वाला स्वयं शुष्क हो जाएगा, उसी का संकेत है, ध्वनि है, धरती बीमार होना, आदमी बरबाद होने का पहला घंटी यही है, ये किसी अंश तक बीमार है, ये अपने में स्वस्थ होने के लिए अवसर पैदा करना चाहिए।श्शुभ मानसिकता यही है। अवसर कैसा होगा, धरती के साथ जो कुकर्म कर रहे हैं, उसको रोकें।

प्रश्न– परमाणु में कितना–कितना अंश होते हैं?

उत्तर– क्योकि विज्ञान विधि से अंशों का संख्या को पता लगाने के लिए एड़ी से चोटी तक जोर लगाएँ हैं, उससे कुछ आप अपने ढ़ंग से से तालिका बना के रखे हैं, उसके आधार पर आप हम से उस बात को सुनना चाहते हैं। परामाणु के प्रजाति के बारे में हमारे पास पूरा संगतिकरण तर्क है। अंशो को गिनने की आवश्यकता मुझको नहीं बनी।

उसको आवश्यकता यदि बन जाती है, कोई चीज उसका सार्थकता यदि व्यवस्था के अर्थ में उपकारी है, वह सभी कार्य हम कर ड़ालूगा, व्यवस्था के रूप में हर परमाणु जब अपने को प्रस्तुत किया है। जिसको हम व्याख्यायित किया है, हर एक–एक अपने त्व सहित व्यवस्था हैं, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने के लिए उन्मुख है, प्रवर्तनशील है, इस बात को हम व्याख्यायित किया है, अभी व्यवस्था के अर्थ में हमारा व्याख्या पर्याप्त हम को दिखता है। इस व्याख्या में कोई कमी होगा तो उसका उत्तर देने के लिए मैं हूँ। मैं उसका जिम्मेवार हूँ, व्यवस्था के अर्थ में जितने भी प्रश्न होगें, एक बात पुनः याद दिलाना चाहता हुँ। परमाणु में कितना–कितना संख्या है, उसको गिनने की आवश्यकता मुझको नहीं बनी। मुझकों आवश्यकता जो महसूस नहीं हुआ, उस कार्य को हम क्यों करेगें, इतना तो हम देख लिया हैं। व्यवस्था के रूप में हर एक परमाणु अपना कार्य को संपादित करते हैं और समग्र व्यवस्था में भागादारी करते हैं, उसका प्रमाण है, इस धरती में जितने भी प्रजाति के परमाणु सिद्व हो चुके हैं, वह सभी भागीदारी कर रहे हैं। कोई एक कर रहा है, एक नहीं कर रहा हैं, ऐसा कुछ नहीं हैं। सबकी भागादारी से ही इस धरती पर सम्पूर्ण प्रकाशन है। कोई एक भी परमाणु ऐसा नहीं है, जो कि अपने भागीदारी से वंचित हो गया हो, ऐसा हम नहीं बता पाएगें।

हर एक परमाणु का भागीदारी है ही हैं। इससे हम तृप्त हो गये। जब व्यवस्था में होना हमको समझ में आता हैं, आपका कितना हाथ हैं, कितना पैर हैं, कितना लम्बा नाक है, कितना चौड़ा कान है, इसको नापने की जरूरत है क्या? हम को पता लग गया कि आप अपने आप में व्यवस्था हैं, और समग्र व्यवस्था में भागीदारी करते हैं, उसी भांति अंशों से गठित हर परमाणु व्यवस्था में होता हैं, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करता है, इस अर्थ को भले प्रकार से हम समझा, उसी आधार पर हम ये कहते हैं, धरती स्वयं मैं व्यवस्था हैं, ये धरती सौरव्यूह के साथ अपना भागीदारी को निर्वाह कर ही रहा है, इसको आप नकार नहीं पाएगें।

ये धरती के 100 करोड़ आदमी भी कुछ नहीं कर पाएगा। इस प्रमाण के साथ तृप्त हूँ मैं। इसी आधार पर व्यवस्था में जीने में विश्वास करता हूँ, और समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने में विश्वास करता हूँ, इस विश्वास के साथ सुखी होना पाता हूँ। स्वयं में, और इसी ताकत से दूसरों को सुखी बनाने में सफल होता हूँ। इसकी आप सही माने या बाकी बातों को, हम अंशों को गिन लिया, अंशों को तोड़ा कैसे जाए, बरबाद कैसे किया जाए ये सब बात के लिए हमारा सोच नहीं हैं। क्योंकि आप सब का अंतिम सोच यही है, धरती को कैसे बरबाद किया जाए, कितने बार बरबाद किया जाए। अभी सुनते हैं जितने भी बरबाद की स्थितियॉ बनाकर रखते हैं, आप लोग विज्ञान, ये धरती को 21 बार बरबाद किया जा सकता हैं, बरबादी हमको स्वीकार नहीं हैं, आबादी हमारा स्वीकार हैं, क्योंकि नियति स्वयं आबादी की ओर प्रवर्तनशील है। नियति, नियति का मतलब, अस्तित्व, अस्तित्व में विकास, विकास कम में जो भी अभिव्यक्तियॉ है, ये सब के सब व्यवस्था के पक्षधर हैं। ये अव्यवस्था के पक्षधर नहीं हैं, व्यवस्था के अर्थ में हर वस्तु जो काम कर रहे हैं। हमारा उसमें शंका करने का क्या अधिकार होता हैं, उसमें हस्तक्षेंप करने को कौन सा अधिकार होता है, हस्तक्षेप करके किया क्या गया, कौन सा व्यवस्था को बुलंद किया, या बरबादी को विकास मानते हो।

प्रश्न– ये ठीक है कि अंशों को गिनने के आधार पर बहुत सारा विध्वंस हुआ हैं। लेकिन जो उसकी संरचना है, परमाणुओं को अंशों के रूप में उसको समझना उपयोगी भी है। बवउउनदपबंजपवद के जितने भी तरीका बनाये गये, बवउचनजमत बनाया गया, सबको बनाने का जो आधार है, यह है कि जिस उंजमतपंस से ये बनते हैं, उनके संरचना को ठीक–ठीक समझ पाते हैं, उसको उतना ही अच्छे से उपयोग कर पाते है, कमबपेपवद का

प्रक्रिया कर पाते हैं, इतने मसमबजतवद होगें, तो वह इस प्रकार से तमंबज करेगा। इस प्रकार का आचरण होगा, ऐसा वह तय कर पाते हैं, उस आधार पर करीब–करीब 1 ेनतम ए1 प्दबी पर 10 लाख प्रकार के ज्तंदेपजवत बना पाते हैं। उस आधार पर करीब 1 ेनतम 1 प्दबी ंतमं में ये सारा निदबजपवद पैदा कर पाते हैं। इस तरह का उपयोगिता तो है ही, अगर हमको परमाणु के संरचना ठीक–ठीक समझ में आ जाए, अंशों का जो विभाजन है, विभिन्न परिवेशों में वह समझ में आ जाए, उसके आधार पर उसका आचरण की निश्चितता ये समझ में आ जाए, वह व्यवस्था के अर्थ में ही है ये स्पष्ट रहे, अभी क्या है, हमको ये स्पष्ट नहीं है, कि व्यवस्था के अर्थ में है। हमको ऐसा लगता है कि उससे हम कुछ भी कर सकते है, कुछ भी कर सकते है, ये सोचना गलत है, वह व्यवस्था में है, और उसका एक निश्चित व्यवस्था हैं, उसका जो विभाजन है, केन्द्र में और विभिन्न परिवेशों में ये बात हमको अगर स्पष्ट हो तो उनका हम सदुपयोग कर सकते हैं, मानव उपयोगी बनाने में।

उत्तर– ये स्वागतीय बात हैं, व्यवस्था के अर्थ में विज्ञान जितना काम किया वह स्वागतीय हैं, और पहले भी इस बात को हमने स्वीकार है, दूरदर्शन, दूरगमन, दूरदर्शन संबंधी उपलब्धियॉ विज्ञान विधि से हमको प्राप्त हुआ हैं। ये उपकार है, और विनाश के लिए जितने भी किया वह प्रकृति विरोधी है, इस बात को हम स्पष्ट किया। आपने अंशों को समझने के आधार पर जो कुछ भी उपकार कार्य किया हैं, वह तो संसार सदा–सदा के लिए स्वागत करेगा ही। वह उपकार को कोई भूलेगा नहीं। मनुष्य व्यवस्था के रूप में जीने की आवश्यकता है, मनुष्य व्यवस्था के रूप में जीने के लिए जितना ज्ञान चाहिए, किसका परमाणु का, अजीर्ण और भूखे का उसको हम प्रस्तुत किया। तृप्त परमाणु जीवन रूप में हर मनुष्य में काम कर रहा हैं। इसको हम बोध कराना चाहते हैं, उसमें हम सफल भी हैं। मनुष्य जीवन को समझने के बाद, जीवन एक व्यवस्था के रूप में बोध होने के बाद जीवन से ही जीवन का जीवन में बोध होना हैं, ये प्रकिया यदि मानव के गले से उतर जाता है, मानव व्यवस्था में जीयेगा। ये मेरा विश्वास हैं, जब मैं समझा, उसके बाद मेरा व्यवस्था में जीना सुगम हो गया। उससे पहले हमारे पास व्यवस्था में जीना सुगम नहीं था।

यदि सुगम होता वेद, शास्त्रों को पढ़ कर के और उपनिषदों को याद करके, ब्रम्हसूत्रों को रट करके, व्याकरण सूत्रो को रट करके यदि हमको ये ज्ञान होता, व्यवस्था

में जीना होता तो अमरकंटक आने की हमारा कोई आवश्यकता नहीं होती । मैं इस सब में से गुजरा हुआ व्यक्ति हूँ। ये सब में गुजरने के बाद भी हम को व्यवस्था में जीना बना नहीं, और व्यवस्था के प्रति विश्वास करना भी बना नहीं, जब संविधान बना, भारतीय संविधान उसके लिए जो वैदिक चिंतन विधि से क्या सूत्र होगा, संविधान में आचरण का वह दिजिऐ बोलने से कुछ भी नहीं निकला, तब हमे लगा ये सब लादने की क्या जरूरत हैं, ऐसा स्थिति बनी, और उस अभिशाप से छूटने के लिए हमको अभ्यास करना पड़ा, उसका उत्तर पाना पड़ा। मुख्य मुद्दे पर इसी विधि से हम अभ्यास मे रत हुए। उसमें हमको समझ में आ गया, व्यवस्था में जीना संभव है। इस बात पर हम कायम हुए, कायम होने के बाद अपने प्रमाणिकता को अभी तक व्यक्त करने जा रहा हूँ, जब तक स्वस्थ शरीर रहेगा, जीवन जब तक अपने जागृति को प्रमाणित करने योग्य रहेगा, तब तक हम प्रमाणित रहेगें।

प्रश्न– हम लोगों को इसकी आवश्यकता तो बनी हुई हैं, परमाणु के अंश के संख्या उसको संरचना, परिवेश में संख्या कैसे बढ़ रहे हैं। इसको देखना आवश्यक हैं, क्योंकि उससे उस परमाणु के संरचना उसके आधार पर उसका निश्चित आचरण को समझा जा सकता हैं। यह इसीलिए आवश्यक है, क्योंकि अभी तक विज्ञान ने जो देखा है, देखने का प्रयास किया, वह विभाजन के आधार पर किया है, तोड़ने के आधार पर किया है, परमाणु अपने आप में जैसा है, उसको वैसा बने रहते हुए देख पाना ये मुख्य मुद्दा हैं, अभी तक विज्ञान को जो विधि है, वह विखण्ड़न विधि है, उससे देखने में हो सकता हैं, बहुत सारी चीज छूट भी गई हो।

उत्तर– उसने हमारा निवेदन यही हैं, शुभ तो व्यवस्था ही हैं। अव्यवस्था शुभ नहीं हैं, ये बात आप हमारे सबके गले से उतर गई है, लगता है, यदि उतरा नहीं होगा तो कल उतर जायेगा उसका आवश्यकता तो बना ही है, व्यवस्था के अर्थ में जितना भी बात हमको हाथ लगा, विज्ञान विधि से स्वागत है। परंपरा उसको स्वीकार करता ही रहेगा। हम अपने बात को बहुत स्पष्ट किया हैं, मनुष्य व्यवस्था में जीने में असफल रहा । विज्ञान विधि से भी हम मनुष्य पर विश्वास रखना नहीं बना और आदर्शवादी विधि से भी मनुष्य पर विश्वास रखना बना नहीं। इसी आधार पर मनुष्य, मनुष्य के साथ विश्वास रखना बहुत जरूरी हैं, तभी व्यवस्था में जीना बन पाएगा। इस अर्थ में हमारा पूरा अनुसंधान हैं। अब आपका

कथन यह है, हम परमाणु अंशों को समझने के कारण हम बहुत सारे शुभ कार्य किए, उसका परंपरा बन चुकी है।

प्रश्न– सह अस्तित्ववादी विधि से एक–एक परमाणु में परमाणु अंशों की संख्या और विभिन्न परिवेश में उसका संगठन विघटन को देखना हमारे लिए आवश्यक है, क्योंकि अभी तक जो देखा गया, विखण्ड़न विधि से देखा गया, व्यवस्था विधि से समझ पाता है या नहीं ये बहुत स्पष्ट नहीं हैं। जितना समझ पाया, उसके आधार पर कुछ उपयोगिता पैदा हो गई है, लेकिन वह पूरा पड़ जाए ऐसा है नहीं,

इसको फिर से एक बार देखने की आवश्यकता तो बनी हुई हैं। परमाणु जैसा है, वैसा रहते हुए विभिन्न परिवेश में अंशों की जो संख्या है, उसको देखना आवश्यक हैं।

उत्तर– आप ही कहते हो, किसी भी विधि से परमाणु अंशों के संख्या को आप समझ रहे है। परमाणु अंशों को समझ करके उससे जो उपकार करने की बात आप से हुआ हैं, उसको आप हम कैसा पहचाना। दूरदर्शन दूरगमन, दूरश्रवण विधि से समझा। आपका पूरा कथन का मेममदबम चंतज यही है।

प्रश्न– आपका जीवन परमाणु के संरचना के बारे में जो 2, 8, 18, 32 विज्ञान के हिसाब में एकदम सही बैठता है, उस आधार पर जो गठनशील परमाणु हैं, उसका रचना है, परमाणु अंश के संदर्भ में अगर स्पष्ट हो जाए तो इस अवधारणा को बहुत बल मिलेगा।

उत्तर– इस बात को स्पष्ट करने के लिए अनुसंधान की बात आती हैं। उसको आवश्यकता मुझकों प्रतीत होना चाहिए ना। जिसको जो आवश्यकता प्रतीत नहीं होता, उसके ओर वह जाता नहीं क्योंकि अस्तित्व में हमारा तृप्ति से अधिक वस्तु हैं। मनुष्य व्यवस्था में जीने मात्र से मानव परंपरा को तृप्ति मिलेगी। अभी जितने भी तकनीकी विधि हैं, अभी जितना भी विधि मनुष्य उत्पादन के लिए अपना चुका हैं, उसमें से मनुष्य को ये बस सदा–सदा उपलब्ध रहेगा। ऐसा मेरा विश्वास हैं। इस आधार पर हमको ये प्रयत्न करना है, ऐसा महसूस नहीं हुआ। अगर आपको कुछ समझ में आया है, क्या तकलीफ है, उसमें ऊर्जा विधि को जोड़ लीजिए, सत्ता व्यापक होने को जोड लीजिए, कार्य में सोने में सुगधीं होगा ही और ऊर्जा विधि यदि समझ में नहीं आता है, आप हमारा सारा काम अधूरा रहेगा ही। ये समझने से विकास विधि से जुड़ी हुई हमारा सारा उत्पादन होना शुरू

हो जाता हैं। इससे धरती को तंग करने वाली बात कम हो जाएगी या मुक्त हो जाएगें। इसके विकल्पात्मक ईंधन विधि के आधार पर ये ऐसा बनता हैं।

परमाणु में गति

प्रश्न– आपने कहा की परमाणु अंशों में घूर्णन गति और वर्तुलात्मक गति, परमाणु में कम्पनात्मक गति और वर्तुलात्मक गति हैं। मध्यांश के अंशों में घूर्णन गति का होने से ही मध्यस्थ बल का प्रकाशन हैं।

उत्तर– जैसा स्थूल रूप में यह धरती, अति सूक्ष्म रूप में परमाणु अंश, परमाणु अंश जब अपने गति पथ में घूमता रहता है, वह अपने में घूर्णन करता भी रहता हैं और आगे सरकता भी रहता हैं, सरकने का गति जब तक ज्यादा रहता है, तब तक वह इसी विधि में

चलता रहता है, भौतिक रासायनिक कक्ष में ही वह अपने कार्य को प्रकाशित करता रहता हैं,परमाणु अंशों का जो गति पथ रहता है, इन गति पथ के साथ ही परमाणु कहलाता हैं, परमाणु में कम्पनात्मक गति को अभिव्यक्ति है, जितना गति पथ है वह सभी मिलकर जो किया कलाप है, उसके फलस्वरूप कम्पनात्मक गति होता हैं, गतिपथ में जो चलता हुआ दौड़ता हुआ जो अंश होते हैं, उनकी विन्यास जितना कमदेपदह होता है। उतना ही कम्पनात्मक गति बढ़ता जाता है। एक प्रकार से नर्तन किया ही ये कम्पनात्मक गति का अभिव्यक्ति हैं। घूर्णन गति में जो नर्तन होती हैं, वही कम्पनात्मक गति के अर्थ को प्रकाशित करता हैं, जितना कम अंश कम परिवेश उतना कम कंपन, जितना ज्यादा परिवेश और अंश उसके अनुसार ज्यादा कंपन। इन आधारों को यदि हम पकड़ते है, तो ये पता लगता हैं, व्यवस्था करने में अंशों का खुशहाली को अनुभव किया जा सकता है। अंशों की भागीदारी में अंशों का खुशहाली ही उनका नर्तन है, ऐसा मेरा सोचना है। अस्तित्व में खुशहाली को अभिव्यक्तियॉ हैं, मातम बनाने की अभिव्यक्ति नहीं हैं, अस्तित्व में शोक मनाने की कोई अभिव्यक्ति नहीं हैं। ये शोक कहॉ से आ जाता है? मनुष्य ही अपने शोक को अस्तित्व में आरोपित करता है, जैसा अभी तक करते आया। सुख, दुख से छूटने के लिए तो सारा कुकर्म किया है धरती के साथ और क्यों किया है? ऐसा इसका समीक्षा करना बनता हैं। इस बीच में यदि शुभ के अर्थ में घटित हो गई वह बात का भी अपन गणना किए हैं। आगे चलकर यदि आवश्यकता हुई ये सभी परमाणुएँ जिसको हम पहचान चुके हैं या अकस्मात् आगे चलकर के पहचान में आएगा, इन सभी से बनी हुई वस्तुओं को, हम सदुपयोग करने की अर्थ में अपने मानसिकता को संजोने की आवश्यकता हैं।

प्रश्न– मध्यांश के अंशों में घूर्णन गति के कारण मध्यस्थ बल कैसे पैदा होता है?

उत्तर– पैदा होता है। कैसा पैदा होने की बात नहीं, मध्यस्थ बना है ही ।

प्रश्न– ये खुशहाली को अभिव्यक्त करने की जो बात है, ये चैतन्य परमाणु में ठीक लगता हैं। चैतन्य परमाणु की बात जब हम कह रहे हैं। खुशहाली और शोक दोनों की बात उसमें समझ में आता हैं, लेकिन इसको पार्थिव परमाणुओं में कैसे कहा जाए?

उत्तर– व्यवस्था में होना एक खुशहाली है, क्योंकि मनुष्य संवेदनशील, संज्ञानशील हैं ही हैं, इसको यदि पदअमेज करता है, उस स्थिति में हमको ये पता लगता हैं, की परमाणुएँ

व्यवस्था में कितना खुश हैं, ये हमको पता लगता है, यही अंश परमाणु के रूप में भौतिक, रासायनिक कियाकलाप को संपादित कर रहे हैं। झाड़ के रूप में, पौधे के रूप में, फूल के रूप में, बीज के रूप में, तने के रूप में, जड़ के रूप में, सभी रूप में जो व्यक्त रहे हैं, इन सभी में कार्यरत जो अणु हैं, अपने खुशहाली के साथ ही वह रचना की पूरा किया। वह सारे अणुएँ जो प्राणाणु हैं, वह मृतक हो करके उस अवशेष को यथावत बनाके रखें। प्राणकोषाएँ के रूप में बहुत सारे रचनाओं को करने के बाद जब वह झाड़ मर जाता हें, वह सारे अणु प्राणकोषाएँ मृतक हो करके उसी में समाये रहते हें। वह अवशेष स्वयं में, मानव के लिए कितना बड़ा उपयोगिता के रूप में दिखा, कितना बड़ा भारी उपयोग किया, आदमी ने उपयोग नहीं किया ये भी नहीं हैं, जो जीवित रहते समय मे खुशहाली और वह झाड़ मरने के बाद भी मानव को या धरती के खुशहाली का साधन है, धरती के रूप में जब साधन होता है, उर्वरक रूप में परिवर्तित हो जाता हैं। मानव के साधन के रूप में आना है, दरवाजा, कुर्सी, बेंच हो करके ये खुशहाली का आधार बनता हैं। इसको हमने देखा है, हर व्यक्ति ने देखा हैं। अवशेष भी खुशहाली का साधन है, यह मेरा कहने का मतलब है, और झाड़, पौधे, तो अपना खुशहाली को व्यक्त करता ही है। हर दिन नवीनतम् विन्यास, हर दिन नवीनतम मूद्रा, हर दिन नवीनतम भंगिमा ये सब को कैसा पैदा करता है, खुशहाली के बिना कैसे पैदा करोगें। आप हम क्या पैदा करेगें। आप हमें यदि खुशहाली का मुद्रा, भंगिमा, अंगहार को व्यक्त करना है। दिन नित्य नवीन करना हैं, हमे अपने में कितना खुशहाली को व्यक्त करना होगा। आप एक बार सोच के देखो। हम करते ही है, अभिव्यक्त करने के कम में हम खुशहाली को ही अभिव्यक्त करते हैं। संकट को हम अभिव्यक्त करना भी नहीं चाहते। हमारे में भी ये समाई हुई हैं। संकट को व्यक्त करने वाले कम और खुशहाली को व्यक्त करने के लिए अधिक हमको मिलते रहते हैं। अस्तित्व में खुशहाली का बहार हैं या मातम का बहार है, यदि खुशहाली का बहार है तो हम प्रत्येक अणु में भी उसका नृत्य को देखना चाहेगें। उसी कम में हमने आपको इंगित कराया। ये परमाणु अंशों का नृत्य विधि से ही ये कम्पनात्मक गति आता है। ये कम्पनात्मक गति होता किसलिए है?

जीवन परमाणु में अन्ततगत्वा कम्पनात्मक गति ही वर्चस्वी हो जाता हैं, वर्तुलात्मक गति से अधिक वहॉ पर पहुंचने के कम में बीज रूप हैं ये।

प्रश्न– जीवन परमाणु में कम्पनात्मक गति बढ़ने का जो कारण हैं, अंशों की संख्या का, अधिक होना और तृप्त होना और केन्द्र में एक अंश होना।

उत्तर– इसी कम्पनात्मक गति के आधार पर ही तृप्त परमाणु की घटना घटित हो जाता हैं। एक ऐसी व्यवस्था के रूप में इस धरती पर देखने को मिलता हैं। मध्य में जितने भी अंश रहते हैं, पार्थिव परमाणु में और जीवन परमाणु में एक ही अंश होता हैं। पार्थिव परमाणु में परिवेश में जितने भी अंश होते हैं, मध्य में उतना ही अंश होते हैं। उसमें केवल घूर्णन गति ही होता हैं। एक अंश रहे, चाहे हजार अंश रहें, वह घूर्णन गति करता रहता हैं। तब तक ही उसका नाम हैं, मध्यांश । घूर्णन गति से यदि विचलित होता है, वह परिवेश में ही होगा। अंशों का बढ़ती–घटती हुई विन्यास को देखने पर लगता है, कि जब अंश समाता है, किसी परमाणु में वह पहले बाह्य परिवेश में ही पहुंचता है, उस से उसके भीतर के परिवेश, उससे भीतर जीतना मध्य में पहूंचता है, पहुंच जाते हैं। उनमें स्वयं में ही व्यवस्था कम में अनुपातीय हैं। अपने को व्यवस्था के रूप में व्यक्त करने के लिए अनुपातीय हैं, परिवेशीय अंश और मध्यांश अनुपातीय विधि से होने से वह स्वयं में व्यवस्थाकृत हो जाते हैं। स्वयं स्फुर्त विधि से व्यवस्थाकृत हो जाते हैं। व्यवस्था कार्य को संपादित करते हैं। कृत होने का मतलब, व्यवस्था कार्य को जब संपादित करते हैं, उस परमाणु के जितना संख्यात्मक अंश हैं, ऐसे परमाणु का आचरण हमको बहुत ही विश्वासदायक विधि से मिलता हैं। उसको आप प्रयोग भी करते हैं, यह समझ में आने से हर वस्तु को व्यवस्था के रूप में देखेने की नजरिया आती है। व्यवस्था को यदि बिगाड़ने के लिए हम प्रवृत्त होते हैं, हमारा ही समझ हमको नियंत्रित करता है। ये करने योग्य काम नहीं है। ये मनुष्य के जागृत होने के आधार पर होता है। भ्रमित रहने से इसको भी बिगाड़ो उसको भी बिगाड़ो। आदि काल से अभी तक देखने में आया, बच्चे, संतान, मॉ, बाप के गोद में आते ही, गोद में आ के जैसे ही वस्तु को ींदकसम करने लगते हैं, उपयोग करने लगते हैं, सबको अलग–अलग कर काटकर, तोड़कर, टुकड़ा–टुकड़ा कर देखना चाहते हैं। ये भ्रमित रहने का लक्षण है, वह भ्रमित को हम जागृत करने के लिए शिक्षा देते हैं। जागृति के बाद हम विखण्ड़न करते हैं, तो हम भ्रमित हुए कि जागृत हुए। शिक्षा के बाद भी हम विखण्ड़न करते हैं तो हम भ्रमित हुए कि जागृत हुए।

परिवेशीय अंश यदि मध्यांश के पास आने लगते हैं, उसको एक अच्छी दूरी में रहता हुआ जगह में ही अवस्थित कराने के लिए मध्यस्थ बल उपयोग हो जाता हैं।

वह स्वयं स्फूर्त कैसा होता हैं, जो निश्चित अच्छी दूरी है, वह लक्ष्मण रेखा से भीतर आने लगता है, वह मध्यस्थ बल को पता लगता हैं, संकेत होता है, भीतर आ रहा है, तुरंत अपने मध्यस्थ बल को नियोजित कर अच्छी स्थिति में बैठा देता हैं, वही जब परिवेशीय अंश दूर भागने लगते हैं, विकर्षणीयता जब बढ़ जाता है, परिवेशीय अंशों में तब वह दूर भागने लगते हैं, परिवेशों में तंरग का, बल का आरोपण, प्रत्यारोपण होता रहता हैं,

उस विधि से परिवेशीय अंश यदि आवेशित हो जाते हैं, विकर्षण होता हैं। तब मध्यस्थ बल उसको स्वभाव गति में आरूढ़ करके अच्छी दूरी में नियंत्रित कर देता है, इस ढ़ंग से हर परमाणु का नियंत्रित रहना, संरक्षित रहना बनता हैं। व्यापक में सम्पृक्त रहने के आधार पर ही ये सब अपने अपने में सुव्यवस्थित रहते हैं, संरक्षित रहते हैं। हर परमाणु नियंत्रित रहना कियाशील रहना, घीरे हुए रहने से नियंत्रित, डुबे हुये रहने से कियाशील, भीगे हुए रहने से ऊर्जा सम्पन्नता, ये बल को ही हम मध्यस्थ बल के रूप में पहचानते हैं। सम–विषम बल के रूप में भी पहचानते हैं। अर्थ समझ में आना चाहिए, परमाणु में होने वाली सम–विषम जो परिस्थितियॉ वो परिवेश में जो अंश होते हैं। मध्यांश के पास आने की विन्यास होती हैं। उसको एक नाम दिया जा सकता हैं, उसको आकर्षण बल कहा जाए या विषम हो गया, सम हो गया कुछ भी आप नाम देते रहो। यदि दूर भागना है, वह भी एक विन्यास है, वह विन्यास का भी कोई भी एक नाम दिया जा सकता है, इन दोनों को सामान्य बनाने का ताकत मध्यांश में बनी हुई हैं। आता कहॉ से? आना–जाना नहीं है, होते ही हैं, होना है, आना नहीं है, भाषा को बदलो।

प्रश्न– कैसे होता हैं?

उत्तर– घूर्णन गति के बराबर में मध्यस्थ बल बना ही रहता है। हर अंश में रहता हैं। वहॉ एक प्रकार से समुहगत हो जाता हें। काफी मात्रा से मध्यस्थ बल इकट्ठा रहता है और उसको प्रयोग करते हैं। जीवन परमाणु में मध्यस्थ बल एक ही अंश से ये नियंत्रण के योग्य हो गई। उसमें कम्पनात्मक गति + ;धनात्मकद्ध ऊर्जा सम्पन्नता हो गई। कम्पनात्मक गति को योगफल में कम्पनात्मक गति का सटीक उपयोग यदि कर रहा है, वह एक ही अंश मध्य में रहकर उपयोग करता हैं, वितरित करता है, संयोजित करता हैं, नियंत्रित करता है। जीवन परमाणु को एक स्वस्थ व्यवस्था के रूप में नियंत्रित कर रखा है । एक अंश उसमें वर्तुलात्मक गति से अधिक कम्पनात्मक गति, वह मध्यांश के साथ

जुड़कर, जीवन परमाणु भी अनेक कोण सम्पन्न है, सभी कोण से कंपन होता है, वह केन्द्र से जुड़ा रहता है, पूरा कम्पनात्मक गति केन्द्र से जुड़ा रहता है, किस से?

मध्य में रहने वाली एक अंश से जुड़ा रहता है। वह जैसा करना चाहता है, सारे के साथ वह प्रभाव पड़ जाती है। फलस्वरूप नियंत्रित रहना बनता है।

प्रश्न– मध्यांश में अंशों में घूर्णन गति है, परमाणु में कम्पनात्मक गति हैं, घूर्णन गति नहीं हैं।

उत्तर– ऐसा नहीं, परिवेश में जितने भी अंश होते हैं। उसमें घूर्णन गति होता हैं, वर्तुलात्मक गति भी होता हैं, वर्तुलात्मक गति का मतलब किसी गति पथ में आगे जाना, जैसे धरती।

प्रश्न– घूर्णन गति परमाणु में नहीं हैं।

उत्तर– हॉ, परमाणु ें ंूवसम में नहीं हैं। परमाणु में कम्पनात्मक गति होता हैं, परमाणु अंशों का कार्य का जो जवजंस है, वह कम्पनात्मक गति हैं, परमाणु का गति सहित ही एक परमाणु संज्ञा है, कई अंशों का कार्य समूह को हम परमाणु नाम दे रहे हैं। इन सभी परमाणु का कार्य का जो वैभव है, एक कम्पनात्मक गति भी है, वर्तुलात्मक गति भी हैं। घूर्णनात्मक गति भी है, इन तीनों का संयुक्त स्वरूप में एक परमाणु। परमाणु घूर्णन गति है, ऐसा नहीं होता है, परमाणु वर्तुलात्मक गति है, ऐसा नहीं हैं। परमाणु समाहित अंशों में घूर्णनात्मक गति, वर्तुलात्मक गति, कम्पनात्मक गति इन तीनों को देखा गया। ये तीनों एकत्रित हो कर के एक परमाणु, परमाणु तीनों गति को व्यक्त करता है, इसको बड़े रूप में समझना है, तो धरती अपने में घूमता ही हैं, अपने आगे–आगे सरकता ही है, उसको हम उत्तर दिशा कहते हैं। धरती सूर्य के सामने सरकता ही रहता है, सरकने वाला दिशा को हम उत्तर कहते हैं। ये सूर्य के सभी ओर घूमता है, उसके बावजूद भी हम उत्तर कहते रहते हैं। चारों तरफ घूमते हुए धरती में आगे सरकने वाला जो भाग है, उसको हम उत्तर कहते हैं, यू घूमता हुआ जो पृथ्वी हैं अपने में घूर्णन भी करता है, इसीलिए उदयात् सूर्य के सम्मुख होता रहता हैं। घूमने समय अपने आप में जो नृत्य होता है, वह कम्पनात्मक गति होता हें। कम्पनात्मक गति की अभिव्यक्तियॉ अपने ढ़ंग से होता हैं, वर्तुलात्मक गति का अपने ढ़ंग से होता है, घूर्णन गति का अपने ढ़ंग से प्रमाण मिलता है। ऐसे जो कंपन है ये सौरव्यूह में सम्पूर्णता में ये तीनों चीज समाई हैं, सूर्य घुर्णन गति

में प्रतिष्ठित है, वहॉ वर्तुलात्मक गति नहीं हैं, उसको वतइपज में घूमना ही नहीं हैं। सूर्य में कम्पनात्मक गति नहीं हैं, कम्पनात्मक गति का धारक वाहक हैं, पूरा सौरव्यूह का जो कम्पनात्मक गति हैं, उसका सूत्र उससे जुड़ी हुई है। सूर्य मध्य में है, सूर्य से ही जुड़ी हुई हैं, बंधी हुई हैं, इस प्रकार परमाणु का बिलकुल हुबहू स्थूलरूप है ये सौरव्यूह। सौरव्यूह के कियाकलापों को ठीक से हम समझें, परमाणु को समझने में बहुत आसान, अति स्थूल रूप में यदि समझना हैं, परमाणु को ये सौरव्यूह है,

गति प्रतिष्ठा में अंतर अवश्य होगी, परमाणु की गति अति तीव्र है, धरती का गति उतना नहीं हैं। सौरव्यूह में भागीदारी करता हुआ किसी ग्रह गोल का परमाणु के समान गति नहीं है, हर धरती में परमाणु समाई हैं, चाहे विरल रूप में हो, चाहे ठोस रूप में हो चाहे तरल रूप में हों।

परमाणु में बल

अभी धनाकर्षण, ऋणाकर्षण से बात शुरू किए थे, आप ये बात को स्पष्ट रूप से समझ सके, इसका एक नजर बताए थे, चुम्बकीय पत्थर को अथवा लोहा को, लेकर हम कुछ दूर में रखने से, वह छोटा–बड़ा रहने से, उस स्थिति में एक में धनाकर्षण एक में ऋणाकर्षण प्रभावित होता हैं। ऋणाकर्षण जो रहता है, वह वस्तु स्थिर हो जाता है, धनाकर्षण जिस में हुआ रहता है, वह धीरे–धीरे सरक कर उसमें जा के चिपक जाता हैं। आप कही भी 2 चुम्बकीय पत्थरों को प्रयोग करके देख लीजिए। चुम्बकीय बल 2 आपस के बीच में अपना धार बनाता है, उसमें कोई आवेश नहीं रहता ।

प्रश्न– धार वस्तु के रूप में क्या हैं?

उत्तर– धार क्या चीज है? उसका प्रभाव क्षेत्र है, चुम्बकीय बल का प्रभाव क्षेत्र को हम धार कह रहे हैं। ये गति नहीं हैं, स्थिति है, प्रभाव क्षेत्र में ये प्रभाव ही अभी जितने भी कंपदंउव होते हैं। उनके आपस में सीधाई में जितने भी चुम्बकीय चिप्स लगे होते हैं, वह एक दूसरे के बीच में धार बना के रखते है। उसको घूमाकर हम काटते हैं। काटने से किसी अनुपात में काटने के बाद वह विद्युत प्रवाह के रूप में हमको मिलता है, ये ही विधि है, वह धार स्वयं में स्थिति है, ना आवेश, उसमें 2 विषम चीज माने छोटा–बड़ा, आमने–सामने वस्तु रखने से, चुम्बकीय वस्तु को रखने से छोटा वस्तु, बड़े वस्तु की ओर दौड़ जाता है। उसका नाम है धनाकर्षण। आकर्षण बल ही धनाकर्षण के रूप में परिवर्तित

हो कर किसी के पास योग को प्राप्त कर लेता हैं। दूसरे वस्तु ऋणाकर्षण में था, वह अपने जगह में स्थिर या वह स्थिर वस्तु के पास दौड़ा हुआ वस्तु जा करके संयोग को प्राप्त कर लेता हैं। इसमें धनाकर्षण, ऋणाकर्षण कोई आवेश नहीं हैं। धनाकर्षण, ऋणाकर्षण की धार है, वह चुम्बकीय धार का आधार पर।

प्रश्न– क्या कह सकते हैं, जो छोटा हैं, बड़े वाले के तरफ आकर्षित हो जाता हैं, ये आकर्षित हो जाने की आधार पर हम जिसके तरफ आकर्षित होता हैं, उसको ऋण में कहते हैं, जो आकर्षित हो जाता हैं, उसको धन में कहते हैं।

उत्तर– जिसके तरफ आकर्षित हो के जा रहा है, उसका नाम है, ऋणात्मक, एक दूसरे के सह अस्तित्व में ही पूरा का पूरा उत्सवित होता हैं। वह जो प्रदर्शन है, वह भी सह अस्तित्व का प्रदर्शन हैं। सजातीय सह अस्तित्व का। उसमें भी लघु गुरू का बात है ही।

चुम्बकीयता का जो तमसमजपवद है, सजातीयता के आधार पर हम इस आचरण को देखते हैं, जबकि धरती के साथ कैसा हैं, सभी जाति धरती में है ही है,

कोई ना कोई जाति ऊपर है, वह जाति नीचे आता हैं। क्या धरती से वस्तु तक की चुम्बकीय धार बनी है? इसको प्रमाण करने का सामर्थ्य अभी तक, आदमी जात के पास नहीं हैं। चुम्बकीय धार बनी रहती है, यहॉ से ऊपर फेंका हुआ वस्तु के साथ इसको कैसे प्रमाणित करोगें। जबकि हम नाम देते हैं गुरूत्वाकर्षण । उसको हम क्या भाषा दिये ये तरल तरल के साथ, विरल विरल के साथ, ठोस ठोस के साथ , सह अस्तित्व को प्रदर्शित करने के लिए, जितना बल से जो चीज नीचे से ऊपर जाता है, वह अपने–अपने सजातीय के साथ सह अस्तित्व को प्रमाणित करते हैं। ये सह अस्तित्व का प्रधान प्रमाण है, ये नित्य प्रमाण है, एक दिन का एक क्षण का प्रमाण नहीं हैं, व्यवस्था को प्रतिपादन करने के लिए इस प्रकार का व्याख्या होगी। अव्यवस्था को व्याख्यायित कर के हम आश्वस्त हो नहीं सकते।

प्रश्न– चुम्बकीय बल जो ऋणाकर्षण, धनाकर्षण के रूप में है, उसका प्रभाव बल जो स्थिति के रूप में बना हुआ है, स्थिति के रूप में अपना आकार, आयतन से अधिक प्रभाव कैसे करता हैं?

उत्तर– चुम्बकीय बल का मतलब होता हे, एक दूसरे के साथ निश्चित अच्छी दूरी में जुड़ने की हिकमत हैं ये, ये हिकमत अस्तित्व सहज हैं। अस्तित्व में ही ये युक्ति लगी हुई हैं। ये युक्ति हर वस्तु के साथ हैं। हर परमाणु में है ये, हर परमाणु का मध्यांश में ये चुम्बकीय बल का प्रदर्शन बना ही रहता है। उसका प्रमाण हर परमाणु में अणु में अणु गठन में होता हैं। हर अणु एक रचना गठन में रहता है। हर परमाणु में चुम्बकीय बल रहता ही हैं वह मध्यांश प्रदर्शित करता है, उसके अश्रितांश, परिवेश में रहने वाले अंश चुम्बकीय बल को प्रदर्शित करते नहीं हैं। वह क्या करते हैं? वह प्रभाव क्षेत्र को बनाए रखते हैं। चारों तरफ घूमने वाले अंश क्या बनाए रखते हैं, उनका क्या प्रयोजन हैं? वह अपना प्रभाव क्षेत्र को बनाए रखता है, अपना पकमदजपजल को बनाए रखता हैं, कितना अद्भुत वर्चस्व है, एक परमाणु का आप सोच लो। चुम्बकीय बल तो सब में होता ही है। जैसा अभी आप कहते हैं,`पसपबवद की बात। वह विद्युत ग्राही नहीं हैं, वह किसी का संयोग होने के बाद ही वह विद्युत ग्राही होता हैं। वह अपने आप में विद्युत ग्राही नहीं है ऐसा आप कमबसंपत किए हो।

प्रश्न–`पसपबवदए`मउपबवदकनबजवत हैं, अर्ध विद्युत ग्राही।

उत्तर– ठीक है, जैसा लकड़ी को बताया ये विद्युत ग्राही नहीं हैं, ये लकड़ी सब परमाणुओं का ही संगठित स्वरूप हैं। इस संगठन में विद्युत बल लगाये बिना संगठन कहॉ से आ गया, विद्युत बल लगी ही है, आप जिस उमेंनतमउमदज को, आप हम जिस तादात को, जिस गति को, जिस दबाव को कम से कम स्थिति को हम पहचानते हैं, वह ये ग्रहण नहीं करता, उससे छोटा, उससे छोटा, उससे छोटा कोई ना कोई छोटे अंश में वह विद्युत ग्राही है ही। हर वस्तु इस तरीके से विद्युत ग्राही है,

उसका तादात, उसका मापदण्ड़ हमारे कब्जे में नहीं है, इसीलिए हम उसको विद्युत ग्राही नहीं है कह रहे हैं। अणु, अणु रचित रचनाओं के रूप में होने के प्रमाण के आधार पर, जिसको हम विज्ञानी बनाए नहीं है ना अज्ञानी बनाए हैं।

जितने प्रकार का बल का व्याख्या वैज्ञानिक आधार पर किए हैं, वह उनके प्रकाशन के आधार पर हो रहा है, कोई ऐसा परमाणु नहीं हैं। जिसमें विद्युत बल ना हो, विद्युत चुम्बकीय बल ना हो, ध्वनि ना हो, भार ना हो, ताप ना हो, गति ना हो, स्थिति ना

हो, ये सभी तमाम वैभव प्रत्येक परमाणु में देखने को मिलता हैं, तादात की बात आती है, हम व्यवहार में लाने के लिए, जितना तादात की जरूरत है, उस तादात में नहीं रहता वह बात अलग हैं। जैसा परमाणु ज्ञान होता है, परमाणु को व्यवहार में व्यवहृत नहीं कर पाएगें। परमाणु का आदान–प्रदान करोगे? किन्तु परमाणु के बारे में हम बहुत सारा चर्चा भी करते हैं। ज्ञान भी रखते हैं, उसके वैभव के ऊपर यकीन भी करते हैं। उस ढ़ंग से हम फलित भी होते हैं। इस तरीके से अभी जितने भी बलों का हम पहचान किए है, वैज्ञानीक का विधि से अज्ञान विधि से, ज्ञान विधि से, कुछ भी बल को हम पहचान किए है, वह सारे बल परमाणु में ही विद्यमान है, हम जिस वस्तु को विद्युत ग्राही मानते हो, चाहे नहीं मानते हो, सब में यह चीज निहित हैं। तादात की अंतर हैं, तादात परमाणु के अंशों के आधार पर अंशों का संख्या भेद से उनका भार में अंतर आ जाता हैं, तो कार्य फल को स्वयं में रखने का अधिकार भिन्न हो जाता हैं। कार्य फल का अपने में बनाए रखने का अधिकार भिन्न हो गई। इस आधार पर भिन्न–भिन्न दिखता हैं। इस तरीके से गुरूत्वाकर्षण का जो हमारा परिकल्पना है, जो एक बड़े, चीज, छोटे चीज को रख के करते हैं, उसको भार के रूप में हम अच्छी तरह से पहचान सकते हैं, किन्तु गुरूत्वाकर्षण को आकाश में फेंकी हुई, कोई वस्तु के साथ गुरूत्वाकर्षण के आधार पर हम बात करते हैं। उसके आधार पर हम काम भी किए है, शायद आकर्षण बल में मुक्त करने के लिए एक ऐसे गति प्रतिष्ठा पैदा किया जिसको हम अमसवबपजल कहते हैं, उससे ये भार को एक प्रकार से लांघ करके वह अपना गति में प्रतिष्ठित होता हैं। जितने भी आकाशगामी यंत्रों में इसको परीक्षण किया गया इसी विधि में किया गया हैं।

इकाई में भार

प्रश्न– वस्तु के रूप में मात्रा, भार, आकर्षण बल, विकर्षण बल और प्रत्याकर्षण बल क्या हैं?

उत्तर– प्रश्न के बाद उत्तर की आवश्यकता होनी चाहिए? आवश्यकता के आधार पर उत्तर होगी। आवश्यकता नहीं तो उत्तर क्यों। उस आधार पर कुछ बात को आवश्यकता हमको नहीं महसूस होने से कुछ बातों को हमने नहीं देखा हैं। परमाणुओं की संख्याओं को गिनने की आवश्यकता नहीं हुई। ये जरूर है, परमाणुओं का प्रजातियॉ सही है, परमाणुओं का क्रिया सही है, स्थितियॉ बहुत सुस्पष्ट है, इससे चारों अवस्थाऍ कैसा घटित होती है, घटित हुआ है, इसमें हम सुस्पष्ट हैं, तो सह अस्तित्व का वैभव हैं।

परमाणु में भार का जो भाग है, वह मध्यांश है, वह मध्यांश के चलते अणु बंधन में आता है, अणु बंधन में आ करके अणुएँ कितना हो पाते हैं कितना दूर–दूर में रहकर एक आकार बन जाते हैं, ये सब आकार अलग–अलग बनता है, आप झाड़–पौधे में भी देखेगें, बहुत ठोस लकड़ी भी होता हैं, बहुत हल्की लकड़ी भी होती है, उसका रचना में चवतंबपजल ज्यादा रहता है। एक अणु, दूसरे अणुओं के बीच में दूरीयॉ ज्यादा रहता है, ये ही चवतंबपजल हैं। इसको आप लोग `चमबजतंउ कहते हैं, अणुओं के परस्परता में जो तानाबाना को। तानाबाना एक दूसरे से थोड़ा सा दूर रहने से बीच में क्या रहेगा? यह सत्ता, दूसरा कुछ नही और किसी में कम जगह रहता है, कम दूरी रहता है, इसके बावजूद भी अलग होने के स्थिति में रहते हैं, इसी विधि से विखण्ड़न सफल हुआ। विखण्ड़ित विधि जो मनुष्य के हाथ लगी, जो बच्चों के लिए परिकल्पना आती है, विखण्ड़ित करने का वह कल्पना सार्थक हो गई। उससे जो उपकार हुआ, उपकर हुआ, जो अपकार हुआ, अपकार हुआ, घटित हो चुका है, उसके बारे में आप और हम कुछ नहीं कर पाएगें आगे दुर्घटना के स्थान पर सद्घटना के साथ चलने की आवश्यकता है। भार का जो आधार है परमाणुओं का मध्यांश, परमाणु में रचित रचना का भार परस्परता की बात एक बड़े रचना, छोटे रचना। जैसे ये धरती सबसे बड़ा रचना और पत्थर कंकड़ छोटे रचना, इस धरती के साथ भार का प्रदर्शन करता है। इकाई का परस्परता में भार उसका ज्वलंत उदाहरण धरती,

धरती के साथ जितने भी वस्तु है, वह सब धरती से छोटे हैं। धरती के आधार पर हर छोटा वस्तु का अपना भार प्रदर्शन करता हैं। जबकि धरती शून्याकर्षण में हैं। ये धरती `चंबम में तैर रहा है कि उसमें खम्बा लगा रखा हैं।

प्रश्न–`चंबम में है, इसमें सूत्र है कि व्यापक और इकाई के परस्परता में भार नहीं है?

उत्तर– इकाई अपने गति सहित शून्याकर्षण में स्थित हो जाता है, घटित हो जाए, रह जाए, हो जाए, 3 चीतेंम है इसका। ये 3 चीतेंम में , शून्याकर्षण में रहता है वस्तु, उसका गति उस समय में जैसा रहता है, उसी गति उसका निरंतरता को प्राप्त करता हैं। उस गति के लिए ईंधन की जरूरत नहीं हैं, इकाई + गति + शुन्याकर्षण सिद्वान्त से होता हैं। अभी वह कैसा घटित हो रहा हैं, जितने भी अभी `जमससपजमे भेजे हैं, यहॉ से भेजते समय में आप इंधन देते ही, उसमें एक गति भी बनाए रखते हो, उस गति से शून्याकर्षण में जा के पदस्थ हो जाता हैं। वह गति की निरंतरता बन जाती है, कोई ईधन का व्यय

उसमें होता नहीं। आदान–प्रदान के लिए जो चाहिए या ईंधन वह शून्य से मिलता रहता हैं। इस ढ़ंग से व्यवस्था है। सूर्य से मिलने वाला इंधन है, उष्मा है, वह शून्याकर्षण में रहने वाले हर वस्तु को मिलता रहता हैं, उसी प्रकार ये धरती को भी मिल रहा हैं। धरती स्वयं में बहुत बड़ा ेंजमसपजम हैं,एक बहुत बड़ा आकाश यान हैं, बहुत बड़ी भारी ंमतवचसंदम हैं, ऐसे यान में आप हम सब अवस्थित हैं। जब हम अपने ऊपर विश्वास नहीं रखते हैं, इसीलिए हम जहॉ रहते हैं, उस पर विश्वास नहीं रखते हैं। इकाई ऊर्जा सम्पन्न, बल सम्पन्न, चुम्बकीय बल सम्पन्न, चुम्बकीय बल सम्पन्नता का क्या मतलब? रचना के रूप में चुम्बकीय बल सम्पन्नता का प्रतिष्ठा अपने आप में वैभवित हैं। आप छोटे से वस्तु लो वह भी एक रचना बड़े–बड़े वस्तु ले लो तो भी एक रचना हैं, उसके लिए मिसाल ये धरती बड़े से बड़े रचना, उसके लिए हम सब सहमत है।बड़े से बड़े रचना में जितना भी छोटे रचना रहते हैं, बड़े रचना के अपेक्षा में ये अपने भार को व्यक्त करते हैं। आपके समक्ष कितना भार हैं, इसको प्रस्तुत करते हैं।

प्रश्न– धरती पर जो भार नापने का तराजू हैं, उसका तमतिमदबम धरती हैं।

उत्तर– उसका आधार धरती है, और जब भार प्रदर्शन का मापदण्ड की बात आती हैं, मापदण्ड बनाने वाला आदमी, आदमी के बिना मापदण्ड कोई नहीं बनाता। आप मापदण्ड नहीं भी बनाइयें। भार प्रदर्शन रहता ही है।

प्रश्न– ये जो भार प्रदर्शन है, ये हर इकाई, अपने जैसे इकाईयों के तरफ आकर्षित हो रही हैं, इकाई का परस्परता में भार को कैसे व्यक्त करते हैं?

उत्तर– भार प्रदर्शन, एक बड़े इकाई के साथ रहने वाली जितने भी छोटी इकाईयॉ हैं, भौतिक रासायनिक इकाईयॉ, वह अपने भार प्रदर्शन किए रहते हैं। ये बड़े चीज के साथ होने वाली सम्मान का प्रदर्शन हैं। उसका सूत्र है, ठोस, ठोस के साथ तरल, तरल के साथ विरल, विरल के साथ सह अस्तित्व में होना

अपना वैभव स्वीकारा हैं। इसको सम्मान नाम देने में आपको क्या तकलीफ । हमारा सारा शब्द नियोजन ऐसा है, मनुष्य अपने में विश्वास के प्रति विश्वास हासिल करें। ये अस्तित्व में हर जगह विश्वास व्यवस्था में ही हैं। इस पर विश्वास करे। सुख पूर्वक जिए। ये हमारा उद्देश्य हैं, इस उद्देश्य के अर्थ में हम सबको नाम दे रखा हैं।

भार और बल :–८

मुख्य मुद्दा ये रहा तरल, विरल और ठोस पदार्थ सह अस्तित्व में अपना वैभव को निरंतर प्रकाशित करना चाहते हैं। भार का प्रदर्शन कैसा होता हैं, ये भी आप को बताया। ये धरती में जितने भी छोटे–छोटे रचनाएँ हैं, पत्थर, कंकर, लकड़ी, पानी सब कुछ वह अपने भार को इसी विधि से प्रदर्शित करते हैं, क्योंकि तरल, तरल के साथ रहना चाहते हैं। इसी कारण से वह अपने भार को सह अस्तित्व के बिल्कुल सुत्र से सुत्रित हो कर भार को व्यक्त करते हैं। जिसकी आप हम तौल कहते हैं, उसी भांति ऊपर से कोई चीज गीरता है, वह ठोस, ठोस के साथ ही होता हैं। माने सह अस्तित्व में होने के लिए दौड़ के आता हैं, प्यार से, उसी भांति तरल, तरल वस्तु के साथ होने के लिए सह

अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए ऊपर से नीचे आता हैं। आप इसको जानते हो पानी ढ़ाल के ओर जाता हैं, क्यों जाता हैं? पानी के पास जाने के लिए पानी जाता हें और एक अचरज की बात है, कितने भी 200 फुट, 400 फुट, 500 फुट नीचे कोई भी विरल वस्तु को उत्पादित करें वह ऊपर ही जाएगा। आपके पास ऐसा कोई भी औकात नहीं हैं, तमीज नहीं है, उसमें भार नहीं है, ऐसा बनाने के लिए विज्ञान संसार के पास ऐसा कोई तमीज नहीं हैं, विरल वस्तु में भार नहीं हैं।

भार रहता ही है, क्योंकि वह अणु समुह ही है, उसमें भार होता ही है, वह भार क्या चीज है, विरल वस्तु के साथ विरल वस्तु सह अस्तित्व को प्रकाशित करता है। वह प्रसन्नता को व्यक्त करता हे। क्या प्रसन्नता? व्यवस्था में भागीदार प्रसन्नता है, एक परमाणु भी व्यवस्था में आस्वस्थ होना चाहते हैं, अपने प्रकाश मानता को निरंतर बुलंद बनाए रखना चाहते हें। उससे अपने को ये प्रेरणा मिलती हैं, मनुष्य को भी व्यवस्था में जीने की जरूरत हैं। अभी तक मनुष्य व्यवस्था में जीया नहीं उसका प्रमाण यही है, मनुष्य जितना भी किया है, आबादी से बरबादी ज्यादा किया। एक बात में आबादी दिखाई पड़ती है, जनसंख्या वृद्वि, बाकि सब करतुत बरबादी की ज्यादा हैं। आबादी में और क्या दिखा? दूरदर्शन, दूरगमन, दूरश्रवण जो यंत्र हमको हासिल हो गया, यदि ठीक से ये मन में आता हैं, हमको ये पीड़ा होना चाहिए, कि हम व्यवस्था को पहचानें, व्यवस्था से जीऍं, व्यवस्था में प्रमाणित हुए, सुख पूर्वक जीने के लिए दूसरों को सुखी बनाने की आवश्यकता हैं। इस बात को निश्चय करना हैं।

जिसको हम भार कहते हैं, गुरूत्वाकर्षण कहते हैं ये सब का व्याख्या क्या है? यदि सकारात्मक पक्ष में हम सोचते हैं तो ''व्यवस्था में भागीदारी करने के लिए ये सब प्रदर्शन हैं'',

ऊपर कोई चीज फेंकने के लिए हम कोई बल को लगाते हैं, वह बल किसी ना किसी दूर में जाकर शून्य हो जाता हैं।

शून्य होने के बाद उतने ही बल को पुनः जहॉ से फेके थे, वहां आ करके उतना ही बल को पुनः प्रदर्शित कर देता हैं। ये स्वाभाविक किया है। वियोग के लिए जो बल मिली सहयोग के लिए उतना ही बल मिली, धरती से वियोग के लिए जितना बल प्रयोग किया, उतना ही बल पुनः उपार्जित कर, वह वस्तु संयोग के लिए बल प्रदर्शित कर दिया। ये

विन्यास है, इन विन्यास को यदि हम अपने मनगढ़त बरबादी के लिए व्याख्यायित करते हैं। हम क्या हैं? आप ही सोच लीजिए, मूल्याकंन कीजिए

मूलतः भार का 2 सूत्र इसमें लगता हैं।

1. प्रत्येक इकाई में चुम्बकीय बल सम्पन्नता है ही।
2. ये परस्परता में चुम्बकीय धारा बनती हैं।

आकर्षण, ऋणाकर्षण, धनाकर्षण में ये प्रदर्शित होता हैं। धनाकर्षण में जो भाग प्रदर्शन करता है, जो भाग उसमें भार प्रदर्शन हो जाता हैं। ऋणाकर्षण में जो अपना स्थिति को प्रदर्शित करता है, उसमें भार प्रदर्शन होता नहीं। उसका भार प्रदर्शन के लिए, ऋणाकर्षण वाला धनाकर्षण के स्थिति में होना चाहिए, तब जा करके वह अपना भार को प्रदर्शित कर देता हैं।

विरल पदार्थ के रूप में 2000 फीट नीचे से प्राकृतिक गैस ऊपर जाता हुआ हम देख ही रहे हैं, ऊपर जाते हुए भी प्राकृतिक गैस में भार नहीं है, ऐसा नहीं कहा जा सकता, भार रहता ही है, गुरूत्वाकर्षण की बात ना हो करके सह अस्तित्व विधि से ही व्याख्यायित होता है ये। ठोस, ठोस के साथ, तरल, तरल के साथ, विरल, विरल के साथ, अपने वैभव को प्रदर्शित करने के लिए दौड़ते हैं। आप कोई बल लगाइये चाहे ना लगाइये, सह अस्तित्व को प्रमाणित करने के लिए जो दौड़ता है, उसी गति को अवरोध करने पर वह भार में हमको मिल जाता है। भार के गणना में मिलता है, दौड़ने वाल वस्तु को हम कहीं भी रोक लेते हैं। भार प्रदर्शन वहॉ होता हैं।

भार और बल :–प्प

प्रश्न– अभी ये आकर्षण बल, विकर्षण बल, प्रत्याकर्षण बल को परिभाषित कर दीजिए?

उत्तर– आकर्षण बल के बारे में बताया, दो चुम्बकीय वस्तु को आमने–सामने रखने पर एक दूसरे के पास आता हैं, उसका नाम है, आकर्षण बल। ऋणाकर्षण, धनाकर्षण भेदों से कुल मिलाकर एक दूसरे के पास आ जाते हैं, इसको आकर्षण बल हम कह रहे हैं, कई परमाणुएँ एक अणु के साथ जुड़ते हैं, वह आकर्षण बल से ही जुड़ते हैं, विकर्षण बल ये चीज होती है, जैसा जितना ताकत से वह एक जगह में जुड़ते रहे, उससे ज्यादा ताकत से दूर ले जाने वाले कार्य को हम विकर्षण बल कहते हैं।

प्रश्न– क्या विकर्षण बल आरोपित हैं? जितना निश्चित दूरी में रह सकते हैं, उससे ज्यादा नजदिकी होने पर विकर्षण हुआ ऐसा कहेगें।

उत्तर– नहीं, तो आकर्षण बल बढ़ा, उसका विकर्षण से अच्छी दूरी में प्रतिष्ठित होते हैं, माने पास में आने से विकर्षण बल का प्रयोग होता हैं। ये ठीक है, प्रत्याकर्षण का मतलब ये होता है, एक बार विकर्षित हो चुकी थी, उसकों पुनः आकर्षित में परिवर्तित हो करके किसी के साथ सह अस्तित्व को प्रमाणित करना। ये प्रत्याकर्षण का मतलब हैं।

जैसा कोई चीज को हम विकर्षित कर दिया, वह विकर्षित होने के पश्चात कोई चीज दूर चला गया, दूर चले जाने के बाद कोई दूसरा विधि उसके ऊपर आरोपित होने के फलस्वरूप पुनः आकर्षण के किया में आरूढ़ हो गया, उसी वस्तु का। तब उसको प्रत्याकर्षण कहते हैं। प्रत्याकर्षण जो है, परिस्थितियां बदलती रहती है, वातावरण से, स्वयं की किया से, स्वयं के आचरण से परिस्थितियॉ रहती हैं। आचरण भी अपने परिस्थिति को बदलता हैं, वातावरण भी परिस्थिति को बदलने में सहायक होता हैं, ये दोनों का योगफल में कोई एक ऐसा स्थिति बनती है, जो विकर्षित होने के लिए, भाजक हो गया था जो वस्तु वह पुनः आकर्षण के साथ अपने स्थली में पहुंचने के लिए बाध्य हो जाता है। इसको प्रत्याकर्षण कहते हैं, जैसा एक परमाणु से कोई एक अंश भाग गया, छूट के भाग गया, थोड़ा देर बाद पता चला, वही अंश घूम फिर कर के उसी परमाणु में आ गया, ये प्रत्याकर्षण बल हैं।

आरोपित बल और स्वयं स्फूर्त बल, 2 बात पर विचार किया जाए।

प्रश्न– विज्ञान में विकर्षण को ही प्रत्याकर्षण कहते हैं, और आकर्षण अलग चीज है, ऐसा 2 ही चीज है, 3 नहीं हैं।

उत्तर– अभी जो श्शब्द का प्रयोग करते हैं, उसका अर्थ संगत विधि से हम प्रस्तुत हुए, वह वस्तु के रूप में कैसा, किया के रूप में कैसा, आचरण के रूप में कैसा काम करता है, उस ओर हमारा दृष्टिपात है, आपका मानने में हम कोई हस्तक्षेप करने वाले नही है, आप पूछेगें जिस शब्द के आधार पर वस्तु को उसको हम इंगित कराएगें।

भारबंधन से अणुबंधन। भार होने के आधार पर ही अणुबंधन में आता है। हर एक परमाणु परमाणु में भार रहता है, वह भार एक प्रकार से परमाणुओं को बांधने का कार्य किया रहता है, इसको बनाए रखना है, इतना भार को, इसका नाम है भार बंधन। तभी मध्य में जखीरा बनता है, भार के लिए। उसको बनाए रखना है, आश्रित परमाणु अंश जो चारों तरफ घूमते है, उनका भी उस में भागीदारी है। बीच में काम करते रहते हैं, उनका भी भागीदारी हैं। इन पूरे परमाणु का भागीदारी है, वह भार को बनाए रखना।

प्रश्न– परमाणु गठन होने का नाम ही है, भारबंधन

उत्तर– इतना ही बात हैं।

प्रश्न– भारबंधन को फिर से परिभाषित करना चाहिए। इससे पहले जो आशय जा रहा था, जब हम किसी वस्तु को रोक रहे हैं, उसको अपनी जो स्थिति बनने वाली थी उससे, जैसे ठोस पदार्थ को धरती में पहुंचने से रोक रहे हैं, उस समय जो आपको बल लगाना पड़ा, उसको भार कहा गया, जो आप अभी भार कह रहे हैं, उसको ठोस से परिभाषित होना चाहिए। अभी अणु बंधन होता है, ऐसा दिखाई पड़ता हैं।

उत्तर– दोनों में तमेनसज एक ही मिलता है, इसको थोड़ा ध्यान से समझाने की बात है, अभी हम परमाणु की बात कर रहे है, पिण्ड़ की बात कर रहे हैं, पिण्ड़ की कियाकलापों को हम जितना आसानी से समझ पाते हैं, परमाणु को समझने के लिए थोड़ा और महीन बुद्धि लगाना पड़ेगा ऐसा मेरे को लगता हैं। परमाणु में आप और हम ये समझे हैं, मध्य में अशं होता हे, उसके चारों तरफ चक्कर लगाने वाले अंश होते हैं। अब ये भी हम माने हैं, चक्कर लगाते हैं, उनमें कोई भार होता नहीं। मध्य में जो जोखिरा बना रहता हैं, यही भार का द्रव्य हैं। बंधन कैसा हो गया? भार को बनाए रखने के लिए सारा चक्कर लगाए रहते हैं। ये चकी क्यों घूमता है? ये भार को बनाए रखने के लिए, परमाणु के अर्थ

में यही भार बंधन हैं, भार के साथ ये जो सभी परिवेश में घूमने वाले अंश है, वह सब अनुबंधित रहते हैं। इसको बनाए रखना। जब कभी ये बना रखने में कमजोरी करते हैं, बीच वाला पुनः बनाए रखने के लिए जतंपदपदह देता हैं। इसके अनुसार परमाणु में भार बंधन होता है, अपन स्वीकार सकते हैं।

उसके बाद अणु बंधन की बात आती हैं, ऐसे भार बंधन से सम्पन्न परमाणुएँ एक जगह में होते हैं, उसको अणु बंधन कहते हैं, अणुबंधन का क्या मतलब हैं? यह भार सब एकत्रित हो गये, 1, 2, 3, 4, हजार, दस हजार, करोड़ परमाणु का भार एक जगह हो गया उसका नाम हैं, अणुबंधन। अणुबंधन में जो परमाणु भार बंधन है, उसको पहचानने के लिए भौतिक तुला को बनाना, इतना आसान नहीं। गणित से ही भार को लाना पड़ेगा। कोई ना कोई बनइम ेनतम में कितने परमाणु हो सकते है?उसका गणितीय गणना, पहले वह उमेनतउमदज कितना अंश के परमाणु में कितना भार, एक ेनंतम को तौलने पर जितना आता है, उतने संख्या में बॉट देना, इस गणित से हम एक तालिका बना सकते हैं। उसके लिए भौतिक तुला बनाकर तौलोगे, परमाणु तौलने में नहीं आएगा, अणु और अणु रचित पिण्ड़ तौलने में मिलेगा। व्यवहार में जो हमको मिलना है, वह परमाणु के कई अवस्था को लांघने के बाद हमको व्यवहृत होने के लिए वस्तु मिलता है, इस ढ़ंग से अणु बंधन से भार बंधन का अनुमान होता है। वास्तविकता में होता क्या हैं? भार बंधन से अणु बंधन प्रमाणित रहता है। रहता ऐसा है, गणना अणुबंधन से भार बंधन करते हैं। दोनों में से हमको तमेनसज एक ही मिल रहा हैं।

प्रश्न– एक–एक परमाणु में भार बंधन, उसके कारण अणुबंधन है, उसके कारण पिण्ड़ बनता है। अगर हमको भार बंधन को नापना है, हम पूरे भार को नाप लेगें। उसमें कितने परमाणु है, उसका संख्या का अनुमान लगाएगें उसके आधार पर भारबंधन को नाप लेंगें एक तो ये कम, दूसरा जो भार का बवदबमचज अभी देखते हैं, वह यह है, कि 2 परमाणु या अणु या अणु रचनाएँ आपस में मिलकर एक गठन बना रहे हैं। उस गठन की एक निश्चित दूरी है। उस दूरी को आप बनने से रोकते हैं, उस समय तो बल आपको लगाना पड़ता है, उसको भार के रूप में परिभाषित किया जाता है।

उत्तर– ठीक है, ये तो तराजू की बात है, बहुत स्थुल रूप में इसको हम ऐसा पहचानते है,। सूक्ष्म रूप में गणितीय रूप में पहचानते हैं। अस्तित्व में भार बंधन को परमाणु के रूप में पहचानते हैं।

प्रश्न– व्यवहार क्रम में जो भार है, वह दूसरा वाला है, तात्विक रूप में जो भार है, वह पहला वाला है। भार को हम पहचानने की विधि यही हैं, जैसे एक परमाणु का भार को पहचानने के लिये, परमाणु को कोई भौतिक तुला से तौला नहीं जा सकता। वह गणितीय विधि से ही होगा। परमाणु का तौल है, वही उसका भार है।

पूरा परमाणु में जितने भी अंश हैं, उसको संरक्षित कर के रखे हैं। भार बंधन का मतलब वह पूरा परमाणु का उद्देश्य उसको बनाए रखना। इसका नाम है, भार बंधन। वह भार के रूप में हमको गणित से मिलता है। उसके बाद जैसे ही हर वस्तु ठोस–ठोस के साथ, विरल–विरल के साथ, तरल–तरल के साथ, सह अस्तित्व में होना होता है, उसको बीच में रोकिये, उसका भार निकलता है, वही विधि से जितने गैसें का भार है, आपकों मिल रहा है, पानी का तो भार मिलता ही है, पत्थर, कंकड़ का भार मिलता ही है।

प्रश्न– गैस वाली जो बात है, उसका भार के संदर्भ में विचार करना पड़ेगा, क्योंकि अब तक जो गैस का भार का बात है, वह इसके साथ ठीक नहीं बैठेगा। ीलकतव्रमद का इंससववद को अगर वजन करने जाएगें तो दमहंजपअम ूमपहीज देगा। उसको इस तरह से परिभाषित करते है कि जिस स्थिति में उसका होना बनता हैं। उसको होने में रोकने में जितना हमको बल लगाना पड़ता है वह भार है, तो चवेपजपअम में आएगा।

उत्तर– दमहंजपअम भार तो हो नहीं सकता किसी चीज का, किसी भी सह अस्तित्व को अवरोध करने के लिए जो बल लगता हैं, वह अपने को उमेनतम करने में आ जाएगा। इससे गैस का भार निकल जाएगा। अभी जो है, सीलीण्ड़र में स्च्ळ आता हैं। उसमें 15 ाह लिखे रहता है, 10ाहए 20ाह कुछ भी लिखा जाता हैं। वह खाली सीलिण्ड़र में भरने के बाद तौलने पर जो मिलता है, उसको वह लिखे रहते हैं।

प्रश्न– उसको अगर हम अणु बंधन के आधार पर परिभाषित करें, तो विरल गैस के साथ होने में जो प्रवृत्ति है, उसको रोकने में हम जितना बल लगाऐगें, उसको भार कहते है, तो फिर गैस के भार को भी सटीक ढ़ंग से परिभाषित कर पाएगें।

रश्मि और ताप

प्रश्न– धरती का वातावरण जहॉ तक है, उसका क्या मतलब है? उत्तर– वातावरण का मतलब है, धरती अपना रक्षा कवच बनाए रखा हैं। संतुलन के लिए अपना वातावरण को बनाता हैं। हर एक–एक जैसे आप अपने संतुलन के लिए अपना वातावरण को बनाते हो, मैं अपना संतुलन के लिए मैं अपना वातावरण बनाता हूँ। ये प्रकाश अपने संतुलन के लिए अपना वातावरण बना रखा है। एक परमाणु अपने संतुलन के लिए अपना वातावरण बनाए रखा है। परमाणु से रचित अणु अपने संतुलन के लिए अपना वातावरण बनाए रखा है। उसी क्रम में ये धरती अपने संतुलन के लिए अपना वातावरण बनाए रखा हैं। संतुलन के लिए जो चीज है, वह धरती के लिए रक्षा कवच, क्या रक्षा करता है? सूर्य का उष्मा धरती के वातावरण तक जब पहुंचता है। वह उसी के समान रहता है, जैसा सूर्य के वातावरण से आया रहता हैं। सूर्य का भी एक वातावरण होगा, चन्द्रमा का भी एक वातावरण होगा। सूर्य का वातावरण का अंतिम छोर में उष्मा का जो स्वरूप है, वही उष्मा का स्वरूप धरती को प्रथम छोर में पहुंचता हैं। बीच में कोई स्वेनहीं क्योंकि बॉटने के लिए वस्तु ही नहीं हैं। वस्तु है, भी नगण्य है, तंकपंजपवद के रूप में जो आप कहते हो ऐसा कोई ज्तंअमस करता भी होगा, वह नगण्य बात है, ये जो उष्मा पहुॅचता है, इसका नाम है किरण। उसका नाम है ताप, परावर्तित होकर धरती के वातावरण के अंतिम छोर में छूता हैं। कितना है ताप? सूर्य के वातावरण के अंतिम छोर में ताप का जो अनुपात था, उतना ही अनुपात ये धरती के अंतिम छोर को छूआ, छूने के बाद उष्मा आबंटित होना शुरू हुआ, उष्मा आबंटित होने के लिए अपना रक्षा कवच को बनाये रखा। आबंटित होते होते ये धरती को छूने तक में रश्मि के स्वरूप में छूता हैं। उसमें विज्ञान हस्तक्षेप किया, वह रश्मि बनने में व्यवधान पैदा किया, फलस्वरूप धरती में ताप बढ़ गया। धरती में ताप बढ़ने से जो होने वाला परिणाम है, उत्पात हैं, उसके बारे में आप लोग अंदाजा लगाया भी होगा।

ताप कैसा पहुॅचा है? सूर्य के प्रतिबिम्बन के रूप में पहुॅचा हैं। जिसको हम प्रकाश कहते हैं, परावर्तित हुआ है ताप, बिम्ब के साथ आया, प्रतिबिम्ब के साथ आया, उसका रूप का प्रतिबिम्बन के साथ, उसका नाम हैं प्रकाश। परार्वतन में जो आ रहा है, वह ताप है। प्रतिबिम्ब आता है, बाद में ताप आता हैं। ताप की गति कम हैं, प्रतिबिम्ब पड़ा ही रहता है, जैसे ये ज्नइमसपहीज जलने के पहले भी इसका प्रतिबिम्ब रहा। प्रकाश और ताप दोनों अलग अलग विन्यास है,

बिम्ब का प्रतिबिम्ब एक प्रकाश है। बिम्ब में निहित उष्मा का परार्वतन हमको मिलना वह ताप है। वह ताप जो प्रतिबिम्ब के साथ आता हैं, उसका नाम है किरण। ताप जो प्रतिबिम्ब के साथ इस धरती के ऊपरी सतह में आ कर छूता है,

उसका नाम है किरण उसके साथ प्रतिबिम्ब रहता है, वह प्रतिबिम्ब का अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब होना पाया जाता हैं। अनुबिम्ब का मतलब है, जो प्रतिबिम्ब पड़ा है वह कई कपतमबजपवद में जो उवसनबनसमे रहते हैं, उसके ऊपर जा के आवंटित होना और उसके बाद वह पुनः आवंटित होना ये प्रकिया धरती का सतह में आने तक, अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब विधि में बॉटता रहता है। उसी अनुपात में ताप भी आवंटित होता हुआ आता है, आते आते धरती को जब छूता है, प्रतिबिम्ब उसका नाम है रश्मि, आगे चलकर इसी आधार पर, इसी सूत्र पर, इसी बुनियाद पर, प्रकाश व्याख्यायित हो जाता हैं। ताप, परावर्तित होने के लिए दौड़ता हैं। परार्वतन का मतलब है, ताप घटने का आशय से बहता हैं। ताप का मापदण्ड के रूप में जो हम कहते हैं, 200^0, 4000^0, 1000^0 कहते हैं, किसी ना किसी ड़िग्री में इस धरती का अंतिम छोर को छूआ है, वहॉ से वह ताप कम होना चाहता है, कम होने के लिए यहॉ वातावरण बना हुआ हैं। बनी हुई वातावरण की हमने छेद कर दिया, काट दिया।

पर्यावरण संतुलन

प्रश्न– पदार्थवस्था के कम में नैसर्गिक संतुलन और पर्यावरण को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर– नैसर्गिकता से पहले हम समझ लें हम सभी ओर से घिरे हैं जिसमें उसकी नैसर्गिक कहा जा सकता हैं। जैसा ये 4 दीवार से हम घिरे हैं, दीवार हमारा एक नैसर्गिकता हो गया । ये घर, बहुत सारे झाड़, पौधा से घिरा हुआ हैं, ये भी इस घर का नैसर्गिकता हो गया। ये झाड़, पौधे, और छोटे, बड़े, पर्वत, नदी, नाला, जंगल ये घिरी हुई हैं, ये इसका नैसर्गिकता हो गया। इस विधि से चलकर के हम यहॉ पहुंचते हैं कि इस धरती से ले कर ग्रह, गोल, नक्षत्र, आकाश गंगा से लेकर नदी, नाला, पहाड़, जंगल ये सभी चीज हमारे लिए नैसर्गिकता हैं। ऐसे नैसर्गिकता को हम पर्यावरण भी कहते हैं। हम जहॉ तक हस्तक्षेप कर सकते हैं। वहॉ तक को हम पर्यावरण कहते हैं। हस्तक्षेप के आधार पर पर्यावरण की सीमा निर्धारित होती हैं, नैसर्गिकता, आकाशगंगा से ले के अस्तित्व से घीरे हुए हम हैं और हर एक एक पूरा अस्तित्व से ही घिरा हुआ हैं। इस ढ़ंग से नैसर्गिकता, पर्यावरण का स्वरूप स्पष्ट हो जाता हैं। अभी नैसर्गिकता के साथ मनुष्य जो कुछ भी कार्य व्यवहार किया, इसका प्रभाव क्या हुआ, इसका अध्ययन कुल मिलाकर के पर्यावरण का अध्ययन हैं। विज्ञान आने के बाद ईंधन संधान में हम विवेकीय नहीं हो पाये इसका परिणाम क्या हो सकता है, इसको सोच नहीं पाये, गलत ईंधन को हम उपयोग करना श्शुरू कर दिया। गलत ईंधन 2 ही चीज हैं, 1. खनिज, कोयला 2. खनिज तेल।

ये 2 ही चीज हुई गलत ईंधन। मनुष्य के लिए, विषाक्त वस्तुओं से बनी हुई ये झाड़, पौधे दब करके कोयला बना है, कोयला में ही निहित तेल हमको खनिज तेल के रूप में मिलता है, ये बात पहले स्पष्ट हुआ है। इसको जलाने पर जो मनुष्य के लिए हानिप्रद वायु है, उसको तैयार कर देता हैं। वह चारों तरफ फैलता है, अन्ततःगत्वा आदमी मरणासन्न स्थिति में आता हैं। ईंधन अवशेष जो धरती की रक्षा कवज थी, उसको हस्तक्षेप कर दिया उसको क्षति ग्रस्त कर दिया, धरती को बीमार बना दिया, इसको हम

कहते हैं, पर्यावरण का अध्ययन। दुष्परिणाम से जो हो गया हैं, हो गया, उसको ठीक करने वाला कौन है, मनुष्य ही करेगा, मनुष्य ठीक करेगा या धरती स्वयं कर लेगा। दोनों बात हो सकता हैं, हम यहॉ एक उदाहरण देना चाहते हैं, कोई भी आदमी रोगी होता है, उसको दवाई, पानी, पथ्य परहेज ये सब कराया जाता हैं, करने पर दवाई से रोग ठीक होता हैं, शरीर स्वयं रोग को ठीक कर लेता हैं,

ये प्रश्न बना रहता है, इसमें हमारा देखना, सुनना, समझने की विधि से ये निकलता है, शरीर व्यवस्था ही रोग को ठीक करता है, वह शरीर व्यवस्था को बुलंद करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए, हम दवाई देते हैं।

इसी भांति यदि हम पहले इस धरती जिस कारणों से रोग ग्रस्त हो गया है, क्षतिग्रस्त हो गया है, हम क्षतिग्रस्त कार्य को बंद कर देने पर संभवतः धरती अपने स्वास्थ्य को सुधार लें। ये एक संभावना बनी हुई हैं, इन संभावना के तहत हम काम करते हैं, इसी को हम पर्यावरण संबंधी समस्या, समाधान कह सकते हैं। क्या समाधान? पहले ईंधन के बारे में नया विकल्प खोज लेना । वह कहॉ है? प्रवाह बल के रूप में बिछा हुआ हैं। प्रवाह बल को यांत्रिक बल के रूप में उपयोग करना, उससे बिजली को तैयार कर लेना, बिजली को इतना तैयार करना की चूल्हें से लेकर लोहा को गलाने तक हो जाए, मिट्टी के बर्तन को पकाने से लेकर मुर्दे को जलाने तक उपयोग हो जाए, उसके बाद भी जो बिजली शेष रह जाए, सभी प्रकार के यान, वाहन के उपयोग करने के बाद भी अधिक है, इस समृद्धि का अनुभव किया जाए। इसके लिए पूरा का पूरा व्यवस्था अस्तित्व में रखी हुई है, जैसा ब्रम्हपुत्र नदी है, ब्रम्हपुत्र में कम से कम न्यूनतम पानी जो बहती है, और उसके प्रवाह बल को हम यदि यंत्रों में 100 ाउ लम्बाई में विभिन्न तरीके से हम प्रयोग कर लेने पर भारत के लिए जितना बिजली चाहिए, रेल के लिए, मोटर के लिए, गाड़ी के लिए, घोड़े के लिए जितना चाहिए, उससे 10 गुणा हम पैदा कर सकते हैं। दरिद्रता को हम सामने प्रस्ताव रखने पर कोई आदमी तैयार होगा नहीं चाहे धरती डूब जाए, मर जाए, कोई परवाह नहीं। तो मनुष्य को समृद्ध होने के विधि से हो, आज आश्वासन आज का कार्यक्रम, आज का योजना कारीगर हो सकता हैं। मनुष्य को ऊर्जा का संपदा बहुत सारा चाहिए ही चाहिए। इसको उपयोग करना भी चाहिए, जिसमें पर्यावरण कोई हानि ना हो, उस विधि से ऊर्जा को उत्पादन किया जाए और उपयोग किया जाए। दूसरा तरीका है, सूर्य उष्मा को ऊर्जा के रूप में प्राप्त कर लेना, जिसमें कुछ काम भी हुआ हैं। उसको

कुछ सोचे हैं, वह बहुत ज्यादा सब के लिए सुलभ नहीं है ये कमी है, उसको सर्वसुलभता की गति को बना लेना, तीसरा ऊर्जा विधि है, कृषि के साथ, गौपालन की आवश्यकता, गौपालन से गोबर गैस का कार्यक्रम, इससे इंधन का काफी आसार बन जाते हैं । ये 3 ऊर्जा बहुत ही समीचीन हैं। चौथा विधि है, हवा से हमारा आवश्यकता को पूरा करना, हवा के बल को हम चनउचपदह`मज में, हमदमतंजवत आदि में लगाके उपयोग कर लेना। इन उपायों से हमारा ईंधन का जो कार्यक्रम है, उसको पूरा कर लेना।

किसानों में ये जागृति की आवश्यकता है, हर एक किसान अपने खेत खलिहान में, आंशिक भाग में, जंगल लगाने की आवश्यकता है।

फलदार वृक्ष हो, उपयोगी वृक्ष हो, ऐसे वृक्षों को लगा के रखने की आवश्यकता है। अब जंगल से तो कोई लकड़ी मिलने वाला नहीं है, थोड़ा दिन और मिल भी जाए, उसके बाद तो एकदम नहीं मिलने वाला। इसके लिए अभी से जागृत होने की आवश्यकता है, उसी के साथ–साथ यह भी एक आवश्यकता है, हर किसान के पास ऐसे भी एक उदारता की आवश्यकता है, और जागृति की आवश्यकता है, सचेष्टता की आवश्यकता है, जितना भूगर्भ से हम जल को ले के उपयोग करते हैं, उतना ही या उससे ज्यादा पानी संरक्षण करने योग्य तालाब, कुऑ बना के रखने की आवश्यकता हैं।

इस प्रकार की आवश्यकता को पहचानने से पुनः ये धरती अपने स्वास्थ्य को प्राप्त कर लेगा। धरती अपने रोग को ठीक करने के लिए ये सब दवाई है, ये पर्यावरण समस्या को सुधारने के लिए, बहुत, सहज, सुन्दर होने वाली प्रकिया है, उपाय है, इसको किया जा सकता है।

कला और तकनीकी

कला को वस्तु से अलग करने को कहते हैं, जैसे ये कपड़ा हैं, इसमें जो रंगरागन लगी है, इसका नाम है, कला, ये घर को शोभायमान करने के लिए हम सफेद पोतते हैं, लाल पोतते हैं, कुछ भी करते हैं, ये सब अलंकार को कला मानी जाती है, वह अलंकृत करना, उपयोगिता के साथ अलंकार होना आवश्यक है। इसको हम कला कहते हैं, जैसा कुर्सी बनाया, वह चिकना हो यह कला हैं। बैठने पर सुविधाजनक हो ये कला हैं, कपड़ा बनाना एक कला है, मटका बनाना एक कला हैं, धातु के बर्तन को बनाना एक कला हैं,इस तरह के कला में मानव परंपरा अपने आप को काफी समृद्ध बना लिया हैं।

प्रश्न– कला और तकनीकी में अन्तर कैसे करेगें?

उत्तर– हस्तकला में जितने भी तकनीकी लगती हैं, वह व्यक्ति के अधीनस्थ हो जाता हैं। व्यक्ति के मन में ही वह स्थापित होता है, हाथों से प्रयोजित हो जाता हैं। इसका नाम है हस्तकला, गॉव के लिये आवश्यकीय वस्तुएँ, गॉव में पैदा हो जाए, इसका नाम हैं, ग्रम शिल्प, उसमें चर्मवाला, मिट्टी की कला, धातु कला, सुनार, लुहार सब इकट्ठा हो जाए, ये ग्राम शिल्प कहलाता है। उसके बाद आता है वस्त्र बनाना, मकान बनाना, ये भी ग्राम शिल्प के अंदर आता हैं या कुटीर उद्योग के अंदर आता हैं, ईटॉ को जोड़ना भी एक कला है, शिल्प कला और पत्थर को गढ़ना, पत्थर की मूर्ति बनाना ये भी शिल्प

कला कहलाता हैं। चित्र कला में किसी भिति पर किसी पृष्टभूमी पर जो अपने इच्छित आकार को स्थापित कर देता है, ये सब कला गॉव में ज्यादा से ज्यादा प्रचलित रहे, ऐसा हम चाहते हैं, जो दूसरा गॉव का अच्छा लगा हम कर लिया, जो हमारा अच्छा लगा दूसरा गॉव कर लिया, इस प्रकार से कला समद्धि की बात बनती हैं।

उसके बाद आता है यंत्र कला। यंत्र मनुष्य के काबू के चीज हो गई । यंत्र कला में साइकिल, मोटर बनाना है, उसके लिए एक यंत्र चाहिए, तंपस मदहपदमए उवजवत मदहपदम बनाने के लिए यंत्र चाहिए, इस प्रकार की यंत्रों की सहायता से दूसरे यंत्रों को बनाने की स्थिति आती है और मूलतः जो यंत्र है, जिससे यंत्र बनाते हैं, वह भी बनाना एक कला है, वह भी तकनीकी है, यंत्रों से बना दूसरा यंत्रों को बनाना भी एक तकनीकी है, ये कुछ सीमित व्यक्ति के साथ ये कला चलता है, हर व्यक्ति के साथ ये कला चलेगा नहीं। तकनीकी जो सब को आया रहता है, ींदकसम करेगें कुछ लोग। तकनीकी लोक व्यापीकरण करने की बात है, ये तकनीकी लोकव्यापीकरण में किसी को तकलीफ नहीं है, उसी से उत्पादन में निश्चयन, उत्पादन में विश्वास, उत्पादन का अरमान ये तीनों चीज उदय हो जाता हैं,

तकनीकी के लोकव्यापीकरण के लिए शिक्षा में इसको प्रवाधानित करने की आवश्यकता है, मानवीय शिक्षा में तकनीकी भाग समाहित रहना आवश्यकता हैं।

प्रश्न– तकनीकी और कला ये 2 भिन्न वस्तु है या एक ही वस्तु हैं?

उत्तर– अलग–अलग है, तकनीकी सर्वाधिक यंत्रों के साथ है, यंत्रों, अन्ततगत्वा गति प्रदायी कार्य के रूप में ही हैं। लोहा को हम हाथ से कूटते हैं, उसके बाद `जमंउ ींउउमत से कूटते हैं, `जमंउ ंचचसल किया, उसके बाद मनुष्य 12 घंटा कूट पीटकर जो करता था वह 2 मिनट में कर लिया। यंत्र बनाना, तकनीकी, यद्यपि जब हथौड़ी नहीं या हथौड़ी के उपलब्धि के बारे में एक तकनीकी ही मानी गई। उसके आगे की तकनीकी `जमंउ ींउउमत उसी प्रकार से हम किसी वस्तु को पीटने के लिए शुरू किए उसके लिए कतंच ींउउमत नाम का चीज होता है, ऊपर खीचं के ले गये बहुत भारी वस्तु को नीचे वस्तु रखा है, ऊपर से गिराया, तो वस्तु पिचक गया, हम जो चाहते थे वह हो गया। तकनीकी मनुष्य का आवश्यकता है, परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए सभी तकनीकी मनुष्य

के हाथ में होना चाहिए। उपयोग आंशिक रूप में होता ही है, हम जितना जानते हैं, उतना तकनीक का उपयोग थोड़े ही करते हैं, इसका एक सूत्र लिखा हैं।

'' जो जितना जानता है, उतना वह चाह नहीं पाता, जितना चाहता है, उतना वह कर नहीं पाता, जितना करता है, उतने को वह भोग नहीं पाता '', इस तरीके से समृद्धि आती हैं, इस ढ़ंग से मानव क्या स्पष्ट है, मनुष्य को तकनीक के लिए कम से कम 6 बिन्दुऍं है, जो आहार, आवास, अलंकार संबंधी तकनीकी, उसको उत्पादन करने की तकनीकी, अच्छी तरह से उसको अभ्यास की जरूरत । उसके बाद, दूरदर्शन, दूर गमन, दूरश्रवण संबंधी तकनीकी उसको उत्पादन करने की संभावना, तरीका, इन दोनों को हम समीचीन बना के रखने की आवश्यकता हैं, इसी का नाम है व्यवस्था। परिवार में हम सटीक जीने का जो तरीका बनती हैं, उस तकनीकी को हम विशाल रूप देने चले जाते हैं ये सब चीजें अपने आप से समीचीन होती हैं, अभी जितना सीख पाए हैं, परंपरा में उतने को सीखाना बहुत ज्यादा है, तकनीकी मनुष्य के पास ज्यादा आ गया, जीने का तरीका टेढ़ी मेंढ़ी हो गई हैं, कामोन्माद, भोगोन्माद और लाभोन्माद के आधार पर एक सीधी रेखा खिचंने की आवश्यकता, लोकव्यापीकरण विधि से हम सभी तकनीकी को समृद्ध तकनीक बना सकते हैं, समझदारी विधि से व्यवस्था में जीने का उद्देश्य बनाने योग्य बना सकते हैं। मनुष्य तकनीकी, विज्ञान के दिशा निश्चित करने के योग्य हो पाता हैं। सह अस्तित्व विधि से व्यवस्था में जीने की पद्धति को पहचान पाते हैं, इसके आधार पर एक अच्छी जिंदगी को जी पाते है, मानव इतिहास शुरू हो सकता हैं।

प्रबंधन

1. हर उपयोगिता का सुरक्षित करना,
2. सुविधा जनक बनाना,

सुरक्षित होना, ींदकसम करने में सुविधा जनक होना, यही सुन्दरता मूल्य है, हम आपको भी देख लीजिए, कपड़ा पहने है, ये हमारा सुरक्षा का अर्थ भी हैं, सुन्दरता का अर्थ भी हैं, सुविधा का भी अर्थ हैं, सुन्दरता ये 2 अर्थ में आता है, कला मूल्य को जितनी भी बात,, इसी अर्थ में आता है, जिस तरीके से इसका उपयोग करने का ढ़ंग को सुविधा जनक बनाया है, ये सब सुन्दरता मूल्य के अर्थ में ही आता है, इसमें सुरक्षा निहित हैं।

प्रबंधन का मतलब ये होता है, व्यवस्था को हम अच्छी तरह से प्रबोधित कर सके, उसको प्रमाणित कर सके, इन दोनों कार्य जिसके पास है, उसका नाम है, प्रबंधन, प्रबोधन भी और प्रमाणिकरण भी ये दोनों मिलने से उसका नाम है प्रबंधन। हम प्रबोधित नहीं करेगें प्रबंधन करेगें, ऐसा नहीं हो सकता, हम प्रबंधन करेगें, प्रबोधित नहीं करेगें ये भी झूठ, प्रमाणित करेगें, नहीं करेगें ये भी झूठ। हम प्रमाणित करने के साथ प्रबोधन रहता ही है। प्रबोधन के साथ प्रमाण रहना आवश्यक हैं। इस तरीके से प्रबोधन और प्रमाण का नाम है प्रबंधन।

विनिमय कोष और श्रम मूल्य

श्रम मूल्य का मूल्यांकन, श्रम विनिमय विधि को पहचानना। आदमी समझदार होने के बाद ही इसको निर्वाह कर पाता हैं। आज का ज्ञानी, विज्ञानी आदमी इसको नहीं कर पाएगा। आदमी समझदारी के साथ ही श्रम मूल्यों को मूल्यांकित कर पाता हैं,। समझदार मूलक परिवार व्यवस्था में ये विनिमय कोष व्यवस्था है, विनिमय कोष क्या चीज है? श्रम मूल्य का विनिमय करना उसका कोष क्या होगा? उपयोगिता मूल्य, कला मूल्य सम्पन्न वस्तुओं का भंड़ार वस्तु भंड़ार का नाम है, विनिमय कोष, विनिमय के लिए हमारा कोष रची हुई है, माने विनिमय योग्य वस्तु रखी हुई है, अभी कोष का मतलब क्या हो गया, वह छापाखाना, छाप लिया और उसको इकट्ठा करके ढेर लगा दिया। उसको आप कोष

कहते हैं, उसमें पेट भरेगा की इस में पेट भरेगा, ये पेट भरने वाला कोष है, उत्पादित वस्तुएँ जहॉ प्रचुर मात्रा में हम संपादित कर रखे है, ग्राम के जिम्मेदारी से, क्षेत्र परिवार के जिम्मेदारी से या जिला परिवार के जिम्मेदारी से, प्रधान राज्य परिवार के समूह से हम जो सुरक्षित कर रखे रहते है, इस प्रकार की जिम्मेदारी से रखी हुई वस्तु का नाम है, भंड़ारण विनिमय के लिए वस्तु को हम रखे हैं, इसीको हम कोष कहते हैं। वस्तु कोष किसलिए कहा, क्योंकि विनिमय करना है, ये वस्तु को देगें, दूसरा वस्तु लाएगें, मुद्रा की जरूरत कहॉ है? यदि मूल्यांकन करना बनता है, श्रम मूल्यों को उसके बाद आप को मुद्रा की जरूरत नहीं हैं, अभी मुद्रा विधि दगबाजी का अखाडा है, मूल स्त्रोत हैं, अन्तराष्ट्रीय कोष, दगाबाजी का बड़ा अड्डा तंत्र ही ऐसा हैं, दगाबाजी किए बिना कोई चीज बनती ही नहीं। इसको अच्छें ढ़ंग से समझ के इसके लिए समाधान खोजने की बात हैं। समाधान के लिए यही आकार बनता है, हमारे पास आवश्यकता से अधिक वस्तुएँ प्रचुर मात्रा में, गॉव के कोष के रूप में रखे, गॉव को दूसरे कोई आवश्यकता बनती है, उसके लिए इसको देते हैं, आवश्यकता की वस्तु को लाते हैं, हम हमारे परिवार से अधिक आवश्यकता का अधिक जब उत्पादन कर सकते हैं, पूरा गॉव भी आवश्यकता से अधिक उत्पादन किया ही रहेगा।

प्रश्न– श्रम मूल्यों का निर्धारण कैसे होगा? जैसे कोई आदमी यात्रा करेगा, चलन में वह कैसे करेगा?

उत्तर– हम इसके बारे में परिवार मूलक स्वराज व्यवस्था में वह सूत्र लिखा है, वह व्याख्या का स्वरूप समाधानात्मक भौतिकवाद में भी आया है, आवर्तनशील अर्थशास्त्र में आता ही हैं। एक गॉव में ज्यादा से ज्यादा 4 परिस्थिति, 6 परिस्थिति, 10 परिस्थिति होती हैं,

कोई फसल उत्पादन करने के लिए, जैसा चना उत्पादन करने के लिए एक गॉव में 4 परिस्थितियॉ हो सकता है, एक जगह में ज्यादा हो सकता है, एक जगह में कम हो सकता हैं। श्रम सब जगह लगाया, यहॉ भी वहॉ भी , एक जगह में 5 श्रम लगाया, यहॉ भी, एक जगह में 10 श्रम लगा, एक जगह में 4 श्रम लगा, एक जगह में 5 श्रम लगा।

सब को एकत्रित किया उसको समान बना दिया। उतना श्रम लगा, बस खत्म हो गई बात। इस तरीके से गॉव के अंतर में अमतंहम निकल जाता हैं। उसको 10 गॉव के अंतर

में ंअमतंहम निकाल लिया। उसके बाद 10 गॉव जो मिलकर बनता है, एक समिति उसका ंअमतंहम में निकाल लिया। उसके बाद विश्व स्तर पर निकाल लिया, इसको निकालने में क्या देर लगता है। श्रम को पहचानने की विधि हैं, उपयोगिता के आधार पर, श्रम नियोजन से क्या होता हैं, उपयोगिता मूल्य स्थापित होता है, उपयोगिता मूल्य के आधार पर मूल्यांकन। श्रम का मूल्यांकन। उपयोगिता मूल्य के आधार पर मूल्यांकन नही तो, आप एक श्रम के जगह में 10 दिन लगाएगें तो क्या करेगें, वह तो कुछ मिलेगा नहीं। हर व्यक्ति को श्रम नियोजन करना आवश्यकता बन जाएगी। 20 व्यक्ति में एक भी व्यक्ति आज श्रम नियोजन नहीं कर रहा हैं। तभी भी हम दाना खा रहे हैं। एक आश्चर्य चकीत बात हैं? इतना दगाबाजी के साथ भी सबको दाना मिलता है, हल्दी, धनिया पिसी खड़ी 1 ुनपदजंस 10000 रूपया कुछ भी। उसी धनिया पिसी 5000 रूपया पिसी हुई मसाला, गरमसाला आधा दाम में और खड़ी मसाला दुगनी दाम में पिसी हुई हल्दी 1/2 दाम में खड़ी हल्दी दुगना दाम में, आप छमू चंचमत में देखो। दगाबाजी को कोई अंत है क्या? दगाबाजों को इन जमघटी में सबको दाना मिलता हैं, आज भी, ये आलस्य वाद के घेर में, गिने चुने लोग श्रम करते हैं, इनके बदौलत इतने आदमीयो को दाना मिल रहा हैं। ये कम चमत्कार है क्या, सबसे बड़ी चमत्कार यही है, परसों के दिन हम पेपर में देखते रहे धान, अपना शिखर में पहूंच गया था, धान आ गया अब बिल्कुल नरमी आएगी, क्योंकि किसान को पैसा देना नहीं हैं, इसीलिए नरमी आई। उसके लिए व्यापारी संघ का जो मूल केन्द्र है, उनके अनुमति से, जो अभी धान आएगा उसके कीमत को आधा कर दिया क्यों? धान को खरीदना है, ये लिखा रहता हैं। आदमी अपने आवश्यकता से अधिक उत्पादन करता है, ये तो हैं, हर परिवार के लिए अधिक वस्तु को विनिमय कोष में रखते हैं। वह पेनम करता हैं, इनके पास 10 श्रम मूल्य है, 1000 श्रम मूल्य है, 20 श्रम मूल्य है, ये लिखता है, कौन लिखता है। ग्राम के विनिमय कोष, उस परिवार का पकमदजपजल रहता हैं। उस पकमदजपजल के आधार पर उनके पास जो श्रम रहता है, उसको कह दिया आप विनिमय कर लो,

जिनको लेना है, वह लिखेगा, हम इसमें से 4 पाया, तुरंत उनके वहॉ से उतना श्रम मूल्य के वस्तु वहॉ ज्तंदेमित हो जाएगा। किसी भी यात्रा में, किसी भी बाजार में, आप अपने श्रम को उपयोग कर सकते हैं। इससे ज्यादा ळनंतंदजमम बंतक कुछ हो सकता है, मुद्रा को आप छपा सकत हो, छापाखाना रखा हुआ हैं। अभी ळवअमतदउमदज जितना छापा हुआ हैं, उससे न जाने कितना गुणा, कागज दौड रहें है, उसको कोई कल्पना नहीं कर

सकता है, यहॉ का मुद्रा दूसरे देश में छपता है, दूसरे देश का छापा यहॉ होता हैं। सब का हालत ठंदक हैं।

समझदार हुए बिना व्यवस्था में जिएगें नहीं, ब्वउउनदपबंजपवद के लिए ही हम दूर संचार में समृद्ध हुए हैं, हर गॉव दूर संचार से सम्पर्क में रहता है, कोई भी आदमी अपना कार्ड से कितना चीज को दे कर के आएगा, वह तुरंत गॉव में पहुंचते ही दूर संचार विधि से वह व्यवस्था हो जाएगी। किसको देना हैं? वह भी त्मबवतक हो जाएगी। उतने चीज आपके विनिमय कोष में उनके लिए त्मेमतअम हैं। हर विनिमाय कोष के साथ ज्तंदेचवजंजपवद जुड़ा रहेगा। श्रम विनिमय को एक प्रमाणित पत्र हर गॉव में स्थापित रहेगी।

उत्पादन और योजना

उत्पादन कार्य योजना की बात आती है, परिवार मूलक स्वराज्य योजना की तहत, आपने क्या किया? अधर में ले जा कर के उत्पादन कार्य लिख दिया। आप को लिखना हैं, परिवार मूलक स्वराज योजना के तहत में उत्पादन कार्य योजना। दूसरे विधि से उत्पादन कार्य योजना आता ही नहीं, योजना का मतलब है, प्रमाणित होने की तरीका। वह तरीका मानव जागृत होने के बाद परिवार मूलक स्वराज व्यवस्था में जीने के क्रम में उत्पादन कार्य योजना प्रमाणित होता है, जैसा मैं अपने को, समझदारी को प्रमाणित करने के उपरांत उसको प्रमाणित करने के क्रम में उत्पादन कार्य योजना को मैंने प्रमाणित किया, हमारा उत्पादन कार्य योजना को प्रमाणित करने का क्या मतलब है? हमारा आवश्यकता से अधिक उत्पादन कर देना, समृद्धि का अनुभव करना, ये इसका मतलब हैं। उत्पादन का क्या मतलब बताया? ''प्राकृतिक ऐश्वर्य पर अपने श्रम नियोजन पूर्वक, उपयोगीता मूल्य, सुदंरता मूल्य को प्रमाणित करना'' स्थापित कर देना, हम करते ही हैं रोज मर्रे में इस विधि से हम श्रम नियोजन पूर्वक उपयोगिता मूल्य, कला मूल्यों को वस्तुओं में स्थापित करते हैं, ये मानव का श्रम नियोजन का फल हैं, ये मानव कुल में ही होता हैं, सर्वाधिक यदि छोटे–छोटे बात को यदि हम निरीक्षण करें, कुछ पक्षियॉ घोंसला बनाते हैं, अपने आवास योग्य बना लेते हैं और कुछ पक्षियॉ झाड़ में कोड़र बनाती हैं, कोड़, कोड़ के कोड़र बना कर के आवास योग्य बना लेते हैं। कुछ पक्षियॉ घास से अपना घर को बना लेते हैं, किन्तु जीव जानवर प्राकृतिक विधि से जहॉ सोने की योग्य होती है, उसको खोजखाज कर सो लेते हैं, थोड़ा दिन, और जहॉ आहार मिलता है, वहॉ खोजखाज कर के खा लेते हैं, इस विधि में पेट भरने का काम जितने भी पक्षी होते हैं, चींटी है, हाथी है, सभी अपना पेट भरते ही है, सबसे बड़ी राम कथा ये ही है, कि आदमी पेट भरने योग्य नहीं हैं, ऐसा हम बिल्कुल करार देते जा रहे हैं। जब की चींटी पेट भरता ही है, हाथी पेट भरता ही है, आदमी चींटी से बदतर है क्या? पूछा जाए तो क्या कहेगें आप नहीं हैं। इसके बावजूद हमारा आवाज सभी माध्यमों से हर परिस्थिति से आदमी को अपना आजीविका को उपार्जन करने योग्य नहीं है। उसमें भी कौन नहीं है, पढ़ा–लिखा तो बिल्कुल नहीं है, क्या बात भई? शिक्षा का क्या मतलब हुआ? ये हॅसी की बात हुआ कि नहीं हुआ? यदि पढ़–लिख कर के आदमी अपने पेट भरने में असमर्थ हो जाए, इससे भद्‌गी की बात और क्या होगी, ऐसा मेरा सोचना है, मनुष्य तो इन सबसे ज्यादा विकसित पद में हैं, ये भी एक तरह से हम आकंलित करते ही हैं, स्वीकारते भी है, हॉ भाई जानवर

से हम अच्छे है, इस बात को हर व्यक्ति स्वीकारता ही है, ठीक है, चींटी, हाथी से भी अच्छे है,

ये भी स्वीकारते हैं। उतना ही नहीं, चींटी, हाथी का हाकंता भी है और कुर पशुओं को भी मार गिराता है, यह सब बाते होत हुए मनुष्य जो है ना अपने पेट भरने में योग्य नहीं है, इस बात को हम बारम्बार घोषणा करते हैं,

इसका क्या मतलब हुआ? इसका मतलब ये हुआ हमारा शिक्षा जो है, आदमी को भ्रमित करने के लिए ही शिक्षा है, आदमी को जागृत करने का शिक्षा नहीं हैं। ये इसका समीक्षा हो जाता है, इसीलिए जागृत शिक्षा को शामिल किया जाए। दूसरा उपाय ही नहीं हैं। जागृत शिक्षा का मतलब ही है, मानवीय शिक्षा। व्यवस्था में जीते हैं, तो उत्पादन कार्य योजना लागू होता हैं, तो वह परिवार आवश्यकता के आधार, क्या उत्पादन करना, और कितना उत्पादन करना वह मात्रा तय करने के लिए परिवार के अलावा दूसरा कोई आधार बनता नहीं। एक व्यक्ति में उत्पादन को आवश्यकता का आधार निर्धारित होता नहीं, मात्रा निर्धारित होता नहीं है और कम से कम यदि कोई चीज है, वह परिवार है, परिवार में हमारा आवश्यकता निर्धारित होता है, आवश्यकता निर्धारित होने के पश्चात् उससे अधिक उत्पादन करने योग्य हर व्यक्ति रहता है, हर व्यक्ति परिवार के आवश्यकता से अधिक उत्पादन करने योग्य रहते हैं, इसीलिए उत्पादन अधिक करना संभावित है, कम से कम परिवार में 2 व्यक्ति, 3 व्यक्ति उत्पादन करने योग्य रहते ही हैं। इस ढ़ंग से हम हमारा विपन्नता से मुक्त सम्पन्नता से जीने का दिन उद्य हो सकते हैं। किस आधार पर समझदारी के आधार पर, मानवीय शिक्षा के आधार पर, दानवीय, पाशवीय शिक्षा को छोड़ने पर, व्यापार शिक्षा को छोड़ने पर, लाभोन्मादी समाज योजनाओं को छाड़ने पर, कामोन्मादी मनोविज्ञान को छोडने पर और भोगोन्मादी समाज योजनाओं को छोडने पर आदमी ये मानवीय शिक्षा को ग्रहण करने पर आदमी समझदार होता है, समझदारी के आधार पर उत्पादन कार्य योजना को समृद्धी के अर्थ में नियोजित कर पाता हैं, संप्राप्ति को प्राप्त कर सुखी हो पाता हैं।

न्याय, सुरक्षा, योजना

मनुष्य का न्याय के बारे में उभय तृप्ति उसका केन्द्र बिन्दु हैं। उसमे कहीं भी कपेचनजम आता है, उसको तृप्ति बिन्दु तक पहुंचा देना न्याय का मतलब हैं। न्याय को सुरक्षित रखना, माने उस गॉव में अन्याय की कोई भी संभावना दूर–दूर से भी रोकना। जैसा कोई अव्यवस्था घटित हो जाए, अव्यवस्था से परेशान ना हो, कोई अकस्मात्, प्राकृतिक परेशानियॉ हो गई, उससे परेशानी ना हो और ये सभी बात से बचाते हुए चलने की विधा का नाम है सुरक्षा। उत्पादन कार्य में सुगमता को बनाए रखें सुरक्षा हैं। ये सभी विधि से जो काम चल रहा है, वह सुरक्षा से घिरी हुई हैं।

प्रश्न– संविधान कैसा होना चाहिए?

उत्तर– संविधान का मूल बिन्दु है, मानवीयता पूर्ण आचरण। मानवीयता पूर्ण आचरण ही संविधान का मौलिक अधिकार, स्वत्व, स्वतंत्रता, विनिमय, शिक्षा, उत्पादन, में स्वत्व क्या चीज है? मानवीयता पूर्ण आचरण, जागृति, जागृति के आधार पर मानवीयता पूर्ण आचरण। मानवीयता पूर्ण आचरण को हर देश काल में उपयोग करने की स्वतंत्रता, इस आधर पर संविधान । ये मानवीय इतिहास बनने की ध्रुवबिन्दु।

प्रश्न– राज्यनीति?

उत्तर– राज्य का मतलब 3 स्थितियॉ है, किस बात की? समझदारी को एक समझदारी के स्तर का हम नाम दिया है प्रबुद्धता। समझदारी = प्रबुद्धता। प्रबोधन करने योग्य, प्रमाणित करने योग्य अधिकार। ऐसे प्रबुद्धता का मतलब होता है, समझदारी।

प्रबुद्धता के बाद आता है, संप्रभुता। पूर्णता के अर्थ में हमारा समझदारी को उपयोगी करना, अर्थात न्याय, समृद्धि, सह अस्तित्व को प्रमाणित करना। अभी हम संप्रभुता

को कैसे बताते है, ''सभी जगह में गलती नहीं करना'' गलती नहीं करना कहॉ से शुरू हुई, भगवान, ईश्वर गलती नहीं करता, राजा गलती नहीं करता, गुरूजी गलती नहीं करते, इन 3 जगह में संप्रभुता को पहचाना गया। गणतंत्र प्रणाली आई उसके बाद, राजा तो मर गए, संप्रभुता कहॉ रहेगा? तो बताया गया अवजमते के पास रहेगा, अवजमत क्या गलती नहीं करेगा, हनतंदजमम क्या है। तब बोला गया अवजम देते समय में अवजमत गलती नहीं करेगा। बाकी ये तय नहीं हुआ राष्ट्रपति गलती नहीं करता है, चतपउम उपदपेजमत गलती नहीं करता है।

इसी आधार पर प्दकपतं ळंदकीप के समय पर आया चतपउम उपदपेजमत पर, मुकदमा नहीं चलना चाहिए। वह तमेवसनजपवद पारित किया गयां हम कह रहे हैं, समझदारी को व्यवस्था में प्रमाणित करना संप्रभुता है, सही करना = संप्रभुता। पूर्णता के अर्थ में प्रबुद्धता को प्रयोग करना।

पूर्णता क्या है, किया पूर्णता, आचरण पूर्णता के अर्थ में, हम प्रबुद्धता को प्रयोग करते हैं। राज्य क्या होता है वैभव । मानव का वैभव, मानव का वैभव = मानवीयता पूर्ण आचरण मानवीयता पूर्ण आचरण की सर्व देश काल में प्रयोग करने का मौलिक अधिकार। यही संप्रभुता का आधार हैं। सही कार्य व्यवहार करना ही राज्य हैं। इसमें मूल्य, चरित्र, नैतिकता 3 बताया हैं। तन, मन, धन रूपी अर्थ को सदुपयोग, सुरक्षा करना ही नैतिकता है। मानव अपने मौलिक अधिकार पूर्वक संप्रभुता को प्रमाणित कर लेना ही मानव का वैभव हैं। सही ढ़ंग से इसको उपयोग कर, प्रमाणित कर देना, पहचान दे देना ही संप्रभुता है। हर व्यक्ति इसको आचरण में ला सकता है।

संप्रभुता सम्पन्न व्यक्ति हो सकता है। सीमा सुरक्षा बल की जो बात कही गई है, उसका मानसिकता संविधान में ये व्यक्त किया हैं। पड़ोसी देश कभी भी हमारे ऊपर आक्रमण कर सकता है, इसीलिए युद्ध से युद्ध को रोकने की व्यवस्था देना है, राज्य व्यवस्था में, सीमा सुरक्षा के संबंध में निर्णय ये लेते हैं, और देश में हर व्यक्ति अपराध कर सकता हैं, गलती कर सकता है , इसीलिए गलती से गलती रोकना, अपराध से अपराध को रोकना, दण्ड़ व्यवस्था का मतलब ऐसा लिखा हुआ हैं। शक्ति केन्द्रित शासन संविधान का मतलब यही हैं।

स्वास्थ्य और संयम

स्वास्थ का परिभाषा यही बनता है, जीवन अपने जागृति को शरीर के द्वारा, मानव परंपरा में प्रमाणित करने योग्य स्थिति का नाम है स्वास्थ्य। इसमें स्वयं में आश्वस्त होने का आधार भी स्वास्थ्य का अर्थ में आता है। क्या आश्वस्त होना है? हमारा जागृति को हम प्रमाणित कर सकें। ये आस्वस्थ होने का मतलब, वर्तमान में विश्वास, भविष्य के प्रति आश्वस्त, जीवन शरीर के साथ आश्वस्त होना स्वास्थ हैं। जीवन अपने में आश्वस्त होने का जो बात है, वह प्रबुद्धता ही है, संप्रभुता ही है । स्वानुशासन उसी का नाम है, संयम का मतलब है, संसार में सब, नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य 6 बिन्दुएँ है, संयम के लिए–

नियम से संयम है।

नियंत्रण से संयम है।

संतुलन से संयम है।

न्याय से संयम है।

धर्म से संयम है।

सत्य से संयम है।

किससे संयंत रहना है, रहिए। संयंत रहने की 6 चीज यहॉ है। इसमें कोई ना कोई चीज में संयत रहे मानव अपना काम निकाल ले जाएगा। किसी चीज में यदि संयत नहीं रहेगा, वह पशु मानव के संज्ञा में या राक्षस मानव के संज्ञा में वह प्रमाणित होगा। एक में संयत होने से बाकि एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई कडी है, नियम ठोस, ठोस के साथ, तरल, तरल के साथ, विरल, विरल के साथ, सह अस्तित्व में होना ही नियम हैं। पदार्थ वस्था, प्राणावस्था के लिए पूरक होना ही नियंत्रण है, प्राणवस्था, पदार्थावस्था के परस्परता में पूरकता प्रमाणित होना ही नियंत्रण है । जीवावस्था और ज्ञानावस्था में पूरक होना ही नियंत्रण है। नियंत्रण का मतलब पूरकता के अर्थ में ,

मनुष्य नियम पूर्वक रहेगा तो कैसा रहेगा, प्राकृतिक नियम, सामाजिक नियम, बौद्धिक नियम के साथ नियंत्रित रहेगा। बौद्धिक नियम में नियंत्रित रहते हैं। सुख का कल्पनाऍं, सुख पूर्ण विचार, सुख पूर्ण संकल्प, ये सब चीज हमको मिलता रहेगा। फलस्वरूप ऐसे हम काम करने योग्य होते हैं। सामाजिक नियम को पालन करने से क्या होता हैं?

स्वधन, स्वपुरूष, स्वनारी विधि से जीना बन जाता हैं। ये सामाजिक नियम का मतलब हैं, इतना में जीया जा सकता है कि नहीं जीया जा सकता। आप ही सोच लो,

इसमें यदि रहते हैं, तो हम मानव परंपरा में नियंत्रित रहते हैं। परस्परता में नियंत्रित रहते हैं। इससे क्या उपकार हुआ। संबंध को निर्वाह करने का अधिकार आ गया। यदि ये चीज नहीं होगा, संबंधो को निर्वाह करने का अधिकार कतई नहीं आना हैं। इसीलिए मनुष्य को कहीं ना कहीं संयत रहने की आवश्यकता हैं। नियम नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य, इतना ही संयमता की सीढ़ियॉ हैं। इस विधि से जीना शुरू करते हैं, बाकी सीढियॉ हम पार कर जाते हैं।

वास्तुशास्त्र, ऊर्जा, चुम्बकीय बल

प्रश्न– वास्तुशास्त्र क्या हैं?

उत्तर– गुरूकुल परंपरा जब से शुरू हुई, तब से वास्तुशास्त्र को विद्यालय में पढ़ाने की व्यवस्था हैं। उसके पहले शिल्प नाम की बात थी। शिल्पशास्त्र, शिल्पशास्त्र के बाद वास्तुशास्त्र आया। शिल्प का मतलब ये परिभाषा दिए थे, कोई चीज की गढ़ना, उभारना, जैसे मिट्टी से कोई चीज को गढ़ा भी जाता है, उभारा भी जाता हैं। एक समतल से ज्यादा ऊपर आने वाली चीज को उभारना कहते हैं। समतल से नीचे जाने वाली चीज को गढ़ना कहते हैं। इस बवदबमचज को शिल्पशास्त्र के युग में बहुत अच्छे ढ़ंग से लोगों की हृद्यगंम कराया । उस समय भी घर बनाते रहे, और बड़े–बड़े इमारतें को बनाते रहें। ये सब होता ही रहा और उसके बाद आया वास्तुशास्त्र, वास्तुशास्त्र में ये समावेश किया, हवा, पानी, ऊर्जा का ध्यान रखा ही हैं, स्वास्थ्य को ज्यादा ध्यान रखा है। वास्तुशास्त्र में मनुष्य का स्वास्थ्य और निवास के साथ जोड़ हैं। मंदिरों मैं क्या जोड़ हैं?

मंदिरों में ये हैं, जहॉ प्रधान कक्ष होती है, उसका अत्यन्त सुरक्षित होना, ठंड़ी, गरमी के ऋतुओं में सुखद परिस्थिति बना रहना, उसको ऐसा सोचा गया। अब इसके साथ दिशा जुड़ी, दिशाओं में ये माना जाता है, मंदिर का कक्षा और जो कपाट होता है, वह निकलने की द्वार किस ओर होना चाहिए? किस ओर नहीं होना चाहिए? ये सब बात सोचा जाता है। दिशा के बारे में अभी तक का जो अवधारणा है, पूर्व के ओर, उत्तर के ओर, द्वार होने की बात ज्यादा सोचा। मंदिरो में जो बात आई वह भी उपासना के आधार पर आई। उपासना दो भाग में बंट गई, एक दक्षिणाचार विधि, एक वामाचार विधि, एक कहे पूर्व के ओर द्वार होना चाहिए, दूसरे कहते है नहीं वह पश्चिम की ओर होना चाहिए। इसके बावजूद अपन इस जगह में समीक्षित कर सकते हैं। जिस अर्थ के लिए स्मारक बनता है, वह स्मारक का अर्थ सुरक्षित रहे। ज्यादा दिन, ज्यादा टिकाऊ हो सके और लोगों को सुरक्षा पूर्वक आवागमन बना रहे। ये स्मारक के बारे में सोचने की बात का ध्रुवीकरण होगा। उसके बाद बहुत सारा शिल्प कला उसमें स्थापित हुई। स्थापित होने के बाद वह कम से कम क्षरण हो, क्षरण विधि को रोकने का भी वास्तु में ध्यान दिया था। कम से कम क्षरण हो, ज्यादा से ज्यादा दिन तक टिकाऊ रह सके। उसके आधार पर उंजमतपंस को सोचा गया। पहले ज्यादा शिला का स्मारक स्थापत्य होती थी, शिला से संबंधित जितने भी आकार प्रकार बनता था, उसमें कम से कम क्षरण होता था। उसके बाद मिट्टी को वास्तु में स्थापित करने वाली बात आई।

और चूना, ईटा, पत्थर है ये सब आने लगी। वास्तविकता का मूल मुद्दा में स्वास्थ्य पहले, स्वास्थ्य रहे सके इस घर में रहकर, स्वास्थ्य रहने के लिए घर का आवागमन कैसे हो सकती है, उजाला का आवागमन कैसे हो सकती है,

सुविधा की स्थिति कैसे हो सकती है। 3 बात को ध्यान में रखें। ये हुआ घर के भीतर होने वाली सुविधाओं के बारे में। उसके बाद घर से जुड़ी हुई पानी किस दिशा में आना चाहिए? पाकशाला कहॉ होना चाहिए? शौचालय होगा तो किस दिशा में होना चाहिए? ये बात को ध्यान दिया। अब इसमें भी द्वन्द्व हो गया, पहले सोचा गया था नैऋत दिशा में शौचालय होना चाहिए। अब कहा जा रहा है वह आग्नेय दिशा में होना चाहिए। बिल्कुल ंहंपदेज नैऋत का ंहंपदेज इशान में हो गया। एक व्यक्ति ने बोला पानी का दिशा, उत्तर और पश्चिम के बीच के कोने में होना चाहिए, दूसरा आदमी बोलता है, आग्नेय दिशा में होना चाहिए। जल से आग पैदा हुआ है, जल अग्नि दिशा में होना चाहिए।

इसको हम अभी आज क्या करे? वाला बात हैं? आज की स्थिति घर बनना चाहिए, घर में जो लगी हुई उंजमतपंस कम से कम क्षरण होना चाहिए, बारम्बार त्मचंपत की नौबत नहीं आना चाहिए। आदमी को सुविधा पूरा होना चाहिए। हवा, पानी, रोशनी ये सब चीजे और जो आने वाले आते हैं, बैठने वाले बैठते हैं। ये सभी चीजें के लिए ध्यान दे कर ही अपने को ये वास्तु विद्या को विकसित करने की आवश्यकता हैं। अभी तक की जो ज्तंकपजपवदंस वस्तु है, वह काफी वनजकंजमक हो चुका है। हर जगह में वह चल नहीं सकता, कई जगह कई बात को`पकम करना ही पड़ता है, यह चवचनसंजपवद चतवइसमउ के आधार पर आ गई। अब एक घर के साथ घर सट गया। जब वास्तुशास्त्र का शुरूआत हुआ, एक घर के चारों तरफ मैदान है, इस विधि से शुरूआत किए। अब एक दीवाल से दूसरा दीवाल सटा हैं। इस प्रकार की स्थिति मे अभी वास्तु को यही सोचने की आवश्यकता है, जहॉ कमदेम चवचनसंजपवद है। उसीको ध्यान में लाना होगा और उसके साथ ये आवश्यकता है जो हवा, पानी, उजाला को व्यवस्था को एक बवउउवद भाग के रूप में प्रयोग करने की आवश्यकता, पहले पानी के लिए कुऑ कि बात थी, अब तो कुऑ की जगह नल हो गया या इवतमूमसस हो गया। इवतमूमसस जो है, जिस दिशा में हम कहेगें, उस दिशा में पानी नहीं होगा तो क्या करेगे? जहॉ पानी मिलेगा वहॉ बनाना पड़ेगा। कहने का मतलब पहले की जो ज्तंसपजपवदंस वास्तु के जगह में जो बाधाएँ आई हुई थी अब बाधा का क्या करोगे? अगर ज्तंकपजपवद को करेगें तो कुछ कर नहीं पाएगें। उसके लिए हमारा सहमति यही है। दिशा स्पष्ट होना आवश्यक है, हर वास्तु में शहरों में यह भी एक कष्ट है। दिशा स्पष्ट रूप में श्शुरूआत ही नहीं हुआ हैं।

पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण के आधार पर सभी इमारत बनेगें। ऐसा बन ही नहीं सकता । अब यही किया जाए, हवा, उजाला, दो को प्रधान रखा जाए। उसके बाद उंजमतपंस का जो कुछ भी आप सोचते हो, उसको कम से कम क्षरण हो इस पर ध्यान दिया जाए। सबकी ंकवचज होने वाली वास्तु का ये बात हुई । अब रह गया उसका विनदकंजपवद की बारे में, विनदकंजपवद के बारे में हमारा सोचना ऐसा है, पहले की जो विनदकंजपवद की बात थी,

जिस जगह में हमको घर बनाना है, स्मारक बनाना है, देवालय बनाना है, नाभी मात्र जगह को कोड़ कर बाहर करो। उसमें जली हुई मिट्टी को भरों, ये कहा है? क्या अभी संभव है, यदि कर सके तो बहुत अच्छा काम। जली हुई मिट्टी मतलब, लाल मिट्टी

मुरूम को माना जाता है। अभी की स्थिति में यदि वह कर सकेगें, स्वास्थ के लिए अत्यन्त उत्तम। नीचे से जो प्रभाव पड़ता है`नतबिम पर। उसमें बहुत उपकार होगा।

प्रश्न– बाबा जैसे चूल्हा रहता है, ईटा रहता है, उसको जली हुई मिट्टी मानेगें।

उत्तर– ऐसा है ही, ईटा का चूरा हो गया या कुछ और। नाभी मात्र निकाल कर देखने को बोले हैं, उसमें वजन है। वह आचरण में आ भी सकता है। आदमी को यदि उसका फायदे से लाभ उठाना है उस ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। उसके बाद आता है, सुविधा, सुविधा के लिए ही तो घर बनता है। पहले की सुविधा को जो परिकल्पना थी, सम्मिलित परिवार, उस समय में सोने, पढ़ने, शयन गृह, कमेपहद करने की तरीका दूसरा था आज की स्थिति में दूसरा हैं। धरती के`नतबिम से नीचे के जगह में जो कुछ भी निर्देश दिया है, उस को विससवू करने की कोशिश होना चाहिए। वास्तुशास्त्र के मूल ग्रन्थों में इसको मैंने पढ़ा है। देवालय में बहुत ज्यादा उसको बल दिया है। गृह को स्वच्छ बनाने के लिए आप भी किसी ना किसी प्रकार से सोचते ही हैं। स्थान शोधन के बारे में पहले बात हुई हैं। स्थान शोधन के बारे में जहॉ उपकार वाला बात होता हे, उसको पहचानने के लिए, दिया जलाओं, नही तो हवा का रूख देखों, उसमें कोई ना कोई चीज आप प्रयोग करोगे ही, करना भी चाहिए हमारे अनुसार इसके साथ ज्यातिषी को जोड़ दिया । इस राशि वालों के लिए इस प्रकार के आकार के घर में सोना चाहिए। उसको आय कहते रहे, गजाय, सिंहाय, ऐसा सामने का घर किस आय में है, उसका विरोधी ना हो ऐसा घर बनाओं परिवर्तन कैसा देख लो। अभी इसको शायद खतम कर दिए है।

प्रश्न– इसका अर्थ क्या है। गजाय, सिंहाय।

उत्तर– सिंहाय का उमंदपदह जो है ना चीलेपबंससल हम उमंदपदह जो पाते रहे आगे भाग चौड़ा है, पीछे भाग पतला है। उसके विपरीत, आगे भाग छोटा है, पीछे भाग बड़ा है ये कमेपहद के बाद घर का मुहॅ बनाते हैं। देखने पर ऐसा मिमसपदह होता है कि एक हाथी जैसा घर है, उसका मुख का मुद्रा जो बनाते हैं। वास्तु का मुख मुद्रा बनाने का जो विधियॉ है, उसमें वह उभरती है। इस ढ़ंग से आकृति के लिए जानवरें के आधार पर आकार को सोचा गया। उसके बाद शनैः–शनैः वह बात धूमिल होती गई धूमिल होते होते अपने सुविधा के अनुसार बनता गया। पहले के उंजमतपंस के स्थान पर दूसरा

उंजमतपंस हो गया। फैली हुई संसार से सटी हुई संसार में आ गए। उस स्थिति में अपने को वास्तु को सोचने की आवश्यकता। इसमें और एक प्रयोग करते रहे, घर का वस्तुओं का सुरक्षा के लिए चुम्बकीय द्रव्य को छत के तल में लेप करने की बात कहीं थी। उसमें पम्पापती नाम का एक जगह है, वहॉ एक`जतनबजनतम थी। एक शंकर जी का मंदिर। उस मंदिर के सामने एक नंदी बनाने की अभ्यास थी उस मंदिर में क्या किया वह नंदी कहॉ रखा हैं? वहॉ एक चौकर आयतन बनाया, उसको गहरे–गहरे 5, 10,`जमच गये ऊपर। और नीचे वैसा उभार के लाया, बीच में वह नदीं का स्थान है। वह जो बैल का प्रतिमा है, वह नीचे धरती को छूआ नहीं है, सब लोगों को लगा ये अधर में कैसा टंगा है। सब को तोड़े, ताड़े कुछ भी नहीं मिला। अन्ततगत्वा हमने प्राचीन कालीन वास्तु में पढ़ा चुम्बकीय द्रव्य नाम दिया हैं, चुम्बकीय द्रव्य को यदि गोपुर में, उतना लगया जाए, इसमें जो प्रतिमा बनाते हैं, चुम्बकीयता प्रभावित होने वाले द्रव्य से उसको अभिभूत कराया जाए। कैसा अभिभूत कराएगें, वह जमबीदपुम उसमें वर्णित नहीं था, वह दूसरे कोई संहिता में रही होगी, चुम्बक स्वभाव तय कोई चीज को खिचंता ही है, उसी विधि में उसको पिग कर दिया। नीचे भी चुम्बकीय द्रव्य है, ऊपर भी हैं, ये इसको कहीं ऊपर भागने भी नहीं देता है, नीचे बैठने भी नहीं देता हैं और उसके कुछ दिन बाद ळमतउंदल के मगचमतजे आये, इसका तो हो हल्ला होता ही रहा। उसके बाद वह लोग नीचे में कुछ, ऊपर में कुछ तोड़ने लगे तो बैठ गया। इसमें कई प्रकार की चमत्कारिक बात लिखी भी है, वह होता भी है। मैं समझता हूॅ, पिरामिड़ में रहने वाले ममी में वही चमत्कार है, यदि कोई ऐसा`पजनंजपवद पैदा किया जाए और चुम्बकीय धारा प्रभावित वातावरण बनाया जाए, उसमें कोई भी द्रव्य को रखेगें, बहुत जल्दी वह सड़ेगा नहीं। चुम्बकीय वातावरण में कोई भी वस्तु रखेगें, उसमें परिणाम बहुत दीर्घ परिणाम होगा। जैसा सब्जी रखा है, सब्जी तो 24 घंटा में सुख जाना चाहिए। वहॉ 48 घंटा, 4 दिन वैसे के वैसे पड़ा रहेगा।

प्रश्न– बाबाजी, जब की वास्तुशास्त्र में ऐसा है कि चुम्बकीय वस्तु का प्रयोग करे, उसका तमेंवद ये देते है, कि पतवदसे इवकल में इंकमंमिबज पड़ता हैं।

उत्तर– उसके साथ यह भी कहते हैं कि गाज गिरने पर कपेजनतइ हो सकता हैं।

प्रश्न– जैसा पिरामिड़ है, 1500 साल से 3000 साल लगभग पुराने है, अभी तक बिजली गिरने वाली कोई दुर्घटना, उनके ऊपर नहीं हुई?

उत्तर– बिजली के लिए पहले से भी बात ये सोचे गए थे, आप ने देखा होगा, बड़े–बड़े इमारतों में क्या किए हैं, ऊपर त्रिशुल जैसी एक चीज बना देते हैं, वहॉ से ले के धरती तक वह तवक बराबर आया रहता हैं। विनदकंजपवद के नीचे ले ना कर छोड़े रहते हैं। `वनजीमें जितने भी मंदिर का गोपुर बना हुआ है, गोपुर के ऊपर वह आकार दिखता है, उसको मंदिर का विनदकंजपवद जितना गहरा गया, उसके नीचे तक ले गए और कोई कोई ताम्बें को भी ले गया है। लोहा की अधिकांश ले गया है। मदुराई में एक मीनाक्षी मंदिर है, उसमें जो रखी हुई है त्रिशुल, वह ताम्बे का रखा है। अभी सबसे पहला बात सुविधाजनक घर बनाया जाए कमदेम चवचनसंजपवद में आप जहॉ चाहते हैं, वहॉ पानी भी नहीं हो सकती, ये हो सकता है, पाक गृह कहॉ हो वह बात को आप`मज कर सकते हैं, शौचालय कहॉ हो ये बात`मज कर सकते हैं। यह आप नहीं कर सकते इस दिशा में घर का दरवाजा को बनाया जाए। दरवाजा जहॉ बनने की जगह है, वहीं बनाओगें। छोटा घर में ऐसा होगा, बड़ा घर में जहॉ चाहों दरवाजा निकाल सकते हो।

प्रश्न– कई बार जैसे आर्थिक समस्या कुछ हो, हम दरवाजा पूरब से उत्तर कर दिए, उत्तर से पश्चिम कर दिए। इसमें फर्क आ जाता हैं, ऐसा अभी तक अनुभव में आया है, कही ना कही ऊर्जा में फेर है, सकारात्मक ऊर्जा, नकारात्मक ऊर्जा ।

उत्तर– ऐसा तो होगा ही, इसमें 2 राय नहीं है। परिस्थिति बनती है, छोटा घर है,? हम एक जगह में गए थे। हमसे मिलने वाले है, रस्तोगी जी, उनका पूरे घर का चौड़ाई है 10 मिमजण् वह 80 मिमज लम्बी एक तंपसूंल ड़ब्बा हैं। एक दिवार से एक दिवार सटी हुई हैं। और केवल आगे खुला है, आकाश दिखता है, आकाश भी कहॉ दिखता है, सामने का घर दिखता है, पीछे खिड़की है, उसमें भी घर ही दिखता हैं। अब उसमे कैसा घूमाओगें, आप बताओं ऊर्जा को कैसा घूमाओगें।

प्रश्न– जो प्रचलीत वास्तुशास्त्र है, उसमें जो भी ऊर्जा का सिद्धान्त है, ऊर्जा वस्तु के रूप में क्या है।

उत्तर– ऊर्जा यही है, ग्राही और संप्रेषणी तत्व को पहचानने की बात, कहॉ से संप्रेषणा होता है, कहॉ ग्रहण होता है, हवा पहले, कहॉ से आता है, कहॉ जाता है, हवा का संचार तो पहचाना जा सकता है, ना। बाकी ऊर्जा को पहचानने का एक ही विधि आप हमारे

पास हैं कि उत्तरी ध्रुव, दक्षिण ध्रुव के सिधान में। जिसको हम बोलत हैं ना उत्तर की ओर सिर मत करो।

उजाले की बात जो बताते हैं, उसको तो ध्यान रखना ही हैं। घर के अंदर सूर्य रोशनी सीधा आना चाहिए। सामने की जो द्रव्य राशि हैं। परिस्थिति है, दुकान रहेगा, मकान रहेगा, गंदगी रहेगा। उसके ऊपर से गुजरना हुआ उजाला, हवा के साथ ही जाएगा या तंकपजपवद जाता है, मान लो तंकपजपवद की ना गंदा लगता है, ना धुऑ लगता है, कुछ नहीं लगता। इन सब से चिरफाड़ कर जाने वाली चीज को हम तंकपजपवद कहते हैं। अभी जो ग्तंल देखते हो तंकपजपवद ही उसको ले जाता है। विकिरणीय रोशनी में चपब आता हैं। हवा के साथ सूर्य उष्मा में रूप में जो कुछ भी भीतर पहुंचता है, अन्ततगत्वा उष्मा के रूप में ही पहुंचेगा। `बपमदजपपिबसल सवहपबंससल दोनों विधि से यही निकलता है। उसके बारे में सोचने की बात उष्मा इधर से घूसना, सुखद है, उधर से घूसना सुखद है, इसको सोचने की बात। उसके लिए सामने की परिस्थितियों को बवदेपकमत करने की आवश्यकता ।

प्रश्न– जो भौतिक ऊर्जाऍ मानी जा रही है, जैसे प्रकाश है, ताप है, ध्वनि है, या चुम्बकत्व है, गंध है, इन चीजों के अलावा और कोई दूसरे प्रकार का ऊर्जा नहीं बनती? दरवाजा को घूमाने से या कुछ और करने से?

उत्तर– हमको जो समझ में आया है, मूलतः ऊर्जा को जो है, ऊर्जा संचार, उत्तर, दक्षिण से ही सम्बन्धित हैं। उंहदंजपब चसवम से ही है। ये `मबवदकंतल है।ये जो सूर्य के बारे में कहते हो, उसके बाद हवा के बारे में , ये सब चीजें ठीक हैं। किन्तु मूलतः ऊर्जा संचार उत्तर, दक्षिण विधि से ही हैं। उंहदंजपब वितबम ही निरंतर सब जगह अलग अलग ंअंपसंइसम होता रहता हैं।

प्रश्न– मतलब ऐसा कोई ऊर्जा नहीं बन रही है, जो मनुष्य के विचारों को परिवर्तित कर दे। जैसे रोशनी से गर्मी से परेशान होना, रात को रोशनी रहेगी तो परेशान होगा ये अलग बात है ।

उत्तर– मनुष्य में ऊर्जा संचार समझदारी के आधार पर है। ये आपका वास्तुशास्त्र से बायकाट हुआ । ये तमतिमदबम चवपदज ये है। मनुष्य का समझदारी मनुष्य का ऊर्जा है। एक भी मनुष्य आप नहीं पाओगें समझदारी विहिन हो। ये ऊर्जा संचार हर व्यक्ति से

निकलती है। उसमें बव.वतकपदंजपवद के बारे में आते हैं। समझदारी के मुद्दे पर ही एक दूसरे के साथ बव.वतकपदंजपवद है। नासमझी त्र दवद बव. वतकपदंजपवद उसका चतवकनबजपवद आलस्य, प्रमाद, बेवकुफी फलस्वरूप दरिद्रता । अभी सर्वाधिक लोग यही सोचते हैं कि ये घर ठीक नहीं है, क्योंकि वहॉ कलह होता रहता है। घर ठीक नहीं है, शांति नहीं रहता, घर ठीक नहीं है, पनपते नहीं हैं, घर ठीक नहीं है, स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है, घर ठीक नहीं है, हाथ में जो कुछ भी आता है, वह टिकता ही नहीं है। ऐसा लोकोक्ति सुनने में आता है। ये क्या है ऊर्जा का असंतुलन क्या ऊर्जा का असंतुलन। मनुष्य का समझदारी नाम का ऊर्जा है, उसमें असंतुलन। आपका समझदारी से मेरे समझदारी का छत्तीस का आकड़ा है, झगड़ा नहीं करेगें तो क्या करेगें।

प्रश्न– देखने में आता है, वास्तुशास्त्र के अनुसार परिवर्तन करने के बाद रिश्तें में काफी सामंजस्य आ जाता है?

उत्तर– तुकबंदी वाला बात तो बहुत कुछ है, सोचने की दिशा कैसे आता है, आपका कथन के अनुसार जैसा एक आदमी को टी.बी. हो गया। उससे सभी परेशान है। वह दिशा परिवर्तन करने से क्या टी.बी. ठीक हो गया। मेरे अनुसार तो होता नहीं। वह दवाई से ही ठीक होगी। घर में रोग को देखने का प्रधान काम है, हवा, उजाला, उष्मा का संचालन। ये 3 के ऊपर कमचमदक है। मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहना नहीं रहना। स्वास्थ्य यदि बिगड़ता है। दवाई बिना, दरवाजा को बदल दिया तो स्वास्थ्य ठीक होता है, ऐसा होता है।

प्रश्न– ऐसा देखने में तो आता है, एकदम से तो नही, एक हद तक आता हैं।

उत्तर– ये ठीक है, अभी जो कह रहे ही सांत्वना लगाने की बात हो सकती है। उसमें हमारा कोई भी शंका नहीं है। इस प्रकार की बात हम भी देखे हैं। वास्तविक तत्व को कैसा पकड़ा जाए। हमने जो समझा है, हर जगह में आदमी स्वस्थ रहने का जो तरीका हे, वह समझदारी है। मूल ऊर्जा वह है, मानव से उगलने वाला ऊर्जा यही है। नासमझी से झगड़ा होता है, रोग होता है, परेशानी होती हैं, तमाम प्रकार का झंझट होता है।

ये आपकी बवदेपकमत में आता है कि नहीं आता हे, हम नहीं जानतें। आपके स्वयं का स्वीकृति में आ पाता है, नहीं आ पाता हम इसको पहचान नहीं पाते। आपका बवदबमचज और मेरा बवदबमचज ये दोनों में तालमेल की आवश्यकता हैं। एक दूसरे के बवउउनपदपबंजपवद में मेरा सोचना हैं।

प्रश्न– पहले जो घर बनाए जाते थे वह एक तरीके से होते थे, या उनके जो दरवाजा है करीब–करीब आपस में मिलते हैं। जैसे 2 कमरे हैं, एक कमरे में क्या हो रहा हैं, दूसरे कमरे को थोड़ी बहुत जानकारी रहती थी। आज कल ऐसा कमरा बनाते हैं कि एक कमरे वालों को दूसरे कमरे के बारे में कोई खबर ही ना रहें। कमरे में भी रहे और बिल्कुल घर से अलग रहे। इसमें कौन सा ठीक हैं। पहले चतपअंबल नाम का चीज नहीं रहता था, घर में है मतलब पूरा घर से जुड़ा है।

उत्तर– एक दूसरे को बवउउनदपबंजम करने वाली `जतनबजनतम ज्यादा अिवनत हैं। और उसमें मनुष्य को ज्यादा आश्वस्त रहने की विधि है।

प्रश्न– वास्तुशास्त्र संरक्षण के लिए है, वास्तुश्शरीर को संरक्षित करना है, जीवन जागृति को प्रमाणित करता है। जीवन जागृति के बारे में हम कब सोचते हैं। घर का खूबसूरती के लिए ज्यादा सोचते है, यहॉ हम आ गए है। अभी हमारा मित्र है, कानपुर में उनका लड़का बंइपद में गोली खा कर के`नबपकम कर लिया और उसी के बगल में थे, लोग सोते रहे, बैठे रहे, भनक तक नहीं लगा,

घर में एक दूसरे की कराहने पर, खॉसने पर कोई दुख सूचक, परेशानी सूचक किसी का मदद का आवश्यकता को सूचना, ये दूसरे को बवउउनदपबंजपवदनहीं होगा तो क्या होगा।

प्रश्न– अभी का नया मकान बनाने का जो बनसजनतम है ये आदमी के किस प्रवृत्ति के कारण ऐसा श्शुरू हुआ?

उत्तर– भोगोन्माद, इंजी तववउए इमक तववकए ापजबीमद के लिए समर्पित है, आदमी ।

प्रश्न– जैसे अपने पास 4 दिशाएॅ है, पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, ऐसा मानते हैं, अलग–अलग दिशा से अलग अलग विचारों की ऊर्जा आती है। जब की चारेा तरफ ऊर्जा एक ही होगी। तो ऐसा क्यों हैं?

उत्तर– ये निदकं ही गलत हो गई। मनुष्य अपने में से विचारों को उत्सर्जित करता है। माने संप्रेषित करता है। विचार हवा से आता नहीं हैं।

प्रश्न– ऐसा माना जाता है कि मनुष्य के विचार के लिए पूरा वातावरण जिम्मेदार है।

उत्तर– स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार है वातावरण, विचार के लिए केवल मनुष्य ही जिम्मेदार है।

प्रश्न– जागृति से पहले भ्रमित अवस्था में आस–पास का जो वातावरण है, आस–पास के जो रहने वाले लोग हैं, वह भी आदमी के विचारों को प्रभावित तो करते ही हैं।

उत्तर– ठीक है आदमी से आदमी प्रभावित होता है ना।

प्रश्न– वस्तु से भी प्रभावित होता है?

उत्तर– विचार कैसा वस्तु से होता हैं, जैसा गंदगी पड़ी है।

प्रश्न– तो घृणा होती हैं?

उत्तर– घृणा करते रहो, घृणा आप ही व्यक्त करोगे। कचरे में तो घृणा नहीं है ना। वातावरण से, कचरा, गंदगी से शरीर प्रभावित होता है। घृणा आप क्यों करते हो। जिससे आपके स्वास्थ पर प्रभाव ना पड़े। सच्चाई तो ऐसे ही हैं।

प्रश्न– पूर्व दिशा के मकान में जो लोग रहते है, उनमें ईमानदारी होती है, अधिकार प्राप्त करते हैं । पश्चिम दिशा में रहने वाले में क्षत्रिय गुण ज्यादा। इसको नकार नहीं सकते। उत्तर के तरफ वाले श्शांति प्रिय होते हैं। ये केवल सुनी सुनाई बाते नहीं हैं। अलग अलग दिशा में अलग अलग प्रभाव पड़ता है।

उत्तर– हम एक धर्मशाला में रहते है, हम जिस धर्मशाला में रहते हे, उसका दरवाजा पूर्व की ओर हैं। उसमें एक बवउचंतजउमदज है। जिसका दरवाजा उत्तर की ओर है। इन दोनों को यदि बवउचंतमकरके `जनकल किया जाए । आप स्वयं मूल्यांकन कर सकते हैं।

सर्वाधिक झगड़ा जो है, उत्तर की ओर जो मूहॅ है, वहीं रखी है। हमारा जो बवउचंतजउमदज है , वह भी पूर्व की ओर है, हमारा बगल में एक ओर बवउचंतजउमदज है वह भी पूर्व की ओर है। उनका दिमाग की बत्ती खसक गई। उस बवउइपदंजपवद में

हम हैं, ये 70, 80 वर्ष पहले बनी हुई एक धर्मशाला है। व्यक्ति के साथ ये बात जुड़ा है, वास्तु के साथ जुड़ा है। आप श्शोध करों। आप आ के हमारे साथ रहो, वहॉ अध्ययन करो। वास्तविक मनुष्य में निहित है श्शांति अशांति, वास्तु में निहित है। वास्तविक मनुष्य में संपदा, विपदा रखी हुई है या ये ईटा, पत्थर में रखा हुआ है। इसको कमबपकम करना पड़गा, तमेमंतबी करना पड़ेगा। मनुष्य में श्शांति अशांति हैं। ईटा, पत्थर, हवा में नहीं है। वास्तु श्शास्त्र में ऐसा कह रहे हैं, ईटा, पत्थर श्शांति का कारण है, ये हॅसी का जगह है या नहीं , मनुष्य पत्थर ईटा से विकसित है। जैसे पत्थर ईटा से झाड आगे है कि नहीं, झाड़ में जो फल आता है, ईटा से निकलता नहीं है। मनुष्य में ही शांतिप्रियता, समाधानप्रियता, न्यायप्रियता हैं। किसके आधार पर, समझदारी के आधार पर, ना समझी के आधार पर हम प्रताड़ित होते हैं।

प्रश्न– चुम्बकीय धारा जो उत्तर, दक्षिण, ध्रुवी के बीच बहता है, वह जो प्रत्येक घर में बहेगा, तो इसका उपयोग श्शरीर का स्वास्थ के लिए या रोग ना हो उसके लिए किस तरह से काम करता हैं?

उत्तर– चुम्बकीय धारा के बीच में, चुम्बकीय धारा चारों ओर से हो, वह उस वातावरण में मनुष्य ज्यादा सुरक्षित है, मनुष्य माने, मनुष्य श्शरीर।

प्रश्न– आपने पिरामिड़ में चुम्बकीयता के बारे में बताया, जबकी पिरामिड़ में कोई धातु उपयोग नहीं करते हैं।

उत्तर– धातु का बात नहीं, चुम्बकीय पत्थर भी होता है। आपको जो बैला वाला बात बताए, अंत में वह स्वयं चुम्बकीय पत्थर हैं। ऊपर–नीचे जो लगाए थे वह भी चुम्बकीय पत्थर, उंहदपजमब`जवदम । बैला चुम्बकीय प्रभाव से प्रभावित होने वाला वस्तु । ममी के दो जमबीदपुम हैं।

1. मृतक के ऊपर लेप करने की एक निश्चित लेप हैं।
2. यही है जो रचना आप जो पिरामिड़ जैसा बना करके उसके अंदर सब्जी रखों, दूसरा उसके बगल में रखों जो पिरामिड़ जैसा नहीं है। देखी कौन सा जल्दी सुखता हैं।

प्रश्न– जो प्रयोग किया गया ग्रेनाइट के पिरामिड़ मैं अच्छा परिणाम देखा गया।

उत्तर– ठीक बात है, फिर भी हमारा ऐसा कहना है, आदमी समझदारी से सुखी होता है, नासमझी से दुखी होता है।

श श स्थिति, गति, बल

प्रश्न– भौतिक शास्त्र का एक प्रश्न है, न्यूटन का नियम है, उसमें कहा गया है, यदि कोई वस्तु स्थिर है, तो वह स्थिर ही रहेगी। यदि कोई वस्तु गतिशील है तो गतिशील ही रहेगी। उसमें परिवर्तन के लिए कोई बाहरी बल लगाना पड़ेगा।

उत्तर– स्थिरता जो है, एक गतिशील वस्तु में ही स्थिरता को देखना बनता है। गतिशील वस्तु में कोई चीज वस्तु रखा हैं, जैसा धरती है, गतिशील है, उसमें ये वस्तु रखा है। जैसे बंउमतं । ये स्थिर है, इसको बदलना होगा। तो ये आदमी हाथ लगायेगा, तभी बदलेगा, इस आधार पर कहा हैं।

प्रश्न– अलग से यदि हम बोलते हैं, कोई वस्तु स्थिर है तो स्थिर ही रहेगी, अस्तित्व में स्थिर वस्तु नहीं मिलती।

उत्तर– अस्तित्व में स्थिर वस्तु नाम की कोई चीज नहीं है। हर वस्तु गतिशील, स्थितिशील है, स्थिति गति अविभाज्य है। जिस वस्तु का स्थिति है, उसक गति होता ही हैं। जितने ग्रह गोल हैं सभी का सभी इसी सिद्धांत से हैं। उसी ग्रह गोल के कोई वस्तु को, हम इसी ग्रह गोल का टुकड़े तो हैं। इसको हम कहते हैं, वस्तु रखा हुआ है। वस्तु इसी ग्रह गोल का तो है। इसी ग्रह गोल का कोई छोटे से टुकड़े को उधर से इधर करना होगा तो कोई बल लगता हैं।

प्रकाश और ताप

प्रश्न– प्रकाश क्या चीज है?

उत्तर– प्रत्येक वस्तु प्रकाश मान है, हर वस्तु प्रकाश मान है, एक परमाणु अंशों से परमाणु, परमाणु से अणु से अणु रचित पिण्ड़, हर प्राणकोषाएँ, प्राणकोषा से रचित हर रचना प्रकाश मान है। व्यापक वस्तु भी नित्य वर्तमान है। प्रकाश मान है एक एक वस्तु और व्यापक वस्तु वर्तमान है। पहचान प्रस्तुत करता रहता हैं अपना।

प्रश्न– क्या व्यापक अपना पहचान प्रस्तुत नहीं करता ?

उत्तर– करता है ना, वर्तमान पहचान नहीं है, तो क्या है? प्रकाश मानता सीमाएँ है। व्यापकता वर्तमान है, हर एक वस्तु वर्तमान भी है और प्रकाश मान भी है। अपने अलग पहचान को प्रस्तुत करता है, इस वर्तमानता और प्रकाशमानता के मूल में विज्ञान उस जगह को टटोल पाया नहीं टटोल पाया हम नहीं जानते। मूल तत्व हैं, व्यापक वस्तु में एक एक वस्तु संम्पृक्त रहना। सम्पृक्त रहने का फलस्वरूप इनमें ऊर्जा सम्पन्नता, बल सम्पन्नता बना रहना, ऊर्जा सम्पन्नता, बल सम्पन्नता बने रहने का प्रमाण ही हैं, क्रियाशीलता, क्रियाशीलता का व्याख्या है, श्रम, गति, परिणाम। ये श्रम गति परिणाम के साथ 5 शक्तियों का पहचान, जैसा की ध्वनी, ताप, चुम्बकीयता, भार, विद्युत का पहचान मनुष्य को हैं।ये पॉचों प्रकार की पहचान, एक ही परमाणु में होता है, इसीलिए हर वस्तु, ये अस्तित्व में जितने भी वस्तु आपको दिखता है, सभी का सभी परमाणु का ही रचना हैं। इन पॉचों चीज होने के आधार पर ये एक दूसरे को पहचानते भी हैं, स्वयं का पहचान दूसरा करता भी हें। मनुष्य अपना पहचान को निर्धारित नहीं कर पाया। इसी आधार पर सारे तकलीफ हमतउपदंजमक हुआ। प्रकाशमानता = प्रकाश। प्रकाश मानता ही

प्रकाश हैं। ज्यादा प्रकाश, कम प्रकाश, इसको कैसे पहचानेगें। जितना ज्यादा तप्त रहता है, उसका प्रतिबिम्बित ज्यादा प्रकाश कहलाता है। तप्त परम स्थिति में सूर्य है। सूर्य का प्रतिबिम्बित ज्यादा प्रकाश है, किसी के ऊपर प्रतिबिम्बित होता है। वह ज्यादा प्रकाश सा दिखता है, प्रकाशित रहता हे ये एक बात है, सूर्य अपने जगह में प्रकाशित है। हम यहॉ धरती पर प्रकाशित है।सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ने से हमारा प्रकाश मानता को बढ़ा देता हैं। हमारा प्रकाश मानता को 10 हजार करोड़ भाग बढ़ा देता है।

परस्पर पहचान के लिए ये बनता है, उल्लू का आंख में क्या होता हैं? दिन में अंधा हो जाता है, दिखता नहीं हैं, स्पहीज विइपं । आदमी को स्पहीज विइपं होने से ज्यादा प्रकाश होने से आंखे बंद हो जाती हैं, चुधियॉ जाती हैं।

इसी प्रकार उल्लू का आंख से इस प्रकाश में वस्तु नहीं दिखता। अंधा हो जाता है। स्वयं में हर वस्तु प्रकाशित है, ये सही है, हर वस्तु अपने में रखा है, एक परमाणु अंश दूसरे परमाणु अंश को पहचाना है, तभी परमाणु के रूप में कार्य करता हुआ, हमको समझ में आता हैं।

प्रश्न– हर वस्तु प्रकाश मान है, क्या दूसरी वस्तु उसका प्रकाश मान को बढ़ा–घटा सकती है?

उत्तर– ये प्रकाश मानता को और स्पष्ट करता हैं, दूसरे के लिए। प्रकाशमानता उतना ही है, चाहे सूर्य का प्रतिबिम्ब पड़ा हो, नहीं पड़ा हो आपका प्रकाशमानता उतना ही है, जिसकी हम अंधेरा कहते हैं। उसमें भी आप वैसे ही प्रकाशमान हैं। सूर्य के छाया मे भी आप वैसे ही प्रकाशमान है। वस्तु का होना = प्रकाशमान। आंखो का क्षमता नहीं है कि किसी एक स्थिति में देख पाये, किसी एक स्थिति में नहीं देख पाये, अभी वह चश्मा बनाये हैं। अंधेरे में देखने वाला।

प्रश्न– ताप और प्रकाश दोनों को अलग–अलग स्प्ष्ट कीजिए?

उत्तर– प्रकाश ताप नहीं हैं, ताप को प्रकाश नहीं कहते हैं। प्रतिबिम्बन ही प्रकाशमानता हैं। आपका प्रतिबिम्ब ही प्रकाशित रहता है, आपका ताप प्रकाशित नहीं रहता हैं। ताप यदि जरूरत से अधिक होता है, तो परावर्तित होता रहता हैं। चारों ओर परावर्तित

होता रहता है। आपका बिम्ब का प्रतिबिम्ब सदा–सदा के लिए वैसा ही रहता है। प्रतिबिम्बिन किया = प्रकाशमान।

हर वस्तु अनंत कोण से अपने सिधाई में प्रकाशित है, बिम्ब का प्रतिबिम्ब होता हैं। हर बिम्ब रचना की फलन है, हर रचना, छोटा सा छोटा रचना को नाम देते हैं। तो एक परमाणु अंश ही होता हैं, उससे कम होता नहीं, वह भी एक रचना ही हैं। ये शरीर भी एक रचना है, अनेक टुकड़े का एक टुकड़ा, एक धोती अनेक टुकड़ा का एक टुकड़ा, एक दीवार अनेक टुकड़ा का एक टुकड़ा, एक धरती अनेक टुकड़ा का एक टुकड़ा।

प्रश्न– अभी एक बहुत प्रचलित मान्यता है, कि प्रकाश सरल रेखा में चलता है, प्रकाश का प्रकार को कणों से मिलकर बना है, और वह एक सरल रेखा में चलते हैं?

उत्तर– ठीक है, वह ऐसा देखते होगें, ऐसा व्याख्या करते होगें, कण चलता है कि वह स्वयं में चल देता है, उसके बारे में आगे बात करेगें। हमने जो देखा है, समझा है, हर बिम्ब का प्रतिबिम्ब होता है, हर बिम्ब का रचना है, एक रचना दूसरे रचना को पहचानने योग्य रहता है, इसी का नाम है, प्रतिबिम्ब, जैसा आपका एक रचना दूसरे रचना को पहचानने योग्य रहता है, आपका प्रतिबिम्ब। ये विधि परमाणु अंशों से लेकर सभी बड़े–बड़े ग्रहगोल तक हैं। धरती, सूर्य को पहचानता है, तभी अपना एक गतिपथ को बनाया है। निश्चित व्यवस्था को देता ही जाता हैं। सूर्य का प्रतिबिम्ब धरती पर है, उसी प्रकार धरती का प्रतिबिम्ब सूर्य के ऊपर रहता हैं। प्रतिबिम्ब गति नहीं है, यहीं से प्रकाशवाद जो हम प्रस्तुत किए हैं, उसमें और असलियत में क्या दूरी है, ये पता लगता है, प्रतिबिम्ब ही प्रकाश है, प्रतिबिम्ब गति होता नहीं। नित्य स्थिति है, बिम्ब का प्रतिबिम्ब रहता ही है। प्रतिबिम्ब दौड़ता नहीं है। बिम्ब का सीधा लाईन में अनंतकोणों से प्रतिबिम्ब बना ही हैं। प्रत्येक एक अनंतकोण सम्पन्न है। इस विधि से प्रतिबिम्ब सभी ओर रहता ही हैं।

प्रश्न– एक बल्ब के सामने 3 बंतक इवंतक रख देते हैं। तीनों के बीच में एक एक छेद रहता है। ज बवह तीनों छेद एक लाईन में हो जाते हैं, तो तीसरे बंतक इवंतक के बाहर भी, वह बल्ब का प्रकाश दिखता है, परन्तु बीच वाले को यदि थोड़ा हटा देते है, या किसी को भी हटा देते हैं, वह सरल रेखा जो बन रही थी, तीनों छेद में वह हट जाता हैं। उसका प्रकाश आखरी तक पहुंचता नहीं।

उत्तर– इस आधार पर लिखा है, कहीं भी सिधाई वह है, जिसका प्रतिबिम्ब पड़ सके। जैसे आप खड़े हो, मैं आपका सरल रेखा में हूँ, ये आपके सरल रेखा में हैं। चारों तरफ वस्तुएँ सरल रेखा में सभी ओर आपका प्रतिबिम्ब हैं। आपको थोड़े जगह में घेर दिया जाए, वह घेरा हुआ वस्तु के ऊपर आपका प्रतिबिम्ब सभी ओर रहता हैं। प्रयोग का तरीका आदमी को गुमराह बनाने की हैं।

प्रश्न– प्रकाश नहीं हैं या ताप नहीं पहुंचा है?

उत्तर– ताप की बात कह ही नहीं रहे हैं। सूर्य का प्रतिबम्ब पहुंचना।

प्रश्न– ये बताइयें बल्ब का प्रतिबिम्ब उधर क्यों नहीं पहुंचा।

उत्तर– बल्ब का प्रतिबिम्ब किसी अपार दर्शक वस्तु के ऊपर प्रतिबिम्ब होता हैं। आपका भी वही हालत हैं, सूर्य का भी वही हैं।

प्रश्न– मतलब प्रतिबिम्ब तो सरल रेखा में चलेगा?

उत्तर– सभी ओर सरल रेखा है, तुम जो चाहते हो वही सरल रेखा नहीं हैं।

प्रश्न– जैसे 3 बंतक इवंतक रखें है, पहले बंतक इवंतक से दूसरे बंतक इवंतक तक चला गया, तीसरे में घूम के जा सकता था।

उत्तर– सभा ओर सीधा है, कोई भी प्रतिबिम्ब कोई भी अपारदर्शक वस्तु के ऊपर पड़ता हैं। प्रतिबिम्बित होता हैं।

प्रश्न– उसका अनुबिम्ब बनता है या नहीं?

उत्तर– बनता है ना।

प्रश्न– अभी आप जो बोल रहे हैं कि प्रतिबिम्ब ससम्मुख होता हैं?

उत्तर– आप सभी ओर ससम्मुख है ना। आप अपने में सम्पूर्ण हैं । आप सभी ओर ससम्मुख हैं। अभी अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब की बात कर सकते हैं।

प्रश्न– जैसे यहॉ पर एक प्रकाश का स्त्रोत रखते हैं, वह दरवाजे के बाहर जाता है, तो दरवाजा जितना चौड़ा है, वह प्रकाशित भाग उससे थोड़ा ज्यादा चौड़ा होता है, ऐसा मानते हैं, प्रकाश किनारे से थोड़ा मूड़ गया, बाहर की तरफ?

उत्तर– किसी का प्रतिबिम्ब, उसका अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब विधि से ये सब व्याख्यायित हो जाते हैं। अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब के बारे में जो आपने जिज्ञासा की थी, उसके लिए अपने को दृग बिन्दु नाम की चीज को पहचानना पड़ेगा। दोनो ऑखो के मिलने पर एक बिन्दु होता है, उस बिन्दु का नाम है दृग बिन्दु । दोनों आंखों को जोड़ जहॉ होता है।

प्रश्न– ये मस्तिष्क के अंदर होता है या बाहर?

उत्तर– आंखों के बाहर होता है, ये दृग बिन्दु। भीतर होता है, दृग मूल। जो ज्ञानवाही तंतु से जुड़ा रहता हैं। दृग बिन्दु बाहर होता है,दृग बिन्दु कहॉ टिकता है? किसी ना किसी बिम्ब के ऊपर जा के टिकता है, अभी ये लाईट के सामने एक गेंद रखा। लाईट देखने जाओगे तो वह गेंद के ऊपर आपका दृष्टि रूकती है। वह दष्टी रूकने के पश्चात ये जो प्रकाश आ रहा है, अगर ये लाईट को पीछे ले के चले जाएँ गेंद छोटी होती दिखती है, क्यों दिखती है? गेंद के बाहरी भाग से आई हुई प्रकाश जो है, अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब विधि से इन दोनों की दूरी की जो अणु होते हैं। उस पर प्रतिबिम्ब हो जाते हैं। अनुबिम्ब क्या हैं? किसी बिम्ब को लेकर दूसरे के ऊपर उस प्रतिबिम्ब को स्थापित करना।

प्रश्न– दो प्रतिबिम्ब, अपना भी किसी दूसरे का भी प्रतिबिम्ब पड़ता है, उसका नाम अनुबिम्ब। उसी प्रकार प्रत्यानुबिम्ब भी ऐसा ही है, होते–होते जितने दूरी को जितना

चौड़ाई को गेंद घेरा था वह छोटा होता चला जाता हैं। क्यों होता है? सभी ओर से ये प्रकाश का अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब वह प्रकाश को उन कणों में, उन अणुओं के ऊपर स्थापित कर देते हैं। ये सब प्रकाश मान है, ये सब उजाला है, ऐसा लगने लगता है। किन्तु गेंद उतना ही रहता है। हमको देखने में दूर जाने से छोटा दिखता है,

पास आने से गेंद का आकार दिखता हैं। जिस जगह पर से छोटा दिखता है, पास आने से गेंद का आकार दिखता है। जिस जगह पर बिल्कुल बराबर दिखता हे, वही दृग बिन्दु हैं।

प्रश्न– अगेंद को सामने लाते–लाते एक ऐसी स्थिति आती है, कि वह दिखता नहीं?

उत्तर– वह आंखों के बिल्कुल पास आ जाने से नहीं दिखेगी। दृष्टिपाट इसका नाम है। दृष्टिपाट, दृग बिन्दु दोनों का योग होने पर वस्तु दिखती है। दृष्टिपाट जो है, सीधा–सीधा कितना दूर तक फैल सकता है, दोनों तरफ इधर 45^0 उधर 45^0, 90^0 को बवअमत किया रहता है। दोनों आंखें मिलकर 90^0 का कोणों में भागती रहती है। तभी दूर जा कर के बहुत सारा विशाल आकाश दिखई पड़ती है। ये है दृष्टिपाट उसके अंदर एक चीज आता है, जैसा सूर्योदय हुआ, सूर्य को देखते हैं, वह दृगबिन्दु हो गई। अभी गेंद का बात बताया, वह दृग बिन्दु की वस्तु हो गई। अब गेंद को और पास लाया, और पास लाया, और पास लाय, हमारा दृग बिन्दु जितना दूर पर उसको बराबर देख सकता था, जितना लम्बा है, चौड़ा है, उससे पास आने के बाद वह हमारे दृष्टिपाट को ढ़क देता है, हमारे दृष्टिपाट जितना चौड़ा है, उससे चौड़ा वह वस्तु बन जाता है,

पूरा पास में आने के बाद वह वस्तु भी नहीं दिखता। वस्तु के सभी ओर सत्ता का घेरा होना चाहिए। तभी दिख पाता है, नही ंतो नहीं दिखेगा। वस्तु दिखने के लिए दृष्टिपाट के अंदर होना चाहिए, दृष्टिपाट से छोटा होना चाहिए। तभी वस्तु दिखेगा। दृष्टिपाट से बड़ा होने का कोई चीज है तो विशालता ही है, अभी हम 90^0 के बात किया। ये 90^0 की चार बार घुमा देने से 360^0 हुई। ये 90^0 में ये सारे विशालतम वस्तुएॅ कितना आ पाते हैं। उसको नापने की बात आती है, जब हमारे दृष्टिपाट में आने वाली पूरा दूरी को यहॉ से करोड़ मील दूर जाने के बाद नापने जाओगे, तो कितना होगा, आप ही सोच लो। अरब मील के बाद जो होता है, उसको सोच के देखो। दृष्टिपाट हमारा फैलती चली जाती है। दृग बिन्दु छोटी होती चली जाती है, हमारा दृग बिन्दु के अन्दर जो वस्तु आता है, वह

दूर जाते जाते, छोटा होता है, जबकि दृष्टिपाट चौड़ा होता जाता है, पास मे आने से हमारे दोनों आंखों के बीच के दूरी से यदि चीज बड़ी हो जाती हैं। वह दिखता ही नहीं, इन दोनों आंखों के मिलन बिन्दु के पहले कोई निश्चित दूरी तक वस्तु दिखती है। उसके बाद दिखता ही नही। इस ढ़ंग से दृष्टि, प्रकाशमानता, प्रकाश की बात बनता है। हमारा दृष्टि में प्रतिबिम्ब आना ही देखने का मतलब हुआ। कोई भी प्रतिबिम्ब हमारे आंखों में आने से, नहीं आने से देखना नहीं हुआ। नहीं दिखता हैं, उसका 2 स्थिली हो गई, इतना दूर हो गया, वह चीज ही नहीं दिखा, या इतना पास हो गई तभी भी नहीं दिखा। वस्तु तो रहता ही है, आंखों में से देखने के लिए बहुत सारा बवउचवदमदज चाहिए। आंखों से निश्चित दूरी पर भी होना है, निश्चित दूरी तक ही होना है, इसके बाद में भी नहीं दिखेगा, इससे पहले भी नहीं दिखेगा। ऐसा सिद्धान्त बनता है।

प्रश्न– आंखो से देखने का मतलब क्या है? उसमें दोनों चीजों की आवश्यकता है, एक तो प्रकाश मानता, और दूसरा ताप?

उत्तर– प्रकाश मानता, आकार आयतन दो चीज।

प्रश्न– आंख से जब हम देखते हैं, उसमें एक प्रकाश मानता की बात है, और दूसरा ताप की बात है?

उत्तर– आंख में ताप का लेन–देन नहीं। ताप सभी ओर समान भागता रहता हैं। ताप सामान्य होने के लिए दौड़ता है। प्रतिबिम्ब की कहीं सामान्य नहीं होना। इन दोनों का अंतर समझिये। प्रतिबिम्ब को सामान्य अथवा आवेश दोनों नहीं होना है, प्रतिबिम्ब, प्रतिबिम्ब है, ना ज्यादा है, ना कम हैं।

प्रश्न– आंख से जो हम देख रहे हैं। उस वस्तु का दिखना नहीं दिखना, इस पर निर्भर करता है, वह तप्त है या नहीं। उस आधार पर हम इन आंखों से देख पाते हैं या नहीं देख पाते।

उत्तर– स्पर्शेन्द्रिय का यदि उपयोग नहीं करेगें, तो ताप नहीं पहचानेगें। आंख मे भी तो स्पर्शेन्द्रिय हैं। स्पर्श करने की बात आंख में भी हैं। इस तरीके से ताप आंखों से भी पहचानने में आए। किन्तु आंख पर ताप का कोई प्रतिबिम्ब नहीं होता, प्रभाव होता हैं।

प्रश्न– मैं कोई चीज को देख पाता हूँ या नहीं देख पाता हूँ , अंधेरा होने का क्या मतलब ?

उत्तर–अंधेरा होने का मतलब है, हमारा आंख देख नहीं पाना, इसका मतलब ये हुआ, किसी ना किसी निश्चित प्रकाश मानता में हम देख पाते हैं। निश्चित प्रकार की प्रकश मानता को देख नहीं पाते हैं।

प्रश्न– प्रकाशमानता तो उतना ही है वस्तु में?

उत्तर– हर वस्तु भिन्न–भिन्न आकार प्रकार वस्तुओं से रचित बिम्ब हैं।

प्रश्न– यदि घनघोर अंधेरे में एक चीज मुझे पढ़ने में नहीं आता है, और अभी पढ़ने में आ रहा है, इसका क्या अंतर हैं?

उत्तर– उसका अंतर हमारा आंख का ही बंचंबपजल का बात , हमारा आंख का योग्यता इस प्रकार की परिस्थिति मे पढ़ने योग्य है, इससे यदि भिन्न होता है तो नहीं पढ़ पाता।

प्रश्न– ये जो परिस्थिति बनी ये किस कारण से बनी?

उत्तर– किस तप्त पिण्ड़ के कारण ये परिस्थिति बनी हुई हैं। हम जो देख रहे हैं आंख से अभी उसमें दोनों चीजें काम कर रही है, एक तो वस्तु को प्रकाशमानता, दूसरा उसका तप्त होना। उससे ज्यादा तप्त होगा। तब भी नही दिखेगा उससे कम तप्त होगा तब भी नहीं दिखेगा, आंखों में भी स्पर्शज्ञान है ही, किन्तु देखने की बात जो है, ताप नहीं है, ये प्रतिबिम्ब ही हैं, स्पर्श होना देखना ये दोनों अलग–अलग प्रकिया है। इसको पकड़ के रखना चाहिए। आगे चलकर के बहुत सारा बवउचवेपजपवद आएगा। हमें एक ही बात थोड़े समझना है, करोड़ो करोड़ो परिस्थितियों में ये सिद्धान्त काम करता हैं। प्रकाश मानता का मतलब, बिम्ब का प्रतिबिम्ब आंखों में आता है, ज्यादा तप्त होने पर तप्त बिम्ब जहॉ–जहॉ पड़ता है,

वह जितना अच्छे ढ़ंग से प्रकाशित थी , उस प्रकाशमानता को ज्यादा बढ़ा देता है, दूसरा देखने के लिए अनुकूल हो जाता है। जैसा मनुष्य का आंख कम देख पाता है, उसके लिए अनुकूल है।

प्रश्न– जैसे एक पारदर्शी कॉच है, वह पारदर्शी कैसे बन जाता है? प्रतिबिम्ब उस पार कैसे जाता है?

उत्तर– पारदर्शी का मतलब क्या मानते हो? उस पार से इस पार दिख जाए। पारदर्शकता के आधार पर उस तरफ जो बिम्ब है, वह इस तरफ भी वैसे ही दिखता है। अपारदर्शकता का मतलब यही है, उस पार जो बिम्ब है, वह इस पार ना दिखे। कॉच में वह स्वभाव है, कॉच जैसा कोई चीज प्लास्टिक बना लो, उसमें भी वह स्वभाव है, उसी प्रकार की पारदर्शियता पानी में होता हैं। इस प्रकार कोई चीज बना लो उसमें पारदर्शकता आ ही जाता है। पारदर्शकता वस्तु का रचना है।

प्रश्न–किसी चीज का प्रतिबिम्ब किसी पार दर्शक वस्तु के आर पार जाता है तो कणों के रूप में उसको भेंद के नहीं जाता हैं?

उत्तर– भेदता नहीं, रचना का प्रतिष्ठा है ये, उसको छेद बनाने की प्रतिष्ठा नहीं है।

प्रश्न– क्या ऐसा हुआ, कॉच में प्रतिबिम्ब बना, उस प्रतिबिम्ब फिर उस पार और बना?

उत्तर– प्रतिबिम्ब कहॉ बना रहता है, वह जो कॉच का इस पार आ गया प्रतिबिम्ब इसका नाम पारदर्शी, कॉच के ऊपर प्रतिबिम्ब बना ही नही। अपारदर्शकता के ऊपर ही प्रतिबिम्ब बनता हैं।

प्रकाश तरंग नहीं होता, तरंग के लिए वस्तु को होना आवश्यक है, अवस्तु कोई तरंग होता नहीं।

प्रश्न– सूर्य से यहॉ तक उष्मा आती है, बीच मे कोई कण नहीं है,`चंबम है, इसके बाद एक कण से दूसरे कण में जब उष्मा का संचार होता हे, तो उनके बीच मे भी`चंबम है, कोई कण नहीं है, तो एक कण से दूसरे कण तक जो उष्मा आती है, उसका विधि क्या है?

उत्तर– **सत्ता में कोई चीज अपने रूप में ही रहता हे, चाहे उष्मा हो, ठंड़ी हो, गर्मी हो, वस्तु हो, अवस्तु हो, जो कुछ भी हो, जो स्थिति हो, गति हो, उसी के स्वरूप में रहता है, सत्ता उसको ना रोकता है, ना टोकता है, ना कम करता है, ना बढ़ाता है, इस सिद्धान्त को पहले समझो। सूर्य पिण्ड़ के चारों तरफ जो वातावरण है, उसका वातावरण के अंतिम**

छोर के वस्तु में जितने भी तापमान थी, वही तापमान इस धरती के अंतिम छोर के वस्तु में आता है, उसके बाद धरती के वातावरण में जो वस्तुएँ है, वह बॉट लेते है। ऊपर से जब उतना ही ताप आ गई, ताप क्यों आता है?

कम ताप है वहॉ खत्म होने के लिए आता है, कम ताप की ओर ज्यादा ताप दौड़ता है। ज्यादा ताप जब दौड़ा, धरती का छोर कम तप्त या, वहॉ वह ताप छूआ।

प्रश्न– ताप छुआ मतलब ऐसा लगता है, इस कण से कोई चीज निकलकर वहॉ पहुंच गया, ऐसा होता है क्या?

उत्तर– सूर्य के अंतिम छोर में कणों के पास जितना ताप था, जितना डिग्री के ताप था, वही ताप धरती के अंतिम छोरों के साथ जुड़ा।

प्रश्न– वह चीज आया कैसे?

उत्तर– परावर्तन, विधि से कणों से कणों तक पहुंचने को परावर्तन कहते हैं।

प्रश्न– एक कण से दूसरे कण तक कोई चीज पहुंचता है या भौतिक वस्तु का आदान, प्रदान नहीं हैं।

उत्तर– आदान, प्रदान कुछ नहीं, वह ताप जो दौड़ता है, जैसे 2 वस्तु हैं, एक वस्तु यहॉ दूसरा वहॉ। एक को गरम करने से ताप दूसरे में पहुंचता हैं।

प्रश्न– एक को गरम करने से दूसरा कैसे गरम हो जाता हैं?

उत्तर– इसीलिए हो जाता है, ये दोनों का सम्मुख हैं। एक इकाई आवेशित हो गई है, उसका आवेश सामान्य करने के लिए बाकी सब तुले हैं, उसके बाजू का जो कोई भी कण है, वह अपने आप में कुछ आवेश को स्वयं में स्वीकार लेता हैं। यही सह अस्तित्व का प्रमाण हैं, इसी विधि से हर आवेश सामान्य होने की सिद्धान्त निकलती हैं। नही ंतो आवेश सामान्य नहीं होगा।

ध्वनि और रंग

प्रश्न– ध्वनि में एक कण कंपन होता है, उसके बाजू में दूसरा कण में कंपन आता हैं, उसके बीच में जब कि सत्ता है, ये किस विधि से होता है?

उत्तर– दबाव विधि से, ताप दबाव के आधार पर आगे होता है, ध्वनि भी दबाव के आधार पर आगे पैर रखता हैं।

प्रश्न– एक कण और दूसरे कण के बीच में, इस कण में जो कंपन है, ध्वनि है, वह इस कण तक कैसे पहुंच जा रहा है, बीच में सत्ता है।

उत्तर– इस कण, उस कण के बीच सत्ता है, इस कण में जो कंपन हैं, उसको वह स्वीकारा हैं। क्योंकि इसका प्रतिबिम्ब उसका ऊपर है ही है, ये जो कंपन होता हैं, दबाव है। वह आवेश दूसरे कण में पहुंचता हैं।

प्रश्न– पहुंचता है या स्वीकार लेता हैं?

उत्तर– स्वीकारने को बैठा ही रहता है, ये पहुंचता भी है, ऐसा योग है, तभी तो नृत्य बनता है, वह स्वीकारने वाला, यह पहुंचने वाला, दोनों होने पर नृत्य होता है।

प्रश्न– जैसे एक व्यक्ति छत के ऊपर से धरती पर कूदता है, वह धरती के पास पहुंचता है या धरती उसके पास पहुंचता है?

उत्तर– ठोस–ठोस के साथ, विरल, विरल के साथ, तरल, तरल के साथ, सह अस्तित्व में होना चाहता है, ये आशय सभी ठोस वस्तु के साथ जुड़ा है।

प्रश्न– प्रश्न ये हैं, धरती हमको खिचॅ रही है, इसके कारण हम नीचे जा रहे हैं, या स्वयं कुद के नीचे जाना चाहते है।

उत्तर– ठोस, ठोस के साथ पहुंचने की सिद्धान्त है, ये इसके खिचंने वाला , खिचांने वाला कुछ भी नहीं है।

प्रश्न– छत भी तो ठोस है?

उत्तर– ठोस को रोकने के लिए हम यंत्र बनाए हैं, छत गिरने के लिए जो ताकत लगी है। इसको आप नाप लिया है, इसको ंजउवेचीमतम चतमेनतम नाम दिया है। उसको रोकने के लिए कितना क्षेत्रफल में कितना चतमेनतम होता है। उसको नम्बर बता देता है, गणित, 1 से 9 तक की, बनाने के बाद उसको रोकने के लिए उसमें दुगना हो, तिगुना, चौगुना बल लगाने का सोचते हो। उसके अनुसार उंजमतपंस को यंत्रित कर के रोकते हो।

प्रश्न– प्रकाश से जुड़ा एक चीज है, रंग। रंग वस्तु रूप में क्या है?

उत्तर– वस्तु के चलते रंग होता है, वस्तु विहिन स्थिति में कोई रंग नहीं। पानी के ऊपर आप सूर्य का प्रतिबिम्ब ड़ालो, उसका अनुबिम्ब होने पर, पानी के अंदर बीमउपबंसे का जो रंग हैं, वह उसके ऊपर दिखता है।

प्रश्न– मतलब वस्तु में रंग होता है, प्रकाश में रंग नहीं होता?

प्रश्न– जैसे एक कच्चा फल है, हरे रंग का होता हे, उसको रख देते हैं, 2 दिन बाद वह पीला हो जाता है, ये जो पीला हो गया अपने आप, इसमें क्या चीज हो गया?

उत्तर– बीमउपबंसे का परिवर्तन, आप से अभी थोड़ा देर पहली बात हुई थी, रासायनिक परिवर्तन को काल से जोड़ा गया है, इत्यादि।

प्रश्न– विज्ञान के अनुसार सूर्य के प्रकाश में 7 रंग होता हैं?

उत्तर– आप 10 बता लो, 16 बता लो, प्रकाश में कोई रंग होता नही। वस्तु में रासायनिक द्रव्यों के आधार पर, उसमें विभिन्न रंग होता है।

प्रश्न– ये हरा आप पीला हो गया इसका मतलब उसका रासायनिक संरचना बदल गई, हरी चीज नीले रंग का रोशनी ड़ालने से तीसरा रंग बन जाता हैं।

उत्तर– नीला प्रकाश क्या है, नीला रंग का कपड़ा पहना दिया, स्वाभाविक हैं।

प्रश्न– वस्तु का रंग वही रहता है या वस्तु का रंग बदल जाता हैं?

उत्तर– देखों जैसे ये प्रकाश के ऊपर लाल रंग ओढ़ा दिए, पीला रंग ओढ़ा दिए। दोनों को एकत्रित करने से तीसरा कुछ दिखता है, इसके ऊपर, लाला, हटा दो, पीला हटा दो ये सफेद ही हैं।

प्रश्न– अभी जो चर्चा किए उसमें ये निष्कर्ष निकला की रंग प्रकाश में नहीं, वस्तु में होता है, वस्तु में किस स्तर पर रंग को हम समझ सकते हैं? परमाणु अंशों के स्तर पर, परमाणु के स्तर पर,

अणु के स्तर पर या अणु से रचित पिण्ड़ो के स्तर पर? हमको जो दिखाई देता आंखों से वह अणु रचित पिण्ड़ ही हैं। अणु आंखों से नहीं दिखता, परमाणु और परमाणु अंशों का बात ही दूसरा । रंग तो अणु रचित पिण्ड़ में दिखता है, उसका जो आधार है, वह परमाणु अंशो में रहता हैं या उस के बाद?

उत्तर– जैसा आपने अभी बताया की सोने में पीला होता है, चांदी सफेद दिखता है, ये मूलतः कहॉ से शुरूआत हुई? परमाणु से निहित अंशो के आधार पर शुरू हुआ। परमाणु को देखने पर ना लाल दिखेगा, ना पीला दिखेगा, कुछ भी नहीं दिखेगा, परमाणु से रचित अणु को देखोगे, इस आंखों से उसमें भी रंग नहीं दिखेगा। उसको सुक्ष्मदर्शी कॉच से देखने पर संभव है, अणु में दिखता होगा। क्योंकि अणु स्थिर होता है, अणु परमाणु के रूप में गठित स्थिति से, भिन्न स्वरूप में दिखता है, संभव है, बहुत चवूमतनिसस हर्सें में दिखे। सामान्य अपने आंखों में दिखने के लिए, अणु रचित पिण्ड़ में ही, हम को पीला दिखता है, लाल दिखता हैं, सारे रंग दिखता हैं।

प्रश्न– अनुभव में देखा तो अंशो में और परमाणु में रंग भी दिखता है क्या?

उत्तर– परमाणु में रंग रहता है, वह दिखता नहीं हैं। परमाणु में ही रंग का स्वरूप बना ही रहता हैं, परमाणु में रंग नहीं रहेगा तो अणु में कैसे आएगा। अणु में नहीं रहेगा तो

अणु रचित रचना में कैसे आएगा। परमाणु में रंग रहता ही है, वह रंग को आंखों से देखने के बीच में कितना किया चाहिए, उसके बारे में अभी बात कर रहे हैं।परमाणु से अणु होता है, ये अपने को पता है, अणु से अणु रचित पिण्ड़ होता है, ये भी अपने को पता रहता हैं। बहुत सुक्ष्मदर्शी कॉच से देखने पर अणु में पीलापन दिखेगा, सोने का अणु को देखने से उसके बाद आंखों से देखने का अणु रचित पिण्ड़ो में दिखता ही है, वैसे ही चांदी का , लोहे का, और धातुओं का रंग दिखता ही है, लोहे का अणु भी वैसे ही हैं।

प्रश्न– जीवन परमाणु किस रंग का होता हैं?

उत्तर कुछ भी नहीं।

प्रश्न– सारे परमाणु अंश एक ही जाति के हैं, मतलब उनका रंग तो एक ही हो गया?

उत्तर– परमाणु अंशो का संख्या भेद होने से रंग होता हैं, परमाणु अंश का एक दूसरे पर पड़ने वाली प्रतिबिम्ब है रंग किसी विधि से प्रतिबिम्ब पड़ने से पीला दिखेगा, किसी विधि से प्रतिबिम्ब पड़ने से लाला दिखेगा, ऐसा बना हुआ हैं।

प्रश्न– मतलब, वस्तु में रंग होते हुए भी, जो रंगों में परिवर्तन होता हैं, उसका मुख्य कारण प्रतिबिम्बन हैं। इससे और एक बात हैं, ।सनउंदपं से मिले हुए कई रत्न बनते हैं, मणि । वह पारदर्शी हो जाते हैं? मतलब रंग विहिन हो जाते हैं, तो कई रंग के चीजों का आपस में प्रतिबिम्बन से रंगहीन भी हो जाते हैं?

उत्तर– ये क्या हैं, एक दूसरे के रंग को एक प्रकार से हजम कर लेते है। हजम करने का मतलब इस रंग से सामने वह रंग चुप हो जाता है। उसको कहते हैं, दनजतंजपेंजपवद । इस ढ़ंग से इसका काम बनता है। जैसा अलग–अलग 4 रंग देखा, चारों को एक जगह ला दिए ये सब सफेद हो गया। ।सनउंदपं से कुछ रत्न बनते है। ।सनउंदपं का रंग कुछ और होता है। पूरा बतलेजंस वितउंजपवद का मतलब रंगहीन हो जाना। जैसा कोयला, काला दिखता है, कोयला को आगे जो रचना है, वह ग्रेफाइट कहते हैं। वह ग्रेफाइट चमकदार होता है। कोयला चमकदार होता नहीं ग्रेफाइट से आगे हीरा बनता है। केवल चमकदार रहता है, काला नहीं, जबकि हीरा को सेन्ट परसेन्ट कार्बन कहा जाता हैं। उस पर मसमबजतपबपजल बवदकनबजमत हैं। हीरे को ऐसे ही पहचानते हैं। हीरे जैसा कॉच

और हीरे को पहचान के लिए, हीरे जैसे टुकड़े में मसमबजतपब बींतहम करते हैं। बल्ब जलता है तो हीरा है, नहीं तो कॉच है।

ज्वार भाटा और विद्युत

धरती और सूर्य का सम्मुखता, इसकी जो प्रकार ये कैसे धरती के सामने घूम रहा है? धरती सूरज के सामने घूमते हुए जिस ओर सरकता हैं, उसको हम उत्तर कहते हैं।

प्रश्न– वर्तुल गति का जो कपतमबजपवद हैं, वह छवतजी कपतमबजपवद उत्तर और दक्षिण धरती पर रहने वाले लोगों के लिए है, पुरब पश्चिम भी सूर्य के सापेक्ष में बोलते है। उत्तर और दक्षिण जो बोलते हैं, अभी हम ध्रुव तारा के सापेक्ष बोलते हैं। लेकिन यदि हम गति के रूप में देखेगें, वर्तुल गति में तो बाबाजी ये समझा रहे हैं। पृथ्वी का वर्तुल गति जिस दिशा में है, उस दिशा में है, उस दिशा को हम छवतजी कहते हैं।

उत्तर– ये चलते चलते इसका निश्चित सरकने की विधि है, सरकने को भी वर्तुलात्मक गति कहते हैं। वह सरकना हुआ स्थिति में क्या होता है, सिर को ऐसा वैसा करना होता है। ऐसा करने से इस अेर दौड़ेगा समंदर, वैसा कर दिया तो नीचे दौड़ेगा, कम्पनात्मक गति वश ही ज्वार भाटा हैं।

प्रश्न– मतलब धरती में कम्पनात्मक गति होती है, इसके कारण ठोस तो हट जाता है, पानी तरल होने के कारण थोड़े देर में हटता है, और हवा और तेज हो जाता हैं।

उत्तर– ये ज्वार भाटा, उसको अभी बच्चों को ये पढ़ाना चाहते हैं, चन्द्रमा, ऊपर खिचॅता है, पानी को । वैज्ञानिक बोलते है दोनों का खिचॉतानी में हैं, एक ग्रह को दूसरा खिचॅता है, ऐसा उनका कहना हैं।

प्रश्न– चन्द्रमा और धरती दोनों शून्याकर्षण में हैं, वैज्ञानिक श्शून्याकर्षण में रहना, पहचाने नहीं हैं। दोनों का आकर्षण से होता है, ऐसा कहते हैं।

उत्तर– हम क्या कहते हैं, दोनों शून्याकर्षण में हैं, दोनों स्वतंत्र अपने गति से काम कर रहे हैं, विकसित हो रहे हैं।

प्रश्न– ये पाया जाता है, कि पूर्णिमा और अमावास्या के दिन ज्वार भाटा बहुत ज्यादा हो जाता है?

उत्तर– हवा के आधार पर ज्वार भाटा हर समय रहता है। वह धरती के `नतबिममें घुम रहा है, ये तो आप को पता है, पानी के ऊपर भी बह रहा है, ये भी आप को पता है, समुद्र में पानी के ऊपर जो हवा है, तटिय स्थल में ही प्रदर्शित हो पाता है, उसको भी हर दिन को ज्वार भाटा हम कहेंगें। लहर होती रहती है, हर 15–15 दिन में ये बढ़ता है, घटता है।

उसमें कम्पनात्मक गति हर 15 दिन में एक बार ऊपर नीचे, होनेवाला होता है। फलस्वरूप ज्यादा दिखता हैं। कम्पनात्मक गति होता ही रहता है, 15 दिन में एक बार जो ज्यादा से ज्यादा होता है, वह हो जाता हैं। कम्पनात्मक गति तो हर गति में रहता ही हैं।

प्रश्न– वस्तु में कम्पनात्मक गति वही रहता है या कम ज्यादा होता है?

उत्तर– कम्पनात्मक गति सदा–सदा बना रहता हैं, धरती का सिर जो हैं, उत्तर की ओर हैं। ऊपर होना नीचे होना होता है, वह भी एक कंपन हैं। उस समय में ज्वार भाटा अधिक होता हैं। रोज में जितना कंपन हैं, उतना ज्वार भाटा में होता ही रहता हैं।

प्रश्न– इसका मतलब है हर 15 दिन में ज्यादा हिलती है, पृथ्वी पर यदि किसी वस्तु को तौला जायें, यदि वह 6 ाह मिलता है, तो चन्द्रमा में उसी वस्तु का वजन 1ाह मिलता है।

उत्तर–जितना गुणा कम है, उतना कम मिलेगा, चन्द्रमा जितना बड़ा है, धरती जितना बड़ा है। चन्द्रमा का चौगुणा यदि धरती हैं। वहॉ 1ाह होगा तो यहॉ 4ाह होगा। ठोस, ठोस के साथ, सह अस्तित्व में होना चाहता है, बीच में आप रोकते हो उसका नाम है भार। ये नजरिया से ऐसा लगेगा, कहीं ना कही मनुष्य पूरे आत्मीयता के साथ, सारा चीज देख रहा है।

प्रश्न– विद्युत क्या है?

उत्तर– चुम्बकीय धारा को विखण्ड़ित करने पर, विद्युत कहलाता हैं।

प्रश्न– जैसे एक वस्तु में विद्युत बह रहा है, तो उसको छूने से ताप लगता है, झटका लगता है और हाथ भी जल जाता है, तो क्या चीज बह रहा है?

उत्तर– विखण्ड़ित चुम्बकीय धारा बह रहा है।

प्रश्न– वस्तु के रूप में कोई चीज एक जगह से दूसरे जगह तक जा रहा है या नहीं?

उत्तर– वस्तु के रूप में कुछ नहीं है, जो माध्यम है, उसमें स्पदंनशीलता बढ़ जाता है। उसका स्वाभाविक स्पंदनशीलता से बहुत अधिक बढ़ जाता हैं। स्वंदनशीलता का गति है, मनुष्य को जला देता है, ताप देता है, झटका देता है, क्योंकि उस गति के साथ हमारा तालमेल नहीं है। अपने गति की ओर ले जाने के लिए वह सब कुछ करता हैं, तब तक सब खत्म हो जाता हैं।

प्रश्न– मतलब हर वस्तु में संकोचन, प्रसारण है ही, हर धातु में भी ?

उत्तर– विद्युत का मतलब इसके संकोचन, प्रसारण बढ़ जाता है। गति भी लम्बाई–चौड़ाई भी। संकोचन प्रसारण बढ़ना ही विद्युत का मतलब है, कम होना नहीं, संकोचन अगर 10 रहता है, विद्युत उसको 10 लाख कर देता है, ऐसे को आदमी छुएगा तो अजीबोगरीब नहीं होगा क्या?

प्रश्न– क्या बिना चुम्बक के विद्युत नहीं होता?

उत्तर– नहीं होता, विद्युत चुम्बकीयता में परिवर्तित हो के सकल कर्म, कुकर्म, सुकर्म सब कर देता है, शव को भी जला देता है, चूल्हें में आग भी बन जाता हैं। पंखें मे दबाव से घूमता भी है।

प्रश्न– तो विद्युत आवेश है, चुम्बक आवेश नहीं है?

उत्तर– चुम्बक आवेश नहीं वह स्थिति है, विद्युत गति है।

प्रश्न– विद्युत आवेश है, इसीलिए इसको सामान्य हो ही जाना है, एक दिन ।

उत्तर–सामान्य होने के लिए तो चुम्बकीय में परिवर्तित होता हैं।

प्रश्न– क्योंकि विद्युत आवेश है तो वह सामान्य होगा और सामान्य होने के क्रम में चुम्बक बन जाएगा पूरा?

उत्तर– चुम्बकीयता में परिवर्तित होकर उसी को हम (अर्थ) हो गया कहते है, सामान्य हो गया कहते हैं, प्रकृति में विलय हो गया कहते है।

प्रश्न– अपन धरती में कितना भी अवसजंहम तैयार करते है, वह हम अर्थ कर देते हैं, तो, धरती उसको पी के खतम कर देता हैं?

उत्तर– इसीलिए विद्युत को खतम नहीं किया जा सकता, कोयला खतम हो जाएग। विद्युत को यदि हम प्राप्त करते रहे विद्युत खतम नहीं होगा। क्योंकि घूमता ही रहता हैं।

प्रश्न– विद्युत को अर्थ करा दिया तो उसका आवेश खतम हो गया?

उत्तर– आवेश खतम हो गया, अर्थ से पुनः विद्युत मिलता रहेगा। इंधन विधि को बदलने के बाद भी, अभी जैसा प्रवाह बल से भी विद्युत को प्राप्त किया जा सकता है, विद्युत में कौन सा ्ंसपजल बदलेगा? विद्युत ही होगा। कोयला से होने वाली दृष्कृति बंद हो जाएगी। विद्युत आवर्तनशील है, कोयला आवर्तनशील है।

प्रश्न–ये जो विद्युत आवेश अर्थ हो जाता है, इसका क्या मतलब है? कहॉ चला गया वह?

उत्तर– हर आवेश सामान्य होना है, ये पता है ना। आवेश कैसा हुआ? चुम्बकीय धारा की विखण्ड़ित करने से आवेश हुआ। वह आवेश सामान्य हो गया कहॉ? जहॉ चुम्बकीय बल से असामान्य हो गया। चुम्बकीयता में परिवर्तित हो गया, धारा समाप्त हो गया, चुम्बकीयता रह गया। धरती का जो चुम्बकीयता है, उसी के साथ विलय हो गया। धरती में चुम्बकीय द्रव्य है, उसी के धारा को विखण्ड़ित करने पर विद्युत मिलती हैं। वह टुकड़े टुकडे होने पर जो आवेश होता है, उस आवेश को हम विद्युत कह रहे हैं। इसीलिए विद्युत और चुम्बकीय बल इसका नाम है। चुम्बकीयता को विद्युत से अलग नहीं किया जा सकता।

प्रश्न– ये प्रयोग पूर्वक देखा गया हैं, कि चुम्बक के ध्रुवों को रखकर, उसके बीच में किसी बवपस को हिलायें। तो बवपस में विद्युत धारा चली जाती है, जितने श्शक्ति से हम उसको हिलाते हैं, क्या उतना ही श्शक्ति उस आवेश से मिलेगा या उससे कम।

उत्तर– कम, मिलेगा।

ज्वार भाटा और पूर्णिमा का प्रभाव

प्रश्न– अभी तक मान्यता हैं, ज्वार भाटा चन्द्रमा के आकर्षण के कारण होता है, पूर्णिमा और अमावास्या के दिन ज्वार भाटा बहुत ज्यादा होता है, एक बात और मान्यता है कि पूर्णिमा और अमावास्या के दिन बहुत सारे लोगों में पागलपन का दौरा भी पड़ता है, बहुत सारे लोगों को जो ज्ञान हुआ है, ऐसा माना जाता है, कि पूर्णिमा और अमावास्या के दिन होता है, उसका प्रभाव जीवन पर पड़ता है, ऐसा निष्कर्ष निकल रहा हैं।

उत्तर– शरीर को जीवन मानते है, तो फर्क पड़ता ही है, भौतिक रासायनिक प्रक्रिया से जो कुछ भी असर है, शरीर तक ही उसका असर है। यदि जागृत जीवन होता है, शरीर बेकार होता है, तभी भी कोई फर्क नहीं पड़ता। जागृत नहीं है, शरीर के विकार के साथ जीवन भी विकृत हो जाता है, विकृती को पीड़ा को भोगता है, ये देखा गया है।

ज्वार भाटा धरती के चाल के आधार पर, धरती के कंपन के आधार पर, ज्वार भाटा होता है, और रोग के बारे में ज्ञान के बारे में जो बात आप कहते हैं, हर दिन ज्ञान हुआ है, किसी ना किसी को, हर दिन कोई ना कोई पागल हुआ है,हर दिन कोई ना कोई पागल अच्छा भी हुआ है, कोई ना कोई अच्छा आदमी जिसको हम मानते रहे कोई ना कोई कुकर्म किया ही हैं, हरदिन।

प्रश्न– सर्वे के अनुसार उसमें सबसे ज्यादा पागल पूर्णिमा के आस पास हुए है, क्योंकि पहले हम लोग मानते थे, पानी को आकर्षित करता है चन्द्रमा। 80 प्रतिशत पानी आदमी के शरीर में है, दिमाग का द्रव्य भी तरल है, तो चन्द्रमा का प्रभाव उसके ऊपर भी पड़ता है, ऐसा मान्यता है, सबसे ज्यादा ज्ञान भी पूर्णिमा के आस पास हुआ हैं।

उत्तर– हम तो ळमतमदंसपेम किए, आप जो कई चंतजपबनसंत उसी को मान लेते हैं। कोई जगह में ज्यादा ंबबपकमदज हो गया ये भी कहते हैं, कोई जगह में, नदी मे, इसी जगह ज्यादा लोग डूबे। ये भी कहते है, ये सब चीज सुनने में आता है। शरीर को जीवन मानते तक ये सब संभव है। शरीर के अनुसार पागल होने वाले आदमी कौन दिन पागल ना हो, हर दिन हो सकता है, ऐसा हो सकता है, कि ऐसा दिन में ज्यादा लोग हो गये हो। अमावास्या और पूर्णिमा के दिन ज्यादा कामावेश हो जाएँ। भोगावेश हो जाए, लाभावेश हो जाए और कोई आवेश हो जाए।

तो क्या हुआ? कोई ना कोई आवेश के बिना आदमी पागल नही ंहोता ये सही है। मानव उन दिनों को अनुकूल माना होगा। पूर्णिमा अमावस्या के संधिकाल में मनुष्य को संवेदनशील आवेश अधिक होता होगा।

प्रश्न– होगा के भाषा में नहीं बाबाजी क्यों होता है?

उत्तर– आवेश से होता है, संवेदनशीलता के आधार पर आवेश होता है। ज्योतिष शास्त्र मे चन्द्रमा को संयतशील ग्रह नहीं माने हैं, चन्द्रमा और शुक ग्रह को अययशाी माने हैं। किताबों में लिखा है, गुरू को, व्यभचारी ग्रह। इन्द्र तो हर जगह व्यभचार किया है, फिर भी उसका पूजा करना है, आदमी ऐसा चाहता होगा, तभी ना पूजा करता होगा।

ग्रह का कोई व्यभचार नहीं है, कोई अत्याचार नहीं हैं ,वह जैसा पूर्व काल में था, वैसा ही रहता है, वैसे भी चन्द्रमा भी है, गुरू भी है, ग्रह के रूप में पूर्णिमा और अमावास्या का हमको तो आवेश से कोई संबंध नहीं दिखता ।

प्रश्न– सर्वे में देख गया जिस दिन खराब योग रहता है, उस दिन सर्वाधिक दुर्घटनाएँ हुई हैं

उत्तर– कोई भी घटना हुआ तो हम दिशा से जोडेगे, वास्तु से जोड़गे, नक्षत्र से जोडगे, सबसे जोड़ लेगें हम, हम तो चतुर आदमी हैं। हम को कौन रोकेगा। हमारा मन को पकौड़ी को कैसा खुबसूरत बना के रखना है, हम सब जानते हैं। आदमी अपने भ्रम वश संवेदनशील उछाल में आ कर, आदमी पागल होता है, कोई ना कोई आशा, निराशा में परिवर्तित होने पर, पागल होता है, कोई ना कोई नशा पदार्थो को सेवन करने पर, आदमी पागल हो जाता है, आदमी पागल होने के बाद जितना नुकसान पहुंचा सकता है, पहुंचाता भी है। उसके बाद बाकी सब लोग मिलकर उनका नुकसान पहुंचा देते हैं। चन्द्रमा, वृहस्पति में किसी को पागल बनाने का काम नहीं हैं।

इस धरती के लिए सभी ब्रम्हाण्ड़य किरण अनुकूल होने के बाद, ये धरती विकसित हुआ हैं। उसके बाद ऐसा बात करते हैं तो क्या करूं बताइयें?

ग्रहों का प्रभाव होता ही है, धरती का भी प्रभाव है, दूसरे ग्रहों के ऊपर दूसरे ग्रह का प्रभाव धरती पर भी है, इसकी ध्रुव बनाइये। परस्पर ग्रहों का प्रभाव इस धरती में ये गवाहित हो चुकी हैं। अनुकूल हैं। अनुकूलता का परिभाषा ये है, यहॉ विकास हो चुकी हैं। अनुकूल नहीं होता तो इसमें विकास हो नहीं होना था। इसको ध्रुव के रूप में स्वीकार करते हैं। तो ज्योतिषी की जितने भी पहल है, सोचने को समझाने की, निर्णय लेने की, जो तरीके हम अभी तक अपनाये हैं, उसको पुर्नविचार करना चाहिए। कोई ना कोई दिन तो ज्ञान होता ही है, ज्ञान यदि होता है, पूर्णिमा के दिन ज्ञान हुआ को हम आकलीत कर लिए है। आज आदमी को कैसा ज्योतिषी को संनदबी कराया जाए। ज्योतिषी के हर पहलुओं से, मानव को राहत मिलने वाली स्थिति को, उसक विरोध को शमन करने वाली विधि को, प्राप्त करने के लिए कैसा सोचा जाए। ऐसा हम सोचते हैं, प्यार से समझदार हो जाओं सब राहुकेतू सीधा हो जाएगें।

प्रश्न– पूर्णिमा और अमावास्या को जो भी मानसिकता, जिस व्यक्ति को रहता है, उसमें उछाल आ जाता है, जिस आदमी को गलत मानसिकता है, पागल पन के तरफ चला गया। जिस आदमी को सही मानसिकता है, ज्ञान के तरफ चला गया। दोनों तरफ का अवसरों का यदि सुस्पष्ट अध्ययन हमारे पास हैं, तो जागृति में सहायक हो सकता हैं। उस अर्थ में उसका वस्तु के रूप में क्या स्पष्टता हैं, उसका`चमबपपिब कारण बताइये?

उत्तर– अन्ततोगत्वा आदमी समझदर होना ही पडेगा ना। सभी ज्ञानी ही तो होना हैं। ज्ञानी होने को ळमदमतंसपेम किया जाए। हर आदमी पूर्णिमा के दिन ज्ञानी होता रहे, आप को क्या तकलीफ है। मानसिकता उछाल खाने का कारण, पहले से उसका विनदकंजपवद बना रहता है 15 दिन।

प्रश्न–जैसा ज्वार भाटा धरती के कंपनात्मक गति के कारण होता है, क्या धरती का कंपनात्मक गति मानव में किस तरह से प्रभाव डाल रहा हैं, क्योंकि मानव में कंपनात्मक गति जो जीवन परमाणु में है , इन दोनां का कोई सपदा हैं क्या?

उत्तर– अस्तित्व में सम्पूर्णता के साथ है, एक से सबका सपदा जुड़ा ही है। एक दूसरे को प्रभावित ना करें, ऐसा होता ही नहीं है।

प्रश्न– क्या धरती का जो विशेष कंपन है, मानव का कंपन को प्रभावित करता है?

उत्तर– करता ही होगा। जब तक आदमी शरीर को जीवन समझता है, तब तक जीवन प्रभावित होता रहता है, जब जीवन ज्ञान हो जाता है, शरीर प्रभावित रहता है, जीवन प्रभावित नहीं रहता है।

प्रश्न– जीवन ज्ञान के सर्वोच्च अवस्था में तिथि वाला नियम उसके ऊपर लागू हो रहा है इसके पीछे क्या कारण है?

उत्तर– ज्ञान तो कोई ना कोई दिन, होना ही है, कोई ना कोई एक दिन को, हम समाधि का दिन कहते हैं, जैसे अभी हम मकर संक्रान्ति, शरद पूर्णिमा और ऐसे कई तिथि देते हैं।

ये सब को मंगलमय दिन हम स्वीकारे रहते हैं। और घटना भी होते रहते हैं। हमारा भी ऐसा सोचना है, पूर्णिमा के दिन आदमी ज्यादा प्रसन्न होने का तिथि बनता है, मेरा

अनुभव भी ऐसा ही है, इसके पहले जो कविताएँ ज्यादा से ज्यादा लिखा हैं। पूर्णिमा के दिन बहुत ज्यादा कविता लिखा हैं। ये सब मनुष्य के खिलने के कारण है, उसका कारण में वह सुखद प्रकाश ही होता है, और कोई चीज हम को मिल रहा हैं। ऐसा हमको नहीं लगता, यही दिन ज्ञान होता है, ऐसा कोई बात नहीं है, इसमें पागल होने की जो भाग है, वह हमकों स्वीकार नहीं है,

ज्ञानी होने के रास्ता को ंकवचज किया जाए। ये सब चीजों का सहयोग मिलता ही रहता हैं, उसके लिए अलग से कुछ नहीं करना पड़ता ।

प्रश्न– मणि पहनने से क्या कुछ प्रभाव होता हैं?

उत्तर– हमारे अनुसार कोई मणि का प्रभाव नहीं है, मणि पहनने से कुछ लोग कहते है, प्रभाव हुआ है, कुछ लोग कहते है, नहीं हुआ हैं। मणि जो पहनते हैं, वह भी बाल–बाल बचते हैं, मणि जो नहीं पहनते है, वह भी बाल–बाल बचते हैं। निर्धारित रूप में, प्रमाण रूप, प्रस्तुत करने के लिए अपने को ये सभी विद्या में, परीक्षण रूप में, निरीक्षण, करने की आवश्यकता है, शोध करने की आवश्यकता हैं। अमावास्या, पूर्णिमा, प्रसंग मैं पागल होने वाला अपने को स्वीकार नहीं है, ज्ञानी होने वाला स्वीकार हैं।

प्रश्न– पिरामिड़ के बारे में माना जाता है, उसमें बैठने पर शरीर स्वस्थ रहता है, संयम वाली प्रवृत्ति भी बनती है, एकाग्रता बढ़ता है?

उत्तर– फिर तो एक एक पिरामिड़ बनाया जाये, उसके अंदर बैठ जाए। हमारा कहना है, मनुष्य अपने में जैसा रहता है, उससे ना अधिक होता हैं, ना कम होता हैं। इससे होता तो सबको पिरामिड़ में बैठने से ज्ञान हो जाता है, ये सब हमारा परिकल्पना हैं।

टी. वी में एक आदमी 10 दिन चुम्बकीय चिकित्सा के बारे में बताता रहा। एक दिन संयोग से हमने भी सुना, उसमें बताया कि इसमें सब रोग दूर होता हैं। बाकि का पता नहीं, उनका दरिद्रता का रोग दूर हो गया कैसे? उनका किताब बिक गया, वह लोहे का टुकड़ा वह जैसे उस भाव से बिक गया। बाकि एक भी चीज कामयाब नहीं हुआ। वह चुम्बकीय पत्थर हम ले जाके प्रयोग किए, ईमानदारी के साथ प्रयोग किए, एक पैसे की फर्क नहीं।

किरण, विकिरण, तरंग, प्रतिबिम्ब

प्रश्न– आकाश से कोई उलका आकार धरती में गिरता है, उलका आकाश से आता किस जगह से है?

उत्तर– इस के बारे में पहले से अटकल है, कि तारा टूटकर के आता है, उसके बाद उलका होता है। आप और हम भी कभी–कभी जलता हुआ चीज, धरती की ओर दौड़ता हुआ, आप हम देखते हैं। उसके बारे में हमने जो उसका सही स्वरूप को देखा है, वह यह है, ब्रम्हाण्ड़िय किरणों का निरंतर गति बना रहता हैं, कोई एक प्रकार कि ब्रम्हाण्ड़िय किरण का संयोग होने से उसमें इतना ताप बढ़ जाता है, एक `मबवदक की करोड़ो, करोड़ो भाग में, आस पास की बहुत सारे अणुओं को एकत्रित कर देता है। आकर्षण बल बढ़ कर के एकत्रित करता हुआ, जलना हुआ ज्वाला जैसे नीचे की ओर आता है। कभी–कभी कोई चीज जैसा भी चीज मिल सकता है, कभी–कभी नहीं भी मिलता है, ये धरती के वातावरण, वायुमण्ड़ल के अंदर घटीत होता है।

प्रश्न– मतलब धरती के वातावरण के बाहर से कोई चीज नहीं है?

उत्तर– बाहर से कोई चीज नहीं आता।

प्रश्न– इतने बड़े–बड़े पत्थर धरती पर गिरता हैं ?

उत्तर– वह सब इसी धरती का वातावरण का है, इस धरती से समृद्ध वातावरण कहॉ होगा।

प्रश्न– पत्थरों को अध्ययन करने से पता चला , जो उसका उंजमतपंस है, वह धरती में मिलने वाले उंजमतपंस से भिन्न हैं?

उत्तर– अभी चन्द्रमा से जो उंजमतपंस लाए, धरती के किसी उंजमतपंस के तुल्य ही है, ये सब व्यर्थ की बात ।

प्रश्न– हम लोग ऐसा अभी तक सुनते हैं, किसी जगह में यदि गर्मी हो जाए, वहॉ से हवा के कण दूर हट जाते हैं, आप इससे विपरीत बता रहे हैं, कि कहीं यदि तापमान हो जाए तो दूर–दूर से कण वहॉ पर आ जाते हैं?

उत्तर– चुम्बकीय बल के संयोग से ऐसा होता हैं। उसको जोड़ लो, बात पूरा हो जाएगा। धरती को छूने तक वह इकट्ठा करते ही आता है, पिण्ड़ बन जाता हैं।

प्रश्न– विज्ञान का अवधारणा इससे उलटा है, बड़ा आता है, हवा से टूट–टूट कर छोटा रह जाता है?

उत्तर– कहने से क्या हुआ, कहे है, सिर्फ। होता इतना ही हैं, किसी एक प्रकार की अणु का संयोग होने से ऐसा होता हैं, कोई भी दो प्रकार का आवेश, एकत्रित होने से तीसरे प्रकार की आवेश में प्ररिवर्तित होता है। उसी विधि से, ब्रम्हाण्ड़िय किरण का संयोग, किसी निश्चित प्रजाति को अणु से होना चाहिए। योग होते ही उसमें ताप का प्रचण्ड़ ताकत बनता हैं। वह ताप से, आकर्षण का प्रभाव क्षेत्र दूर–दूर तक बन जाता हैं। बनते ही ,उसी के साथ जलता हुआ नीचे आता है। आते आते मार्ग के अणु को बटोरते हुए धरती में बैठता है।

प्रश्न– बम्हाण्ड़िय किरण का मतलब आवेशित कण?

उत्तर– ब्रम्हाण्ड़िय किरण के बारे मे, ऐसा बात सोचना चाहिए, बहुत सारे किरण, विकिरण के रूप में दौड़त है। विकिरणीयता क्या चीज है? जब कभी भी परमाणु में जो कार्य होता है, उसका जितने भी ताप हैं, वह परावर्तित होता है, परमाणु में जितना ताप होता है, वातावरण में यदि उससे कम होगा, उस स्थिति में वातावरण में वह परावर्तित होता है। विकिरणीय उंजमतपंस में परिवेशिय गति से उत्पन्न, जितने भी ताप है, वह मध्यांश को प्रभावित कर देता हैं। मध्यांश में हजम होने की एक निश्चित ताकत है, वह ताप को अपने में रखने के लिए, हजम करने के लिए निश्चित एक अवधि है, वहॉ तक वह अपने में समा लेता है, उससे ज्यादा होने पर उससे बाह्य वस्तुओं पर फेंक देता है। ताप के रूप में नही कंपन के रूप में फेंकता हैं।

प्रश्न– कंपन माने?

उत्तर– वातावरण में जो उवसमबनसमे रहते हैं। वह उद्वेलित होने कि स्थिति में हो जाते हैं। अभी हमारे शरीर में विकिरणीय प्रकिया से जो ग्.तंल करते है। हमारा शरीर के अणुओं को उद्वेलित कर के हड्ड़ी का चीवजव लेता हैं।

इसी कम से वातावरण में उसका उद्वेलन शुरू होता हैं। हो करके वह अणु से अणु, अणु से अणु, केवल प्रभाव ही जाता हैं। इसको विकिरण नाम हैं। उसमें ताप, परावर्तित नहीं होता हैं। तरंग ज्तंअमस होता हैं। तरंग, मध्यांश से प्रेरित प्रकरण हैं। उसको इतना ज्यादा पैना पन है, चुभने वाली चीज है, एक के अंदर घूसने की , भेदने की योग्यता हैं। अपना वाछिंत विधि से उससे काम लेने योग्य ताकत हैं। इसको ले भी रहे हैं। विकिरण गति ब्रम्हाण्ड़िय किरण कहलाता है।

प्रश्न– ये जो विकिरण का प्रभाव है, किसी इकाई के केन्द्र मे होता है, या बाहरी भाग में?

उत्तर– केन्द्र में होता है, अभी हम जितने भी बाकि बात कहते हैं, इसमें मध्यांश से बर्हिगत होता है ताकत, उसमें कोई चंतजपबसम जाता नहीं हैं।

प्रश्न– विज्ञान का कहना है, अल्फा, बिटा, गामा, तीन प्रकार के चंतजपबसमे निकलते हैं। परमाणु से ।

उत्तर– ये तीन प्रकार से प्रभाव होता है, चंतजपबसमे नहीं होता है, बाह्य संसार में जितने भी अणु परमाणु होते हैं, उनके ऊपर प्रभाव ड़ालते है, वह तरंगवत जा कर के वाछिंत किया करते हैं।

प्रश्न– किरण क्या हैं?

उत्तर– जैसे सूर्य से प्रकाश आता है, यह किरण है, प्रतिबिम्बो से किरण होता है, प्रतिबिम्ब, अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब विधि से किरण, परावर्तन विधि से ताप होता हैं, विकिरण तरंग विधि है। वातावरण में तरंग पैदा करने की विधि है, मध्यांशों में जो दबाव बनी रहती है। उसके कंपन से वातावरण में दबाव पैदा हो जाता है।

किरण और रश्मि दोनों अलग अलग हैं। किरण किसी भी धरती के वातावरण में आने के बाद, वह अनुबिम्ब, प्रत्यानुबिम्ब में विभक्त हो कर के अनेकानेक बन कर के, अनंत भागों में बॅट कर के, धरती को छूता हैं, इसका नाम है रश्मि।

प्रश्न–ेनतबिम जमदजपवद नाम का एक चीज विज्ञान में पढ़ाते हैं, यदि एक कॉच के जनइम में पानी भरेगें, तो ऐसा दिखाई देगा कि जनइम के किनारे किनारे पानी को ऊचाई ज्यादा है, और केन्द्र के तरफ पानी गहराई में हैं। मतलब थोड़ा झुका हुआ दृश्य दिखता है, उनको ऐसा कहते है ंकि सतह के कारण ये खीचॅते हैं ।

उत्तर– ऐसा कहते हैं, की ेनतबिम जमदजपवद से मुक्त रहता है। ये जनइम में भरने के कारण है, वही चीज हसें में भरते हैं, वह ऊपर रहता हैं। जनइम के आकार में पानी भरोगे, ऐसे ही दिखेगा।

प्रश्न– इसका कारण क्या है?

उत्तर– पानी में भार होता है, पानी में एक और गुण है, पानी अपने समअमस को उमदजंपद करता है, यदि 2 जगह हो, पानी को अपने समअमस को ीवू करने के लिए, 4 जगह हो, माने ये जनइम, वह जनइम ऐसे 4 जनइम बना दिया, एक में पानी भरा उन सभी जनइम में एक ही समअमस में पानी होता हैं।

कैसे भी भरिए, इसका क्या नाम दिया ष्ूंजमत उंामे पजे वूद समअमसष् पानी किसी में भरिए, कैसे भी भरिए, अपने में एक समअमस बना लेता हैं। आप लोगों ने जनइम की इंदक कर दिया। सीधा जनइम में भरकर के देखो, कैसा दिखता है, सीधा जनइम में भरकर देखोगे तो उभरा ही दिखता है, हसें में भरोगे तो उभरा ही दिखता हैं।

प्रश्न– जैसे तालाब में पानी जमा रहता है, ये जो इसका समअमस उंपदजंपदकरता है, वह सिंज रहता है या वह भी ऐसा उठा हुआ रहता हैं।

उत्तर– वह उठा ही रहता है, समुद्र भी उठा रहता है, धरती के आकार में सब बने रहते है,ेनतबिम पूरा धरती के आकार मे रहता हैं। पानी हो, चाहे हवा हो, चाहे ठोस हो।

प्रश्न– पहाड़ तो धरती का आकार का नहीं है?

उत्तर– पहाड़ सब मिलकर ही धरती का आकार है, अन्ततगत्वा वह सब गोलाकार ही हैं।

पदार्थ का ऊर्जा में परिवर्तन

प्रश्न– जैसे पदार्थ का एक टुकड़ा है, उसको यदि हम किसी गति में ले के जाएगें, जैसे–जैसे उसका गति बढ़ते जाएगें, गति बढ़ाते–बढ़ाते एक ऐसी स्थिति आएगी की, वह पदार्थ पूरा का पूरा ऊर्जा में बदल जाएगा। क्या पदार्थ वास्तविक रूप में ऊर्जा में बदल जाता है, ऐसे कोई बात अस्तित्व में होती है क्या?

उत्तर– कोई भी वस्तु ऐसा नहीं है, वस्तु का सूक्ष्म से, सूक्ष्मतम् विभाजन हो सकती है, परिवर्तन हो सकता है, अभाव नहीं हो सकता। सूक्ष्म, सूक्ष्म तक जिसको हम गिन नहीं सकते हैं, उस प्रकार से टुकड़े–टुकड़े हो सकते हैं। हम जो अपेक्षा रखते हैं, उससे ज्यादा परिवर्तन भी हो सकते हैं, अभाव नहीं होता हैं।

प्रश्न– यदि उसका गति बढ़ा दे? क्या ऊर्जा में बदल जाएगा?

उत्तर– गति बढ़ाइये, कुछ भी कर लीजिए, ऊर्जा में नहीं बदलेगा।

प्रश्न– ऐसा कहा जाता है, यदि प्रकाश के वेग तक उसको बढाया जाये?

उत्तर– कोई भी वस्तु मे तब तक उसमें गति दिया जाए, जब तक उसका आकर्षण बल शून्य ना हो जाए। एक अवधि ये बनता है, शून्याकर्षण में होने तक। दूसरा ये हो जाए वस्तु को इतना विखण्ड़ित किया जाए, धरती के वातावरण से बाहर भागने योग्य हो जाए, इतना छोटा टुकड़ा किया जाए, वह इतना वातावरण के जाल से बीच से, इस धरती के वातावरण से बाहर भाग जाए। अभी ये लोग जिसको तरंग कहते हैं, वह सब इस प्रकार भागी हुई चीज को एक तरंग कहते हैं। वह तरंग को ये ऊर्जा कहते हैं। जबकि वस्तु के बिना तरंग होता नहीं। चंतजपबसमे के बिना तरंग नाम का चीज होता नहीं। चंतजपबसम का चंतजपबसम उसका चंतजपबसम उसके बाद भी कोई चीज रहता है, वही है, तरंग इसी को कहा जाता है। अभी प्रकाश में जो तरंग की बात कही, उसके लिए एक प्रयोग

किया है, विज्ञानियों ने, एक छत की छेद से, प्रकाश को धरती तक छूता हुआ देखा गया। ऐसा 2 जनइम बनया। 2 जनइम बनाने से धरती में जो प्रतिबिम्ब पड़ा रहता है, वह हिलता हुआ दिखता है, उसको दिखाकर ये कहते हैं, प्रकाश में तरंग है।

प्रश्न– इसको इस प्रकार से प्रयोग किए है, 2 छेद अगर लें, किसी पट्टी पर और कोई इकाई को आप धरती में देखने जाएं, उसका जो तमसिमबजपवद बनता है, उसका तपदह बनता है, उसकी जो तपदहे बनती हैं, उस तपदह को मगचसंपद करने जब जाते हैं, किस आधार पर उसमें वह तपदह बन रही है।

उसके आधार पर कहते हैं, तरंग उसमें है, तो ही वह तपदह बनेगा। अगर तरंग मूल रूप में नहीं है, तो प्रकाश का जैसा स्त्रोत या उसका प्रतिबिम्ब वैसा ही बनेगा।

प्रश्न– जैसे ये जो, दीवार के पास से यदि प्रकाश निकालेगा तो किनारे से थोडा सा मुड़ जाएगा। ऐसा मानते है, उसको ऐसा व्याख्या करते हैं।

उत्तर– प्रकाश की जो बात हमने छत से कहा, आप छेद से, वह दीवार से सब ठीक है, वह जितने नचाई दिखती है, आप कहते हो तपदहए हम कहते है, नचाई वह जो कुछ भी दिखाते है, प्रकाश के अंदर जो उवसमबनसमे जैसा नाचते रहते हैं, वह ऐसा दिखते हैं।

प्रश्न– निश्चित केन्द्र से परिधियॉ बनती है, वर्तुल बनता है, इसमें कुछ वर्तुल कंता होते हैं, फिर इतपहीज होते हैं, फिर कंता होते हैं, फिर इतपहीज होते हैं, तपदह बनने का मिदवउपदं तरंग के आधार पर मगचसंपद होता हैं।

उत्तर– तरंग बताने के लिए व्याख्याऍ ये हैं, तरंग होने वाली बात उंजमतपंस जो बताया, उस प्रकाश के अंदर जितने भी उवसमबनसमे रहते हैं, वह सबका नचाई बना ही रहता हैं। वह जिस उवकमस से बनता है, उसको आप अपने अनुसार व्याख्या करते हैं। हमको कहना है, प्रकाश तरंग हैं, हम कहते हैं, प्रतिबिम्ब में कोई तरंग होता नहीं हैं। किसी वस्तु का प्रतिबिम्ब में कोई तरंग नहीं होता ।

प्रश्न– जैसे सामने में कोई बंतक इवंतक रखा है, उसमें गोल छेदा कर दिए, उसमें एक गोला दिखना चाहिए। एक गोला ना दिखकर एक इतपहीज गोला दिखता है, एक हल्का चमक वाला गोला दिखता हैं।

उत्तर– वह ऐसा चीज है, प्रकाश कहीं भी जा के टिका, वह टिकने के पश्चात् उसके आस पास के जितने भी अणुराशियॉ है, उसके ऊपर अनुबिम्बन, प्रत्यानुबिम्ब विधि बनती रहती है, उसमें दूसरा गोलाई जैसा दिखता है।

प्रश्न– एक नहीं बाबा अनेक गोलाई दिखता है।

उत्तर– अनेक ऐसा दिखता है, ये जो पृष्ठभूमि है, जहां टिका है, तमेवनतबमे जितना दूर से आया है, वहॉ से यहॉ तक, परावर्तन, प्रत्यानुबिम्ब अनुबिम्ब की प्रकिया, वहॉ से ही शुरू हुआ है, इसीलिए अनेक तपदह दिखते है।

प्रश्न– जो कमदेपजल है, इतपहीज दमे हैं, कंता दमे हैं, उसको पूरा प्रकिया है, इसको ठीक से समझना पड़ेगा। निश्चित दूरी पर निश्चित कमदेपजल होती है।, अंधकार की प्रकाश की।

उत्तर– जितना अंधकार बना करके ये छेद से प्रकाश को, धरती पर टिकाने से, ये गोले जो है, ज्यादा दिखेगे। यदि प्रकाश के स्त्रोत से यहॉ पर टिकने वाले जगह के आस पास में, यदि प्रकाश बनाए रखोगे कई गोले नहीं दिखेगें। जितना कंता बना कर के इसको परीक्षण करोगे। उनता ज्यादा गोला दिखेगा।

सापेक्षवाद और अनिश्चियवाद

प्रश्न– सापेक्षवाद नाम से एक चीज प्रचलित है, उसके अनुसार कोई भी चीज निरपेक्ष नहीं है। 2 चीजों का सापेक्ष में ही सारी बात है, तो क्या इसको हम सह अस्तित्व वाद मान सकते हैं?

उत्तर– हमारे मानने से क्या होता है? वह जैसा व्याख्या करते है, वह तो सह अस्तित्व को व्याख्या नहीं करते। सह अस्तित्व को ही भ्रमित हो के सापेक्ष कहते हैं। पूरकता को अलग कर के काट कर के सापेक्ष कहते है। हम कहते है, सह अस्तित्व है, परस्पर पूरकता है।

प्रश्न– एक जो बड़ा चतवइसमउ है, सापेक्षवाद का, कि वह होने को परिभाषित नहीं कर रहे हैं, सिर्फ एक दूसरे के सापेक्ष में होने को परिभाषित कर रहे हैं। उसके आधार पर निष्कर्षात्मक कुछ निकल नहीं पाता है।

उत्तर– अस्तित्व में पूरकता सिद्धान्त है। ये सापेक्षता को अपने में स्वतंत्र रूप में बताना चाहते हैं। जब कि ये रहते है, पूरकता विधि से जैसा एक रेखा खीचॉ, दूसरा रेखा खीचॉ । एक रेखा थोड़ा बड़ा हो गया, एक रेखा छोटा हो गया। इसकी सापेक्ष कहा जाए? ऊंचाई के लिए थे पूरक है, नीचे के लिए वह पूरक है, ऐसा वह व्याख्या नहीं करते ।

प्रश्न– उसमें भी ज्यादा`मतपवने मुद्दा हैं बाबा, 2 लकीर अगर हमने लिया, तो ये दोनों लकीर का होना, अपने आप में है, ऐसा मानते एक के सापेक्ष में ही दूसरा हैं, मतलब छोटी लकीर अपने आप में एक वास्तविकता है। बड़ी लकीर अपने आप में एक वास्तविकता है। दोनों एक–एक वास्तविकता है, उनका होना अपने आप में एक मुद्दा है। उसका स्थिति, गति को समझना मुद्दा है, उसके बाद एक के सापेक्ष में दूसरे को समझना ये दूसरी बात है। और तीसरी बात उसका पूरकता को समझना, कि दोनों एक

दूसरे के पूरक हैं। ये एक नम्बर और तीन नम्बर को हटाकर, 2 नम्बर की बात करते है, सापेक्षवाद।

प्रश्न– आप है तभी मैं हूँ ये बात, मै हूँ , इसको नहीं कह सकते ?

उत्तर– एक ही झाड़ में एक छोटा फल होता है, एक बड़ा फल होता है, छोटा होने के लिए, गवाही करता है,

बड़ा वाला, बड़ा होने का गवाही करता है, छोटा वाला, बड़ा नाम करण होने का, छोटा नाम करण होने का ये पूरकता को निभाते ही रहते हैं। अस्तित्व में तो उवकमस ऐसा ही है, इसको ये अपना मनगढ़त कुछ भी व्याख्या करें, उसके लिए कौन क्या करेगा।

प्रश्न– उसमें ये बात स्पष्ट होना चाहिए, छोटा है, ऐसा नाम करण भले ही आप बड़े के तुलना में कर सकते हैं, लेकिन छोटा एक वस्तु के रूप में है?

उत्तर– अपने में वह सम्पूर्ण हैं, जींज पे जीम चवपदज छोटा जिसको कह रहे है, वह भी अपने आप मे सम्पूर्ण हैं, बड़ा जिसको कहते है, वह भी अपने आप में सम्पूर्ण हैं, उसका वितउनसं इकाई + वातावरण = इकाई सम्पूर्ण।

प्रश्न– बड़ा चतवइसमउ यही हैं कि, होने को ही हम पहले स्पष्ट नहीं करते हैं, उसके बाद उन दोनों का सापेक्षता को परिभाषित करते हैं। सापेक्षता के आधार पर होना हैं, उसको प्रतिपादन नहीं करते हैं।

उत्तर– जबकि सापेक्षता जो है, होने के बाद एक दुसरे के पूरकता में होता हैं, अपने अनुसार होने के बाद एक दुसरे के पूरकता के अर्थ मे छोटे बड़े होते हैं। वैसे ही पत्थर, एक छोटा पत्थर, बड़ा पत्थर होने के बाद एक दुसरे के पूरकता में, ये अपने को प्रमाणित करते हैं, जबकि दोनों अपने अपने में संपूर्ण हैं।

प्रश्न– नदबमतजपदपजल चतपदबपचंस नाम का एक चीज है, सारी व्याख्याओं को इसके आधार पर करने की कोशिश की हैं।

उत्तर– नदबमतजपदपजल = नासमझी।

नासमझी = नदबमतजपदपजल

समझदारी = बमतजपदपजल

प्रश्न– परमाणु की जो चर्चा कर रहे हैं, हम लोग परमाणु के अंदर अंश गति करता है,अंशो में एक मात्रा भी होता है, मात्रा के साथ गति भी होता है, उनके अनुसार ये निश्चित नहीं होता है, इनका जो दिशा रहेगी, अनिश्चित रहेगी।

उत्तर– परमाणु अंशों का गति जब एक बलय में घूमता है, गोल गोल घूमता है, निश्चित दिशा मे ही घूमता है, कभी इधर घूमें, उधर घूमें होता ही नहीं। किस बात की अनिश्चयता है, `चपद उवजपवद जो करते हैं, वह निश्चित है। धरती कितनी बार उल्टा घूमता है? उसका भी निश्चित है।

प्रश्न–जैसे परिवेश का दूरी है, मध्यांश से वह निश्चित नहीं होता, कभी पास भी आ जाता हैं, कभी दूर भी हो जाता हैं?

उत्तर– ये ठीक बात है, वह इस ढंग से है, प्यार से सम्हालेने की वस्तु है, प्यार से हम अपनी व्यवस्था को, समीकरण करने के लिए प्रमाणित करने के लिए कितना दूरी, कितना नजदीक तक हम प्रमाणित कर सकते है, वह स्वयं में निश्चित है। उसके लिए आप क्या कर लेगें? हम क्या कर लेगें?

प्रश्न– परमाणु अंश को जो गतिपथ है, वह निश्चित नहीं हुआ, इसका मतलब?

उत्तर– कैसा निश्चित नहीं है? निश्चित नहीं है तो गतिपथ क्या है, फिर कभी पास आताहै, कभी दूर जाता है, क्या आपत्ति है, जैसे की आप कभी पैर मोड़ लेते हो, फैला लेते हो तो क्या आदमी बदल गया। आपका हाथ खोल लिया तो क्या आप अनिश्चित हो गये?

प्रश्न– दूर चला गया तो उसका गति कम हो गई?

उत्तर– कम क्यों होगा? कोई गति कम नहीं होता है, ना ज्यादा होता है। परमाणुओं का गतिपथ में जो गति है, वह यथावत हैं। `चपद उवजपवद है, वह यथावत है, स्थिति यथावत है, गति यथावत है। गतिपय जो है कभी थोड़ा पास हो जाता है, थोड़ा दूर भी हो जाते हैं। एक तरफ जितना दूर होता है, दूसरे तरफ उतना पास होता हैं, रहता हैं, उतना ही । अभी ये धरती सूर्य के चारों तरफ घुम रहा है, भी वैसे ही हैं।

प्रश्न– इसको इस तरह से मान सकते है, रूप और गुण जो परिवर्तनशील है, यहॉ तक वह लोग देख पाये हैं, और इस आधार पर बोलते है कि यह निश्चित नहीं है, बदलता रहता हैं।

उत्तर– परमाणु अंश का रूप कभी बदलता नहीं, सभी परमाणु अंश समान हैं। गठन पूर्ण परमाणु एक समान है, प्राण कोषा एक समान, जागृति एक समान। चार बिन्दु अभी इस धरती पर मेरे पास, चार जगह में समानता को देखा। परमाणु अंश सभी का सभी समान हैं। परमाणुओं के रचना के अनुसार, जहॉ जब जो अंश काम करना है,

वहॉ वही काम करता है, जैसा प्राणकोषा ये पैर में भी काम कर रहा है, इतंपद में भी काम कर रहा है, हृद्य में भी काम कर रहा है, आतंड़ी में भी काम कर रहा हैं। इसको सामान्य व्यक्ति समझ सकता है, ऐसा मेरा सोचना हैं।

प्रश्न– अनिश्चयता वादी सिद्धान्त का प्रतिपादन नदबमतजपदपजल चतपदपबपचंस इस रूप में श्शुरू हुआ की ंजवउ को देखना श्शुरू किया लोगों ने, परिवेश में जो अंशो का घुमना है, उसको वह बींतहम कहते हैं। बींतहमे का तवजंजपवद है, उसको जब तय करने जाते हैं, तो उसका निश्चित परिवेश दिखाई नहीं पड़ता ।

उत्तर– हम देख नहीं पाते है, ये बताते नहीं है, बोलते है, दिख नहीं पाता।

प्रश्न– जो आप कहना चाह रहे हैं, परिवेश के आस–पास में दिखाई पड़ते हैं।

उत्तर– ठीक है ना, हम ये कहते है, हम जो देख पाते हैं, आंख तो हकीकत को देखता नहीं, आंख का क्षमता बहुत छोटा है, उस प्रकिया से हम सत्य को समझना चाहते हैं, वह होने वाला नहीं है, आंखों में सत्यता आता नहीं, आंखों से जितना दिखता है, उतना निष्कर्ष निकालते है, वद जीम ूीवसम कैसा निकालोगें। आंखों से जैसा दिखा, वैसा निष्कर्ष निकाल लिया।

प्रश्न– परमाणु को देखने जाते है, तो परिवेश के चारों तरफ एक निश्चित दूरी तक, उस अंशों का होना पाया जाता है, तो हम परिवेश तो देख पाते हैं, पहला परिवेश, दूसरा परिवेश तीसरा परिवेश देख पाते हैं। लेकिन वह परिवेश बिल्कुल एक लाइन में है, ऐसा दिखता नहीं। बाकि धुधंला दिखता हैं, दूरी है, हर परिवेश के साथ, जिसमें वह अंश दिखाई पड़ते हैं, ये देखा गया । इसके आधार पर उन्होंने प्रतिपादन किया, इसका जो

होना है, (अंश के परिवेश में) इसको निश्चयता पूर्वक नहीं कहा जा सकता। एक नदबमतजपदपजल है, अनिश्चितता है, उस परिवेश में होने के लिए।उस परिवेश से वह थोड़ा हटा सा होता है, कितना हटा हुआ होगा, वह इस पर निर्भर करता है, कि हम उसको बाहर से देखने के कम में कितनी ऊर्जा दे रहे हैं। कितना कपेजनतइ कर रहे हैं? यहॉ से वह बात उन्होंने श्शुरू कि, की हम उसका होने का निश्चय पूर्वक नहीं कह सकते, की वह उस परिवेश में इसी क्षण में कहॉ पर है, इतना तो हम कह सकते है, कि इस परिवेश के आस–पास इस संभावना के साथ होगा। इतना जो है, प्रतिपादन हैं।

उत्तर– प्रतिपादन अच्छा है, ना समझी का।

प्रश्न– गलती यहॉ पर नहीं है, मेरे हिसाब से, गलती इस बात पर हे, इसके आधार पर ये निष्कर्ष निकालना, की जो अनिश्चयता यहॉ पर दिख रही है, उसके ठीक–ठीक स्थान निश्चित करने में, वह अनिश्चियतता पूरे अस्तित्व में हैं।

उत्तर– एक स्थान में होने पर गति कहॉ हुआ? हमने जो उसका कपेजतनइकिया वह बिजवत जोड़िये।

प्रश्न– चतवइसमउ ये है कि हम ये प्रतिपादित करते है, जो अनिश्चयता छोटे स्तर पर है, वही अनिश्चयता पूरे अस्तित्व में हैं?

उत्तर– हॉ ऐसा सोचने गए, बस से नुकसान नहीं हुआ, इसमें हमारा कहना, ये है, ना समझी हम कैसा करते हैं।

1. आंखों में किसी वस्तु का सम्पूर्णता समाता नहीं।
2. किसी वस्तु को हम हस्तक्षेप किए बिना हम पहचानते ही नही, अपने स्वरूप से विचलित किए बिना, परेशान किए बिना हम किसी वस्तु को मूल वस्तु को देखना जानते नहीं।
3. गति और स्थिति, अविभाज्यता के साथ सर्वाधिक गति को प्रदर्शित करता हुआ, परमाणु का परिवेशिय अंशो का गति को, एक जगह में पाने के लिए आप कैसा कल्पना करते हैं?

   ये 3 बिजवत इसके साथ जुड़ता हैं।

प्रश्न– एक बिजवत और है, परस्परता का प्रभाव, वह जो परमाणु अंश है, वह सब बाकि के परमाणु के परस्परता में है, उसका भी प्रभाव है।

उत्तर– सभी रहता ही है, एक दूसरे के साथ। एक दूसरे के साथ रहना एक आवश्यकता है, ये एक दूसरे के साथ रहने का फल ही है, ये अपने अपने परिवश में। इसके नैसर्गिकता में ये है, उसके नैसर्गिकता में ये है, इन दोनों का अस्तित्व बरकरार रहने का प्रमाण ये स्वयं में सिद्ध करना है। उसके बारे में हम अपने मनगढ़त नाम कहते हैं, जो परमाणु का आचरण अनिश्चित है।

नदबमतजपदपजल नाम का कोई चीज होता नहीं। अनिश्चियता नाम से यदि आप कहना चाहते हैं, अनिश्चयता नाम को कोई चीज होती नहीं। मनुष्य निश्चयता को पहचानने में असमर्थता बनी रहती हैं। उस सहमती को जोड़ा जाए।

प्रश्न–जिस घटना से ये निर्णय ले रहे हैं, उस घटना को हम ठीक से मगचसंपद कर सकते हैं, और इसमें गलती कहॉ हो रही है, निष्कर्ष निकालने में वह भी हम समझ सकते है, घटना तो ये है कि हम परमाणु अंश को देखने जा रहे हैं, वह परमाणु अंश जो अपने आप में गति में है, स्थिति में है, एक दूसरे के परस्परता में हैं, उसके प्रभाव के कारण, सम्मिलित प्रभाव के कारण, उसका जो अपना परिवेश है, उसमें इधर–उधर होते हुए दिखाई पड़ता है, अब हम उसको जब देखने जाते है, तो हमका उस परिवेश विशेष में नहीं दिखते, उसके आस–पास दिखते है। ऐसा दिखना हैं उसको अगर हम कह रहे है, कि अनिश्चयता है।

उत्तर– परिवेश टेढ़ी–मेढ़ी होने के आधार पर, वह जो कहते है, उनको आंखो का धोखा है, वह।

प्रश्न– धोखा नहीं, उन्होंने पूरा उसको देखा नहीं, इसीलिए उसको ही सिर्फ देखकर ही कह रहे हे, कि ये अनिश्चयता है, एक तो ये गलती है। दूसरी गलती ये है कि उस अनिश्चयता के आधार पर निष्कर्ष निकाल रहे हैं, कि सब अनिश्चय हैं। उनके दिए हुए मगचमतपउमदज को भी हम ध्यान से देखकर, मगचसंपद कर सकते है, उसको बता सकते हैं।

प्रश्न– सापेक्षता को जो बात है, पहला मुद्दा है?

उत्तर– हर एक परमाणु अपने वातावरण सहित परिपूर्ण है, क्योंकि उसका आचरण निश्चित है, जिसका आचरण निश्चित नहीं है, वह परमाणु हुआ नहीं है, हर परमाणु का आचरण निश्चित होने के आधार पर वह अणु के रूप में, अणु रचित रचना के रूप में अपने वैभव को व्यक्त किया। उसी तरह प्राणकोषा, अपने वातावरण सहित सम्पूर्ण है, वह सम्पूर्णता के साथ अपने निश्चित आचरण को व्यक्त किया रहता हैं। उसके आधार पर एक वनस्पति रचना से लेकर, मनुष्य श्शरीर रचना तक, अपने को प्रमाणित किया। उसके बाद जीवन में जीवन अपने वातावरण सहित सम्पूर्णता के साथ साथ अक्षय बल, अक्षयशक्ति को प्रमाणित किया। वही चीज जागृत हो कर के यथार्थताओं को, वास्तविकताओं को, सत्यता को, जीवन में प्रमाणित करने की कार्यक्रम के तहत क्रियापूर्णता, आचरण पूर्णता को प्रमाणित करता है। हर एक इकाई का आचरण निश्चित है, इसीलिए हर एक–एक निश्चित हैं। इसमें सापेक्षता का क्या मतलब है? अनिश्चयता कहॉ से आता है, विकास निश्चित है, अस्तित्व स्थिर है होना स्थिर है विकास और जागृति निश्चित है, इसके ऊपर अपना व्याख्या जो देना है, विभिन्न आयामों में उसको पहचान के पूरा करिए।

टिकाऊ खेती

श शंकर जीव व्यापार के चुंगल में फंसा नहीं फंसा पाता नहीं। शंकर बीज बिल्कुल व्यापार के चुंगल में पकड़ में आ गई। शंकर बीजों को करने में जो सफलता मिली है, इसमें देश के धरती को, किसानों के पास जितने बीज थी, वह सब गायब होने लगी। हर वर्ष सौ, दो सौ प्रकार की बीज गायब होते जा रहा हैं, ये कुछ दिनों बाद किसानों के पास एक भी प्रकृति सहज बीज नहीं रहेगा। उसके बाद समुद्र के उस पार से बीज मगाएंगे। बीजा देना बंद हो गया तो कृषि बंद हो गया। उसके बाद मांसाहार ही करेगें। इस जगह में आदमी जा रहा है, ये कुल मिला कर के मानव को व्यापार कितना अच्छें ढ़ंग से धोखा कर सकता है, दगा कर सकता हैं,उसका एक बहुत अच्छी उदाहरण हैं। धीरे–धीरे किसानों का दरवाजा तक आ चुकी है, अब वह कितना देर में ग्रसित कर लेगा, 1 वर्ष, 2 वर्ष, 4 वर्ष, 10 वर्ष ये चल सकता हैं। किन्तु आ चुका है, इसके साथ ये भी सच्चाई है, सही तौर, तरीका भी अभी स्थापित नहीं हुई हैं। कोई सटीकता से इसमें

जागृत कर सके, जागृति विधि से उसमें एक स्वावलम्बन की रास्ता मिल सके। उस प्रकार की तरीका स्थापित नहीं हुई हैं। आरोप, पत्यारोप तो चालू है, किन्तु आरोप, प्रत्यारोप से कोई फायदा नहीं है। सुविधा के वंशीभूत हर किसान भी हैं, हर मजदूर भी हैं, हर विद्वान भी है, हर बेवकूफ भी हैं, हर नेता भी है। सभी कोई सुविधा के वशीभूत हैं। वह सुविधा के वशीभूत होने का फलस्वरूप ये सारे बीज किसानों के हाथ से खसकती चली जाती है। सैकड़ो प्रकार की धान का किस्म हमारे देश से लुप्त हो गया है। अब वह नहीं है, अभी से कम से कम 60 वर्ष का तो हमको ध्यान है, 60 वर्ष के पहले, जितना प्रकार के धानों को देखा था, हमारे आंखो में उसमें से कम से कम 60–70 प्रकार के तो हम जानता हूँ। वह धान अब नहीं हैं, बीज नहीं हैं, वह बीज को कौन, कब कितने बरसों में, कितने प्रयासों में, कितने परिश्रम से आदमी प्राप्त किया था, इसको कौन आकलीत करने जाता है। इसको कौन इतिहास लिखने जाता है। इस प्रकार से हम फंसे है, बुरी तरीके से फंस तो गए हैं, इसमें 2 राय नहीं। विज्ञान के नाम से, विज्ञान के प्रति समर्पण है, वह समर्पण के पीछे बड़ी दगाबाजी है, ये बात सच्चाई है। बाकि कब तक सबका गला कटेगा ये भविष्य बताएगा। किन्तु दगाबाजी तो सही है, यदि हम चेतेगें नहीं, इसको रोकने की अपने पास कोई तरीका ना आए। तब तक आहत होना ही है। शंकरता जो है, उन्नत बीज विधि भी ये शंकर विधि है, बीज में उन्नत बीज प्रकिया होता है। '' बीज गुणन प्रकिया'' बीजों में गुण परिवर्तन करने वाली प्रकिया है, वह भी एक शंकरता ही हैं। जैसा जवउंजव को तैयार किया गया। शंकर विधि तो है ये।

शंकर विधि के लिए इसमें जो रस होता है, प्राकृतिक रूप में सप्तधातुओं में परिणत होने के लिए प्रकृति जो प्रयुक्त किया है, जिससे मानव श्शरीर रचना में , 7 धातुओं का, 24 प्रकार के रसों का जो नियोजन किया, इन 24 प्रकार के रसों का जो प्राकृतिक स्वरूप, सप्त धातुओं को प्रमाणित करने में सार्थक रहे हैं। जिससे ये मानव का श्शरीर रचना। जीवन में जागृति को प्रमाणित करने योग्य सार्थक रहता है, अभी हम कुछ भी इसमें विकृति करते है, ये जागृति के लिए योग्य रहगा, नहीं रहेगा, आगे सोचने की बात है। मानव के साथ भी कुछ ऐसे पिमसकूवता करने के बारे में जा रहे हैं। मानव जो है, वास्तविक, प्राकृतिक मानव के रूप में रहेगा या नहीं रहेगा। अभी भी मानव प्राकृतिक रूप से पशुमानव, राक्षस मानव के पद से बहुत ज्यादा विकसित तो हुआ नहीं। अभी मानव, देवमानव, दिव्य मानव के रूप में विकसित होना, जागृत होना बाकि है, उससे पहले पशु मानव, राक्षस मानव को ओर विकृत करने के लिए कोशिश करते है, हम और पीछे जने

वाली बातें हो सकती है, आगे जाने वाली बात तो हो नहीं सकती। इसमें हमारा अनुमान ऐसा है, शंकर प्रकार से जितने भी बीज के बारे में सोचते हे, या जीव जानवर के बारे में सोचते है, इसमें मानव को हानिप्रद स्थिति बनेगीं। इसमें मानव का कोई सहायता होगा नहीं। मानव मानसकिता के लिए, मानव स्वास्थ के लिए, मानव व्यवहार के लिए, मानव का सोच विचार, कार्य प्रणाली के लिए, ये कोई सहायक होने वाली नही। अभी पूरा मानव परंपरा जागृति के पद में, पहुंचा ही नहीं हैं, उससे पहले ऊँगली करनी शुरू कर दिया।

प्रश्न– वर्तमान परिस्थिति के टिकाऊ खेती का स्वरूप क्या होगा?

उत्तर–वर्तमान परिपेक्ष में टिकाऊ खेती का आज का वितउंज यही हैं, घर के पास गौशाला, पहला बवदकपजपवद यही है। गौ पालन से 2 प्रकार का फायदा, घर में घी, दूध, मट्ठा, दही ये पूरा हो जाता है। दूसरा गोबर, गौमूत्र से गोबर गैस पैदा करना। उसमें इंधन, चूल्हा, चौकी जलता है। तीसरा उससे बवउचवेज खाद तैयार करना, बवउचवेज खाद तैयार कर के खेती को उर्वरक बनाना।

इसको छोड़ के और कोई विधि से किसान बचने वाला नहीं। उजडेगा ही उजडेगा। सामान्य रूप में हर जगह में जो देशी बीज हैं, उसको सुरक्षा करना, शंकर बीजा के प्रति अपना विश्वास को सर्वथा हटाना, गलती से भी उस ओर नहीं जाना। तभी किसान अपने घर में दाना–पानी खा कर के अपने बच्चों को स्वस्थ देख पाएगा, नहीं तो बरबाद होने ही वाला हैं। इसका साधारण वितउंज यही हैं।

इसी चौखट में यदि किसान जी पाता है, वह किसान सही, वह परंपरा सही। उसको देख कर के, सीख कर के अनेक लोग सुखी हो सकते हैं, अनुकरण कर सकते है, अच्छे ढ़ंग से जी सकते हैं। इसको छोड़ कर के दूसर उपाय अपनाया तो उजड़ना ही उजड़ना।

प्रश्न– उन्नत बीज बनाने के लिए एक शंकर विधि है, वैज्ञानिकी के द्वारा तो क्या उन्नत बीज बनाने की कोई दूसरी विधि है, परंपरा को स्थापित करने के लिए?

उत्तर– उन्नत बीज का मतलब क्या है?

1. ज्यादा पैदा होना।
2. गुणवत्ता उसका बढ़िया होना।

लोगों का सोचना ऐसा है, वास्तविकता क्या है? हम एक छोटा सा कृषि करते हैं। देशी बीजा और गोबर खाद ड़ालकर हम दाना पैदा करते रहे है। यद्यपि हम छोटा सा जगह में करते रहें, हमारा आवश्यकता कम रहा, ये सब बातें हमारे साथ जुड़ी हुई बात सही है। इसके बावजूद हम देशाी बीजा, देशी खाद ड़ालकर के हम देशी बीज से एक एकड़ जमीन से 45 बोरा धान से 50 बोरा धान पैदा किए। धान का हम वजन देखे है, जिस प्रकार का हम धान पैदा करते है। अभी भी हमारे पास वह बीजा है, हम हर वर्ष उसको ड़ालते ही है। उस बीजा में , एक बोरा बीजा 80 ाह होता हैं। मैं समझता हूँ, धान में, उससे अच्छा वजनदार धान कोई होगा नहीं। अभी हमारे सामने जितने भी हम धान देखें है, उससे अच्छा वजनदार नहीं हैं। दाना के स्वरूप में छोटा सा छोटा दाना है। लम्बाई भी छोटा है, मोटाई भी छोटा है, उसको हम लोग '' प्रेमकोदई'' कहते हैं। इस दाना को हम खेत में डालते हैं, अभी 10–15 वर्ष पहले तक, हम करते रहें, उसके बाद हमारे बच्चें, पढ़े–लिखें आ गये। उसके बाद हमने सोचा पढ़े–लिखे हैं भई, अभी बुद्धिमान हो गये। ये करेगें, पता चला 10 वर्ष करते करते एक एकड़ में 5 बोरा धान उगाए। हमारा घर का बात है, दुनिया की बात हम नहीं जानते। मैंने पूछा की ये सब क्या हो गया, बोले कीड़ा काट दिया, धस गया, ये हो गया, वह हो गया। ठीक है, आगे वर्ष देख लेगें। आगे वर्ष 4 ही बोरा हुआ, पुनः वही सब बात। ये होते होते जब लगा कि यह ठीक होने वाला नहीं हैं, अभी गत वर्ष से उस ओर ध्यान देना श्शुरू किया, थोड़ा सा अच्छा हुआ, 18–20 बोरा धान हुआ। इस वर्ष कहॉ पहुंचेगें देखते हैं, ये हमारा रोग–राटा कही था, रोना धोना कही था, खुशहाली कही, कुछ भी कही, हम स्वयं बैठे हैं। आपके सामने, रसायन, खाद, उन्नत बीज ये सब ड़ाल कर के अन्ततगत्वा वह सब खेत, बंजर हो गया। अभी कितने दिन में वह सब ठीक होगा, वह अपने स्वरूप में आएगा, हम अभी भी नहीं कह पा रहे हैं।

विज्ञान सब कुछ सही करके चलता है, ऐसा है, जैसे भगवान सब कुछ करता है, सोच कर के हम सब बातों को भगवान से जोड़ते रहे, भगवान कुछ करता नहीं है। भगवान को कोई फुरसत नहीं है, किसी को मिटाने के लिए, किसी को बनाने के लिए, 50 बोरा धान। अच्छे से अच्छे जमीन में, अच्छा से अच्छा परम उन्नत बीज ड़ाले, रसायन, खाद, कुड़िया दें, उसके ऊपर जितना कीटनाशक दवाई है, उड़ेल दें, 50 बोरा धान उगा नहीं सकते और उसको उन्नत बीज कहते हैं। सभी प्रजाति के धान ये उन्नत प्रजाति है। इसको घटिया बना कर के उन्नत के नाम से हम बेचते है। क्योंकि पैसे से लाते हो, इसीलिए उन्नत हो गया।

प्रश्न–जैसे बासमती धान है, एक एकड़ में बहुत कम होता है, ''प्रेमकोदई'' बहुत ज्यादा होता हैं, ऐसा क्यों होता हैं?

उत्तर– ये सुगंधी वाला धान होता है, ये इतना ज्यादा धान होगा नहीं। हम सुगंधित धानों में देशाी धान, बासमती भी यहॉ के स्थानिय नहीं है, विदेशी है, सबसे कम धान होने वाला जो प्रजाति देखा, बासमती धान कम से कम होता है, जैसे छत्तीसगढ़ में ''काली मुछ'' नाम का एक धान पैदा करते हैं, सुगंधित धान, वहॉ विष्णुभोग नाम को पैदा करते हैं, छत्तीसगढ़ में दबराज, लोधीं धान भी काफी अच्छा होता है। कहना ये है, हमारे पास जितना धान को बीजा है, वह सर्वोपरी उन्नत बीजा है, उससे ज्यादा उन्नत बीज, 2000 वर्ष ये स्ंइवतंजंतल में बरबाद करते रहें, तभी भी उससे ज्यादा उन्नत बीजा ये बना नहीं पाएगें। इसीलिए विश्वास ये रखना चाहिए, अपने घर गॉव मं जो कुछ भी बीज है, यहॉ का वातावरण के लिए सर्वोपरी धरोहर है, यहॉ के लिए अनुकूल है, हमारे आपके लिए अनुकूल है, धरती के लिए अनुकूल है, हवा पानी के लिए अनुकूल हैं, इससे अच्छा ीपही इतममक क्या होगा। इससे ज्यादा उन्नत बीज क्या होगा? यहॉ के हवा के लिए अनुकुल ना हो, जल के लिए अनुकूल ना हो, आदमी के लिए अनुकूल ना हो। वह सब ीपही इतममक हैं। ये कुल मिलाकर के विज्ञान और व्यापार का संयुक्त रूप से गिराया हुआ गाज है, इस पर विश्वास रख कर के हम कहीं पहुंचेगें नहीं, सिवाय परेशानी मोल लेने के ।

प्रश्न– ज्पेनम बनसजनतम क्या है? प्राकृतिक है या नहीं?

उत्तर– वास्तविक अंकुर को ले कर के ही, वह अंकुरो को पैदा करते हैं। जैसे केले का, केले का मूल अंकुर से ही शुरू करते हैं। उससे यदि परंपरा यदि बनता है, परंपरा नहीं बनता है, तो वह ठीक नहीं हैं, ज्पेनम बनसजनतम से जो केले का पेड़ बनाया, उसमें जो पीक आता है, वैसे ही केला वह देता है, तब तो ठीक है।

प्रश्न–इस तरीके से धनिया का स्वाद खतम हो जाता है, सुगंध कम हो जाता है, इसका क्या कारण?

उत्तर–इसका कारण यह है, धरती का एक स्वाभाविक गुण है, धरती में जो कुछ भी हरियाली पैदा होता है, उससे खाद होता है, उसको जीव जानवर खा कर भी खाद ही पैदा करते हैं, और वैसे भी यदि धरती में मिलता है, तो खाद ही होता है, धरती वह सब

को पचाता हे, अभी भी अपन गाय का खाद गढ्ढे में ड़ालते हैं, पूरा का पूरा धरती ही उसको पचाता हे, पचने के बाद हम खेत में डालते है, पौधा उसको लेने के लिए सुगम परिस्थिति बनती है, अभी खाद आती है, उसमें अम्ल और क्षार, 2 प्रधान वस्तु होती है, वह शनैः–शनैः धरती में अम्लीयता को या क्षारियता को बढ़ाता चला जाता है। कोई ना कोई एक चीज बढ़ेगा ही। बढ़ने के बाद किसी तादात् तक बढ़ गया, उसके बाद वह ऊसर हो गया, ऊसर होने के बाद कहते है, ये मिट्टी काट कर अलग करों, दूसरा मिट्टी लाके ऊसर बनाओं, रासायनिक खाद में ये दोष छूटा हुआ कोई खाद होगा, ऐसा हम को पता नहीं

देशी गाय, शंकर गाय

प्रश्न– जीवावास्था से संबंधित कुछ जिज्ञासाएँ हैं, उसमें से देशाी गाय, जर्सी गाय, का तुलनात्मक अध्ययन विस्तार से समझाइये?

उत्तर–ये शंकर प्रणाली और स्वाभाविक रूप में वंश की बात है, ये । किसी जीव के साथ, अन्य जीवों को लेकर, शंकरता को उत्पन्न करने की विधि से, जर्सी गाय के बारे में अभी सोचा जा रहा है, सोचा गया और जर्सी गाय को तैयार भी किया गया, तैयार कर के लोगों को दिए भी, किन्तु शंकर जाति में ये देखा गया, वंश स्थिर नहीं हो पाता हैं। शंकर तो हो जाता है, किन्तु शंकरता का स्थिरता अस्तित्व में नहीं होता हैं, शनैः–शनैः शंकरता का क्षरण होते होते,वह पुनः जहॉ से शुरू किया था उस स्थिति में था, उससे बदतर स्थिति में वहॉ पहुंच कर के अन्त हो जाता हैं। श्शंकर प्रणाली मनुष्य का एक अपराधिक मानसिकता है। शंकर प्रणाली मनुष्य का सोच मानव परंपरा के लिए, एक अपराध मानसिकता का घोतक हैं। अपराध को सोचे बिना शंकरता को सोचा नहीं जा सकता। शंकरता तब तक वास्तविक नहीं हो सकता, वास्तविकता के सूत्र से जुड़ा हुआ, शंकरता ना हो। उसी को उन्नत माना गया। वंश का उन्नति या बीज का उन्नति तभी माना जाए, जब तक वह वंश और बिज परंपरा ना बन जाए। परंपरा जब तक नहीं बन सकती है, तब तक वह अपने आप में क्षरण होना पाया जाता है। अर्थात प्रकृति के लिए अस्विकृत होने का विधि ये स्पष्ट है। प्रकृति जब अस्वीकार करता हैं, उसको हम प्रस्तुत करते है, हम न्यायिक कब हुए, कैसे हुए? प्रकृति विरोधी जितने भी हम सुझबूझ तैयार करते हैं, अपने अनुसार बहुत बड़े भारी तीर मारे, ऐसे ही ना सोचते है। किन्तु वह तीरमारी कहॉ पहुंचा? वह क्या प्रकृति स्वीकारी? नहीं स्वीकारी ते हम कहॉ न्यायिक हुए? न्यायिक नहीं हुए तो, समाज के लिए, मानव के लिए उपयोगी कब बने? प्रकृति विरोधी हो कर के हम मानव का उपकार करते है, ऐसा सोच के बहुत कुछ काम कर गए। इसीलिए प्रकृति के साथ अपराध करना, ये भी घोषणा करना, कि हम मानव का उपकार कर रहे है, अभागा मानव, ये भी सोचता रहा, बहुत सारा, ये बड़ा उपकार हो रहा है, जर्सी गाय आने से कई लोग ऐसा सोचे अवश्य, जब की ये प्रकृति विरोधी है।

प्रश्न– प्रकृति विरोधी का आधार कैसे स्पष्ट होता है?

उत्तर– प्रकृति कहॉ स्वीकारा? शंकरता का वंश परंपरा स्थिर नहीं हैं। वंश परंपरा जब स्थिर नहीं होता है, तो प्रकृति कहॉ स्वीकारता हैं?

बीज का परंपरा स्वीकार नहीं होने से उन्नत बीज होने का कहॉ प्रमाण? बीज को हम डालते हैं, और उससे जो दाना होता है, वह बीजा नहीं बनता है तो प्रकृति कहॉ स्वीकारा। शंकरता को हम तैयार करते हैं क्योंकि हम ज्ञानवस्था का इकाई हैं। अपराध भी कर सकते हैं, न्याय भी कर सकते हैं, इस अवसर को हम दुरूपयोग करते हैं, दुरूपयोग करने के बाद प्रकृति स्वयं उसको अस्वीकारता है, उसके बाद भी हम जूझे रहते हैं, हम कितना अपराधी हैं, एक सोचने की मुद्दा हैं। ये भी साथ–साथ सोचा जाता है, अपराध से, अपराध विधि से, अपराध सोच से आदमी सुखी नहीं हो सकता। जबकि न्याय अभी आदमी की समझ में नहीं आया, ये भी सच्चाई हैं। `नचतपउम बवनतज के जो प्रधान रनकहमेहोते हैं, उसके साथ 3–3 लोगों से हम बात की हैं, `नचतपउम बवनतज को न्याय का पता नहीं, न्याय`नचतपउम बवनतज नहीं जानता, किन्तु न्यायालय लिखा रहता है, उच्च न्यायालय, उच्चतम न्यायालय, न्यायालय ऐसा लिखे रहते हैं, मैंने उनसे पूछा न्यायालय क्यों लिखते हो? बोले लिखने का क्या है? ''शिव भोजनालय'' शिव कहॉ रहता है? फिर न्याय मूर्ति का क्या आशय है? बोले ये तो परंपरा है, दरिद्र आदमी का कुबेर नाम होता ही है। नाम से मत जाइये, संबोधन पर मत जाइये,`नचतपउम बवनतज में कोई न्याय का रूप रेखा हम यदि दावा करें, ऐसा होता नहीं। धरती में जितने भी `नचतपउम बवनतज हैं किसी के पास न्याय का स्वरूप नहीं हैं, इसके बावजूद न्याय विरोधी कार्य से आदमी सुखी नहीं हो सकता है, इसको घंटों, घर–घर में, जन–जन बताई जाती हैं, इसीलिए प्रकृति विरोधी कार्य करके हम सफल होने की सोचना, शेखचिल्ली की बात है, ऐसे काम को करना नहीं चाहिए।

प्रश्न–जर्सी गाय का वंश परंपरा स्थिर नहीं होने के कारण, उसका दूध में क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर– दूध के साथ ये कुप्रभाव पड़ता है, जब वंश ही स्थिर नहीं है, उनका रसों का संतुलन तो हो ही नहीं सकता। उस परंपरा का रस ही जब संतुलित नहीं है, असंतुलित रस परंपरा के बनी हुई दूध से, आदमी कैसा स्वस्थ होगा? इस प्रकार की असंतुलित, प्रकृति विरोधी रसों से यदि हम आदमी को स्वस्थ रखना चाहते हैं, पालन–पाषण करना चाहते हैं, अपराधिक प्रवृत्ति में हो जाएगा। जब कि अपराध अभी ठीक से समझ में नहीं आया। अभी जितना भी अपराध संहिता लिखा हुआ हैं, वह भी कभी–कभी ऐसा लगता है, वह पूरा लिखा नहीं गया। नया–नया प्रकार के अपराध निकल जाते है, इस प्रकार से

आदमी अपराध को शोध करने में और नया अपराध करने में, प्रवृत्त हो सकता है, न्याय तो होना नहीं, इसीलिए प्रकृति सहज विधि से मानव का अवतरण इस धरती पर हुई है, शंकर विधि से नहीं, प्रकृति विरोधी विधि से मानव का अवतरण नहीं हैं, प्रकृति विरोधी विधि से कोई भी द्रव्य को कोई भी वस्तु को मानव सेवन करेगा, अपराध करेगा की न्याय करेगा?

न्याय को भले ही अभी पता नहीं है, आगे पता लग जाए, ये आशा तो है, उसके योग्य होने के लिए प्रकृति सहज विधि से हमको चलने की आवश्यकता है। प्रकृति विरोधी विधि हमारे लिए कल्याणकारी नहीं है।

वनस्पतियों में जीवन और प्राणकोषा

प्रश्न– पेड़–पौधा में जीवन होते है?

उत्तर– महावीर स्वामी ये कहे हैं, कि पेड़–पौधे में जीव होता है, जगदीश चन्द्र बोस ने भी बताया पेड़ पौधे में जीवन होता हैं। उन्होंने वनस्पतियों का भाषा तो सुन लिया, आदमी का भाषा तो नहीं सुना। आदमी का भाषा उनको सुनना नहीं हैं और पेड़ पौधे का भाषा सुन लिया। हमारे में क्या कहानी है कि पत्थर बोलता है, जानवर, पंक्षी से भाषा सीखें हैं, कुत्ता से, बिल्ली से, श्रृगाल से सब से सिखा। जानवरों में शियार को सबसे ज्यादा चलाक माना गया, बहुत जानवरों से आदमी बुद्धि सिखा हे, ऐसा कहा गया। इस प्रकार की परंपरा को क्या करोगें? झाड़ बात करता हे, ये ठीक है, हमारे बच्चों से क्या बात किया हमने? हमाने देखा है, ये जितने भी वनस्पती संसार है ये शरीर है, मानव शरीर, जानवर शरीर, और झाड़ पौधे का शरीर, ये जितने रचनाएँ हैं, इन सब में प्राणकोषा नाम का एक चीज हैं, प्राणकोषा का मतलब ये होता है, सांस लेने वाली जो सूक्षतम कीट हो सकता है, उसका नाम है, प्राणकोषा। प्राणकोषाओं में एक गुण देखा गया, हर प्राणकोषा में प्राणसूत्र नाम की चीज होता है, वही कुल मिलाकर के सांस लेना, सांस छोडने वाला, सांस लेने, की सांस छोड़ने की किया के कारण से उसको प्राणकोषा हम नाम दिया। अस्तित्व में जो सच्चाई से जुडी हुइ भाव किसी भाषा में भी मनुष्य से मनुष्य को यदि पहुंचना है। वह शुभ के अलावा दूसरा कुछ होता नहीं। ये जो प्राणकोषा है, प्राणकोषा से रचित शरीर को जीवन कैसा कह लिया? इसी आधार पर हम आपसे कहते रहे। स्पमि बमसस तो नहीं कह रहे?

प्रश्न– इस आधार पर कहते हैं, कि पेड पौधे अपना भोजन स्वयं बनाते है, और जीव अपना भोजन स्वयं नहीं बनाते है, यदि उन में, मुख्य अंतर दिखता है, बाकी सारा चीज करीब–करीब एक जैसे हैं?

उत्तर– पत्थर अपना भोजन नहीं बनाता है, ये अपना भोजन बना लेते हैं, ठीक है, प्राणकोषाएँ जो है, यह मूलतः एक प्रजाति के होते हैं, उसमें प्राणसूत्र होता है, रचाना विधि होता है, उस उस प्रजाति के बीज से उस रचना विधि सहित कोषाएँ होते है, उसके अनुकूल परिस्थिति में जो जितने भी रसायन द्रव्य को चाहिए,

वह सम्प्राप्ति होने के पश्चात् वह प्राणसूत्र अनेक कोषाओं में अपने को बदलता चला जाता है, बढाता चला जाता है। इसको प्रजनन किया माना जाता है, एक प्रकार से प्राणसूत्र में रचना विधि निहित रहती है, कोषा में प्राणसूत्र निहित रहता है।

प्रश्न– बीज की स्थिति में क्या होता है?

उत्तर– बीज में प्राणसूत्र और रचना विधि सम्पन्न 2 बहुत अच्छी जो वस्तु हैं, बीज में स्तुषि नाम की एक आकार होता है। कोई भी बीजा को फोड़ कर के देखा जाए। वह जो पेड़ का एक बहुत सूक्ष्म, सूक्ष्मतम स्वरूप बना रहता हे, उस स्वरूप में वह प्राणकोषाएँ वह सूख कर के बने रहते हैं। बीज में सूखे हुए अवस्था में रहते हैं। जिस को अभी फ्रिज में, इसमें, उसमें रखना चाहते हैं। एक वर्ष में, वह स्तुषि सुरक्षित रहता है, इस वर्ष का बीज आगे वर्ष तक बिल्कुल कामयाब है, हम लोग ड़ालते ही है, वह बीजा उगता ही है, उसमें से किसी प्रतिशत में नही भी उगता है माने बीज डालने पर 2–4 कम भी उगता होगा।

प्रश्न– स्तुषि में और प्राणकोषा में क्या अंतर हैं?

उत्तर– स्तुषि का स्वरूप जो है ना झाड़ को छोटा, छोटा करते–करते उसका सुई के नोंक का छोटा स्वरूप बनाने पर जो होता हैं, उसमें वह प्राणकोषा सूख कर के बैठा रहता हैं।

प्रश्न– स्तुषि जो होता है, वह तो आंखों से दिखता हे, वह काफी बड़ा होता है, इतना की आंखों से दिख जाए, बाबाजी स्तुषि में एक ही प्राणकोषा होती हैं, या कई प्राणकोषाएँ का समूह हैं?

उत्तर– उसमें, एक से अधिक प्राणकोषा रहता है, कई 5–5, 10–10, 20–20 कोषाओं से वह स्तुषि बना रहता है, वह सूख कर के रहता है, वह रासायनिक द्रव्यों को पा कर के, वह अपने जैसा प्रतिरूप बनाना शुरू करता है, प्रतिरूप बनाना शुरू करने के बाद वह इतना `चममक से वह झाड़ बढ़ता है। पहले वह जहॉ स्तुषि रहता है, वही पहले एक के दो, चार, दस बनता है, उसके बाद अंकुर होने के बाद ये तने में उनसजपचसल होता है। ऐसा व्यवस्था है, अभी जितने भी झाड़ है, उसमें जो कोषाओं का प्रतिरूप बनता है, वह तने में बनता है, पुनः बीज बनता है, बीज से पुनः वृक्ष बनता है, इसका नाम है, बीज वृक्ष न्याय। हर बीज की गति ये है।

पेड़–पौधे में सांस लेने की सांस छोड़ने की प्रकिया है, जीवन नहीं है, सांस लेना, सांस छोड़ने का काम प्राणकोषाओं का है। शरीर में भी सांस लेना सांस छोड़ने की प्रकिया होती है, शरीर जीवन नहीं है।

प्रश्न– एक प्रयोग किया गया कि छोटे–छोटे पौधे लिए गए, एक पौधे के पास एक दुखी आदमी, या कोधित आदमी जाता रहा, उसके वृद्धि में दूसरा प्रकार का लक्षण रेखा गया, कम वृद्धि हुआ, उतना ही खाद, उतना ही पानी एक आदमी व्यक्ति प्रसन्न हो कर दूसरे पौधे को दिया तो उसकी वृद्धि कुछ ज्यादा हुई, इससे ये माना गया कि मनुष्य के भावों का प्रभाव पड़ता है।

उत्तर– अभी हम बताऍ, 2 प्राणकोषाऍ कितने प्यार से एक दूसरे को समझते हैं, उसका एक नियति है, उसको वही करना है, दूसरा कुछ कर ही नहीं सकता, कथा बनाना मनुष्य का एक स्वाभाविक प्रकिया है।

प्राणकोषाओं से जीवन से बहुत दूर संबंध है, प्राणकोषाऍ रासायनिक द्रव्य से बनी हुई वस्तु हैं, उसका मृत्यु होती है, मृत्यु का मतलब ये परिणत हो जाता है, होने में श्वास लेने की स्थिति में भी देखा जा सकता हैं, श्वास लेने की असमर्थ स्थिति में भी देखा जाता है, जिसकी मृत कोषा कहा जाता है, मृत कोषा के बारे में आते है, जैसा बीज के अंदर जो कोषाऍ रहते है, सुख कर के रहते है, सुखा हुआ स्थिति में वह कोषाऍ रहते हुए, रसायन द्रव्य को पाकर पुनः वह श्वास लेने योग्य हो जाते है।

प्रश्न– मतलब बीज में कोषा श्वसन नहीं करता हैं?

उत्तर– हॉ, चतमेमतअंजपअम की बात कहते है, वही है, नाइट्रोजन के अंदर रखते है, इनके अंदर भी वही है, एक वर्ष तक चतमेमतअम रहता है। अभी कृत्रिम गाय, भैंस को गर्भाधान कराने की जो प्रकिया करते हैं, उसके साथ भी वैसे ही कुछ रहता हैं, नाइट्रोजन में रखते हैं।

प्रश्न– वह कितना ठीक है बाबाजी?

उत्तर– वह कोई खास परेशानी नहीं है, यदि सफलता से उस तकनीकी को सम्पन्न कर सके उसमें तकलीफ नहीं है।

यांत्रिक शक्ति और गाय का दूध

प्रश्न– टिकाऊ खेती का बात ध्यान में रखते हुए जतंबजवत का उपयोग अनिवार्य हो गया है, यदि जतंबजवत का उपयोग करते हैं, तो बैल का क्या होगा? क्योंकि हमने गोशाला बनाया है?

उत्तर– ये भी समझने योग्य मुद्दा है, हम समझता हूँ, हमारा देश में जतंबजवत की आवश्यकता बहुत कम है, हमारे पास इतने बड़े–बड़े जमीन है, छोटे–छोटे जमीन हो चुका है, कल तक और छोटा हो जाएगा, जतंबजवत ही नहीं घूमेगा,ये दिन आने ही वाला है, इस विधि से हम सोचते हैं, तो बैल की बींदबमे ज्यादा है, जतंबजवत सही है या गलत हे ये दूसरी बात है, यंत्रो को बनाया, वहीं से शुरू हुआ है, मनुष्य के ऊपर विश्वास घटते के बाद, मनुष्य काम नहीं करेगा। मनुष्य काम करने में अलाली करता है, इसीलिए यंत्र से काम लिया जाए यही इसका मूल मंत्र है। यदि हम आदमी जात को समझदार बनाते है,

उस स्थिति में कोई भी ऐसा व्यक्ति बेवकूफ नहीं होगा, काम की चोरी करेगा, अभी कोई ऐसा आदमी नहीं है, जो काम करने मे चोरी ना करता हो, एक आध को छोड़कर।

समझदार परंपरा और नासमझ परंपरा का इतना ही अंतर है, समझदार परंपरा में अपने काम करने के लिए दूसरे को बोलना नहीं पड़ता है, नासमझ परंपरा में बैल जैसा खिचते रहा तब भी ना करें। आदमी नहीं काम करेगा, इसको स्वीकारते हुए यंत्रों को बनाया गया, जितने काम भी कहीं से, काटने का काम भी वही से, बुनने का काम भी वहीं से, अब घड़ा बनाने की भी मशीन बनाएगें यह बोल रहे है। आदमी काम करता नही तो क्या करें? व्यापार विधि के लिए चतवकनबजपवद ज्यादा चाहिए, अब आदमी कम चतवकनबजपवद करता हैं, आदमी को चीज ज्यादा चाहिए, सब चाहिए, पहले 4 चीज से आदमी जीता रहा, अभी 400 चीज चाहिए, इसमें परेशानियॉ होगा कि नहीं होगा। आप स्वयं गणित लगा लीजिए। आदमी को काम करना नहीं, उत्पादन के साथ जुड़ना नहीं हाथ गंदा करना नहीं है, आवश्यकता अधिक हैं। 60 बरस पहले 4 चीज में जीता था, आज के दिन 400 चाहिए, अब क्या किया जाए? हम अच्छे ढ़ंग से सही ढ़ंग से, क्या थे 400 चीज ला पाएगें? गलत चीज सोचकर ला पाएगें, सोच लीजिए। मनुष्य पर अविश्वास होने के बाद, यंत्र श्शुरू हुआ है, युद्ध भी कहॉ से शुरू हुआ, मनुष्य का मनुष्य के साथ अविश्वास । मनुष्य का, मनुष्य के साथ विश्वास को पैदा ही नहीं कर पाये अभी तक।

जंगल युग से आज तक, दुर्घटना यहॉ हैं।

प्रश्न–मनुष्य गायों का दूध पीता है, इसमें कभी–कभी सुई लगाके ज्यादा दूध बढ़ाता है, क्या मनुष्य जब गाय का दूध पीता है, गाय का श्शोषण करता है क्या?

उत्तर– सुई लगाना गलत है, अभी हम लोग जो समझते हैं, मैं स्वयं गाय का जितना सेवा करते है, उसके प्रतिफलन में हम दूध पाते है, उससे ज्यादा मिलता नही। दूसरे तरफ से मानव संवेदना के साथ सोचने पर गाय में जो दूध होता है, गाय के बच्चें के लिए होता हैं, हम जितना ज्यादा सेवा करते है, चारा देते हैं, उतना ज्यादा दूध होता हैं। यदि वह सारे दूध पीला दे बच्चे को बच्चे मर जाते है, ये दोनो घटनाओं को देखा गया है, उस स्थिति में क्या निर्णय ले? निर्णय ये लेना हैं, हम जितना सेवा, चारा देते हैं, उतना दूध लो कि गाय का बच्चा का बराबर पोषण गाय को ही दिया जाए, बच्चा मर जाए उसके दूध लेने वाली कार्यक्रम गलत।

क्लोनिंग और संतान उत्पत्ति

प्रश्न– बसवदपदह प्रकिया क्या व्यवस्था से जुड़ा हुआ हैं या अव्यवस्था से?

उत्तर– अव्यवस्था से एक तरफ हम हल्ला करते है, जनसंख्या बढ़ गया और उसके बाद बसवदपदह वाले क्या करते है, अपना प्रतिरूप को हजार बना लो, करोड़ बना लो, पैसा भर दे दो, जैसा आदमी को आपके 1 पदबी चमड़े से यदि एक करोड़ आदमी बना दे उतना पैसा देना पड़ेगा, ऐसा दावा करते है, वह दावा कहॉ तक सही हैं, पहले ये कहते थे, हमारा जैसा ही काम करने वाला होगा, अभी वह आप ही के जैसा काम करेगा, ऐसा कहना बंद कर दिया, किन्तु इससे हजार आदमी बनाएंगे, 10 हजार आदमी बनाएंगे, ये तो

कहते हैं, यदि ऐसा बनने लग जाये, तो कहॉ रखोगे आदमी को? अभी रखने के लिए जगह नहीं है, ये मानवीय परंपरा के लिए अप्राकृतिक, अपराधिक हैं।

प्रश्न– मानव के बसवद का नहीं जीवो का, बसवद का बात करें तब

उत्तर– जीवों का बसवद क्या है? मांसाहार करने के लिए बसवद और किस बात के लिए बसवद अपराध को छोड़ करके बसवद की शुरू ही नही कर सकते। आपके पास ऐसा कोई जुगाड़ नहीं है, अभी बसवद की यहॉ तक सार्थक माना गया है, भ्रुण बना कर के पुनः गर्भाशय में रख कर ही जानवरों का बच्चा प्राप्त किए है, ऐसा सुनते हैं, ज्पेनम बसनजनतम के अनुसार जो सवइवतंकंतल में छोटे–छोटे पौधे प्राप्त करते हैं, ऐसा बच्चों को पाने की जगह आना है, बसवदपदह में। एक–एक ड़िबिया में करोड़ बच्चा। कल्पना तो यही कर रखा है, इस विधि से कहॉ ले जा करके रखें सबकों। ये अपराध अन्ततगत्वा शंखचिल्ली विधि है। स्वयं का मृत्यु, स्वयं का काल, स्वयं का परेशानी, स्वयं की गले को फॉसी। इसके अलावा कुछ नहीं । अभी अप्राकृतिक खेती कर के अपने गले में फॉसी हुआ की नहीं हुआ? रसायन खाद ड़ाल कर जमीन बंजर हुआ की नहीं। ये सब चीजें हम अपने ही हाथ से, सम्मोहन विधि से, अपने ही स्वीकृति विधि से गले को फॉसी लगा लेते हैं। इससे छूटना ही अभी कठिन है। उसके बाद ये नया फॉसी हैं, बसवदपदह वाला बात ज्यादा परेशानी मिल लेने की एक अच्छा जुगाड़ है।

प्रश्न– कोई मनुष्य यदि पुत्र से वंचित है, उसको कलंकित माना जाता हैं?

उत्तर– ये बस एक सोचने की तरीका है, कई जानवर संतान नहीं देते हैं, वह जानवर नहीं है, ऐसा नहीं कहते हैं, इसी प्रकार से मनुष्य को किसी के यदि संतान नहीं होता है, निश्चित कारणों से, वह मनुष्य नहीं हैं, ऐसा बात तो ठीक नहीं।

उसके बाद है, समझ लो, संतान का बहुत अपेक्षा है, संसार में बहुत सारा संतान ऐसा है, जो पाल नहीं पाते हैं, ऐसे को ला कर के पाल लो। खुशहाली मना लो। पहले भी दत्तक पुत्र दत्तक संतान के बारे में बात हुई है। उस विधि से अपने भाई परिवार से ला कर के पाल सकते हैं। कुछ नही ंतो बहुत सारा भ्वेचपजंस है, आनाथ बच्चों को वहॉ

रखे रहते हैं, वहॉ से ले आओं और पाल लो। किसी से भी मन नहीं भरा जमेज जनइम इंइल है, जमेज जनइम इंइल मानवता के लिए बहुत सटीक उपयोगी तो नहीं है, उसमें भी कहीं ना कहीं शंकरता ही गया है। उसमें ये मानते हैं, नारियों में दोष नहीं रहता है, नर में ही दोष रहता हैं। उसको संइ में देखने की व्यवस्था है, शुक्र कीट यदि जीवित कीट नहीं हैं, ऐसे जो परिवार है, उनके नारियों में कोई ना कोई विधि से इसको स्थापित करने का व्यवस्था करते है। वह भी एक शंकरता की ही कार्यक्रम हैं। वह अवैध हो चुका है। चोरी छीपे इस प्रकार की कार्यक्रम को करते है। सबसे अच्छा है, यदि आपका मन भरता है, तो अपना जात, गोत्र से कोई लड़के को ले लें, वह नहीं तो ीवेचपजंस में आनाथ बच्चें मिलते हैं।

प्रश्न– अभी तो अव्यवस्था है, आवारा बच्चें मिल जाएगें जब व्यवस्था हो जाएगी तब तो आवारा बच्चें मिलेगें नहीं?

उत्तर–व्यवस्था होने के उपरान्त मनुष्य में ऐसा कोई अव्यवस्था का बात भी नही आता है, ड़ीम्ब कीट अथवा शुक्र कीट विकृत होने, अथवा नहीं होने, मृत होने इस प्रकार की जो प्रकिया होता हैं, मनुष्य की रहन सहन की कहीं ना कहीं गलतियॉ हैं, उसको अलग से अध्ययन किया जा सकता है, किन–किन कारणों से ये बात हो सकता है, आयुर्वेद में काफी चीजें कही गई हैं, इन लोग भी कहते होगें, उससे बचा जा सकता हैं। सही ढ़ंग से जीया जा सकता है, इच्छा अनुसार संतान को पैदा किया जा सकता है। इच्छा नही तो तो सीमित संतान के साथ जीया जा सकता है, आवश्यकता पड़ने पर जनसंख्या को घटाया, बढ़ाया जा सकता है, ये सब आदमी की स्वतंत्रता का काम है। आदमी इस बात में स्वतंत्र हैं, इसमें भगवान देने की नहीं देने की कोई बात नहीं है, भगवान के पास इस प्रकार की कोई भी दफ्तर नहीं है।

गौ मूत्र औषधी

प्रश्न– गौमूत्र, गोबर से कुछ कीटनाशक बनाए गए हैं, आपकी जानकारी में इस तरह के जो चीजें हैं, उसको बता दीजिए?

उत्तर– जो गंधंक होता हैं, गंधंक को गौमूत्र में घोल दो, 10 लीटर गौमूत्र में 10 ग्रम, 5 ग्रम गंधंक को घोल कर के यदि उसको डाला जाए बहुत सारे भुनगीं, कीड़े सब ठीक हो जाते है, सब से अच्छा है गौमूत्र को फसल के लिए डालें पानी के साथ और गंधक धुआँ

देकर के कीट नाशक प्रयोग को प्रयोग करते रहें। नीम का बीजा, खली, पत्ता ये सब चीज को धुआँ से कीड़ा, पतंग दूर भाग जाते है। उसको किया जा सकता हैं, जैसे वनतुलसी होता है, वनतुलसी का धुआँ से भी कीड़ा, पतंग दूर होते हैं, आजवाइन के धुआँ से लता जाति के जितने भी फसल नहीं हो पाते हैं, सड़ जाता है, खीरा में तरोई में, लौकी में, उसमें अजवाइन का धुआँ देने से लाभ होता है, इसको कोई भी कर के देख सकता है।

डार्विन का विकास वाद

प्रश्न– क्तंअपद का विकास वाद?

उत्तर– क्तंअपद का विकास वाद पूरा का पूरा शरीर से संबंधित है, शरीर को वह विकास मानते हैं, शरीर को ही यदि विकास मानते हैं, अच्छा रचना तक उसको सीमित रखा जाए। मानव यही है, यह कहने जाते हैं, ये तो भ्रमित परंपरा के ही काम है, शरीर

को जीवन मानने की क्रम में है ये अभी तक आदमी जात शरीर को जीवन मानकर चल ही रहा है, जीवन ज्ञान के बाद ही शरीर और जीवन का निश्चित कार्य नियत कार्य, नियति क्रम कार्य अपने को समझ में आता है, उसके पहले होने वाला नहीं है ये।

प्रश्न– ये जो माना जाता है, मनुष्य बंदर से पैदा हुआ, इसके बारे में ये सोचा जा सकता है, प्राणसूत्र में, प्राणकोषा में जो रचना विधियॉ बदलती आती है, स्वयं स्फूर्त विधि से, रसायनिक उर्मि के आधार पर उसी आधार पर मनुष्य रचना का भी उभर के आ गया। उसमें ये जीद करना बेकार है, बंदर का पेट से ही आदमी आया। बंदर परिवर्तित हो के आदमी बन गया। 2 प्रकार की बात है, एक तो बंदर के पेट से आदमी पैदा हुआ, दूसरा बंदर ही बदल बदल कर के धीरे धीरे आदमी हो गया। इसमें से बंदर के पेट से आदमी आया ये ज्यादा युक्ति संगत हैं। क्योंकि रचना विधि जब बदलती हैं, भिन्न प्रकार की रचना होती है। लाखों प्रकार की प्रजातियॉ रचना विधि बदल कर ही तो रचना हुई है। उसी क्रम में मानव शरीर रचना भी गाय के पेट से हो, मछली के पेट से हो, चाहे बंदर के पेट में हो, किसी ना किसी जानवर का पेट से ही मानव प्रजाति शुरूआत किया हैं। वह प्रजाति होने के बाद उस प्रजाति का परंपरा होना शुरू हो गया। जैसा एक प्रजाति का धान आदमी ने प्राप्त कर लिया, दूसरा प्रजाति का धान प्राप्त कर लिया, उसका परंपरा बन गया या नहीं। मानव भी अपने प्रजाति में परंपरा बनने के पहले, किसी ना किसी जीव जानवर के पेट से, इस प्रजाति कीश्शरीर रचना होगी। इसके बाद इसका अपना परंपरा बन गया।

प्रश्न– अभी ऐसा प्रचलित है कि, बंदर की एक प्रजाति है, जिन्होंने अपना पूँछ का उपयोग नहीं किया, तो अगले पीढ़ी में पूँछ छोटी हो गई, फिर अगली पीढ़ी में और छोटी हो गई। इस प्रकार से कई पीढ़ी में पूँछ बंद हो गई?

उत्तर– वही बात ना की बंदर धीरे–धीरे आदमी हुआ, उसको बताने की क्रम है ये, तर्क से तो कुछ लाभ होता नहीं है, किन्तु मानव का अवतरण हुआ है ये सच्चाई है। मानव प्रजाति की शरीर रचना के परंपरा का, प्रजनन विधि बन चुकी है, ये भी सच्चाई है। गर्भाशय में मानव शरीर रचना की संभावना और तरीका बनी हुई है। यहॉ तक सर्व मानव को विदित है, ये जो परंपरा बनने के बाद, पीछे जहॉ से शुरूआत होता है, जैसे कुम्हड़ा से तरोई पैदा हुआ, तरोई से कुम्हड़ा पैदा हुआ, इस प्रकार की हम तर्क में जाते है।

उससे फायदा होता नहीं, ये बात सही है, एक के बाद एक हुआ। इतने को स्वीकारने मात्र से, अपने को शुरूआत का जो कौतुहल होता है, उसका उत्तर पूरा हो जाता है।

प्रश्न– जीवन के प्रकाशन के कम में शरीर है, धीरे–धीरे जीवन के प्रकाशन के आवश्यकता अनुसार धीरे–धीरे बदल के इस ौंचम में आया, ऐसा कहना ज्यादा ठीक लगता है।

उत्तर– जीवन ही आवश्यकता को भोगता है, आवश्यकता जीव शरीर से ही शुरू हो गई, अनेक जीव शरीर कैसे बना है? आवश्यकता के आधार पर तो हुआ ही है। माने अनेक प्रजाति के जीव शरीर बन चुकी हैं, उसमें जीवन को तृप्ति हो नहीं पाया और मनुष्य शरीर रचना हो चुकी, इसमें तृप्ति की स्थली को खोजता रहा। अभी तक पाया नहीं, उसको पाने के कम में काम करें, वह ज्यादा लाभदायी है।

आकर्षण, प्रत्याकर्षण और गति

प्रश्न– आकर्षण तथा प्रत्याकर्षण से कंपन है, इसको व्याख्या कर दीजिए?

उत्तर– इसको कहॉ देखा जाए, कैसा देखा जाए? कैसा समझा जाए? ये बात आता है। परमाणु में मध्यांश और आश्रितांश के बात आप हम स्पष्ट तथा समझ चुके हैं। जब कभी आश्रितांश, मध्यांश से दूर भागने लगते हैं, उनमें तो आकर्षण रहता ही है, मध्यांश में आश्रितांश के साथ आकर्षण बल बना ही रहता है। इसीलिए नियंत्रित रहते हैं। वह नियंत्रण से बाहर जाने के स्थिति में, उसमें प्रत्याकर्षण होता है। मध्यस्थ बल प्रत्याकर्षण के रूप में अपना बल को ड़ालता है, उसमें आकर्षण निहित है ही है। आश्रितांश में आकर्षित होने का धार निहित है ही है। वह पर्याप्त ना होने के आधार पर ये मध्यस्थ बल को प्रत्याकर्षण बल में नियोजित करता है। फल स्वरूप वह निश्चित अच्छी दूरी में वापस आ जाता है, वही परमाणु में प्रकिया होती है, जो पास में आ जाते हैं। उस स्थिति में आकर्षण बल को, परमाणु में निहित जो बल होती है, वह प्रत्याकर्षण के रूप में परिवर्तित हो जाता है। माने अच्छी निश्चित दूरी में पहुंचने के लिए मध्यस्थ बल विकर्षण बल को ड़ालता है, तब ये प्रत्याकर्षण बल में प परिवर्तित हो कर के नियंत्रित हो जाते हैं। परमाणु के स्थिति में ये है।

व्यवहार में आकर्षण, प्रत्याकर्षण, ये क्या होता है? इससे कंपनात्मक गति पैदा होता है, कंपनात्मक गति उत्सव है। कंपनात्मक गति सदा ही एक ही एक प्रकार से नृत्य है, नृत्य होना, खुशहाली का द्योतक है, नियंत्रित होने का द्योतक है, स्वभाव गति में आने का द्योतक है, हॅसी का द्योतक है? खुशी का द्योतक है। मानव के भाषा में ये ऐसा बनता है। उसी को मानव के संदर्भ में सोचा जाए, जब कभी भी हम किसी बात को, जैसा अभी बताया, परमाणु के बारे में, आकर्षण प्रत्याकर्षण के बारे में बताया जिसके फलस्वरूप वह परमाणु में कंपनात्मक गति पैदा होता हैं, फलस्वरूप परमाणु अपने स्वभाव गति में होना पाया जाता है। ये चीजें यदि मनुष्य को समझ में आता हैं। परमाणु और मनुष्य के परस्परता में एक सुखद सुंदर उत्सब होता है। समझने मात्र से, समझ की वस्तु एक है ''परमाणु'' उसको और समझने वाली वस्तु को बीच की जो दूरी है, वह घटकर एक संगीतमय स्थिति में आते हैं। उसका नाम है, समझदारी। यदि यह साक्षातकार नहीं होगा, बोध नहीं होगा, अनुभव नहीं होगा, हमारे में वह खुशहाली ही तो नहीं। अध्ययन, बोध, अनुभव उसके बाद प्रमाणिकता की बात स्थिति आती है। अध्ययन करने के क्रम में यह पहला आरंभिक वस्तु हैं, ''शब्द'' उसके बाद आता है, उसका परिपूर्ण ''वस्तु'' शब्द से इंगित वस्तु।

इंगित वस्तु हमारे स्मरण से चलकर साक्षातकार से उद्य होना, इसका नाम है पहला स्थिति, दूसरा स्थिति अध्ययन का, वह पूरा का पूरा स्वीकृत हो जाना। सदा–सदा के लिए इसी का नाम है संस्कार । वस्तु बोध हो गई । बोध होने के पश्चात होता है अनुभव। प्रमाणित होने और बोध होने को बीच की तृप्ति बिन्दु का नाम है अनुभव। बोध को हम प्रमाणित करते है। प्रमाणित करने का किया और बोध किया के बीच में जो तृप्ति बिन्दु हैं, इसका नाम है अनुभव । इसमे आकर्षण प्रत्याकर्षण होता ही है। जैसा हम किसी वस्तु को देखने जाते हैं, मैं तो आकर्षण में रहता हूँ, जब हम तृप्त होने लगते हैं, तब प्रत्याकर्षण में परिवर्तित हो जाते हैं। प्रत्याकर्षण का मतलब वह सारे–सारे वस्तु हमारा बुद्धि में निहित हो जाते हैं। इसका मतलब होता है, वस्तु का स्वभाव, धर्म, प्रयोजन निहित हो जाना। ये समझ जब तक नहीं होता है, तब तक हम समझें कहॉ शब्दों के साथ समझ का प्रमाण होता नहीं, वार्तालाप हो सकता है, चर्चा हो सकता है, घटना के साथ अपना किए हुए चर्चा का एक सांत्वना लगाने वाली काम होता है, प्रमाण तो होता नही। तृप्ति को पाने का जो संकेत है, वह कंपन है, मनुष्य में क्या कहा गया उसको, उत्सव ? वह तृप्त बिन्दु स्वयं मे एक कंपन की अवस्था है, बोध और प्रमाण के बीच की यह कंपन वस्तु है, जो आत्मा में ही होता है। नित्य, निरंतर वह बना ही रहता है। एक बार वह तृप्त बिन्दु मिलती है, वह तृप्ति हमेशा आवंटित होने के लिए तैयार रहता हैं। इस ढ़ंग से अक्षयबल का वैभव। जीवन के अनुभव के क्षणों में, अनुभव के किया में, निरंतर ये उत्सव बना रहता है।

इसमें आकर्षण, प्रत्याकर्षण दोनों का तृप्त बिन्दु मिल गया, तब वह कंपन हुआ। वह कंपन के हंपदेज में वह परमाणु में स्वभाव, गति आई। अपने में वह प्रमाणित हो गया। इसका तृप्ति बिन्दु है, इस ढ़ंग से आकर्षण, प्रत्याकर्षण के योगफल में कंपनात्मक गति होती है।

प्रश्न– प्रत्याकर्षण और आकर्षण से वर्तुलात्मक गति है?

उत्तर– अब जड़ प्रकृति को और मनुष्य के कार्य प्रकृति की बात किसी वस्तु के साथ हम आकर्षित होते है। जिसके ओर आकर्षित रहते हैं, वह प्रत्याकर्षित रहता है, उसका प्रतिक्षा किए रहता है। वह आकर्षण है, जो वस्तु जाता है, आगे का आकर्षण उसका प्रतिक्षा किए रहता है, इसका नाम है प्रत्याकर्षण । जैसा यहॉ हम आए, यहॉ प्रतिक्षा बनी ही रही।

प्रश्न– हम लोगों में आपके प्रति प्रत्याकर्षण हैं?,

उत्तर– आप में प्रत्याकर्षण बनी रही, आकर्षण हमारे में बनी रही।

प्रश्न– आप में आकर्षण हम में प्रत्याकर्षण ?

उत्तर– ये दोनों मिलकर पुनः गति बन गई। क्या गति बन गई? कार्य गति बन गई, कार्य गति के अर्न्तगत हम अभी गुजर रहे है। ये जितने भी विचार से लेकर, कार्य से लेकर, अभिव्यक्ति से लेकर, प्रमाण से लेकर, जितने भी कार्य हम कर रहे हैं, इस समय में वह सब कार्य गति ही है।

प्रश्न– ये सूत्र जड़ के लिए है या चैतन्य के लिए?

उत्तर– अभी हम मनुष्य के लिए इसको बताया, वही चीज एक जड़ परमाणु में है, ये सूत्र है, इसका व्याख्या जीवन परमाणु करता है, अणु करता है, अणु रचित पिण्ड़ करता है, धरती का हर जर्रा करता है। मूलतः जो मूल बल है, सत्ता है, सत्ता आपमें, मुझमें परमाणु में पारगामी होने के वजह से मूल ताकत सत्ता है। सत्ता में हर वस्तु बल सम्पन्न होने के आधार पर कार्यशील होने के लिए प्रवृत्ति है। कार्यशील कैसा होता है, उसमें आकर्षण, प्रत्याकर्षण का योग होना आवश्यक हैं। जैसा श्रम और गति का आकर्षण, प्रत्याकर्षण होने का एक कार्य की स्वरूप बनती है। गति और परिणाम का योगफल होने से, आकर्षण, प्रत्याकर्षण होने से कार्य गति का स्वरूप दूसरा होता हैं। इस विधि से श्रम, गति परिणाम किया का अभिव्यक्ति है, व्याख्या है, किया है। तो सदा सदा श्रम, गति, परिणाम से सम्पन्न प्रत्येक परमाणु उत्साहित होने के विधि आकर्षण, प्रत्याकर्षण के योगफल से होते ही रहता है। इसमें दो इकाई नहीं हैं, एक ही इकाई एक अंग दूसरा अवयव के साथ।

जैसा आप हो, आपके आंख के साथ नाक, नाक के साथ हाथ। आकर्षित, प्रत्याकर्षित होने पर कार्य होगा या नही? शरीर आपका एक ही है। उसी भांति परमाणु एक ही है। परमाणु में ही श्रम गति, परिणाम सदा–सदा किया का व्याख्या के रूप में अभिव्यक्त है। नित्य अभिव्यक्त है, नित्य प्रकाशमान है, ये कहीं रूकता ही नहीं है। निरंतर ये रहता ही है। विकासशील परमाणु में श्रम, गति, परिणाम कम से कम दो के योगफल में, आकर्षण, प्रत्याकर्षण फलस्वरूप कंपनात्मक गति, वर्तुलात्मक गति बना ही

रहता है। कंपनात्मक गति क्यों? कार्य में व्यक्त होने के लिए, दूसरा वर्तुलात्मक गति की बात, जो आकर्षण, प्रत्याकर्षण के योगफल में कम्पनात्मक गति, वर्तुलात्मक गति होने के लिए जो आकर्षण, प्रत्याकर्षण हुआ, उससे जो कंपन बना, उसका प्रयोजन के रूप में जो गति बनता है, उसका नाम हैं, वर्तुलात्मक गति। इस ढ़ंग से कंपनात्मक गति और वर्तुलात्मक गति का संबंध है। एक परस्परता में गति की बात, परस्परता नही ंतो कोई गति की बात ही नहीं। शून्य में गति की कोई बात ही नहीं।

एक इकाई के अंग, प्रत्यंग के परस्परता में गति की बात परमाणु के एक अंश, दूसरा अंश इन दोनों का योगफल में एक आकर्षण, दूसरा का प्रत्याकर्षण दोनों मिलकर के एक कंपन बनता हैं। दूसरे विधि से इसका विलोम विधि से वर्तुलात्मक गति बन जाता है। इस ढ़ंग से कंपनात्मक गति, वर्तुलात्मक गति ये दोनों कार्यशीलता का ही परिणाम है, जैसे हर परमाणु कार्यरत है, कियाशील है, किस आधार पर, बल सम्पन्नता वश, ऊर्जा सम्पन्नता वश, चुम्बकीय बल सम्पन्नता वश कियाशील है, कियाशील का निरतंर प्रेरणा विधि , कार्य विधि 2 अंग है। अपने में ही कार्य विधि, अपने में ही प्रेरणा विधि। जैसे नाक खुजाया हाथ जा कर के उसको खुजवा देते है। जबकि एक ही शरीर है। एक ही नदपज हैं। गले में कोई चीज अटक गई, उसके आस–पास के पूरे–पूरे उमउवतपमे है वह इसको ठीक करने के लिए खासेगें, खकारेगें, पानी पीएगें, श्शरीर का अवयव सब मिलकर के उसको ठीक करने में लग जाते हैं। जैसे समझ लो, कोई एक जगह कट गया, पूरा शरीर का वितबम लगता है, उसको जल्दी ठीक करो, जैसा हड्डी टुट गया, तो उसको जोड़ने के लिए पूरा ताकत लग जाता है। ये क्या चीज है? कंपनात्मक गति, वर्तुलात्मक गति का योगफल में जो स्पंदन बनता है, उसका ये सब प्रदर्शन है, प्रमाण है। इस ढ़ंग से हम जगह प्रवृत्ति को, कंपनात्मक गति के फलस्वरूप वर्तुलात्मक गति को, वर्तुलात्मक गति के फलस्वरूप हम कंपनात्मक गति को पाकर हर कार्य संपादन करते हैं।

जड़ परमाणु में परिणाम शीलता भी है, श्रम शीलता भी है, गति शीलता भी है। परिणाम शीलता गति के लिए गति पुनः परिणाम के लिए एक दूसरे की प्रेरक होने की विधि बताया।

प्रश्न–दोनों गतियॉ एक साथ रहेगी? एक दूसरे के पूरक के रूप में?

उत्तर– हॉ, इसके मूल में नदपज के रूप में क्रिया, एक वस्तु को यदि पहचानना है तो क्रिया है, क्रिया सहित ही ुनंदजं है। क्रिया को अलग कर के कोई ुनंदजं मिलने वाला है नहीं। ये क्रिया ुनंदजं कोई चीज होता नहीं, यही आदमी भ्रमित होने की बात, मूलतः कोई भी मात्रा यदि पहचानना है, वह गति सहित ही है, माने क्रिया सहित ही है, क्रिया का व्याख्या श्रम, गति, परिणाम है, जड़ संसार में, चैतन्य संसार में भ्रम और जागृति और कुछ भी नही। जड़ संसार में, रासायनिक भौतिक संसार में, क्रिया का व्याख्या श्रम, गति, परिणाम ही है। चैतन्य में भ्रम और जागृति और कुछ होता नही नहीं। इस अन्नत संसार का फैसला इतने मेमदबम में बैठा हुआ है।

प्रश्न– श्रम, गति, परिणाम को थोड़ा बना दीजीए?

उत्तर– ऊर्जा सम्पन्नता ही आधार है, ऊर्जा सम्पन्नता कैसे है? क्योंकि सत्ता पारगामी है। सत्ता को रोकने वाले, सत्ता को ंततमेज करने वाले, सत्ता को अवरोध करने वाले, वस्तु इस धरती पर एक भी नहीं है। सबसे पहले उस सत्य को अवधारणा में लाना पड़ेगा, दूसरा हर वस्तु एक–एक है। एक–एक होने का क्या व्याख्या है? उसके सभी और सत्ता है, सत्ता में डूबा ही है हर एक एक। प्रत्येक एक का सभी और सत्ता का होना ही सीमा है, सीमा का और कोई मतलब नहीं है, दूसरी बात, हर एक वस्तु सीमित रूप में रचित रहता, कितना लम्बाई, चौड़ाई में रचित है। रचित है, इसका पहचान क्या हैं? इसके सभी ओर सत्ता का होना ही है, सभी ओर सत्ता का होना ही एक का नियंत्रण रेखा हैं।

समाधान और भयमुक्ति

अभी हमने ये समझा की एक वस्तु अपने में नियंत्रण में है। नियंत्रित कैसा रहता है? नियंत्रण कैसा दिखता है? इस आंखों में जो नियंत्रण रेखा को देखने की बात, आंख भी गवाही देता है, कि प्रत्येक एक। चाहे एक छोटे से छोटे एक क्यों ना हो, बड़े से बड़े क्यों ना हो, इसके सभी ओर सत्ता घिरा हुआ दिखाई पड़ती है। आंखो मे दिखाई पड़ती है। यही चीज जो इकाई की स्थिति, गति, मुद्रा, भंगिमा, विन्यास हर एक का नियंत्रण रेखा यही है। इसी से ये नियंत्रण रहने से और डूबे रहने से वह अपने आप में संरक्षित रहना पाया जाता है। ये मुख्य में उस बात को ध्वनित करता है, वस्तु की शाश्वतीयता, इसी नियंत्रण वश,ऊर्जा सम्पन्नता वंश नित्य वर्तमान है। इस ध्वनि से हम नाशवाद से जैसा भयभीत होते हैं, वह भयभीती से दूर होने की एक बहुत अच्छा रस्ता है, सुलझा हुआ रस्ता है । स्वयं चिंतन पूर्वक अभयता की जगह को पहचाना जा सकता है। उसके लिए ये नियंत्रण, संरक्षण की झाकीं सदा–सदा प्रत्येक एक के साथ सजा ही रहता है। इसी एक के संज्ञा में जो कुछ भी है, इन्होंने कुल मिला कर के आकर्षण, प्रत्याकर्षण, विकर्षण ये सारे चीज, ये नियंत्रण रेखा में ही होता रहता है। नियंत्रण रेखा से बाहर जा कर के कुछ नहीं होता। स्वयं में एक में अनेक कियाएँ होता है,उसमें परस्पर नियंत्रण संतुलन की बात होती है, उसमें जो कुछ भी ताकत है ये स्वयं के संतुलन के लिए, स्वयं लगाता है और सदा–सदा बने रहने के लिए सत्ता में नित्य संरक्षण है ही। इस ढ़ंग से

नाश की भय से मुक्ति होने की मार्ग हैं। दूसरा बात नाश की भय से मुक्ति की जीवन नित्य है, जीवन अक्षय शक्ति, अक्षय बल सम्पन्न हैं। जीवन का मृत्यु होती नहीं है, ना परिणाम होता है। अब जीवन में या तो जागृति होगा या भ्रम रहेगा। सारा भौतिक संसार में, रसायनिक संसार में श्रम, गति, परिणाम, जीवन पद होने के बाद जीवन में परिणाम का बात समाप्त हो गई । परिणाम का बात समाप्त हो गया तो श्रम का निरंतरता हो गई, गति की निरंतरता हो गई ऐसे तो गति का निरंतरता पहले भी था, परिणाम के साथ रहा, अभी परिणाम विहिन गति का निरंतरता हो गई। इसी को हम कहते है, अक्षयशक्ति, अक्षयबल। इन अक्षयशक्ति, अक्षयबल के साथ जीवन का जो वैभव है, अमरत्व के साथ पहचानने की आवश्यकता जीवन का अमरत्व समझ में आ जाए, ये समझ में आने से मृत्यु भय से आदमी छूटकारा पाता है। मरने के भय से सर्वथा मुक्त हो सकता है। यदि भय से मुक्त हो जाता है, धरती पर आदमी सर्वाधिक काम सही कर पाता है।

भय पीड़ित रहते हुए, सही कार्य को भी हम गलत कर देते हैं, भय से वशीभूत हो कर हर सही कार्य को, गलत कर देते हैं। भयभीत हो के एक आदमी हल जोतेगा, कुड़ सीधा होगा ही नहीं, दिमाग ही सीधा नहीं होगा तो कुछ काहे को सीधा होगा? भयभीत होने से ड़ाटेंगा, उपटेगा, स्वयं परेशान रहेगा, दूसरे को परेशान करेगा। वह तो सूत्र है ''जो जिसके पास रहता है, उसी को आवंटित किया रहता हैं'' उस आधार पर मनुष्य को भय से मुक्त होना बहुत आवश्यक हैं। समस्या भी एक पीड़ा है, समस्या को समाधान से तृप्त करने की आवश्यकता। समाधानित रहने से, भय से मुक्त रहने से आदमी सभी कार्य को तरीके से करता है। समाधानित रहने से मनुष्य, मनुष्य के साथ जितने भी, परिस्थितियॉ आता है, उसका जवाब आ जाता है, एक दूसरे को संतुष्टि मिलने का तरीका निकलती है। प्रसन्न होने की दिन आते है, क्षण आते हैं, इसीलिए समाधान एक बहुत ही मूलभूत आवश्यकता है, और भयमुक्ति एक आवश्यकता है। ये दोनों होने के बाद हम समृद्धि के पास जाते है। ये तीनों मिलने के पश्चात सह अस्तित्व प्रमाणित होता है। मानव का जो कुछ भी झॉकी बसी हुई है, सजी हुई है, प्राकृतिक, नैसर्गिक विधि से। वह इसी को सदा–सदा बताता है। इसको मनुष्य पहचानने की व्यवस्था है। मनुष्य पहचान कर के प्रमाणित करने की व्यवस्था है। पहचानने जाता है तो समझदार होता है, जैसे एक परमाणु, दूसरे परमाणु को पहचानता है, वह अणु के रूप में रचना हो जाता है, एक अणु दूसरे अणु को पहचानने से अणु रचित रचनाऍ हो जाते हैं। एक कोषा दूसरे कोषा को पहचानने से कोषाओं की रचना विभिन्न प्रकार के ही हो जाते हैं। एक ईटां दूसरे ईटां को

पहचानने की विधि से दीवाल सीधा हो जाता है। इसी प्रकार हर एक रचनाएँ एक दूसरे को पहचानने की कम में रखी हुई है। हर रचना, हर सही रचना, हर सार्थक रचना कुल मिलाकर के ऐ दूसरे को पहचानने के कम में रखा हुआ है। मनुष्य भी उसी में आता है, एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को पहचानने के कम में ही सही, गलती होती है। चाहते क्या हैं? पूछा तो सही चाहते हैं, सही चाहना को पहचाना जाएँ। क्या पहचाना जाए? हर मनुष्य समाधान चाहता है, इसीलिए समाधान से जुड़ा जाए, हर मनुष्य भयभीती से मुक्ति चाहता है, अभयता से जुड़ा जाए, हर व्यक्ति समृद्धि को प्यार करता हैं, स्वीकारता है, इसीलिए समृद्धि से जोड़ा जाए, इसी रास्ते सहज रूप में हम सह अस्तित्व में है, इसीलिए सह अस्तित्व से जोड़ा जाए। जोड़ने का 4 तरीका हुआ, 4 आयाम हुआ, आप हम मंगल मैत्री पाने का और सुखी होने का 4 आयाम हुए। सह अस्तित्व विधि से हम सुखी हो सकते हैं, अभयता विधि से सुख की संभावना बन जाती है, समृद्धि विधि से सुख की संभावना आती है, समाधान विधि से सुख की संभावना आती है। सुख की संभावना का 4 आयाम अपने आप से रखा है। इसको प्रयोग करना है नहीं करना है, उसको कपबपकम करना है। कपबपकम व्यक्ति ही करेगा, प्रयोग करना है तो समझदार होगा ही, नहीं प्रयोग करना करना है तो समझदार होगा नहीं। समझना वस्तु को ही होगा। समाधान वस्तु के रूप में क्या चीज है, अभय, भय से मुक्ति वास्तविक रूप में वस्तु के रूप में क्या चीज है? वस्तु रूप में जाते हो तो विश्वास, विश्वास का धारक वाहक आदमी। वस्तु के रूप में, गति के रूप में विश्वास है। अभयता का जो सकारात्मक भाषा है, वह विश्वास है। सदा–सदा वर्तमान में विश्वास रखना ही मनुष्य का भय से मुक्ति का प्रमाण है। मनुष्य, मनुष्य से भयभीत हो के मिलने की जगह में विश्वास पूर्वक मिलता है। सुख की संभावना, समाधान का संभावना बनता है कि नहीं बनता। भयभीत होकर के एक दूसरे से मिलने से कहॉ सुख की संभावना है। मनुष्य को परस्पर मिलने के लिए विश्वास चाहिए, परस्पर मिलने के लिए साथ–साथ होने का अरमान चाहिए, सह अस्तित्व चाहिए। मनुष्य से मनुष्य मिलकर जीने के लिए समृद्धि चाहिए और समाधान निरंतर चाहिए। ये 4 चीज को अपने में संजो के रखने के लिए मूल यंत्र है समझदारी। समझदारी आने के बाद ईमानदारी उसके साथ जिम्मेदारी होने से और प्रमाणित होने के पास में होते हैं, भागीदारी कर देने पर प्रमाणित हो ही जाते हैं। इस विधि से अपना पहचान, समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व पूर्वक अस्तित्व में प्रस्तुत करना सफल हो जाता हैं।

कंपन तरंग से ज्ञानोदय

प्रश्न– कंपन प्रदत्त तरंग से ज्ञान का उद्घाटन का व्याख्या?

उत्तर– जैसा हम कभी आंखों से देखते है, हाथों से देखते है, और किसी भी विधि से हम देखने का प्रयोग करते है, तो उससे जो कुछ भी प्रेरणा होती है, जैसा आंख के ऊपर प्रतिबिम्ब आता है, स्पर्श का साथ ठंड़ा, गर्मी आता है, नाक के साथ सुगंध, दुर्गंध आता ही है, इसी प्रकार जो सारे विधि से देखने की विधियॉ हैं, उसको हम स्वीकारने पर जीवन में एक कंपनात्मक गति होती है। वह कंपन स्वयं में कहॉ से आ गई? मेधस तंत्र में जो कंपन पैदा हुई, इस सबसे व्यजींत होने के लिए, व्यजींत, स्वीकार कैसे कर लिया? पहले से जीवन शरीर को जीवंत बनाए रखा था, इसीलिए व्यजींत हुआ। यदि जीवन शरीर को जीवंत बनाए नहीं रखेगा, ना ठंड़ी लगेगी ना गर्मी हम देखते ही है, जब

जीवन शरीर को छोड़ देता है, लोक ले जा कर के जला देते हैं। कहॉ ठंड़ी, गर्मी लगता हैं?

प्रश्न– जीवंत बनाए रखने के लिए जीवन क्या प्रकिया करता है?

उत्तर– जीवंत बनाए रखने के लिए शरीर की रचना प्राणकोषा से है, प्राण कोषाऍं छलनी के रूप में पूरा रचना को मांस रचना, रस रचना, सप्त धातु रचना में आर पार होने की विधि, जीवन परमाणु में अहर्ता रहता है। इसमें छलनी बना ही रहता है, छलनी है तभी तो आर पार है। इसमें जीवन हर जगह में से घूमता ही रहता है, इसी लिए हर प्राणकोषा जीवंत रहता है। जीवंत का मतलब? जीवन को जीवित रहकर शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधेन्द्रियॉ का संकेत को ग्रहण करने योग्य रहता है। यदि शरीर जीवंत नहीं रहेगा, वह इसको ग्रहण करेगा नही। उसका प्रमाण यही है, कोई–कोई जगह में कोषाऍं बिल्कुल मृत रहते हैं, उसको मूर्छित हो गये हैं, मर गये है, ऐसा कहते हैं।

प्रश्न– पेड–पौधे की जो प्राण कोशिका है, उसमें तो जीवन नहीं घूमता, फिर भी जीवित रहते हैं?

उत्तर– वह जीवंत नहीं रहते है, सप्राणित रहते है।

प्रश्न– सप्राणित और जीवंत में अंतर अभी स्पष्ट नहीं हो पाया?

उत्तर– सप्राणित रहने से, मनुष्य के शरीर में जीवंत रहना पता लगता है। श्शब्द, स्पर्श, रूप, रस गन्धेन्द्रियों को ग्राही विधि से, वह विधि झाड़ में होता नहीं।

प्रश्न– अभी जैसे बात हुई मनुष्य शरीर में कई जगह सुन्न हो जाता है, सुन्न होना एक तो ये हो सकता है कि कोशिकाऍं ही खराब हो गई हो, इसके कारण सुन्न हो गया, या दूसरा ऐसा भी कहा जा सकता है कि कोशिकाऍं ठीक है लेकिन जीवन उस जगह को जीवंत नहीं बना पा रहा हैं?

उत्तर– ऐसा कुछ नहीं। कोषा सप्राणित रहेगा तो जीवंत बनाए रखना, जीवन से बन जाता है। कोशिका को सप्राणित रहना आवश्यक है, तभी जीवन कोषाओं को जीवंत बना के रखता है।

प्रश्न– सप्राणित प्राणकोषाओं में भी शब्द का, स्पर्श का, गंध का प्रभाव पड़ता हैं?

उत्तर– प्रभाव पड़ना अलग है, स्वीकारना अलग है, प्रभाव तो हवा का आपके ऊपर रहता ही है, सारे हवाओं के प्रभाव को हम नाक से जितना लेते हैं, उतना ही हमारा उपयोगिता है, स्वीकारना उतना ही है। हमारे पास अनुपातिय व्यवस्था है, किस आधार पर? जीवंत रहने के आधार पर। इनके पास अनुपातिय व्यवस्था नहीं है। हवा आयेगा, पूरा हवा झाड़ पर प्रभाव ड़ालेगा ही। मनुष्य को कितना हवा चाहिए, उस अनुपात में घर बना लेता है, गुफा बना लेता है, कुछ भी कर लेता हैं।

प्रश्न– श्शरीर के किसी भी भाग को हम खूब गर्मी देगें, तो वह तो पूरा का पूरा स्वीकार करेगा?

उत्तर– जब तक वह जीवन उसको बनाए रखने के लिए तत्पर रहता है, उससे ज्यादा यदि आप जला दोगे, छोड देता है, उतने को छोड देता है या पूरे शरीर को जला दोगे, जीवन शरीर को छोड़ देगा। आप तो देखते ही हो, कई लोगों को आग लगाते हैं, कोई कोई बच भी जाते हैं, क्यों बचते हैं? जीवन उसको बचाने की इच्छुक रहता है। जब जीवन ये मान लेता है कि इसको बचाया नहीं जा सकता, शरीर छोड़ देता है, उसके बाद कहॉ से बचाओगे। जीवन शरीर को चलाने के लिए मेधस तंत्र की आवश्यकता है। जब की झाड़ जाति में कहीं भी मेधस तंत्र है नही ।हम कहते है की झाड़ में जीवन होता है। हम कहते है तो, हवस पूरा कर लो ना, झाड़ है वैसी ही तुम भी हो, हम भी हैं, यह भी हैं। चलो आप, हम को भी काट दो, चुल्हें में डालने दो, क्या बात है ये? मनुष्य को सूझबूझ से ही मनुष्य अपने में बहुत सारी परेशानियों को ओढ़ा रहता है। अपने ही कल्पनाओं से ओढ़ा रहता है। उसको हम भ्रम नाम दिया। भ्रम नाम देने के पश्चात उसका परिहार कैसा करोगे पूछा? उपाय ये है कि '' जैसा है वैसा अध्ययन करो'' जैसे पानी प्यास बुझाता है ये पता लग गया पानी को ऐसे ही समझो। पानी में क्या होता है? उसको यदि विश्लेषण, संश्लेषण करने जाओगे वह तो और भरोसा दिला देगा ये प्यास बुझाने की योग्य है। पहले उसका प्रयोजन को पकड़िये, प्रकिया को पहचाने, प्रकिया से प्रयोजनों को पहचानना। 2 विधि से अध्ययन हो सकता है।

किसी भी वस्तु का प्रयोजन को सह अस्तित्व विधि से, समाधान विधि से, समृद्धि विधि से अभयता की विधि से आप पहले पहचानों। इसके अलावा कोई और चीज आपके लिए वाछिंत वस्तु नहीं है। इस सूत्रो से हर वस्तु को प्रयोजन के रूप में पहचानिऍं। पहचानने के बाद उसका विश्लेषण, संश्लेषण, खण्ड़, विखण्ड़ जो कुछ भी करना है करिए, आप को

बोध होगा, प्रयोजन को ही नहीं पहचाने तो क्या होगा? जैसे बच्चे के हाथ में कोई खिलौना दिया, फूल दिया, उसको नोच–नाच कर रख दिया, क्यों? उसका प्रयोजन को पहचानते नहीं नोच–नाच कर रख दिया। फूल का प्रयोजनों को यदि पहचानोगे तब फूल ज्यादा समय तक उस प्रयोजन से सम्पन्न रहे, ऐसा कोई व्यवस्था करेगें। उसका प्रमाण ये गुलदस्ता रखा हैं। कैसा रखा हैं? आप ही ने रखा है, इसकी जो शोभा है, हमको व्यजिंत होते रहे, ये फूल की हमारे बीच की संबंध है। उसके लिए ज्यादा देर रहने योग्य आपने बना दिया। प्रयोजनों को पहचानने के बाद ही विश्लेषण, संश्लेषण किया जाए। किन बातों को? हम नहीं जानते हैं? उन चीजों को मैं जिस चीज को जान लिया हूँ, विश्लेषण पूर्वक उसको वैसा ही समझा जाए। उसका प्रयोजनों को समझा जाए, तब वह पूरा होगा। हम विश्लेषण करें, प्रयोजनों को हम समझे नहीं है, वह ''नीम हकीम खतरे जान'' होगा।

प्रश्न–कंपन प्रदत्त तरंग से ज्ञान का उद्घाटन ?

उत्तर– वस्तु शब्द में आने से, स्पर्श में आने से, नेत्र में आने से, मस्तिष्क में, मेधस तंत्र में इसका संकेत पहुंचता है। वहॉ एक तरंग पैदा होता है, वह तरंग से ज्ञान अर्जन होता हैं। ज्ञानोन्द्रियों के माध्यम से ज्ञानार्जन होता है, जीवन को, उसके बाद वही ज्ञानार्जन को जीवन मेधस तंत्र में प्रसारित करता है। तब ज्ञान प्रमाणित होता हैं।

प्रश्न– ये गति प्रदत्त तरंग से क्रिया का संपादन हो गया?

उत्तर– क्रिया का संपादन होता है और ज्ञान उदय जो होता है, वह मेधस तंत्र के द्वारा जीवन सुनने से वह ज्ञानोदय हो जाता है।

प्रश्न– ये ज्ञान तो नहीं, पहचानना होगा?

उत्तर– ठीक है ना। जानना, मानना, पहचनना, निर्वाह करना, ज्ञान का चार पैर। उसमें से एक पैर आपको समझ में आता है तो, बाकि के तीनों को खोजोगे। कोई एक पैर तो आता है, शरीर के द्वारा, मेधस तंत्र में जो कंपन पैदा हुआ, ज्ञानेन्द्रियों में क्या हुआ, वह ज्ञान जीवन को हो जाता है। इस ढ़ंग से हमारा पॉच ज्ञानेन्द्रियों द्वारा, ज्ञान को प्रमाणित करने का, ज्ञान को प्राप्त करने का रस्ता एक बना। उसके बाद जीवन स्वयं ज्ञानार्जन करेगा।

संवेदना से, शरीर से, इन्द्रियों से, स्पर्श ना होते हुए जीवन स्वयं ज्ञानार्जन क्या करेगा,इसमें मेधस का भागीदारी नहीं है। जीवन स्वयं करता है कपतमबज किस अर्थ में? मेधस द्वारा हम इसको प्रमाणित कर सकते हैं। इस अर्थ में ज्ञानार्जन करता है। ये मुख्य बात है।

हम कैसा करते है? शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंधेन्द्रियों से सम्बंध कहॉ पता लगता है, भाई का सम्बंध, हाथ से छूने से क्या पता लगेगा? नहीं लगता है। समझने से ही लगता है, ये कैसा होता है? प्रत्येक एक सम्पूर्णता से जुड़ी हुई है, ये ज्ञान जीवन में प्रतिष्ठित होता है, ये सब अणु से अणु, अंशो से अंश जुड़ी हुई हैं। जीवन से जीवन, धरती से सौर व्यूह, सौर व्यूह से आकाश गंगा ये सब जुड़ी हुई है। इसीलिए सब नियंत्रित हैं। एक के साथ एक मिलकर एक व्यवस्था को प्रमाणित कर ही रहे हैं। ये तो हमको पता ही लगता है। इसी प्रकार एक व्यक्ति का संबंध है, व्यक्ति का संबंध में भाई एक संबंध है। उसका जो अर्थ है, परस्पर अभ्युदय के अर्थ में प्रयत्नशील है, कार्यशील है, ये उसका मूल रूप है। ये संबंध को पहचानने में, कर्मेन्द्रियां, ज्ञानेन्द्रियां का कोई संबंध नहीं। यद्यपी ये सब कर्मेन्द्रियां, ज्ञानेन्द्रियां द्वारा प्रमाणित करने योग्य हैं। इसीलिए संबंध क्योंकि जीवन और शरीर का भी तो संबंध है, शरीर के द्वारा जो संबंध को पहचानते हैं, गर्मी, ठंड़ी अच्छा लगते तक बुरा लगने तक संबंध को पहचाना जाता है। जीवन से क्या पहचाना जाता है? संबंधो को प्रयोजनों के साथ पहचाना जाता है, जाना जाता है, माना जाता है, ये तीनों होने के बाद ये तीनों चीज जीवन में ही निहित रहता है। इसमें इन्द्रियों का प्रयोग नहीं। किसको पहचानने के लिए? मूल्यों को पहचानने के लिए, जीवन में ही मूल्यों को पहचानने की सामर्थ है। किन्तु इन्द्रियों द्वारा मूल्यों को मैं पहचाना हूँ, इसका हनंतंदजमम आपको दिला देता हैं। तब हम समझदारी और व्यवहार के बीच में और मधरिम स्थिति पैदा किया, उसका नाम हैं, ''समाधान'' ऐसी मधूरिम परिस्थित को हम प्रमाणित करते हैं, इसी का नाम है, समाधान। जीवन अपने में तरंगायित कैसा होता हैं? परस्परता के संबंधो के साथ कंपनात्मक गति होती है, उस कंपन से उससे व्यजींत होने से संबंधो से व्यजींत होने से, प्रयोजनों से व्यजिंत होने से कैसा व्यंजना, साक्षात्कार होने से, बोध होने से, अनुभव होने से, ये 3 विधि से व्यजंनाऍ होते है। इन विधा में जो व्यंजनाऍ हो पाते हैं, उसको हम कार्य में, व्यवहार में प्रमाणित भी करते हैं । समाधान को हम प्रमाणित करते है, समाधान के साथ बाकि तीनों आता ही हैं, समृद्धि, अभय, सह

अस्तित्व आता है। इस ढ़ंग से सुख पूर्वक जीने की रास्ता, संबंधो को पहचानने के साथ मूल्यों को निर्वाह करना स्वयं स्फूर्त होता है। जिससे समाधान के साथ हम जीते हैं।

प्रश्न– जीवन कंपनात्मक गति के माध्यम से बिना मेधस का उपयोग करते हुए, स्वयं में समझता है ये मामला थोड़ा और ठीक से

उत्तर– यही बात कहा है, बिना मेधस की सहायता के सम्बंधो का पहचान होता है, होने का साक्षात्कार होता है।

प्रश्न– जीवन तो यहीं बैठा है, साक्षात्कार दूर की चीजों को कैसा करेगा?

उत्तर–जीवन में जो होता है ना, जीवन में अक्षयशक्ति, अक्षयबल कार्य करता है, ये बताया गया। अक्षयशक्ति में दूर–दूर तक अपने को फैला के देखने की व्यवस्था रखा है। ''कल्पना'' कल्पनाएँ फैलती है, अध्ययन के समय में वह वस्तु तक फैलता है।

प्रश्न– पुंज कहॉ तक फैल जाता है, अगर मैं क्मसीप के बारे में सोच रहा हूँ, मेरा पुंज यहीं से क्मसीप तक फैल गया।

उत्तर–प्रमाणित होने की स्थिति में।

प्रश्न– थोड़ा सा यह बात स्पष्ट नहीं हो रहा है, जैसे जीवन, इसे पूरे शरीर में भ्रमण करता है, यही उसका कार्य, गतिपथ है। जब मैं सामने वाले पहाड़ के बारे में सोचने लगता हूँ, तो क्या यह कार्य गतिपथ, पहाड़ तक पहुंच जाता है?

उत्तर–आपका विचार शक्ति पहुंचता है, शक्ति और बल दो बात कहा है, आपको, शक्तियॉ दूर–दूर तक फैल जाते हैं। उसका माध्यम है, वातावरण।

प्रश्न– कैसे होगा?

उत्तर– तरंग विधि से होगा।

प्रश्न–मतलब ये तरंग से बाजु वाला कण में फिर बाजु वाला कण में ऐसा।

उत्तर– हॉ ऐसा करके क्मसीप तक हम बवददमबज हो जाते हैं।

प्रश्न– भौतिक रासायनिक परमाणु है, यहॉ से बैठ कर मैं क्मसीप को भौतिक रासायनिक परमाणु को हिला पाता हूँ।

उत्तर– करते ही हैं। वह जो कंपन जो लौट के आता है, उसको सुनने की अहर्ता जीवन में होता है। वह संकेतों को ग्रहण कर लेता है।

प्रश्न– तंकपव में या ज्ट में करते है। आस–पास की चीजों को कंपित करा देना

उत्तर– वैसे ही है ये उपबतवए उपबतवए उपबतव किसी उपबतव तिमुनमदबलमें, जीवन संकेत प्रकृति के साथ दौड़ता हैं । दौड़ने का प्रतिकिया क्या है? दौड़ के आना, किया का प्रतिकिया समान। उस आधार पर बात बनता है।

प्रश्न– तंकपव और ज्ट का जो कार्य प्रणाली है, वह जीवन में और ज्यादा सूक्ष्म है।

उत्तर– बहुत सूक्ष्म रूप में होता है इस ढ़ंग से हम ज्ञानार्जन करने की विधि रखी हुई है। ज्ञानार्जन किए तो क्या होगा? उसको विवेक में, विज्ञान में, एक तरीका ंततंदहमउमदज देना होता है। इसका नाम है विवेक और विज्ञान। विवेक में लक्ष्य को पहचानना होता है। लक्ष्य को पहचानने के कम में शरीर का कोई मतलब नहीं है, मेधस का कोइ मतलब नहीं इसीलिए विवेक के प्रयोग को हम पूरा का पूरा ज्ञान का स्थिति में कर लेते हैं। उसके बाद आता है विज्ञान। विज्ञान में दिशा निर्धारित करना पड़ता है, उसके साथ प्रकियाओं का चित्रण बनता है । वह चित्रण शब्द से जुड़ता है। शब्द पुनः अर्थ से जुड़ता है, संप्रेषणा होता है। अभी हम वही कर रहे हैं।

विचारो का स्थान पर प्रभाव

प्रश्न– किसी स्थान में अच्छे अपइतंजपवद है, इसी अर्थ में जैसे मान लिया, ये आश्रम है, यहॉ से सभी लोग सुकुन, शांति पा के जाते हैं। वह जहॉ भी रहते हैं, उस आश्रम के बारे में सोचते है तो अच्छा लगता है। किसी स्थान का अपइतंजपवद अच्छा होने का क्या मतलब?

उत्तर– पहले से ये हमारा परिकल्पना है, ये अच्छा जगह है, एक बात यह है इसमें हमारा अपइतंजपवद पहले से प्रस्तुत है। दूसरा यह विधि है यहॉ अच्छे लोगों का विचार करना, सोचना, करना, जीना बना ही रहता हैं। इसीलिए अच्छा लगता है।

प्रश्न– अच्छे विचारों का, अच्छी इच्छाओं का, अच्छी चिंतन का कोई प्रभाव, वातावरण में रहता है क्या? जिसको कोई भी व्यक्ति महसूस करता है?

उत्तर– गतिशील रहता है, ये तो आप मानोगे अच्छी विचार भी गतिशील है, बुरे विचार भी गतिशील है। इसको समझो, हमारे में पिसजनत करने की यंत्र रखी हुई है, जीवन में अच्छे को ग्रहण करते है, बुरे को ग्रहण नहीं करते है। जैसा चावल को पकाना है, पत्थर को अलग करते है, चावल को पकाते हैं।

प्रश्न– एक नया व्यक्ति इस परिसर में आया, जिसको इस आश्रम के बारे में कुछ भी नहीं पता और उसको ये बहुत अच्छा लगता है?

उत्तर– जो कुछ भी हम सोचते है, वह प्रवाहित होना ही है। अच्छा सोचो, बुरा सोचो यहॉ अच्छे लोगों का सोच, इसके साथ यदि जुड़ी रहती हैं, प्रभावित रहता ही है। वह आया हुआ व्यक्ति सर्वप्रथम अच्छाई को ही खोजता है, बुराई को खोजता नहीं। आदमी का ये वर्चस्व है। कहीं भी आप किसी के भी पास जाओगे, यदि पूर्व परिचित नहीं

हैं, उनके अच्छाई को ही आप खोजते हो, स्वीकारते हो, इसका एक उदाहरण – कहीं भी हम रास्तें में जाते रहते हैं, रास्ता भटके रहते है, तो आसपास के कोई व्यक्ति जिसके प्रति हमारा कोई जान पहचान नहीं है, उनसे पूछते है, भइया इस गॉव के लिए रस्ता कहॉ है, वह यह डगर है, ऐसा बतातात है, उसमें हम चल देते है। उससे पहले हम उनको देखे नहीं रहते हैं। सुने नहीं रहते हैं, पूर्ण विश्वास से उसमें जाते हैं।

प्रश्न– अच्छे विचार, बुरे विचार तरंग के रूप में जो गतिशील रहते हैं, अच्छे और बुरे जो विचार है, क्या उनके तरंग के कंपन में अंतर होता हैं?

उत्तर–उसमें ऐसा सोचना चाहिए, एक तमबमपअमत नाम की चीज होती है, माने ग्राही। ग्रहण करने वाला एक किया होता है। विसर्जन करने वाला एक किया होता है। विसर्जन में तरंग पैदा होता है, और ग्रहण में तरंग ग्रहण होता है। इस विधि से अस्तित्व में जो है, जो अभी धरती की वातावरण में ज्यादा से ज्यादा बुरे विचार भ्रमण करता रहता है, कम से कम अच्छे विचार भ्रमण करता है। इसीलिए धरती को बहुत जगह खराब लगता है। बहुत कम जगह अच्छा लगता है, उसके लिए क्या सहायक होता हैं? वहॉ निवास करने वालो का विचार एक सहायक होता है। आसपास की परिस्थितियॉ दूसरा सहायक होता है। सबसे ज्यादा वहॉ हरने वाले उसके वर्चस्त को बनाएँ रखते हैं। सबसे अच्छे से अच्छे जगह में आदमी भद्दे आदमी को देखकर उतना ही डरता है, जितना खराब जगह में रहकर के डरता है। भय मनुष्य का अस्वीकृति का द्योतक है, हम को अस्वीकार है, इसीलिए हम डरते है। स्वीकार वाला मात्रा अभी मानव के पास ज्यादा है, स्वीकार वाला कम। इस आधार पर आप हम ज्यादा भाषा का प्रयोग करते हैं, वस्तु को ग्रहण करने के लिए।

प्रश्न– विचारों के आधार पर जो व्याख्या किया आपने क्या यही जमसमचंजील हैं?

उत्तर– हॉ, उसी के आधार पर है, आप में ग्राहिता की प्यास और विसर्जन की तकनीकी, दोनों एकत्रित हो जाती है, इन तरंग को पैदा करने में आप समर्थ हो जाते हैं, दूसरा क्मसीप में बैठा है उसमें भी ऐसे ही बवउचवतमदज पिज रहता है, इसीलिए दूसरा आपके बात सुन भी लेता है, अपना बात आप को सुना भी देता है। इसी को जमसमचंजील कहते हैं।

प्रश्न– एक विचार कितने लम्बे काल तक बना रहता है, यदि ऐसा कोई स्थिति बनती हैं?

उत्तर– हर आवेश सामान्य होना चाहता है, हमने आवाज पैदा किया, जिस तरीके से वह जा कर सूक्ष्म, सूक्ष्मतम तरंग के रूप में काम करता है, उसके बाद वह सामान्य हो जाता हैं।

प्रश्न– जैसा कहा जाता है, महाभारत काल की आवाज अभी भी है।

उत्तर– सब कथा कहानी है।

प्रश्न– जैसे आवरी आश्रम के बारे में मेरे अच्छे ख्याल है, अगर मैं आवरी में रहता हूँ, तब भी अच्छा वाला प्रभाव रहेगा, यदि मैं यहॉ से 1000 ाउ दूर जाता हूँ तो तब भी वह प्रभाव रहेगा। परंतु किसी वजह से यदि इसके बारे में मेरे विचार बदल जाते है, तो तुरंत वह प्रभाव खतम हो जाता है या कुछ दिन रहता है।

उत्तर–प्रभावित नहीं कर पाता है, ये माना जाए, उस मुहूर्त में आपके ऊपर जो प्रभाव का तमबपअपदह या वह बंद कर दिए हो इतना ही तो हुआ । आपके पास 2 किया होता है, पहुंचने वाला, ग्रहण करने वाला। अभी ग्रहण करने वाला बंद कर दिया तो आपको ये आश्रम अच्छा है ऐसा नहीं दिखा। आपको जो पहुंचना है, पहुंचाते रहो, प्रभाव पड़ता ही रहता है।

प्रश्न– कुछ घटनाएँ जो भविष्य में होने वाला है, दिखाई दे जाता है।

उत्तर– मनुष्य का कल्पनाशीलता को एक क्षेत्र बना रहता है। उस कल्पनाशीलता के क्षेत्र के अंदर, भावी क्षणों में होने वाले बहुत सारे झॉकी , कल्पना में आ जाता है। उस आधार पर हम सोचते हैं, पहले से ऐसा देखा, घटित हो गया। ऐसा कहते है।

प्रश्न– भूतकाल की जो घटनाएँ घट चुकी है, जिनको हम जानते नहीं है, उनको जब ध्यान से देखा जाए, तो क्या उसमें से कुछ घटनाएँ दिख जाती है, समझ में आ जाती है क्या?

उत्तर– भूतकाल का जितने भी घटना है, किसी ना किसी के स्मरण में रहता है, संप्रेषणाएँ होती रही है, उन वैचारिक संप्रेषणा में कोई ना कोई संप्रेषणा करता रहता है, आप देख लेते हो। उस घटना की स्मृति किसी ना किसी जीवन में होना चाहिए। वह

संप्रेषणा आपको कल्पना तंदहम में आ गई, आपको वह कमेपहद मिल गई आप सोचे की ऐसा घटित हो गया।

अनुभव

जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना

प्रश्न– बोध और प्रमाणिकता का तृप्ति बिन्दु अनुभव है, अनुभव को इस आधार पर अच्छे से परिभाषित करने की जरूरत हैं। क्योंकि अनुभव में पूरा वस्तु दिखेगा, चित्र दिखेगा, ऐसा हम लोग में कमेपहद कर रखा है।

उत्तर– बोध के बारे में ये बताया है, अनुभव को रोशनी में, स्मरण पूर्वक, इन दोनों के बीच में वस्तु बोध । इसी का नाम अध्ययन है। अनुभव का रोशनी में वह चीवजवहतंचील है ही है। क्या चीवजवहतंचील जो बोध किए हो। रूप, गुण, स्वभाव, धर्म जो आपको बोध हुआ।

प्रश्न– क्या बोध में रूप गुण भी होता हैं?

उत्तर– एक बार यहॉ से शुरूआत करो, आगे पिसजनत लगाएंगे।

प्रश्न–अनुभव की रोशनी क्या चीज है? इस को बसमंत कर दीजिए?

उत्तर– अनुभव की रोशनी है तृप्ति। जीवन तृप्ति उसका नाम है। तृप्ति का नाम है अनुभव,श तृप्ति स्थली को स्त्रोत क्या है? करने की एक स्त्रोत है, सोचने की एक स्त्रोत है, विचारने का स्त्रोत है, बोलने का स्त्रोत है और प्रमाणित करने का एक स्त्रोत है। इन सभी स्त्रोतों से हम तृप्ति होने का स्थिति का नाम है अनुभव उसका प्रमाण क्या है? व्यवहार में प्रमाणित करने जाते हैं। समाधान होना ही होना। हम जब कभी भी प्रमाणित हुए समाधान से हुए। जो हमने बोध किए ये, प्रमाणित किए ये दोनों का तृप्ति बिन्दु नाम है, समाधान। कार्य कारण का तृप्त बिन्दु, कार्य को भी हम समझे हैं, कारण को भी हम समझे हैं, इन दोनों का तृप्त बिन्दु । कारण के अनुरूप कार्य हुआ, कार्य के अनुसार कारण प्रमाणित हुआ। इसको तृप्त बिन्दु के रूप में पहचानते है, इसका नाम है समाधान और कार्य और फल। कार्य और फल के साथ यदि तृप्ति मिलती है, उसका नाम है अनुभव समाधान। कार्य कारण की तृप्ति, विचारों और कार्य का तृप्ति, सोच और निर्णय की तृप्ति। ये निरंतर तृप्ति की रास्ता बनी हुई है। अतृप्ति की जगह में जीने के लिए हम घर बनाते है, घोंसला बनाते है। निरंतर जो तृप्ति है अस्तित्व में वही अनुभव है।

प्रश्न–बाबाजी जानने मानने की तृप्ति बिन्दु एक साथ है, या जाने की अलग तृप्ति, मानने की अलग तृप्ति?

उत्तर–जानने मानने की तृप्ति, 2 बवउचवदमदज होगी, हर जगह में। 2 बवउचदमदज वो बीच में जो संगीत होता है, वही तृप्ति है । जानने से मानने में हमारा पूरा सटी हुई जगह, मानने से जानने की सटी हुई जगह तृप्ति बिन्दु है। जानना, मानने के बारे में कोई विरोध नहीं कर रहा है बाकी सकारात्मक रूप में स्वीकार रहा है। जानने वाला जो भाग है, मानने को स्वीकार कर रहा है। मानने में जानना अपने आप में स्वीकार है। मूल में ये 2 ही बवउचवदमदज है।

प्रश्न– क्या इसके बाद मानने और पहचानने में भी ऐसे ही तृप्ति बिन्दु ?

उत्तर– हॉ, ऐसे ही है, जानना, मानना, पहचानना, निर्वाह करना चार भाग। अर्न्तमुखी विधि से क्या है? जानना, मानना, पहचानना तीन चीज पूरा होता है। निर्वाह करना, शरीर के द्वारा निर्वाह होता है। माने तीन भाग जीवन में ही ूवता ौवच हो जाता है, एक भाग जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में ूवता ौवच होता है। इसका परिणाम क्या है। समाधान। सफलता = समाधान। क्या सफलता । जानने, मानने में सफलता। एक दूसरे के

बीच में संगीत, तृप्ति, मानने और पहचानने में तृप्ति, 2 तृप्ति बिन्दुएँ मिल गई और पहचानने, निर्वाह करने में तृप्ति, पुनः निर्वाह करने और जानने में तृप्ति। इस ढ़ंग से 4 तृप्ति बिन्दु मिलता हैं। इसमें हर दिन आवर्तनशील रहता है, कोई क्षण इससे रिक्त नहीं हो सकती है। कोई कार्य इससे रिक्त नहीं हो सकती है।

प्रश्न–जानने, मानने की 5 बिन्दुएँ है, ऐसे आप समझाते रहते हैं, अस्तित्व, विकास क्रम, विका, जागृति क्रम, जागृति।

उत्तर–जानने की बिन्दु इतना है, इसमें हम प्रमाणित होने की तरीका सहित मानना होता हैं।

प्रश्न– दूसरे को समझाने योग्य हूँ, ऐसा ही जीवन को समझ लिए, तो जीवन जागृति भी जानना मानना पडेगा।

उत्तर– जानने, मानने की तृप्ति बिन्दु = अनुभव। पहले इसको ठीक से समझो, हम प्रमाणित करने की बवउचवदमदज के साथ–साथ मानते है, उसका प्रमाण क्या है? हम प्रमाणित कर देते हैं। आप जाने हो, माने हो, इसको आप प्रमाणित कर देते हो। किस आधार पर? पहचानने, निर्वाह करने की आधार पर।

प्रश्न– जैसे जीवन जागृति भी जानने, मानने की बिन्दु है, तो जीवन जागृति को प्रमाणित कर देगें, उसके बाद अनुभव होगा।

उत्तर– जानने के बाद मानना होता है। वस्तु को हम बोध करने के बाद वस्तु को हम प्रमाणित करने योग्य हो इस बात को मानना होता है। मानना क्या चीज है? मैं प्रमाणित कर सकता हूँ, इसको मानना।

प्रश्न– कर सकता हूँ या कर लिया हूँ?

उत्तर– प्रमाणित करने के बाद कर लिया हूँ, शुरूआत अध्ययन से है। अध्ययन से हम जान लिए, वह जानने की प्रकिया पहले से है ही। मैं प्रमाणित हो सकता हूँ, हो जाऊंगा, होता हूँ, इसका नाम है मानना। जैसा कोई आदमी खाना बना रहा है। उसका एक आदमी देख रहा है, मैं भी कर सकता हूँ, वह प्रकिया को जानना तो हो गया खड़े–खड़े, उसके बाद आप एक निश्चित विधि से मैं इसको कर सकता हूँ, करूंगा, करूंगा जगह में आते है,

तो संकल्प हो गया, कर सकता हूँ के जगह में हम मान लिए, कर दिया जगह में प्रमाणित हो गए।

प्रश्न– जानने के बाद प्रमाणित होने के बीच में क्या दूरी हैं?

उत्तर– दूरी कूछ भी नहीं है, जानने, मानने की दूरी को यदि कल्पना करेगें वह हमारा बेवकूफी के अलावा दूसरा कोई वस्तु नहीं। जानने और प्रमाणित करने के बीच दूरी नहीं है। अगर दूरी है, इसका मतलब जाना ही नहीं है। जानने का प्रमाण मानना है, मानने का प्रमाण पहचानना है, पहचानने का प्रमाण निर्वाह करना है, निर्वाह करने का प्रमाण है, प्रमाण को पुनः जानना।

बोध साक्षात्कार

प्रश्न– बोध का क्या मतलब है? जैसे जीवन किया को समझा गया, चिंतन करने से वह बोध में जाएगी, अनुभव गामी विधि से।

उत्तर– अध्ययन में जो वस्तु है, क्या संबंध एक वस्तु है, वास्तविकता है, व्यापक एक वस्तु है, क्योंकि व्यापक एक वास्वविकता है, जीवन एक वस्तु है, क्योंकि जीवन एक वास्तविकता है, जीना एक वस्तु है, क्योंकि जीते ही है, एक वास्वविकता है। जीवन साक्षातकार हो जाए, किसमें? जीवन मे जीवन साक्षात्कार होने के लिए दूसरा कोई कॉच नहीं होता।

जीवन में ही जीवन साक्षात्कार होता है। साक्षातकार हुआ उसका बोध हो जाता है। साक्षात्कार होने के बाद ही बोध होता हे। माने हम जो अध्ययन कराते हैं। शब्द छोड़कर अर्थ में जाता है तो साक्षात्कार होता है, अर्थ साक्षात्कार हुआ। अर्थ बोध हो गया। बोध का मतलब अर्थ स्वीकृत हो गया। इसका नाम है, समझ, जानना। इस प्रकार जो मुद्दा है, अस्तित्व एक मुद्दा है। अस्तित्व को जानना, पहला बात।

प्रश्न– क्या ऐसा भी हो सकता है कि साक्षात्कार तो हो गया, परंतु वह स्वीकार नहीं हो रहा हैं?

उत्तर– ऐसा होता नही, साक्षात्कार हुआ तो हो ही जाता है।

प्रश्न– जागृति जैसे पता चल गया क्या है, साक्षात्कार हो गया, परंतु अपना जीने की निष्ठा प्रिय, हित, लाभ में ही हैं।

उत्तर– तब तो वह बात प्रमाणिकता का पक्षधर नहीं हुआ। साक्षात्कार ही नहीं हुआ। साक्षात्कार हुआ तो स्वीकार होता ही है। साक्षात्कार होने के बाद प्रमाणित होना है कि नहीं होना है, उसमें आपका स्वतंत्रता बनता है। साक्षात्कार बोध के पश्चात हम प्रमाणित होना चाहता हूँ, नहीं चाहता हूँ। इसको आप बवदेपकमत कर सकते हैं। प्रमाण के बिना आप अपना संतुष्टि लगा सकते नहीं।

प्रश्न– जैसे साक्षात्कार हुआ, उस समय बोध होगा ही? दोनों अलग अलग किया है, इसको कैसे समझे?

उत्तर– साक्षात्कार में आदमी को ज्ञान का हर पउचनसेम रोमाचिंत करता रहता है। साक्षात्कार संगीत है, लय, ताल युक्त है, चनसेमे है।

प्रश्न– साक्षातकार की वस्तु और बोध की वस्तु बिल्कुल एक है। दोनों कियाओं में अंतर क्या है, समझ में नहीं आ रहा हैं?

उत्तर– जैसा शब्द का अर्थ, अर्थ का साक्षातकार और बोध। साक्षातकार होना है तो बोध होता ही है, जैसा एक राग आदमी गाता है। उसको भैरवी नाम दिया और दूसरा राग का दूसरा नाम दिया। इन दोनों का अलग अलग तरीके की साक्षातकार होता है। लय, ताल का चित्रण होता है। ताल का जो स्वरूप है, किसी काल खण्ड का नाप–तौल को बताता

है। ये चित्रण में आता है। स्वर जो हे, साक्षातकार में आता है। जैसा सात स्वर होता है, उन स्वर में से कोई चीज पहचान यदि होता है, वह साक्षातकार में आता है। इसका उल्टा हुआ, स्वर जानना नहीं हुआ, अभी पहचानना हुआ। ये पहचान होने से रोमॉचकता होता है। ये राग साक्षातकार होना आदमी का एक सहज अधिकार है, ऐसा भी आदमी सोचा है। उसके ऊपर काफी प्रयोग भी हुआ, वह कैसे कैसे पतन हुआ बाद में हम विचार करेगे। अभी मनुष्य का साक्षातकार होने का जो बात है, जो कुछ भी सामने वाला गाता है, उसमें एक स्वर है, एक ताल है, स्वर का साक्षात्कार होता है, यदि रोमाचिंत होना होता है तो स्वर में एक अर्थ है, वह साक्षात्कार होने से बोध हो गया। इसका मतलब ये हुआ, स्वर होने मात्र से बोध के लिए वस्तु पूरा नहीं हुआ। स्वर का अर्थ सहित स्वर हो वह बोध में जाता हैं।

प्रश्न–ये इसीलिए कम समझ में आया, क्योंकि स्वर ऐसे भी पता नहीं?

उत्तर– जैसा आप ज्यादा तिमुंनमदबलए सवू तिमुनमदबल में बात करते हो, जोर से बोलते है, तो भी आपको पता लगता है, इसका नाम है साक्षात्कार क्या चीज हैं? ज्यादा बोला ये साक्षात्कार हुआ। स्वर, चित्रण के सीमा में नहीं आता है। स्वर और अर्थ में जो भेद है, उसको आपका बताना चाहते है।

प्रश्न– मुझे प्यास लगी है, पानी–पीना है। ये मैं बोल दिया, इसका एक अर्थ है, अर्थ का बोध हुआ, साक्षात्कार या चित्रण।

उत्तर– ये साक्षात्कार हुआ, पानी पीने की, पिलाने की चित्रण होगा, पानी साक्षात्कार होगा, बोध होगा, पानी है इसका स्वीकृति रहता ही है बुद्धि में ।

प्रश्न– ऐसा एक उदाहरण जिसमें सिर्फ साक्षात्कार हो, बोध ना हो?

उत्तर– वह स्वर में ही आता है, साक्षात्कार हो बोध ना हो ऐसा कोई अर्थ नहीं है। हमको स्वर साक्षात्कार हुआ, अर्थ साक्षात्कार नहीं हुआ। बोध में नहीं गया, बोध यदि होता है तो वस्तु हमारा होता है।

प्रश्न–साक्षात्कार में वस्तु हमारा नहीं हुआ?

उत्तर– ऐसे वस्तु 2 चंतज में होता है, साक्षात्कार होते हुए बोध में नहीं पहुंचता है। जो एक चंतज में है, वह तो सीधे ही जाता है।

प्रश्न– वस्तु का स्वभाव, धर्म इन दोनों का साक्षात्कार होता है और दोनों का ही बोध होता हैं।

उत्तर– क्योंकि रहता ही है अस्तित्व में, स्वर क्या हैं? हम अपने हैसियत से प्रदर्शित करते हैं। स्वर, ताल ये दोनों प्रदर्शन हैं।

प्रश्न– जो नाड़ी देख के रोग को पहचानते है? स्वास्थ्य को पहचानते है, ये साक्षात्कार है?

उत्तर– इसमें ऐसा कहा जाए साक्षात्कार तक कई चीज जाता है, संकेतो का अर्थ जो हैं, शरीर में होने वाली किया के रूप में उसमें पहुंचता है, उसको साक्षात्कार तक कहा जा सकता है। स्वास्थ्य का बोध रहता है, वह हमारा स्वत्व है, स्वस्थ्यता का बोध हमारे पास रहता है, तभी हम चिकित्सा कर पाएगें।

प्रश्न– मतलब एक संतुलन की स्थिति है, उसका पहले से बोध हैं, नाड़ियों का, स्वास्थ्य का, उसके अपेक्षा में ज्यादा कम हो गया तो हम सोचते हैं। किसी वस्तु का साक्षात्कार हुआ, उसका बोध हुआ, बोध हुआ तो जानना हुआ।

उत्तर– देखों, कई ऐसे चीज है, लक्षणों का साक्षात्कार होता है, वस्तु का साक्षात्कार, बोध दोनों होता है। वस्तु नित्य वास्तविकता से वैभवित है, इसीलिए वस्तु नित्य होना पाया जाता है, इस विधि से कुछ लक्षण साक्षात्कार तक जाता है, उसमें वस्तु ना होने के कारण वह बोध होने से रह जाता हैं। उसमें से वह स्वर को बताया, वैसे ही स्वास्थ्य, जो रोग को हम देखते हैं। इसमें आवेश का साक्षात्कार होता है, क्योंकि रसों का आवेश को चित्रण में लाना होता नहीं। चित्र में सीमित नहीं होता। अभी सारा उमबींदपेउ कहॉ गलत हैं? धातुओं का असंतुलन को आप ग्राफ में नहीं ला पाएगें। हाथ से जो चित्र कर सकते हो वह सब यंत्र करेगा।

प्रश्न– नाड़ी का जो असंतुलन है, ताप, दबाव, रेडियोग्राफी में दिखता है।

उत्तर–वह सब आता है, नाड़ी को हम थोड़े कह रहे हैं, कि साक्षात्कार है, नाड़ी का संकेत जो चीज रसों में असंतुलन, धातुओं में असंतुलन इसका साक्षात्कार होता है, क्योंकि वह वस्तु नहीं है, माने उसका निराकरण के लिए आवश्यकता है, इसीलिए रोग, बोध और स्वत्व के रूप में जाता नहीं।

प्रश्न– संतुलन का पहले बोध रहता है, नाड़ी में, बोध रहने के बाद ही उसके प्रकाश में हम रोग को पहचानते हैं।

उत्तर– रोग में वह जो चित्रण में नहीं आता है, वह भाग का नाम है, साक्षात्कार। मनुष्य जो चित्र लिख नही पाएगा, वह सब साक्षात्कार में ही हम पहचानेगें। साक्षात्कार में पहचानने के बाद उसका चिकित्सा देगें।

प्रश्न– जानना, आत्मा में होता है?

उत्तर– जानने का जो प्रकिया होता है, बोध जानने का चिरस्थली हैं। जानने के पहले साक्षात्कार, बोध हो गया, माने हम जान लिए, हम उसके बाद मान लेते हैं, कैसा मान लेते हैं? हम प्रमाणित करने के लिए तत्पर होते हैं, तब मानते हैं, बोध से संकल्प में आते हैं। इसका तृप्ति अनुभव में ही होता है, क्योंकि अनुभव के रोशनी में बोध हुआ रहता है। अनुभव के बोध का चीवजवहतंचील रहता ही है। हम उसको प्रमाणित करने पर वह तृप्ति मिल जाता है। अनुभव की रोशनी को तृप्ति की रोशनी भी कह सकते हो। तृप्ति का बिन्दु हमारा बोध सें बिल्कुल संगीतमय होना आवश्यक है। उसके बीच में कोई शब्द, कोई तर्क, कोई कारण, कोई क्रिया, कोई तरंग, कोई भी चीज मदजतंदबम नहीं। तृप्ति का अर्थ में बोध हुआ है, तृप्ति प्रमाणित करने से होता है। तृप्ति को हम अनुभव कह रहे है। मनुष्य तृप्त होने क बातों पर, मुद्दे पर, बातें तो हम आदिकाल से मनुष्य तृप्त होने की सुनते रहे, चाहत के रूप में, तृप्त होने की एक मुद्दा आज तक बना ही रहा। इसमें ये पूरा सह अस्तित्व वादी चिंतन में मानव केन्द्रित विधि से आने की आधार पर तृप्त मुद्दा को समझदारी के रूप में पहचाना गया। इसको पहचानने के बाद प्रमाणित करके देखा गया। समझदारी के अनुसार आदमी प्रमाणित होता है। मैं प्रमाणित हुआ, आप भी हो सकते हो, इसमें मैं प्रमाणित हूँ, ये सच्चाई है। इसमें समझदारी के अनुरूप हमारा व्यवहार में प्रमाण हो जाता है। व्यवहार में प्रमाणित होने के बाद, समझदारी की तृप्ति हो पाती है। इस ढ़ंग

से पहले समझदारी, उसके बाद ईमानदारी, उसके बाद जिम्मेंदारी, उसके बाद भागीदार, भागीदारी के आधार पर फल परिणाम, फल परिणाम के आधार पर फिर समझदारी।

अध्ययन के तीन चरण

प्रश्न– अध्ययन के 3 चरण को स्पष्ट कीजिए?

उत्तर– जैसा हम अस्तित्व में अध्ययन किए, पहले दृश्य को देखा, दृश्य में वस्तु होता ही है, व्यापक भी एक दृश्य ही हैं, एक–एक वस्तु दृश्य है, पहला ये समझ में आया, मैं एक दर्शक हूँ, मैं ये दोनों को देख रहा हूँ। इसको मैंने पहचाना, ये बात हर विद्यार्थी के लिए जरूरत है।

जब जीवन को देखा, जीवन किया कलाप को देखा, जीवन के स्वरूप को देखा, जीवन का लक्ष्य को देखा, जीवन शक्ति बल को देखा, जीवन ज्ञान यही हैं। ये पता चला, और इसका ज्ञाता जीवन ही है, ये आया। अस्तित्व के साथ द्रष्टा, जीवन के साथ ज्ञाता, ज्ञेय के बारे में आगे तो पूरा सह अस्तित्व ही ज्ञेय हैं।

उसी के साथ में मानवीयता पूर्ण आचरण । एक त्व सहित व्यवस्था के रूप में हर एक में है। सम्पूर्ण व्यवस्था है ये, व्यवस्था में भागीदारी है। मानव को व्यवस्था और व्यवस्था में भागीदारी होने के लिए ज्ञान भी चाहिए, दर्शन भी चाहिए, आचरण भी चाहिए, अभी आगे पीढ़ी को भी यही पढ़ाई चाहिए। विद्यार्थी को ये ज्ञान देना जरूरी है, कि तुम समझने योग्य व्यक्ति हो, समझने योग्य विद्यार्थी हो, तुम समझ सकते हो, ये भरोसा दिलाना अध्यापक का पहला काम, अध्ययन कार्य का पहला चरण । उसके बाद कोई ना कोई भाषा विधि होगी। चाहे म्दहसपेी में पढ़ाओं, भ्पदकप में पढ़ाओं, कोई ना कोई भाषा में तो आप पढ़ाओगे ही। भाषा एक भाग है, अध्ययन कार्य के लिए, भाषा में अभी तक सोचते रहे, व्याकरण भाषा को नियंत्रित कर सकता है, करता है। अभी तक की अवधारणा यही है। संस्कृत भी वैसे ही मानता है, हमारे अनुसार वस्तु बोध होना ही भाषा का सार्थकता है। वस्तु बोध यदि नहीं होता है, व्याकरण को तुम कुछ भी लगाते रहो, क्या हो जाता है, व्याकरण का छंद कुछ भी काम नहीं करेगा। ज्ञान ही करेगा, लोगों ने ज्ञान के बारे में

अभी अध्यात्म ज्ञान को बताया, अध्यात्म के बारे में बताया व्यवहार से कोई लेन–देन नहीं हैं।

श्शब्द का वस्तु बोध यदि होता हैं, शब्द का अर्थ, वस्तु, वस्तु का बोध यदि हो जाता है, तब हमारा अध्ययन हुआ। यदि वस्तु बोध नहीं हुआ है, तो शब्द तक हम रह जाएगें।

शब्द तक भी हम तब तक पहुंच नहीं पाएगें, जब तक हम समझ सकता हूँ, हम प्रमाणित हो सकता हूँ, आदमी ही एक मात्र वस्तु है, जो समझ सकता है, प्रमाणित हो सकता हैं। ये हैसियत को यदि हम उभारेगें नहीं, शब्द भी ठीक से सुनेगा की नहीं ऐसा भरोसा किया नहीं जा सकता।

इस ढ़ंग से अध्ययन का तीन चरण –

1. परस्परता में विश्वास।
2. शब्द का श्रवण, प्रयोग।
3. शब्द से इंगित वस्तु का बोध।

ये 3 चरण में अध्ययन सार्थक होता है, वस्तु बोध होने के बाद प्रमाणित होने के लिए प्रवृत्ति, उसके बाद संकल्प, संकल्प के बाद प्रमाणिकरण।

अर्न्तमुखी बर्हिमुखी

ये अर्न्तमुखी, बर्हिमुखी का झगड़ा क्या हैं, आपको बताना चाहते है। अर्न्तमुखी का मतलब है, समझदारी को उपार्जित करना, मूल्यांकन करना। समझदारी प्रमाणित हुआ, नहीं हुआ इसको मूल्यांकन करना, अर्न्तमुखी कार्य हैं, और समझदारी को उपार्जित करना, अर्न्तमुखी कार्य है। यदि हम कोई चीज अध्ययन कराता हूँ, जीवन में अपने मन से, इसको स्वीकारना ना स्वीकारना, इसको हर विद्यार्थी सोचता ही है, जैसा आप बैठे हैं, हमारा बात आप सुनते भी है, सुनने के बाद बहुत सारे बातों का अर्थ में जाते हैं, अर्थ में जाने के बाद उसका स्वीकृति होती है, उसको प्रमाणित करने योग्य बन जाते है। अर्थ स्वीकृति होने से समझदारी हुई अर्थ स्वीकार नहीं हुआ तो केवल सुना है। उसमें अपन ये भी एक जगह में आए की अर्थ स्वीकार होना चाहिए। अर्थ यदि समझ में नहीं आया तो शब्द का कोई मतलब नहीं। जैसा आपका नाम है, आप का नाम याद करने मात्र से आप मिले नहीं। हम नाम का बड़ी ख्याति गाया। ''राम से अधिक राम का नाम'' ये भी हम बताना चाहे। इस प्रकार से बहुत सारे वितण्ड़ा वाद पैदा हुआ। अन्त में यह निकलती है, यदि किसी का नाम है, नाम का वस्तु मिलने पर ही तृप्ति होती है। नाम से कुछ मिलने वाला है नहीं। इस निष्कर्ष पर हम आ गए, उसी आधार पर अर्न्तमुखी जो बात होती है, ये अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिंतन के अनुसार ज्ञानार्जन, विवेकार्जन, अथवा समझदारी से सम्पन्न होने की प्रकिया है। अभी तक अपना सोचना ये था कि अर्न्तमुखी कारी अंतिम समझदारी है, ऐसा सोच लिया, इसीलिए ये छाती का पीपल हो गया।

अर्न्तमुखी जिसने घोषणा किया अपने को, संसार से द्वेष के अलावा दूसरा कुछ किया नहीं। संसार को दुख रूप माने बिना अर्न्तमुखी कोई होता ही नहीं है। संसार को क्लेश रूप माने बिना अर्न्तमुखी हो ही नहीं सकते। इसका ये 2 सूत्र है, संसार को क्लेश रूप आदिकाल से वेदान्तों में बताया ही है। कर्म भी क्लेश कारण है, इसीलिए संसार और संसार का काम दोनों क्लेशकारी अर्थ है। क्लेश से राहत पाने के लिए पुण्य की बात किया। पुण्य के बारे में पहले 4 आश्रम, उसके बाद उपासन विधि, ये सबसे गुजर के विज्ञान के जगह में आ गये हैं। जिसमें विज्ञान स्वयं एक प्रकार से स्थंभित, कुठिंत, निरूत्तर होने के जगह में हम आ चुके हैं। किस आशय से स्थंभित ? सर्वप्रथम विज्ञान ये अरमान बताया की प्रकृति पर हम विजय पाएगें। विजय पाने का काम करेंगें। वह नहीं हो पाया। विज्ञान से मनुष्य को अमन चैन मिलेगा। मनुष्य सुख, शांति से जीएगा, ये दूसरा घोषणा । वह हुआ नही।

कलह, झगड़ा और समस्याएँ हर दिन बढ़ता गया। सबसे बड़ा समस्या ये आया, कि ये धरती बीमार हो गया, धरती बीमार होने से अज्ञानी, ज्ञानी, विज्ञानी सब के सिर पर एक ही तलवार घूमने लग गई। मनुष्य इस धरती पर रहेगा, नहीं रहेगा। ये प्रश्न चिन्ह आ गई। इससे वह कुठिंत हो गया। ये कुल मिलाकर के विज्ञान संसार की गति, फल, परिणाम। उसके आधार पर विज्ञान की स्थिति इस ढ़ंग से समीचिन हो पाता हैं। इससे पहले अध्यात्मवाद में अर्न्तमुखी बात आई थी क्योंकि संसार को क्लेश रूप समझा, अर्न्तमुखी होने से ही कहीं ना कहीं राहत हैं, ऐसा समझा। अर्न्तमुखी का अंतिम छोर समाधि बताया, उसके पहले ध्यान बताया, ध्यान से भी काफी राहत मिलती है, ऐसा बताया। उसमें काफी लोग अपने को जूझे, जूझने के बाद समाधि में भी कोई–कोई गया होगा, अन्ततगत्वा समाधि के बाद भी, जैसा मैं समाधि को देखा, समझा उस स्थिति में। ना तो हम ज्ञानी हूँ, ये बता सकते थे, ये भी नहीं बता सकते थे हम अज्ञानी हूँ, बड़ा मुश्किल क्या है? ये भी हम नहीं बता सकते थे कि हम सुखी हो गया हूँ। ये भी घोषणा नहीं कर सकते थे हम दुखी हो गया हूं, तब हम को पता चला शास्त्रों मे लिखा हैं, समाधि का मतलब ''सुख दुख से परे''। इसी को देख करके लिखा होगा ऐसा हमने सांत्वना लगाया। जिस बात के लिए, समाधि के लिए हम प्रयत्न किया वह मिला नहीं। मूल मुद्दा यही था, यह जो बंधन और मोक्ष की बात कहते हैं, पूरा वेदान्त को पढ़ने के बाद यही प्रश्न चिन्ह बनती है। ''ब्रम्ह ही बंधन का कारण हैं'', उसका छोटा सा स्वरूप यही है, आत्मा के रूप में ब्रम्ह, जीवों के हृद्य में

बैठ गया। जीव जो है, भ्रम वश कर्म बंधन में आ गया। मोक्ष कैसा होता है, बोले, आत्मा परमात्मा में विलय हो जाता है, ये बताया । जब जीव के अंदर में आत्मा नहीं रहता, जीव जो है अपने आप से मुक्त था ही। क्यों बैठ गया आत्मा? एक बुद्धु आदमी भी नहीं बैठेगा, इतना बड़ा भारी ज्ञान क्यों बैठ गया उसके अंदर। इस प्रश्न का उत्तर कोई दिया नहीं। ना शास्त्रों में लिख पाए। उसको हम स्वयं ही खोजने के लिए गए, अन्ततगत्वा ये हुआ, हम बंधन और मोक्ष की बात समझने की कोशिश किए। हमारा सारा प्रयास के अंत में ये निकल गया।

भ्रम = बंधन

जगृति = बंधन मुक्ति

एक छोटी सी चीज के लिए, ये सब करना पड़ा, इसमें 25–30 वर्ष गए। अंत में ये पता चला भ्रम कहॉ से आता है, पूछे? उसका उत्तर मिला, जीवन जब तक श्शरीर को जीवन माना रहता है, तब तक भ्रम, जागृति कब से है ये पूछे?

जीवन को जीवन माना जाए, शरीर को शरीर के रूप में पहचाना जाए, जीवन के आवश्यकता को पहचाना जाए, शरीर के आवश्यकता को पहचानाजाए, इन दोनों को निर्वाह कर, व्यवहार कर प्रमाणित किया जाए।

इसके लिए क्या किया जाए? इसके लिए ये किया जाए, समझदार बना जाए। अस्तित्व, जीवन, मानवीयता पूर्ण आचरण को समझने से समझदार उसको प्रमाणित करने से प्रमाण। ये हमारा अनुभव की पूरा का पूरा झांकी। उसके बाद अर्न्तमुखी, बर्हिमुखी की बात आई। अर्न्तमुख में जो समझदारी की उपार्जन करते है, उसको व्यवहार में हम प्रमाणित नहीं करते हैं। हम समझदार होने का कहॉ प्रमाण है। अर्न्तमुखी होने का प्रयोजन यदि समझदारी को अर्थ में हम प्रयोग कर सकेगें, वह लाभदायक होगा। अर्न्तमुखी, बर्हिमुखी का प्रमाण, व्यवहार में ही मनुष्य प्रमाणित करेगा और कहीं प्रमाणित करने की जगह नहीं।

प्रश्न– साधु वेश वाले को साधु आत्मा कहते हैं?

उत्तर– ठीक है, साधु वेश वालों को हम ऐसा देखते है। वही साधु वेश जो नहीं लगाया। हम वहॉ काशी में जो बैठे रहते हैं, विश्वनाथ जी के पास उसको पूछे, कैसे हो? भगवान

का कृपा हैं। 2 पैसे देने से तृप्त रहते हैं, वह अपने ढ़ंग से काम करते हैं, तो भाषा और आनंद। आनंद यदि जीवन में होता वह परंपरा में प्रमाणित होता । समाधान के रूप में पहले प्रमाणित होता, हमारा कार्य व्यवहार में समाधान आता है। वह आपको भी मूल्यांकित करने में आता है, मुझको भी मूल्यांकित करने में आता है। दोनों में तृप्ति होती है, यदि समाधान आता है, उसका आगे की मुद्दा यह है, हम समृद्धि पूर्वक जीने योग्य हो जाते है, ये प्रमाण है, इसको छोड़कर अपन भागना चाहेगें, तो बनेगा नहीं। हम समझदार होने का पहला प्रमाण समाधान, उसके बाद दूसरा मूद्दा समृद्धि, तीसरा मुद्दा में वर्तमान में विश्वास। वर्तमान में विश्वास करना ही हम अभयशील होने का प्रमाण है। वर्तमान में विश्वास को रखे रहना ये अपने आप में समझदारी का वैभव है, चौथा वैभव यही है, हम सह अस्तित्व में सदा–सदा प्रमाणित होते हैं। साथ–साथ में जी कर हम खुशहाली मनाते हैं। जीने का प्रमाण यही है। ये पूरे के पूरा मानव का अपेक्षा है ये। ये समझदारी का एक प्रमाण। दूसरा वर्चस्व, जीवन से जुड़ी हुई समाधान, वर्तमान में विश्वास भी जीवन से जुड़ी हुई है, सह अस्तित्व में जीना खुशहाली मनाना, ये भी जीवन से जुड़ी हुई है। शरीर से जुड़ी हुई केवल समृद्धि हुई । शरीर के लिए समृद्धि चाहिए, जीवन के लिए तीनों चीज चाहिए। इस प्रकार से जीवन का तीन पैर, शरीर का एक पैर मिलकर के मानव का 4 पैर जीवन का तीनों वैभव सीधा और शरीर के लिए एक वैभव मिलकर के चारों वैभव के साथ मानव परंपरा सुखी रहता हैं। क्या प्रमाणित होने का फल है ये?

समझदारी प्रमाणित होने का फल है। यदि इससे हम सहमत होते हैं, तब अपन एक निष्कर्ष निकाल सकते हैं। अर्न्तमुखी, बर्हिमुखी का प्रमाण, व्यवहार में ही है और कहीं प्रमाण नहीं है। अर्न्तमुखी होने का प्रयास मानवीय करण हो गया। यदि हम इसको ऐसे सोच लें, अर्न्तमुखी, अर्न्तमुखी रहेगा, बर्हिमुखी, बर्हिमुखी रहेगा। बर्हिमुखी काम पापी, चण्ड़ाल है ही हैं और अर्न्तमुखी काम सिद्धी, चमत्कार हैं। यदि ऐसा सोचेगें, ये मानव परंपरा का छाती का पीपल हो के ही रहेगा। इसमें हम ना तो परिवार को पहचान पाएगें, ना समाज को पहचान पाएगें, ना व्यवस्था को पहचान पाएगें। यदि इसको एक जगह में ला कर सार्थकता बनाना है, ये हमारा जिम्मेंदारी हे, वर्तमान के बुद्धि जीवियों का, इन दोनों को एक जगह में देखने का तौर तरीका, इसकी आवश्यकता, इसका प्रयोजन, तीनों दिशा में हम प्रमाणित होने की आवश्यकता है। इन तीनों जगह में यदि हम टिक पाते हैं, तो वर्तमान के लिए हम उपयोगी हैं, नही ंतो इस वर्तमान के लिए हम उपयोगी नहीं है। अभी तक इतिहास के अनुसार अर्न्तमुखी विधि से क्या–क्या घटित हुआ? बर्हिमुखी विधि

से क्या–क्या घटित हुआ। इन दोनों का अवलोकन करने की बात। बर्हिमुखी प्रयास से विज्ञान अपने चरमोत्कर्ष में आया और धरती को बरबाद करने की जगह में आ गया, माने सम्पूर्ण संकट से अपन घिर गए।

प्रश्न– विज्ञान बहुत सारा भौतिक शक्तियों को मानव के हाथ में ला कर दे दिया, आदमी समझदार नहीं था इसलिए दुरूपयोग करने के कम में अपने आत्म विनाश तक पहुंचा। विज्ञान ने नाश किया ऐसा कहने के बजाय मानव का ना समझी वश ऐसा हुआ। ऐसा कहना ज्यादा उचित है। विज्ञानी कौन थे? भ्रमित ही थे, भ्रमित होने के कारण अंततः जो भी आया विनाशकारी ही सिद्ध हुआ।

उत्तर– विज्ञान परंपरा आदमी को मानता नहीं, विज्ञान को बवनदज करता है, बवनदज करने वाला आदमी है। बर्हिमुखी विधि से जब सारा मनुष्य ही नाश होने के जगह में आ गया क्लेश बढ़ा या घटा । ये सोचने की बात है। अर्न्तमुखी विधि से समाधान कहॉ हैं? तो बोले आप स्वयं अर्न्तमुखी हो के देखों । हमने पूछा आपकी समाधि हुआ क्या? बोले ये पूछने का अधिकार आप को नहीं है, स्वयं समाधि में जा कर के दखो। अर्न्तमुखी जो सम्पदा है, वह मानव कुल के परंपरा में कहीं उतरा नहीं। अर्न्तमुखी विधि से किसी को अहसास नहीं हुआ ऐसा हम नहीं कहते किन्तु जो कुछ भी अहसास हुआ होगा वह मानव परंपरा को छुआ नहीं है। यदि है, प्रमाण प्रस्तुत होना चाहिए, यदि नही पुर्नविचार करना चाहिए, ये तो माना गया कि अर्न्तमुखी आदमी समझदार होता हे, यह तो मानी हुई बात है, वह खुद भले ही ना माने किन्तु लोग तो मान कर ही बैठे हैं।

एक बार रमण महर्षि जैसा आदमी जिनको वहॉ के सारे बुजुर्ग, तर्कवादी सभी लोग कहते हैं, वह ब्रम्हज्ञानी है।

हम जा कर के उन से मिला, उसके बाद हम यही आशा रखे थे, जैसा हमारा रवैइया है, उस ढ़ंग से वह पेश आए नहीं, वह लोगों के सहमति जैसा था वैसा उनके साथ पेश आए। उसके बाद हम ये सोचते रहे इनसे कोई ना कोई चीज मानव के लिए संगत विधि निकलेगा। अंत में षीव ंउ प ष एक किताब लिखा उनके मरने के बाद छपा वह। सन् 52 में उनका श्शरीर श्शांत हो गया । वह किताब को संयोग से हम अमरकंटक में देखा। उसमे वेदांत, शास्त्र, दर्शन उसी को वह समर्थन करते हैं । आप समर्थन दे के चले गये उसका प्रयोजन बता नहीं पाए, तो क्या होगा? व्यवहार को छूता नहीं है। वास्तव में

समाज को कुछ मिलेगा ऐसा हमने जिस एक आदमी से उम्मीद किया था, उनसे भी नहीं मिला।

जिस प्रकार की कार्य से, मुद्रा से, भंगिमा से, स्थिति से , हम ये सोचते हैं इनसे सभी कुछ मिल सकता है, वहॉ से यदि कुछ भी नहीं मिलेगा, तो कैसे होगा। बर्हिमुखी काम, क्लेश और द्वेष की काम है और अर्न्तमुखी क्लेश, द्वेष से मुक्त है, ये कुल मिलाकर के इंपब है। अगर आदमी क्लेश, द्वेष से मुक्त है, वह व्यवहार में यदि प्रमाणित नहीं हो पाता है।

प्रश्न– अभी का अर्न्तमुखी, बर्हिमुखी दोनो अलग–अलग चीज है, प्रमाणित होने के कम में दोनों साथ–साथ बने रहते हैं। प्रिय, हित, लाभ में जीना मतलब बर्हिमुखी, ज्ञान, समझ के साथ अर्न्तमुखी।

उत्तर– अर्न्तमुखी में यदि साक्षात्कार हो जाता है, बोध हो जाता है, अनुभव हो जाता है, प्रमाणित हो जाता है, क्या चीज? मोक्ष। उसको व्यवहार में प्रमाणित करिए। ज्ञान व्यवहार में प्रमाणित होगा या नहीं, पहली बात होगा तो कहॉ होगा? अर्न्तमुखी में कोई प्रयोजन समाधान नहीं निकलता, बर्हीमुखी में कोई प्रयोजन समाधान नहीं निकलता । अब कहॉ जाएँ अभी की स्थिति में समझदारी यदि अर्न्तमुखी का उपज है, ये व्यवहार तक छू जाएगी। यहॉ हमारा प्रमाणिकता का समर्थन हैं।

अर्न्तमुखी बर्हिमुखी

प्रश्न– अध्ययन के संबंध में आपने लिखा है, ''क्रिया का अध्ययन, ऋणात्मक का या धनात्मक, रूप, गुण, स्वभाव, धर्म से संबंधित रहेगा ही, अध्ययन के ऋणात्मक पक्ष से विकास संभव नहीं, केवल परीक्षण, निरिक्षण, सर्वेक्षण की संज्ञान उचित है। धनात्मक के लिए उद्देश्य की कल्पना, या आभास या आवश्यकता की अनुभूति रहना आवश्यक है, जिसके लिए सर्वप्रथम अध्ययन, द्वितीय प्रयोग व अभ्यास, तृतीय अवस्था में उपलब्धि हैं ''। इसका व्याख्या कर दीजिए?

उत्तर– प्रमाण की उपलब्ध में हम तृप्त होते हैं। मानव समझदारी को यदि प्रमाणित करता है, वह उपलब्धि है, व्यवहार में समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व प्रमाणित होने का फलस्वरूप हम तृप्त होते हैं। स्वयं को भी गवाहित होगी दूसरे को भी ऐसा होता है कि प्रमाणित हुए। बर्हिमुखी विधि से तृप्ति स्थली यही हैं। यही तृप्ति इकट्ठा होते–होते जीवन का पुंजी बन गई। एक तो समझदारी भी, तृप्ति भी, दोनों चीज जीवन अपने में अपनाता ही रहेगा। इस ढ़ंग से समझदारी को उपार्जित करना एक बात, प्रमाणित करने के लिए अभ्यास करना। समझदारी को उपार्जित करना भी एक अभ्यास हो सकता है, अध्ययन करना एक अभ्यास है, अध्ययन करके प्रमाणित करना अभ्यास है, तो समझदारी को प्रमाणित करना अभ्यास है, यहॉ आ के हम टिकते हैं। अभ्युद्य के अर्थ में किया गया सम्पूर्ण कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित सभी क्रिया कलाप अभ्यास है। शरीर के रूप में जो कुछ भी करा धरा, मानसिक रूप में जो कुछ भी किया धरा, वचन के रूप में, शब्द के रूप में जो कुछ भी किया धरा, स्वयं से किया हुआ, दूसरो से कराया हुआ और अनुमोदन दिया हुआ, ये सब मिल कर के हमारा अभ्यास है। अभ्यास में समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाणित होना है। ये हमारा व्यवहार, प्रमाण का स्वरूप है। मानव जाति में इसके प्रति क्या सहमति उपार्जित कर पाएगें, उपार्जित करना जरूरी है, जरूरी नहीं है। इस पर प्रकाश ड़ाला जाए। ये सार्वभौमी करण होता हैं। मानव को यदि स्वीकृत होता है, इस आधार पर सार्वभौम व्यवस्था स्थापित हो जाएगा।

प्रश्न–ऋणात्मक अध्ययन और धनात्मक अध्ययन को थोड़ा स्पष्ट कर दीजिए?

उत्तर– धनात्मक अध्ययन, ऋणात्मक अध्ययन का मतलब ये है, गुणात्मक विकास के लिए जो कुछ भी हम करते हैं, जैसा समाधान के लिए जितने भी हम अध्ययन करते हैं। वह धनात्मक अध्ययन है। प्रमाणित होने के लिए जितने भी अध्ययन करते हैं, ये धनात्मक अध्ययन है।

समस्या पैदा करने के लिए जितने भी अध्ययन करते हैं, जैसा धरती को बरबाद करने के लिए अध्ययन किए ये ऋणातमक अध्ययन है। करपशन के लिए, उसको कैसा बरबाद किया जाए, इनको कैसा लूटा जाए ये जो अध्ययन है, ये ऋणात्मक अध्ययन है।

प्रश्न– तो क्या विज्ञान का जितना अध्ययन है, ऋणात्मक अध्ययन है?

उत्तर– आप आगे चलकर के खुद ही मूल्यांकन करोगे, हम एक सूत्र दिया हैं।

प्रश्न– जो ऋणात्मक अध्ययन है अगर वह धनात्मक अध्ययन के रोशनी मे होता है तो सार्थक होगा? क्या ऐसा कहा जा सकता हैं?

उत्तर– ऋणात्मक रहेगा ही नहीं। ऋणात्मक, धनात्मक 2 शक्तियों का अध्ययन है, ये शक्तियों का अध्ययन भौतिक संसार की है। आचरण का ये अध्ययन है, आचरण का अध्ययन में ऋणातमक आचरण में आदमी दुखदायी होता हैं। पूरकता विधि को पहचाने बिना धनात्मक अध्ययन होगा नहीं।

गलती को वर्णन करने में कौन सा महत्वपूर्ण भूमिका होगा। संसार को कौन सा संपदा मिलने वाला है।

प्रश्न– हम को ये संपदा जो मिली है, आपको अर्न्तमुखी विधि से ही मिली है, जो आज हम सुन रहे हैं।

उत्तर– नहीं। ये मिला है हमको अर्न्तमुखी विधि को परीक्षण करने में, मूल्यांकन करने के क्रम में मिल गई। संयम में अर्न्तमुखी नहीं है। समाधि हुआ, ये अर्न्तमुखी विधि से हुआ। उससे कुछ मिला नहीं। मैं जिन सवालों का उत्तर खोज रहा था मिला नहीं। उसमें जो है प्रचलित संयम को हम छोड़ दिया, उसकी सिद्धियों का अपेक्षा हम छोड़ दिया, हमने अपने ढ़ंग से संयम की, उसमें प्रयत्न किया तो ये सब आ गया।

प्रश्न–समाधि के बिना संयम संभव नहीं होगा?

उत्तर– ये ठीक है, इसमे हम सहमत है। किन्तु संयम से प्राप्त वस्तु है, पुनः वह संयम से मिलेगा इसको हम छोड़ दिया। हम ऐसा गुजरे आप ऐसा गुजर सकते हैं। आपको सीधा रास्ता हम बता दिया।

प्रश्न– समाधि के बाद या समाधि के आस–पास आदमी को जो सिद्धियां मिलता है, वह शास्त्रों में भी लिखा है, आपने सोचा सिद्धियॉ के चक्कर में आपको नहीं पड़ना हैं।

आपने बिल्कुल उसका निर्वाह किया, दूसरा समाधि के बाद संयम की स्थिति में सिद्धियॉ आती हैं, वह भी छोड़ दिया, उसके बाद जो आप को मूल स्वभाव या उस उत्तर के प्राप्तों के लिए आपने संयम किया, आपको जवाब मिल गया।

उत्तर– जो जवाब मिला हमको, उसको हम शनैः–शनैः अध्यवसाय विधि से, लगाने पर पता चला मानव के लिए संपदा है। पहले हमारे लिए संपदा, अब ये मानव का संपदा है । तब पता चला हमको जो मिली हुई है, ये मानव का पुण्य का फलन है, क्योंकि इतनी बड़ी भारी चीज के लिए हम खोज ही नहीं किए थे, कहीं ना कहीं मानव जाति की आवश्यकता रही होगी तभी आई। इसमें कोई बहुत बड़ी भारी चीज नहीं हैं, व्यापक की बात पहले से कहा है, दूसरा वस्तु के बात भी बहुत कहा गया, परमाणु का बात भी बहुत कहा गया है, अब संकट की तरीका को भी मूल्यांकन कर चुके हैं। इसमें ये सोच क्यों नहीं आया। केवल व्यापक को लेने गए वह बरबाद हो गए, केवल वस्तु को लेने गए ये भी बरबाद हो गए, दोनों का योगफल में क्या निकलता है, उसको एक बार जतल करने के लिए । एक आदमी प्रयोग नहीं किया, एक आश्चर्य जनक बात है, हम जैसा एक निरीह आदमी के हाथ में इतना बड़ा पूंजी हाथ लग गया। बहुत आश्चर्यजनक मौलिक बात, अस्तित्व में इसके अलावा कुछ है भी नहीं। व्यापक और इकाई, इसके अलावा वस्तु ही नहीं है। पूरा वस्तु इतने में आता हैं। कौन सा मोड़ मूद्दा छूटता है।

इतना जटिलतम प्रश्न था ये, अर्न्तमुखी, बर्हिमुखी । वह लिखे है बर्हिमुखी होने से विज्ञान विकसित होता हैं। अर्न्तमुखी होने में आवश्यकता कम होता है। आवश्यकता बढ़ जाने से विज्ञान की विकास होता है। आवश्यकता कम होने से अर्न्तमुखी होने से विज्ञान का विकास नहीं होता है। इसीलिए आवश्यकता को कम करने के लिए अर्न्तमुखी थोड़ा देर रहेगें और थोड़ा देर बर्हिमुखी रहेगें। इसको ीनउंदपेउ नाम रखा हैं। ''मानववाद'' , ''जीने दो और जियो'' कहॉ आता है इसमें। संघर्ष यदि दोनों विद्या से अर्न्तमुखी में भी जूझते रहो, बर्हिमुखी मे भी जूझते रहो, संघर्ष करते रहो। राहत का स्थली कहॉ हैं।

प्रश्न– धनात्मक अध्ययन में आपने 3 चरण बताएँ।

1. अध्ययन 2. प्रयोग और अभ्यास 3. अवस्था में उपलब्धि

इसमें अध्ययन पूरा हो गया इसका क्या प्रमाण है?

उत्तर– अध्ययन पूरा हुआ इसका प्रमाण हम प्रमाणित करने के लिए उद्यत हो गए, प्रयोग और व्यवहार के लिए।

प्रश्न–ये तो साथ–साथ चलेगा, अध्ययन भी चलेगा, प्रयोग और अभ्यास भी चलेगा।

उत्तर– अध्ययन का 3 चरण इसको बाद में बताएंगे। अध्ययन हो गया के बारे में अभी चल रहे हैं। अध्ययन होने के बाद प्रयोग और व्यवहार में हम आ जाते है। वह प्रमाणित होना शुरू करना है। उपलब्धि के रूप में, अनुभव का प्रमाण । अनुभव जो है, जैसा हम बोध हुआ, उसको प्रमाणित करने के लिए प्रवृत्ति हुई, उसका नाम हैं, संकल्प, उस संकल्प का नाम है ऋतुम्भरा। सत्य भरी हुई संकल्प का नाम है ऋतुम्भरा। वह जग व्यवहार में प्रमाणिता होता हैं और प्रयोगों में, समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व प्रमाणित होता है। ये प्रमाणित हो गया, हमारा अनुभव का प्रमाण यहॉ हो गया। हम संकल्प कर लिया, हमको प्रमाणित होना है, उसको रोकने वाला ताकत इस अस्तित्व में नहीं है। प्रमाणित हो के ही रहेगा।

प्रश्न– अध्ययन होने के बाद, संकल्प के बीच में रूक सकते हैं?

उत्तर– संकल्प से पहले बोध होने के बाद प्रवृत्ति यदि नहीं होता हैं, प्रमाणिकता के लिए उस जगह में आदमी रूक सकता है। इसमें स्वयं का मूल्यांकन आता है, मूल्यांकन में स्वयं का स्पमि`जलसम का इतिहास आता है। ये सब को ले के आदमी कहॉ रूक जाता है, इसको बताया नहीं जा सकता। प्रमाणित करने योग्य परिस्थिति आप हमें बनाना चाहिए। इसको यदि हम बटोर सकें तो सबके लिए हमारे लिए उपलब्धि है। तुम्हारा अन्तरात्मा को यदि तृप्ति का वस्तु होगा तो बाकी कचरा को अलग कर दोगे। मानव जाति के साथ बड़ी उपकार होगा। आपके पास भाषा हैं, भाषा के आप धनी हो, हिन्दी जगत में, उसका प्रयोग आप कर सकते हो, वस्तु लगा दो, वस्तु सहित भाषा का प्रयोग करना यदि बनता है ये सब सही हो सकता है। करने का उद्देश्य है तो ये बहुत अच्छा काम है।